

सामुद्रिक की लालकिताब
के अरमान
1940



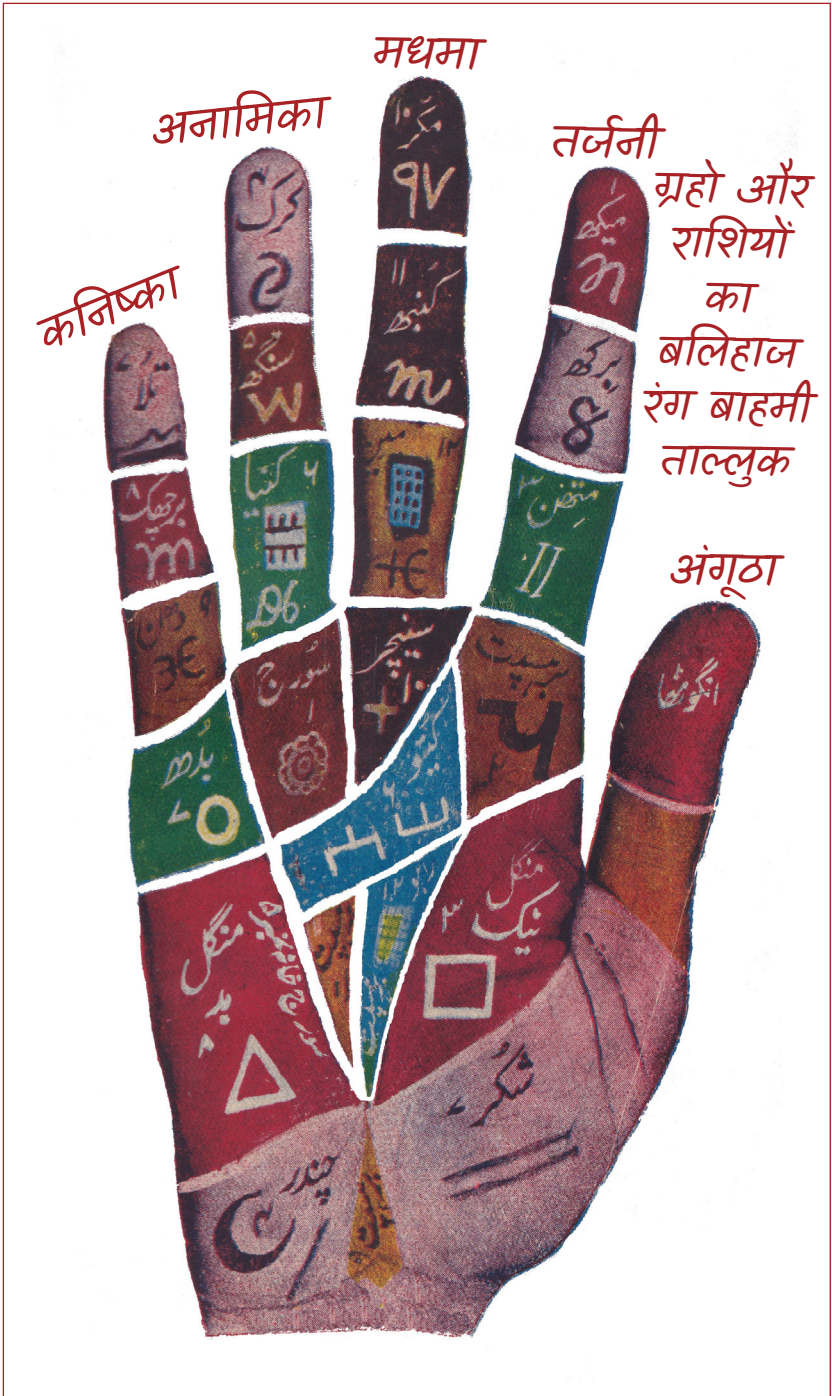
लाल किताब के रचयिता
पंडित श्री रूपचन्द जोशी जी
18 जनवरी 1898 - 24 दिसम्बर 1982

हिन्दी लिप्यांतरण

मिलख राज बाघला
चंडीगढ़
(फ़ाजिल्का वाले)

सुखिंदर शर्मा
संगरूर
(पिंड - कांझला)

विद्यार्थी लालकिताब
हरेश पंचोली
(अहमदाबाद गुजरात)





आवाज सुनता हर किसी की
न ही भूला कोई हों
सबसे पहले याद उसकी
फिर सभी दुनिया की हों।



विद्यार्थी लालकिताब (हरेश पंचोली) अहमदाबाद

* प्रकाशक की अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिक, मशीनि फोटो प्रतिलिपि अथवा अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उस का संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

* इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त पर की गई है की प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पुनः विक्रय या फिर किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।

* इस प्रकाशन का सही मूल्य पुस्तक के आवरण पर मुद्रित है रबड़ की मोहर, चिपकाई गई पर्ची, स्टिकर या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

प्रकाशक :- विद्यार्थी लालकिताब
हरेश पंचोली
(अहमदाबाद)

मूल्य :- निशुल्क
("लालकिताब" के विद्यार्थीओ के लिए)



स्व. श्री महेन्द्रभाई चुनीलाल पंचोली

जन्म दिनांक : 04/08/1932

स्वर्गवास दिनांक : 23/11/2004

मेरे पिताजी स्व. श्री महेन्द्रभाई चुनीलाल पंचोली

को समर्पित करता हूं।

आपको सहृदय प्रणाम

विद्यार्थी लालकिताब
(हरेश महेन्द्रभाई पंचोली)

पुष्पांजलि

लालकिताब ज्योतिष से संबंध रखने वाले सभी दोस्तों, विद्वानों, विद्यार्थियों और इस विद्या में प्रेम और आस्था रखने वाले भाई बहनों के लिए बड़ी खुशी की बात है की आज 18 जनवरी 2016 को इल्म सामुद्रिक की लालकिताब उर्दू के दो मूल ग्रन्थों "अरमान 1940" और "गुटका 1940" का हिन्दी लिप्यांतरण आप सब को इंटरनेट पर निशुल्क उपलब्ध कराया जा रहा है।

18 जनवरी का दिन लालकिताब ज्योतिष जगत में एक विशेष स्थान और खास मायने रखता है। वरूँ की ये दिन उस महान शख्सियत का जन्मदिन है। जिन्होंने भारतीय ज्योतिष समाज को एक नयी कल्याणकारी विद्या का तोहफा दिया। उस महान शख्सियत का नाम है पंडित श्री रूपचंद जोशी जी (पिंड - फ़रवाला, पंजाब) जिन की जन्म तिथि है 18 जनवरी 1898।

उन के द्वारा जारी की गई इस कल्याणकारी विद्या को आगे बढ़ाने हेतु, सुगमता पूर्वक जनसाधारण तक पहुंचाने हेतु और उस पर शोध एवम अनुसंधान करने हेतु "लालकिताब के विद्यार्थी" ग्रुप ने संकल्प लिया है। जीसके पहले चरण में लालकिताब के सभी (पांचों) मूल अंक जो की उर्दू में हैं उन का हिन्दी लिप्यांतरण करके जनसाधारण को निशुल्क उपलब्ध करवाना और इस के इलावा उर्दू के सभी असल मूल अंक भी इंटरनेट पर निशुल्क उपलब्ध करवाना। दूसरे चरण में इस विद्या से संबंधित सभी प्रकार की साहित्य सामग्री इकट्ठी करना, पंडित जी के जीवन के संदर्भित जानकारियाँ इकट्ठी करना और पंडित जी द्वारा पढ़ी गयी या देखि गयी जन्म कुंडलियाँ प्राप्त करके इस सारे ज्ञान साहित्य को इंटरनेट पर डाल कर निशुल्क उपलब्ध करवाना और तीसरा चरण है इस विद्या पर शोध और अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाना।

यहाँ पर मैं यह बताना जरूरी है की पिछले वर्ष 18 जनवरी 2015 को इस ग्रुप द्वारा लालकिताब के प्रथम अंक "फ़रमान 1939" का हिन्दी लिप्यांतरण (दुरस्तीयां सहित) इंटरनेट पर उपलब्ध करवाया जा चुका है।

आज 18 जनवरी 2016 को लालकिताब के रचयिता का जन्म दिन है। जो लालकिताब ज्योतिष जगत के लिए प्रेरणा दिवस है। इस पावन अवसर पर जो कार्य "लालकिताब के विद्यार्थी" ग्रुप ने किया है। वह अत्यंत सराहनीय है। जिसके लिए इस के सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं। जिनहोने

दिन रात अनथक महेनत करके इस महान कार्य को अंजाम दिया है।

मुझे उम्मीद है लालकिताब प्रेमियों के लिए ये तीनों किताबें (जो लालकिताब के विद्यार्थी ग्रुप ने डाली हैं) सहायक और कल्याणकारी साबित होंगी और इस विद्या को आगे बढ़ाने में एक मील पत्थर का काम देंगी।

अंत में मैं एक बार फिर इस ग्रुप के सभी सदस्यों तथा विशेष रूप से ग्रुप सदस्य श्री हरेश पंचोली (विद्यार्थी लालकिताब, अहमदाबाद, गुजरात) जिन के अदम्य साहस, प्रेरणा और अनथक महेनत के फल स्वरूप लालकिताब के ज्ञान क्षेत्र में "एक नयी किरण एक नयी रोशनी" का प्रकाश महसूस कर रहा हूँ, को इन के प्रयासों के लिए बधाई और शुभकामनायें देता हूँ।

"लालकिताब के विद्यार्थी" ग्रुप द्वारा पंडित जी के जन्मदिन पर किया गया ये कार्य उन के श्री चरणों में ग्रुप कि तरफ से अर्पित प्यार भरी "एक पुष्पांजलि" है।

मिलख राज बाघला
चंडीगढ़
(फ़ाजिल्का वाले)

"लाल किताब एक अनुठा ग्रंथ"

लालकिताब के रचयिता पंडित श्री रूपचंद जोशी जी के द्वारा लिखे गये 5 ग्रंथ अलग अलग सालों में उन के भाई गिरधारी लाल शर्मा जी के नाम से प्रकाशित हुए थे। पंडित श्री रूपचंद जोशी जी द्वारा तमाम की तमाम किताबे उर्दू में लिखी गई थी। आज कल के दौर में उर्दू जानने वालों की कमी के होते हुए इस महान ग्रंथ को पढ़ना या समझना मुश्किल हो रहा था। कुछेक हिन्दी लिप्यांतरण उपलब्ध हैं पर सब के लिए खरीद करना पाना मुश्किल हो जाता है। इस वजह से ये सोच विचार के बाद तय किया गया की 5 की 5 किताबे एक एक कर के इंटरनेट पर निशुल्क उपलब्ध करवायी जाएँ।

इस कार्य को मेरे दोस्त हरेश पंचोली जी ने पिछले वर्ष शुरू किया था और इस की आगे की कड़ी में जुड़ने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। पंडित श्री रूपचंद जोशी जी की 119वीं वर्षगांठ के पावन पर्व पर पंडित जी के आशीर्वाद और आप सब के लाल किताब के प्रति स्नेह के कारण दूसरी शृंखला में "लालकिताब के अरमान 1940" इंटरनेट पर निशुल्क उपलब्ध करवाते हुए अपने आप को हर्षित और सौभाग्यशाली महसूस कर रहा हूँ।

इस पूरे कार्य को हमारे ग्रुप "लालकिताब के विद्यार्थी" के सभी सदस्य ने मिलकर ही किया है।

सुखविंदर शर्मा
संगरूर
(पिंड - कांझला)

सरसरी नोट

लाल किताब 1939 के सरसरी नोट के बाद

(5) अरमानों में लंबी लंबी इबारत लिखने के बजाए सिर्फ हवाला लाल किताब लिखा है। जिस से लिखी हुई इबारत के सबूत की शहादत से मुराद नहीं बल्कि इबारत मज़कुरा के बाद और इबारत साथ मीला लेने की तरफ़ इशारा है। इस लिए हवालों की इबारत को जरूर साथ मिलाकर पढ़ते जावें।

(6) कुंडली का बनाना और उसकी दरुस्ती का जांचना तमाम मुतल्लका इल्म की वाकफ़ि के बाद शुरू करें और दौराने वक़्त में अरमान नंबर 181 के असूल पर इस किताब के आख़िर पर दिए हुए फॉर्म को साथ लेकर तजुर्बा हासिल करें।

(7) बताये हुए फ़रमान के जवाब की गलती बताने वाला इस इल्म को बढ़ाने के लिए सब से मददगार दोस्त होगा।

(8) बात की असलियत पाने के लिए किसी दूसरे इल्म या आलम की बदखोई से परहेज़ चाहिये।

(9) इस में शक़ नहीं के निंदक और अहमक़ मख़ौल उड़ाने वाले से क़राहत आ ही जाया करती है मगर दुनियावी साथियों को हस्ब-ए-हैसियत इस इल्म से फ़ायदा पहुंचाना इंसानी शराफ़त होगी ख़्वाह फ़ायदा उठाने वाला शख़्स कृतघ्न या नाशुक़रा ही क्यूं न हो।

"कर भला होगा भला आख़िर भले का भला"

लाल किताब के अरमान

1. सबसे पहले इस किताब के आखिर पर दी हुई फेहरिस्त (तमाम) दरुस्ती के मुताबिक लाल किताब को दरुस्त कर लें। (ये दरुस्तियाँ 1939 में कर ली गई हैं)
2. फ़रमान व अरमान दोनों एक ही नंबर के हैं। इसलिये दोनों को इकट्ठा मिलाकर पढते जावें। इन शर्तों के बग़ैर पढने से कोई मतलब हल न होगा।

अरमान नंबर 1

लाल किताब के मुताबिक बुलंद आसमान की आखिरी हद और पाताल की गहरी तँ से घिरे हुए दरम्यानी खाली खलाव या आकाश में गैबी और ज़ाहिरा हवा के दोनों जहानों में आने जाने के कुल रास्तों को जनम मरण की गांठ लगा देने वाली चीज बच्चा कहलायी। ज्यू ही कि इस बच्चे ने इधर का रुख किया बंद मुट्टी के आकाश में 9 निधि की अटल ताक़त व 12 सिद्धि की खुद अपनी हिम्मत की हवा (बस्ये हस्त रेखा) कुण्डली के आकार में ग्रह व राशि (बहिसाब इल्म ज्योतिष) नारया बैल के सींगों पर कुल दुनिया की धरती माता का बोझ या ज़मीन का अपने महवर पर घूमने का क्रियास (बखयाल दीगरां) का चक्कर पहले ही घुमने लगा। मालिक के हुकम के करिश्मे की चमक से क्रिस्मत की आवाज का प्रकाश होते ही इसकी हर गांठ के साथी

" सिधी बारह - ब्रह्म बृहस्पत - नौ निधी - मोह शुक्र - माई चंद्र - आकाश बुध,
राई राहु घटे न तिल केवू बढे - मच्छ सनीचर - भाई मंगल - प्रकाश सूरज ।"

आ हाज़िर हुए।

ग्रहों के इलावा सिर्फ़ नौ निधी बारह सिद्धि के हरफ़ खाली बचते हैं। यही दो हरफ़ दुनियादारों ने बच्चे का नाम रखा। इसीलिये सिर्फ़ नाम पर ही बाज़ों ने क्रिस्मत का असर माना है। (1) नौ ग्रह ज़रब बारह राशि कुल 108 गांठ की माला का सीधा उल्टा चक्कर माना गया है। जो 35 साला चक्कर का पहला व दूसरा हिस्सा होता है। (2) मुकम्मल इन्सान के नाम से पहले $9 \times 12 = 108$ का हिंदसा लिखते हैं।

बुध (आकाश) और बृहस्पत (हवा) को गांठ लगाकर बांध लेने वाली चीज को बच्चा गिना तो बच्चे की हर गांठ से नौ ग्रहों की मिलायी हुई चमक इंसानी किस्मत का खज़ाना हुई और इन सब गांठों से गांठा हुआ सामुद्रिक का इलम सब भेदों के खोलने वाला मुकर्रर हुआ। जिसमें बंद मुट्टी को ग्रह कुण्डली माना गया। तो

चंद्र माता		शुक्र केतू औरत सुख	
भाईबंद	2 3	12	आमदन जनम ॥ दिन मतलका दुनिया
धन बृहस्पत		4 7	10 मंगल खुराक
औलाद	5 6	सनीचर जायदाद	9 धरम बाबा
बुध राह वाल्देन और औरत की तरफ से रिश्तेदार		8 माँत बीमारी	

(ये कुण्डली तमाम ग्रहों के अपने अपने ऊंच होने के घरों की बुनियाद पर रखी गयी है।)

कुण्डली के खाने लाल किताब का आम असूल

इल्म ज्योतिष की जनम राशि (लगन) लाल किताब में मेख राशि होगी। जिसका पक्का घर हमेशा हिंदसा नंबर 1 वाला होगा। जिसके बाद बाकी घर बातरतीब होंगे।

बंद मुट्टी का अंदर या बच्चे का साथ लाया हुआ

अपनी किस्मत का खज़ाना (तमाम ही नर ग्रह) 1 - 7 - 4 - 10 होंगे
जवानी का हाल देखने के

खुद अपना बचपन और जनम से

पहले वालदैन की हालत

9 - 11 - 12 होंगे

औलाद के जनम दिन से अपना बुढापा -

2 - 3 - 5 - 6 होंगे

मरने पर इसके बाकी रहे हुआँ का हाल

माँत बीमारी मंदा जमान 8 - मारग अस्थान होगा

100 फ़ीसदी द्रष्टि के खाने 1 - 7 - 4 - 10 होंगे। साथ लाये हुए भरे खज़ाने।

50 फ़ीसदी द्रष्टि के खाने.....3 - 11 - 5 - 9 होंगे दूसरों की मदद से पैदा करदा हालत

25 फ़ीसदी द्रष्टि के खाने 2 - 6 - 12 होंगे रिश्तेदारों से ली हुई चीजें।

आगे की बजाये पीछे को देखने वाला खाना नंबर 8 मॉत नमानी का फंदा गिना है।

अरमान नंबर 2

हस्त रेखा या ज्योतिष के मजमुआ से या दोनों में से किसी एक के जरिये से दूसरे को पैदा कर लेने वाले मजमून को इल्म सामुद्रिक कहा है। जिससे हस्ती से नेस्ती या नेस्ती से हस्ती का भेद खुलता है या खासीयत से इसके मुतल्लका ठोस हाथ में आ जाने वाली चीज या ठोस चीज से उसका हवाई और खयाली असर का पता चल जाता है और इस सह बुत के हवाई व बदनी मैदान का अंदर-बाहर या इन्सानी व खुदाई राज का बाहमी ताल्लुक चलता है।

अरमान नंबर 3

सह बुत के झगडे के मालिक इंसानी जिस्म के हिस्से और उनकी हर इक ताक़ता हस्त रेखा के तमाम जुजा कुण्डली की 12 राशियां और 9 ग्रहों की चाल व बाहम लगाव झुकाव का पैदा करदा असर। किस्मत का करिश्मा या खुदाई हुक्म कहलाता है। जिसकी तामील से जनम मरन या शुरू व आखिर के मैदान की फतह व शिकस्त का नतीजा खुशी गमी की खुशबू बदबू हुआ करती है।

अरमान नंबर 4

हस्त रेखा व ज्योतिष की बुनयादी चीजों के मुकररर मैदानों से हर शख्स की किस्मत का मैदान मुकररर करके एक अक्स से असल चीज की हालत या नकल से असल और असल से नकल करके असल मकसद या बात का पूरा पता चल जाता है। (राहु केतु का ताल्लुक उन ग्रहों में ज़िकर है)।

सफ़ेद कागज (बुध) पर फटकडी (बुध) से लिखा हुआ चंद्र की रोशनी या पानी में नजर न पडा। लेकिन जब सूरज का साथ या आग का ताल्लुक हुआ तो वही गुमनाम हस्फ़ सफ़ेदी से खुद-ब-खुद रयाह हो गये। हुबहू इसी तरह राहु केतु (मशनोई शुक्र गृहस्ती दुनिया में) बुध के आकार में घूम रहे हैं और सूरज चंद्र के रास्ते में खुद-ब-खुद पैदा हो जाते हैं।

अरमान नंबर 5

दुनिया की 12 तरफें और हरइक तरफ का इल्म सामुद्रिक में ताल्लुक

राशि	कुंडली का खाना नंबर	मालक ग्रह	तरफ	ताल्लुक
मेख	1	मंगल	तख्त वजूद नेक	जिस्म के तमाम अजूं-और तमाम दुनियादारों का अल्लेहदा अल्लेहदा होते हुए और फिर इकट्ठे एक होकर काम करने की हिम्मत व ताकत (मानिंद राजा व रैय्यत)
बिस्ख	2	शुक्र	मोह माया	तमाम चीजों की सिफ्तों का ऐंजान.....
मिथुन	3	बुध	आकाश	मुख्तलिफ चीजों या ताकतों का एक ही वजूद या एक ही जुज में इकट्ठे होकर काम करना। मर्द औरत के जोड़े से बच्चा बनना।
कर्क	4	चंद्र	शुमाल मशरिफ	धन दौलत-शांति-धरती माता-सब का सहारा।
सिंह	5	सूरज	मशरिफ	रोशनी-रूह-आग-किस्मत की चमक।
कन्या	6	बुध केतु	शुमाल पाताल	अंदरूनी अक्ल- भाखया भाव अपार-रिश्तेदार-नक्कारा खलक। नेकी-फलना फूलना
तुला	7	शुक्र	जनूब मगरिब	गृहस्त उन्नति-बढना (नसल दर नसल)
बृच्छक	8	मंगल बद	जनूब	माँत-मंदे हाल-बदी। हरएक का फंदा
धन	9	बृहस्पत	गौबी दुनिया	हवा-माता का पेट-पिछला जनम - बुलुगौ की जगह।
मकर	10	सनीचर	मगरब	अंधेरा - सनीचर की खुद अपनी ताकत (जाती ताकत)
कुंभ	11	सनीचर	जनम	छिपे छिपाये अपने ऐंवंट राहु केतु से सनीचर का फ़ैसला।
मीन	12	बृहस्पत राहु बृहस्पत राहु	शुमाल मगरिब जनूब मशरिफ आसमान	दुनयावी धन दौलत का सुख। अचानक खयाल भासरना। श्राप व आशीर्वाद। दोनों जहानों की बजाये सिर्फ एक तरफ का बृहस्पत जिसे

आसमान या राहु दो की बजाये एक ताकत का कर देगा। यानि बृहस्पत राहु के साथ आसमान के ऊपर हुआ तो गौबी ताकत का मालिक अगर आसमान के नीचे दुनिया की तरफ हुआ तो गृहस्ती गुरु होगा।

गर्जेकि राहु के साथ होने पर आसमान नीले रंग वाला बृहस्पत को सिर्फ एक तरफ का मालिक कर देगा। दूसरे हिस्से के लिये बृहस्पत चुप होगा।

खाना नंबर 8-11 में सनीचर का राहु केतु का ताल्लुक-

खाना नंबर 8 सनीचर का हैडक्वाटर है। जहां की राहु केतु नेकी बढी के कारनामें सनीचर को पहुंचाते हैं। उन कारनामों को साथ लेता हुआ खाना नंबर 11 में जाकर सनीचर दोनों जहान के गुरु (बृहस्पत का घर) के दरबार में खुदा को हाज़िर नाज़िर कह कर फ़ैसला करेगा। जिसमें बृहस्पत की रजामंदी जरूरी होगी।

कुंडली के 12 खाने

मकान का ताल्लुक (अरमान नंबर 95) से मुतल्लका	खाना नंबर	इन्सान का ताल्लुक अरमान नंबर 94 से मुतल्लका
चार दीवारी मय तै ज़मीन के गोशे	1	रूह - नमक
मकान का वास्ता यानि घर है या बैठक, गुरुद्वारा है या जिबह खाना वगैरह।	2	सुभाव (नेकी) - भूक
मकान के साजो सामान वासते आरायश (अंदरूनी)	3	जिगर - खून - मीठा
मकान की तै ज़मीन (खाली तै)	4	दिल - दूध - धन दौलत
रोशनी व हवा	5	हवास खेमा - पांच इंद्रियों की ताकत, हाजमा
हमसाये यानि पडोसी इर्द गिर्द वाले	6	पट्टे नाडें, ज़ायका, साग सब्जी, फूल पतर
पलस्तर, सफ़ेदी	7	चेहरा, घी जर्द
छत	8	पित, बदहजमी, कडवाहट
कच्चा पक्का, मय हर हिस्से की अंदर की पैमाइश	9	सांस, मूल, जड
लोहा लकडी (ईंट पत्थर)	10	बाल, कांटे
मकान की शान व शौकत (जाहिरदारी)	11	पुस्त, खाल, छिलका, परविश
आबाद या वीराना	12	हड्डी, खटाई

कुण्डली के 12 खाने

असर मुतल्लका	खाना नंबर	हस्त रेखा के जुज
(माता, भुआ, मासी, फूफी वगैरह)। (औरत, बेवा औरतें या माशूका)	2	अगुलियां (लंबाई, छोटोई, सीधी, टेढी) पेशानी पर तिलक की खास जगह
बदनामी या चालाकी की शोहरत व चमक।	B12	हथेली व उंगलियों का मय अंगूठा अंदर या बाहर को झुकावा नाखून मर्द औरत का बाहमी साथ पांवा के।
अपनी जाती खासीयत (रुहानी, जिस्मानी, दिमागी) मकानात के इर्द गिर्द की चीजों का ताल्लुक	A6	चेहरा व पेशानी का हाल। नाखून हाथ के। इन्सान खुद किस ग्रह का है।
मकानात का बनना वगैरह। पराई दौलत का मिलना।	7	जिस्म के बाल। हथेली की हर हालत का हाल।
दुनिया में नाम किस हैसीयत का होगा।	1	हाथ पर खास निशान ।
कुदरती तौर पर तबीयत का झुकाव क्या होगा।	4	चक्र शंख सदफ। उंगलियों पर जौ के निशान।
सेहत व आम बरताओ	10	बडी तिकोन, बडी मुस्तैल
आम खुशी व गमी की औसत हालत चोरी यारी -नुकसान-अय्यारी(ठगगी)	3	मंगल के बुरजों की चरबी का भर जाना। खुशी गमी की रेखा।
आराम या हराम खोरी	9	उंगलियों पर सीधे खडे या लेटे हुए खत।
चालाकी की चमक-बदनामी की शोहरत।	B12	हथेली पर बृहस्पत के खत अगुलियों पर के बृहस्पत(बच्च ऊपर के खाना नंबर 4) के निशान।
औलाद व अपने खून का ताल्लुक। नेकी की मशहूरी।	5	रफ्तार, गुफ्तार, तहरीर, उंगलियों के दरम्यान की खाली जगह।
आमदन, आयी चलायी का जरिया।	11	हाथों की किसमें हर अजू मय नाखून का हाल रंग - वो किस किस तरह के है। पेशानी सिवाय तिलक की खास जगह का हाल।
अपने वालदैन की तरफ से रिश्तेदार (जानके वगैरह)	A6	कद व कामत, हथेली व उंगलियों की तनासब का असर
माँत नमानी	8	सब की खत्म कहानी

अरमान नंबर 6

हाथ व पावों की अंगुली के नाखून के सिरे से कलाई व टखने तक और 9 ग्रह व 12 राशि की कुण्डली से 12 तरफों के दरम्यानी मैदान में बनातात, जमादात, इन्सानात(तो क्रिस्म क्रिस्म के लोग), हैवानात, मकान आम व खास व जाये रिहायश, खाब, शगुन, माल - मवेशी, चरिंद, परिंद, दरिंद, दोस्त व दुश्मन, लहर व अमृत, दुन्यावी दीगर साथियों और इल्म क्याफा वगैरह से जो सामुद्रिक के जरूरी हिस्से हैं। वक्त से पहले ही लिखे हुए 9 निधी 12 सिद्धि के खजाने की कमी बेशी के मुतल्लका कुदरती और अनमित (जो मिटाये न जा सकें) लेख या हुक्मनामे को सिर्फ पढा ही जा सकता है। मगर इसमें अपनी मर्जी के मुताबिक अदली बदली नहीं की जा सकती। भेद सिर्फ शक्की बात को दुरुस्त करके शक का फायदा उठा लेने की गुंजाइश है। जो ग्रहफल और राशिफल की मिलावट के वक्त हुआ करती है। यही एक बात इस इल्म का खास मतलब है।

ग्रहफल व राशिफल

1) जब कोई ग्रह अपनी मुकरर राशि (यानि वो राशि जिसके कि वो घर का मालिक ग्रह गिना जाता है) या ऊंच नीच फल की ठहराई हुई राशि (फरमान नंबर 113 सफा नंबर 114) या अपने पक्के घर (फरमान नंबर 103 सफा नंबर 97) की बजाये किसी गैर राशि में जा बैठे या किसी दूसरे ग्रह का साथी ग्रह (जड अदला बदली कर लेने वाला वगैरह) बन जावे तो वो ग्रह ऐसी हालत में राशिफल या शक्की हालत का ग्रह होगा। जिसके बुरे असर से बचने के लिये इसके शक का फायदा उठाया जा सकता है। इसके बरखिलाफ यानि ऊपर कही हुई हालत के उल्टे हाल पर वो ग्रह "ग्रहफल" या पक्की हालत का ग्रह होगा। जिसके बुरे असर को तबदील करने की कोशिश करना बेमायनी बल्कि इन्सानी ताकत से बाहर होगा। सिर्फ खास खास खुदा रशीदा और महदूद हस्तियां ही रेख में मेख (रेखा में मेखा - सूरज मेख खाना नंबर 1 में कैद) लगा सकती हैं। वो भी आखिर तबादला ही होगा। यानि एक जानदार या दुन्यावी चीज या ताकत को इसकी हस्ती से मिटाकर इसके ऐवज में दूसरा जानदार दुन्यावी चीज या ताकत पैदा कर देगी। (बाबर हमायू के किस्से) मगर नया ही दूसरा हिंदसा फिर भी पैदा न होगा। सिवाये उस वक्त के जबकि ऐसी हस्तियां खुद अपनी ताकत या अपना ही आप तबाह कर लेती हैं और किसी

दूसरे एंवज तक नौबत नहीं आने देंते। ये हालत भी उनकी खुदाई शरीक होने की होगी। कोई न कोई तबादला दिया ही गया। ग्रहफल फिर भी न टला।

2) ग्रहफल को अगर राजा कहें ता राशिफल इसका साथी वजीर होगा।

हर ग्रह कौन कौन से घर (राशि नंबर) में राशिफल का होगा।

'बृहस्पत'

कुण्डली के खाना नंबर.....6.....में.....केतु का उपाय नेक फल पैदा करेगा।

कुण्डली के खाना नंबर.....7.....में.....चंद्र के उपाय से नेक फल पैदा होगा।

पापी ग्रहों मय बुध के साथ...मुतल्लका ग्रह हरएक के अलैहदा अलैहदा उपाय से नेक हो।

'सूरज'

i सूरज कभी राशिफल का नहीं होता।

ii सिवाये खाना नंबर 1 व 5 के सूरज जिस राशि में बैठा हो इस राशि का मालिक ग्रह या उस राशि नंबर के मालिक ग्रह का "साथी ग्रह" राशिफल का हो जाएगा। ऐसी हालत में उस राशिफल में हो जाने वाले ग्रह के लिये उस के दुश्मन ग्रह से बचाने के लिये उपाय करें। क्योंकि सूरज खुद कभी नीचे नहीं होता। बल्कि अपने दुश्मन ग्रह को नीचे दबा कर इस नीचे दब जाने वाले ग्रह का फल खराब कर दिया करता है।

iii खाना नंबर 1 और 5 में बैठा हुआ सूरज हर दोस्त व दुश्मन ग्रह (सिर्फ सूरज के खुद दोस्त या दुश्मन) को मदद पर कर दिया करता है। ऐसी हालत में राशिफल का सवाल या किसी उपाय की जरूरत न होगी।

iv महादशा के वक्त खराब हो चुके नष्ट या बरबाद या जहरीले हुए ग्रहों के असर के लिये जो सूरज के ताल्लुक से राशिफल के हो गये हों खुद सूरज का उपाय ही नेक असर पैदा करेगा। जिस पर वो बरबाद शुदा ग्रह मददगार हो जाएंगे। लेकिन अगर सूरज का खुद अपना ही असर दूसरों पर बुरा हो रहा होवे तो सूरज के दुश्मन ग्रहों को नेक करने का उपाय करें। ये हालत सिर्फ खाना नंबर 6 या 7 में सूरज होने की होगी। जबकि बुध का किसी उपाय से नेक कर लेना मददगार होगा। अगर खाना नंबर 7 में सूरज हो और सनीचर का टकराव आवे तो चंद्र को नष्ट करने से सूरज की मदद होगी।

"चंद्र"

चंद्र हमेशा राशि फल का होता है। खासकर-

खाना नंबर3...में..... चंद्र से पूरा नेक मंगल होगा जो दुनिया की तमाम
जंग व जदल और मैदाने जंग में पूरी फतेह देगा।

खाना नंबर....7.....में..... पूरा नेक असर लक्ष्मी अवतार होगा

खाना नंबर ...8में..... माँत के यम को मारने वाला यमराज लंबी
उम्र देने वाला होगा।

"शुक्र"

खाना नंबर.....4.....मेंबृहस्पत का उपाय नेक असर देगा।

"मंगल"

खाना नंबर6.....में..... सनीचर का उपाय नेक फल पैदा करेगा।

खाना नंबर4.....में (मंगलीक)..... चंद्र का उपाय मददगार होगा।

"बुध"

1. खाना नंबर.....9.....में या खाना
नंबर 9 के ग्रहों का साथी ग्रह हो जाने
वाला बुध यानि बुध जिस घर में बैठा
उस घर का मालिक ग्रह खाना
9 में बैठ जावे।

खाना नंबर 9 के तमाम ही ग्रहों को (ख्वाह
वो बुध के दोस्त हों या दुश्मन या वो बुध से
जबरदस्त हों या कमज़ोर) या खाना नंबर हो
9 के उस ग्रह को जिसका कि बुध "साथी नंबर
ग्रह" बन रहा हो

अपनी यानि बुध के खाली दायरा की तरह ही बेबुनियाद-मुर्दा और
निष्फल (यानि जो कोई भी काम न देवे या किसी भी काम न आ सके) कर देगा
ऐसी हालत में नर ग्रहों (सूरज-बृहस्पत-मंगल) से उस नर ग्रह का उपाय करें।
जो नर ग्रह कि खाना नंबर 9 के ग्रह का या खाना नंबर 9 में बुध के "साथी ग्रह"
हो जाने वाले ग्रह को या खुद बुध को ही बरबाद न करें। फिर यही शर्त मद्देनजर
रखते हुए जबकि नर ग्रह काम न आ सके। स्त्री ग्रहों (चंद्र-शूककर) का उपाय
करें। अगर इस तरह भी शर्त को मद्दे नज़र रखते हुए काम न बने तो बाकी मखन्नस
ग्रहों की मदद लें। मगर उपायों से बरबाद हो जाने वाले ग्रह का खयाल न भूल
जावें।

ii. खाना नंबर.....10.....में..... सनीचर का उपाय मदद करेगा।

iii. खाना नंबर.....12.....में केतु का उपाय मदद करेगा।

4 खाना नंबर 9 में इतफाकिया सूरज और मंगल मुश्तरका इकट्टे ही आ जावें ख्वाह बुध खाना नंबर 3 में हो ख्वाह खाना नंबर 9 में तो बुनियाद खाली तो न करेगा मगर न खुद बोलेगा न उनको बोलने देगा लसूडे की गिटक का हाल होगा मंदे मायनों में दोनों ग्रहों को सुला देगा। और खुद भी सोया हुआ होगा। चमगादड के मेहमान। जहां हम लटके वहां तुम लटको। उपाय खास- अरमान नंबर 62 से 94 -" ग्रह नष्ट में मदद" के मुताबिक- नाक में सुराख कर देना । बुध की तमाम गडबड से बचायेगा।

"सनीचर"

खाना नंबर..... 3.....में..... केतु का उपाय नेक फल देगा।

खाना नंबर...6....में...राहु का उपाओ इच्छाधारी सांप (मददगार) कर देगा।

खाना नंबर.....9.. में.....बृहस्पत का उपाय त्यागी गुरु की तरह मदद देगा।

" राहु "

राहु राशिफल का होगा खाना नंबर...1...में.....सूरज का उपाय मदद करेगा

राहु राशिफल का होगा खाना नंबर.....7..में.....सनीचर का उपाय मदद करेगा

" केतु"

केतु राशिफल का होगा खाना नंबर..4..में.....बृहस्पत का उपाय नेक फल देगा

केतु राशिफल का होगा खाना नंबर..10..में.....मंगल का उपाय मदद करेगा।

मंदरजा बाला खाने 1-7-4-10 बंद मुट्टी के खाने हैं। इन घरों में राहु या केतु के राशिफल में सिर्फ उन घरों के ऊंच ग्रह ही मदद दे सकते हैं।

कौन ग्रहफल का राजा हुक्मरान होगा	कौन इसका साथी वजीर राशिफल का होगा
1- बालिग शुदा ग्रह	नाबालिग ग्रह
2- 9 ग्रह	12 राशियां
3- किस्मत का ग्रह	किस्मत को जगाने वाला ग्रह
4- एक दो तीन की तरतीब से पहले घरों के ग्रह जबकि वो अपनी जगह से मिले हुए हों।	बाद के घरों के ग्रह जबकि वो अपनी अपनी मुकरर जगह से चल कर किसी दूसरी मुकरर जगह हों।

आम तौर पर वर्षफल के हिसाब से तख्त पर आ जाने वाला राजा बनता है। और राशि

नंबर के हिसाब से बोलने वाला वजीर बनता है। लेकिन अगर ऐसे राजा और वजीर में कुण्डली के पहले घरों और बाद के घरों में होने का सवाल भी साथ झगडा खडा करे तो पहल घरों वाले बेशक आम असूल पर वजीर बनता होवे। मगर अब वो राजा हो जाएगा और बाद के घर वाला इसका वजीर बनेगा। बेशक वो राजा बनने का हकदार है।

कौन ग्रहफल का राजा हुक्मरान होगा	कौन राशिफल का इसका साथी वजीर होगा
<p>व्योतिष में :-</p> <p>5. खाना नंबर 1 के ग्रह (या मकान खुद साखता)</p> <p>6. ग्रह का इसके अपने कायम होने की हालत का असर।</p> <p>7. तख्त का मालिक ग्रह अपने तख्त के दौरा तक।</p> <p>8. महादशा में धोके का 12 साला चक्र।</p> <p>9. महादशा में हो जाने वाला ग्रह।</p> <p>10. जनम वक्त का ग्रह (पक्की दोपहर मंगल-शाम पूरी राहू वगैरह) हस्त रेखा में</p> <p>11. 21 साला उम्र से रेखा।</p> <p>12. वो ग्रह जिसका कि वो इन्सान हो।</p>	<p>खाना नंबर 9 के ग्रह या मकान जदी</p> <p>ग्रह की बाहम दृष्टि का असर।</p> <p>राशि नंबर के हिसाब से उम्र पर बोलने वाले ग्रह। अपने राशि नंबर में बोलने की म्याद तक यानि 3 साल।</p> <p>तमाम उम्र पर धोके का 12 साला चक्र महादशा वाले ग्रह के दोस्त/बराबर के ग्रह जनमदिन का ग्रह (मुफ़फ़सल अरमान नंबर 9 में देखें) (इतवार सूरज-बीरवार बृहस्पत वगैरह)</p> <p>12 साला उम्र तक रेखा ।</p> <p>वो ग्रह जिसका कि इसका मकान हो।</p>

13. मर्द का दायां हाथ मर्द के खुद अपने लिये। मर्द का बायां हाथ मर्द के खुद अपने लिये।

14. औरत का बायां हाथ औरत के अपने लिये। औरत का दायां हाथ औरत के अपने लिये।

15. मर्द का बायां हाथ इसकी औरत के लिये ग्रह मर्द का दायां हाथ इसकी औरत के लिये फल का नेक नजारा देने वाला। (नंबर 16 खाली है)

17. औरत का बायां हाथ इसके खाविंद के लिये ग्रह औरत का बायां हाथ उसके खाविंद के लिये फल का नेक नजारा देने वाला

18- बच्चा दोनों के लिये राशिफल के देने वाला हुआ करता है।

19- दायां हाथ पर से लिये गये नरग्रह प्रबल। बांये हाथ से लिये हुए स्त्री ग्रह प्रबल।

और मखब्रस ग्रह दोनों में से किसी भी हाथ पर से लिये हुए हर तरफ अपने अपने घरों का जिसमें कि वो पाये जायें असर करने वाले होंगे। औरत का यही हाल उल्ट हाथों से होगा।

ii ग्रहों का निशान हथेली पर और उंगलियों की पोरियों पर राशि का निशान पक्के असर का होता है। लेकिन इसके बरखिलाफ़

ग्रहफल का होगा	राशिफल का होगा
20 उंगलियों की पोरियों पर जिस ग्रह का निशान हो। उस ग्रह की वो राशि (ऋहाह एक मुकर्रर राशि हो ऋहाह उसके लिये दो मुकर्रर हो) जिसका कि वो घर का मालिक ग्रह कहलाता है और उस राशि नंबर के तमाम ग्रह जिस राशि नंबर की पोरी पर कि वो ग्रह निशान पाया जावे। ग्रहफल का होगा।	हथेली पर जिस राशि का निशान हो। उस राशि का मालिक ग्रह ओर हथेली के उस राशि नंबर में जिस नंबर पर कि वो निशान पाया जावे। होने वाले तमाम ग्रह राशि फल के होंगे। ii अंगुली की पोरी पर अगर किसी नंबर पर उसी नंबर की राशि के इलावा किसी गैर राशि का निशान पाया जावे तो वो राशि जिसका कि वो निशान है और वो राशि नंबर की जिस में की वो निशान हो तमाम ही ग्रहों के लिये राशिफल का होगा। ऋहाह वो दोस्त हो या दुश्मन।

कौन ग्रहफल राजा हुक्मरान होगा	कौन राशिफल इसका वजीर साथी होगा
21. मच्छ रेखा काग रेखा धन रेखा या श्रेष्ठ रेखा वगैरह वगैरह मुकर्रर रेखायों से कोई भी या हथेली पर के ऋहास निशान जिन का जिकर लाल किताब सफ़ा 76 ता 78 पर दर्ज है। अपनी अपनी मुकर्रर जगह और दायें हाथ पर वाक्या हों। तो ग्रहफल के और अगर अपनी जगह पर की बजाये किसी और जगह मगर दायें ही हाथ पर हों। तो महादशा जिसमें केतु का ताल्लुक होगा असर देंगे।	मच्छ रेखा वगैरह मय ऋहास निशान लाल किताब सफ़ा 76 ता 78 पर मुकर्रर जगह मगर बायें हाथ पर तो राशि फल के होंगे। और अगर बायें ही हाथ पर मगर अपनी अपनी मुकर्रर जगह की बजाये किसी और जगह पर पाये जावें तो महादशा (जिसमें राहु का ताल्लुक हो) का असर देंगे।

अपनी मुकर्रर जगह की बजाये जब मच्छरेखा काग रेखा वगैरह किसी और जगह वाक्या हों तो जिस ग्रह की राशि या पक्के घर में बालिहाजा बुरज व रेखा वो वाक्या होवे। उस ग्रह की पूजना से नेक फल होगा। मसलन मच्छ रेखा बुध की सिर रेखा पर वाक्या हो तो सनीचर व बुध की चीजों की पालना यानि स्याह परिन्द व कच्चे की पालना करना मुबारिक अगर शुक्र पर हो तो स्याह गावये वगैरह को पूजना पालना मुबारिक फल पैदा करेगा।

जुज 22

आम तौर पर जनम कुण्डली ग्रहफल का असर	आम तौर पर चंद्र कुण्डली राशिफल का असर
23. मर्द की जनम कुण्डली खुद मर्द के लिये मर्द पर असर ग्रहफल का।	मर्द की चंद्र कुण्डली खुद मर्द केलिये मर्द पर राशि फल का करिश्मा यानि महादशा की हालत के उल्ट नेक और अचानक चमकारा।
24. मर्द की चंद्र कुण्डली इसकी औरत पर ग्रहफल का नेक नजारा यानि महादशा के अरसा में खाली साल रखे हुआओं में क्रिस्मत का नेक और अचानक असर देगी।	मर्द की जनम कुण्डली इसकी औरत पर राशिफल (आम साधारण) का असर देगी।
25. औरत की जनम कुण्डली औरत के लिये औरत पर ग्रहफल का असर देगी।	औरत की जनम कुण्डली इसके खाविद के लिये आम हालत की राशि फल का असर देगी।
26. औरत की चंद्र कुण्डली इस के खाविद के लिये ग्रहफल का नेक नजारा (महादशा के खाली सालों में क्रिस्मत की अचानक व नेक चमक होगी।	औरत की चंद्र कुण्डली औरत के लिये औरत पर राशिफल ।

अरमान नंबर 7

ग्रहण:- महादशा से मुराद दुन्यावी खयाल में ग्रहण का जमाना होता है। सामुद्रिक में ग्रहण तमाम ही ग्रहों के लिये मुकर्रर है । जिस का मुफ्रसल हाल महादशा में दर्ज है।

अरमान नंबर 8

दो चीजों के/को इकट्टा होने/करने की हालत का नाम गांठ या ग्रह कहलाता है या दूसरे लफ्जों में बृहस्पत (हवा) बुध (आकाश) को इकट्टे बांध देने वाली चीज की ताकत या बच्चे

की क्रिस्मत की उलझन पैदा करने वाली चीज ग्रह है। जिसका असर हूँ बहूँ "रस्सी जल गई - मगर बट्ट न गया" की मिसाल से जाहिर है। रस्सी को मोड़ तोड़ कर इधर उधर पक्के तौर पर किये रखने वाली चीज का नाम ग्रह है। जो "रस्सी का बट्ट" है। उम्र खत्म हुई मगर क्रिस्मत का ताल्लुक चलता रहा।

अरमान नंबर 9

अंग्रेजी हिसाब में रात के 12 बजे के बाद दूसरा दिन शुरू होता है। मगर इल्म सामुद्रिक में सूरज निकलने से नया दिन शुरू होता है। यानि रात को गुजरे हुए दिन का हिस्सा लेकर नये सूरज से दूसरा दिन शुरू गिनेंगे।

हफ्ते में ग्रह का दिन

एक दिन में ग्रह का वक़्त

बृहस्पत.....वीरवार

सूरज निकलने से दिन का पहला हिस्सा

सूरज.....इतवार

दिन के पहले हिस्से के बाद मगर पक्की दोपहर से पहले।

चंद्र.....सोमवार चांदनी रात

शुक्र.....शुक्रवार अंधेर पक्ष और चानन पक्ष की दरम्यानी या अमावस की रात।

मंगल(दोनों)...मंगलवार

पूरी दोपहर का हिस्सा।

बुध.....बुधवार

दोपहर के बाद मगर पूरी शाम से पहले।

सनीचर.....सनीवार

काली रात या घनघोर काले बादल का दिन

राहु वीरवार की शाम पक्की

पूरी शाम मगर रात से पहले।

केतु..इतवार की सुबह

सुबह सादिक मगर सूरज निकलने से पहले।

सादिक

एक दिन में हर ग्रह का पक्के तौर पर मुकरर वक़्त की युनिट के लिये फ़ि यूनिट का वक़्त 40 मिनट वगैरह लाल किताब 117 सफ़ा पर दर्ज है।

नर ग्रहों (बृहस्पत, सूरज, मंगल) का राज दिन- स्त्री ग्रहों (चंद्र शुक्र) का राज रात और मख़न्नस (बुध मय पापी ग्रह) ग्रहों का राज दिन रात दोनों के मिलने का वक़्त या सुबह शाम होगा।

जनम दिन और वक़्त जनम का जब एक ही ग्रह हो जावे (मसलन मंगलवार का दिन और मंगलवार की पक्की दोपहर के वक़्त की पैदाइश) तो ऐसा ग्रह कुण्डली वाले का कभी बुरा न करेगा।

और न ही कभी धोका देगा। बल्कि माँत भी उसी दिन और उसी दिन के उसी वक्त न होगी। बेशक चंद्रमा के हिसाब से (लाल किताब सफ़ा 320 जुज 9) माँत का वो दिन आवे। बशर्तेकि कुण्डली में भी वो ग्रह (वही मिसाल मंगल जो ऊपर कहा वगैरह) कायम होवे। कायम की तारीफ़ जुदी जगह लिखी है। बाकी हालतों में जबकि जनम दिन तो किसी ग्रह का हो और जनम वक्त किसी और ही ग्रह का हो तो ऐसी हालत में जनम दिन और जनम वक्त के ग्रहों की सब हालतें ग्रहफल राशिफल बराबर के ग्रह या बाहमी दोस्ती दुश्मनी के नतीजे का असर होगा।

1. जनम वक्त को गिनते हैं.....किस्मत का ग्रह और ग्रहफल का।
2. जनम दिन को गिनते हैं.....किस्मत के ग्रह को जगाने वाले ग्रह का पक्का घर मसलन पँदाइश हो सोमवार बवक्त पक्की शाम। अब राहु (जनम वक्त का ग्रह) होगा चंद्र (जनम दिन) के पक्के घर नंबर 4 में। यानि कुण्डली वाले के लिये जब कभी और जो भी ख़ाना नंबर 4 का असर होगा राशिफल का होगा। जिसका चंद्र के उपाय से नेक असर होगा या राहु इस शख्स के ख़ाना नंबर 4 की चीजों पर बुरा असर करने के वक्त राशि फल का होगा। ख़ाह वो ग्रह (जनम वक्त का) अरमान नंबर 6 के मुताबिक राशिफल का न भी हो। लेकिन अगर जनम वक्त का ग्रह (पँदाइश के हिसाब से जो भी होवे) ऊपर की मिसाल के मुताबिक अरमान नंबर 6 में हर ग्रह के ख़ास ख़ास घर राशिफल वालों में आ जावे तो अरमान नंबर 6 में दिया हुआ उपाय मददगार होगा। जिसके लिये बदला जाने वाला या उपाय के काबिल जनम दिन का ग्रह लेंगे जनम वक्त का नहीं।

मसलन किसी की मंगलवार सुबह के बाद दिन का पहला हिस्सा (बवक्त बृहस्पत) पँदाइश है। अब जनम वक्त बृहस्पत का ग्रह मंगल के पक्के घर ख़ाना नंबर 3 में होगा। फरजन अब बृहस्पत का ग्रह ख़ाना नंबर 3 का होता हुआ (लाल किताब सफ़ा 180 पहली सतर ऊपर से) बीमारी ही बीमारी खड़ी करता जावे तो मंगल का ग्रह राशिफल का होगा। जो जनम दिन का ग्रह गिना था। अब अरमान नंबर 6 में देखा तो मालुम हुआ कि मंगल सिर्फ़ ख़ाना नंबर 4 और 6 में ही राशिफल का लिखा है। मगर ऊपर की मिसाल में मंगल ही उपाय के काबिल है। बृहस्पत का उपाय तो कर ही नहीं सकते यानि जायज़ नहीं। ऐसी हालत में मंगल का आम उपाय ब-मूजब लाल किताब सफ़ा 118 जुज 5 करना मददगार होगा।

अरमान नंबर 10

किस्मत:- हरइक किस्मत के ग्रह को (अरमान नंबर 122 से मुतल्लका) किस्मत रेखा कहते हैं। जिसके जागने का वक़्त किस्मत के असर का वक़्त होगा। किस्मत के ग्रह कई एक हों तो वा सब बाहम पूरे मददगार होंगे। सबसे अच्छी किस्मत बृहस्पत का किस्मत का ग्रह होता है।

"किस्मत का ग्रह":- सबसे उत्तम दर्जा पर वो ग्रह होगा। जो राशि का ऊंच फल देने का (लाल किताब सफ़ा 114 फ़रमान नंबर 113) मुकर्रर है। जो हर तरह से कायम-साफ और दरुस्त हो और इसमें किसी तरह से भी "साथी ग्रह" होने बामुकाबिल के ग्रह या दुश्मन ग्रह का बुरा असर न मिला हुआ होवे। उसके बाद पक्के घर का ग्रह-घर का मालिक ग्रह - दोस्त ग्रहों का बना हुआ दोस्त ग्रह। किस्मत का मालिक ग्रह होगा।

किस्मत के ग्रह की तलाश की तरतीब:- सबसे पहले 12 राशियों के ऊंच फल देने वाले ग्रहों की तलाश करें। फिर 9 ग्रहों से जो उमदा हो ले लेंवें और बाद में बंद मुट्टी के खानों (1-7-4-10) के ग्रहों से जो उमदा हो लेंवें। ऊंच फल देने वालों में से जो सबसे तसल्ली बख़्स और ऊंच हो लेंवें। घर के मालिक ग्रहों से सबसे ज्यादा ताक़त (अरमान नंबर 27) वाले को लेंवें। अगर मुट्टी के चारों खाने ख़ाली (लफ़ख ख़ाली से मुराद है कि वहां भी पूरी तरह का किस्मत का ग्रह न होवे) हों तो ख़ाना नंबर 9 के ग्रहों को लेंगे। वो भी ख़ाली तो फिर ख़ाना नंबर 3 के ग्रहों को लेंवें। अगर वो भी ख़ाली तो ख़ाना नंबर 11 के ग्रह लेंवें। अगर वो भी ख़ाली तो ख़ाना नंबर 5 को लेंगे। वो भी ख़ाली हो तो दूसरा दरवाजा ख़ाना या नंबर 2 को लेंगे। अगर वो भी ख़ाली तो ख़ाना नंबर 6 देखेंगे। वो भी ख़ाली तो ख़ाना नंबर 12 में तलाश करेंगे और अगर वो भी ख़ाली हो तो ख़ाना नंबर 8 में बैठकर देखेंगे कि आया किस्मत का ग्रह जिसमें ऊपर की तमाम शर्तें न हों मर तो नहीं गया। (मुफ़सल जुदी जगह) ये तलाश जनम लगन की कूण्डली और चंद्र कुण्डली दोनों से होगी। हस्त रेखा में दायां और बायां हाथ दोनों और हस्त रेखा के तमाम हिस्से शामिल होंगे।

किस्मत के ग्रह को जगाने वाला ग्रह:- जब पहले घरों में कोई ग्रह न हो तो बाद के घरों के ग्रह सोये हुए माने जाते हैं। ऐसी हालत में किस्मत के ग्रह को जगाने वाले ग्रह की तलाश की जरूरत होगी और अगर बाद के घर खाली हों तो खाना नंबर को जगाने वाले ग्रह के उपाओ की जरूरत होगी जो कि खाली है। (ग्रह का जागना और खाना नंबर का जागना दो जुदी जुदी बातें हैं)।

अगर किसी पितरी रिन (खानदानी पाप जिसका जुदा लिकर है) महादशा या दूसरे सबब से किस्मत का ग्रह सो जावे नष्ट बरबाद या गुम ही हो जावे तो सब से पहले ऊपर किस्मत के ग्रह की तलाश की तरतीब से खाली खानों के घर के मालिक ग्रह को जगा दें। यानि इसका उपाय करें। बशर्तेकि वो किस्मत के ग्रह के बराबर का ग्रह होवे। या दोस्त होवे। इस के बाद महा दशा के वक़्त में काम देने वाले ग्रह लेवे। बाद अजां दुश्मन ग्रहों की दुश्मनी हटादे या राशिफल की हालत का फायदा उठावें। अगर ये भी काम न दे सके तो सूरज को कायम करें। अगर ये भी मदद न देवे तो पापी ग्रहों और सबसे आखिर पर बुध का उपाय करें।

खाना नंबर को जगाने वाले ग्रह

खाना नंबर को जगाने वाले ग्रह	मंगल	चंद्र	बुध	चंद्र	सूरज	राहू	शुक्र	चंद्र	बृहस्पत	सनीचर	बृहस्पत	केतू
खाना नंबर	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

किस्मत का असर:- अरमान नंबर 114 देखें।

किस्मत का फ़ैसला:- उम्र के लिहाज़ से धोके के ग्रह व वर्षफल और राशि नंबर के बोलने वाले ग्रहों का मुश्तरका नतीजा किस्मत का फ़ैसला करेगा।

मियाद उपाय - रियायती चालीस दिन:- चूंकि गिनती के लंबे हिसाब को इस इल्म में उडाने के लिये 28 नछतर और 12 राशि को बाद में छोड ही दिया जाता है। इसलिये दोनों की जमा (28+12) कुल 40 दिन रियायती तक कम अज कम या ज्यादा से ज्यादा 43 दिन तक उपाय का असर पूरा होगा। जिसकी निशानी वक़्त से पहले ही नेक ग्रह का असर हो जाने के वक़्त दोस्त ग्रह की चीजों की कुदरती निशानीयां और बुरे ग्रह की मियाद

40 दिन बाद तक रहने वाली हालत में पापी ग्रहों की निशानीयां हुआ करती हैं। दौरान उपाय 40 दिन की नसफ या चौथाई मियाद में भी नसफ या चौथाई असर मालूम होने लग जाया करता है।

अरमान नंबर 11

किसी ताक़त के ग्रह की पहचान (i) (बस्ये हस्त रेखा)

जिस किसी शख्स में जिस ग्रह की ताक़त ज्यादा होगी वो शख्स ज्यादा ताक़त वाले ग्रह की चीज का ज्यादा इस्तेमाल करने का आदी न होगा। मसलन सूरज को नमक माना है और मंगल को मीठा। अब सूरज वाले की आम आदत होगी कि वो ज्यादा नमक इस्तेमाल करने का आदी न होगा और अपनी कमी पूरी करने के लिये मीठा ज्यादा इस्तेमाल करने का आदी होगा। इसी तरह मंगल कायम वाला मीठा ज्यादा इस्तेमाल न करेगा। नमक का ज्यादा आदी या नमक ज्यादा मिकदार में खाने वाला होगा।

(ii) बस्ये कुण्डली- बंद मुट्टी के खानों (1-7-4-10) के ग्रह ख्वाह भले हों ख्वाह बुरे कुण्डली वाले की तबीयत और क्रिस्मत के बुनयादी पत्थर होंगे।

अरमान नंबर 12

बडी रेखा- हर ग्रह की मुकरर रेखा या पक्का ग्रह।

शाखें- हर ग्रह की मुकरर रेखा की शाख या ग्रह मशनोई हालत का।

पक्के ग्रह का असर अपनी मुतल्लका चीजों का जरूर होगा। मशनोई ग्रह अपने पक्के ग्रह की मुतल्लका चीजों का असर देगा। लेकिन वक़्त मशनोई ग्रह के हर दो जुज व अपने मशनोई हालत के दोनों जुजों के ग्रहों की मुतल्लका चीजों का असर भी दे जाता है। मसलन सूरज पक्का ग्रह है और शुक्र बुध मशनोई सूरज। अब सूरज हमेशा अपना असर सूरज रेखा या सूरज की सेहत या तरक्की रेखा खाना नंबर 1-5 असर देगा। लेकिन शुक्र बुध मुशतरका मशनोई हालत में सूरज का असर या शुक्र की आम या शुक्र की शादी रेखा और बुध सिर की रेखा का भी हर दो ग्रह खाना नंबर 7 का असर दे जायेगा। लेकिन वो भी उम्र के हर सातवें या हर आठवें साल (अल्प आयु)।

हस्त रेखा में 21 साला उम्र से रेखा बालिग और 12 साला उम्र तक नाबालिग गिनते हैं। मगर कुण्डली में वर्षफल के हिसाब से उम्र में जिस दिन से (सबसे पहली दफा) सूरज का राज या दौरा शुरू हो जावे। उस दिन से तमाम ग्रह बालिग गिने जाते हैं। ख़ाह उम्र 21 साल से कितनी ही कम या ज्यादा होवे।

(ii) सूरज अगर कुण्डली के ख़ाना नंबर 1-5-11 (जनम लगन को ख़ाना नंबर एक रखते हुए) में ख़ाह अकेला ख़ाह और ग्रहों के साथ होवे तो जनम दिन से ही तमाम ग्रह बालिग गिने जाएंगे।

(iii) सूरज का दौरा शुरू होने से पहले इन्सान पर इसके अपने पिछले कर्मों का फ़ैसला (अमुमन 7 या 8 साला उम्र या हर सातवें या आठवें साल) असर किया करता है। जो तबदीली का जमाना हुआ करता है।

अरमान नंबर 13

नाबालिग बच्चा (12 साल उम्र तक) की रेखा का कोई इतबार नहीं होता। मुमकिन है कि ऐसी उम्र तक वो पक्के असर की रेखा होंवे या तबदील हो जाने वाली हों।

इल्म ज्योतिष में :- बच्चे की बंद मुट्टी या कुण्डली के ख़ाना नंबर 1-7-4-10 ख़ाली हों या उन ख़ानों में सिर्फ़ पापी ग्रह या बुध अकेला (पापी ग्रह और बुध दोनों में से सिर्फ़ एक) हो तो इस की किस्मत का हाल 12 साल उम्र तक शक़्की होगा। ऐसी हालत में बच्चा (नाबालिग) की किस्मत (जबकि सूरज का ताल्लुक अरमान नंबर 12 न हुआ हो) पर मुंदरजा जैल असर होगा-

उम्र के हिसाब से असर का ख़ाना नंबर देखते जावें। अगर कोई ख़ाना नंबर ख़ाली ही आ जावें तो इस ख़ाली ख़ाना नंबर की राशि के मालिक ग्रह (घर का मालिक) जिस ख़ाने में होवे वह ख़ाना लेंवें।

उम्र का साल	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
किस ख़ाने के ग्रहों का असर लेंगे	7	4	9	10	11	3	2	5	6	12	1	8
12 साला धोके का ग्रह	सूरज	चंद्र	केतू	मंगल	बुध	सनीचर	राहू	मौत	पितृ ग्रह	बृहस्पत	शुक्र	राशि च्चतम

नाबालिग ग्रहों का बाकी आम उसूल होगा।

इस बात का वहम न करे कि एक ही ख़ाना नंबर के ग्रह कई बार क्यूं बोले। ऐसी हालत में ख़ास वक़्त पैदाइश के हिसाब का ग्रह तख़्त का मालिक ग्रह लेंगे। (अरमान नंबर 9 की मदद लेंवे)। लेकिन अगर जनम वक़्त जनम दिन दोनों ही मालूम न हों। तो किसी ख़ास वाक्या से लिया हुआ वर्षफल बनायेंगे।

नाबालिग हालत में "12 साला धोके का चक्कर" का खयाल जरूरी रखें (जिसका मुफ़सल ज़िकर अरमान नंबर 113 A में हुआ है) 12 साला धोके के चक्कर का ग्रह (साल नंबर के हिसाब से) तख़त का मालिक ग्रह होगा और ग्रह फल का और ख़ाना नंबर के ग्रह राशिफल के होंगे।

अरमान नंबर 14-15

मर्द-औरत, मां-बाप, बहिन-भाई, बडा-छोटा, दायां-बायां, बाप-बेटा, मां-धी, रात-दिन, जनम-मरण, शुरू व आख़िर, आकाश व हवा, नर ग्रह व स्त्री ग्रह, नेकी-बदी सब को गांठ लगाने वाला बच्चा और इसकी लगायी हुई गांठ ग्रह शक्र, अदल व रहम से इन्साफ़, राहु केतु मुश्तरका शुक्र तमाम गृहस्थ की शादी गमी, हस्त रेखा व ज्योतिष के सामुद्रिक के फ़रमान व अरमान, जनम कुण्डली व चंद्र कुण्डली के दोनों जहानों के मालिक बृहस्पत की हवा के आने जाने के रास्ते, बुध के ख़ाली ख़लाव के आकाश की अकल, सूरज की रोशनी व सनीचर के अंधेरे की मुश्तरका जगह मौत नमानी या उम्र का आख़िरी वक़्त सबसे पहले देखा जावे। मगर किसी दूसरे को जाहिर न किया जावे। ये भेद की ताक़त असल ताक़त होगी। जो ख़ाना नंबर 6 (पाताल-रहम) 8 (माँत-अदल) और 12 (आसमान-इन्साफ़) का नतीजा होगी। ख़लासतन ये तीनों ख़ाने सबसे पहले पूरे तौर पर पहले देख लिये जावे। वरना तमाम कहानी बेमायने होगी।

अरमान नंबर 16 व नंबर 55
इकट्ठे पढ़ें

रेखा का ऊपर नीचे को झुकाव कुण्डली में ग्रहों की बाहम दृष्टि से मुराद होगा। रेखा का ऊपर को उठाव या झुकाव से मुराद होगी कि इसमें इस ग्रह का असर आकर मिल रहा है। जिस ग्रह के बुर्ज की तरफ के वह रेखा उठ रही है। कुण्डली में पहले घरों के ग्रह अपने से बाद के घरों में अपना असर मिलाया करते हैं। सिवाय ख़ाना नंबर 8 जिसके ग्रह पीछे को देखते या अपने से पहले घरों में अपना असर मिला देते हैं। इस तरह जब तक पहले घरों का बुरा असर ख़त्म न हो। बाद के घरों के ग्रहों का नेक असर न होगा। ख़ाना नंबर की तासीर उल्ट गिनी है। (आगे देखेंगे अरमान नंबर 55 में)

हस्त रेखा व ज्योतिष का ताल्लुक

अरमान नंबर	
17	सब ही ग्रह नीच फल की राशि के (लाल किताब सफ़ा 114 फ़रमान नंबर 113 हों)
18	एक ही घर में बहुत ज्यादा ग्रह मगर नाकस या नीच ग्रह हों।
19	चौड़ी रेखा-कई तरफ की दृष्टि से टकराये हुए दुश्मन ग्रह।
20	मद्धम रेखा - बहुत दुश्मन ग्रह बामुकाबल
21	साफ रेखा-पक्के घरों के ग्रह या घर के ग्रह मगर कायम गहरी रेखा ऊंच घरों के ग्रह। (ऊंचफल की राशि के ग्रह - लाल किताब सफ़ा 114)
22	सनीचर के बामुकाबिल इसके दुश्मन ग्रह (सूरज चंद्र मंगल - लाल किताब सफ़ा 105) लफ्ज बामुकाबल असतलाहत (लफ्जों की तारीफ़) में खोलकर लिखा है।
23	अपने से सातवें घर को देखने वाले खानों के ग्रह यानि खाना नंबर 3 6 के ग्रह (तीसरा 9वें को देखता है मगर 9वां तीसरे को नहीं देखता। इसी तरह छटा बारवें को देखता है मगर 12वां छटे में अपना असर नहीं डाल सकता। सिवाय खाना नंबर 12 के बुध के क्योंकि बुध को आकाश माना है और खाना नंबर 6 पाताल और खाना नंबर 12 आसमान में भी खाली आकाश होता है) हर सातवें साल तबदीली हालात कर सकते हैं। खाना नंबर 8 मौत पीछे को देखने वाले घर के ग्रह हर आठवें साल तबदीली हालात दे सकते हैं।
24	ग्रहों का अपने दुश्मन ग्रहों की मुकर्ररा राशियों में होना या उन को दुश्मन ग्रहों का देखना उन के असर में खराबी का सबब होगा। इसके बरअक्स ग्रहों का अपने दोस्त ग्रहों की राशियों में जाना या उन को दोस्त ग्रहों का देखना या उनका अपने दोस्त ग्रहों का साथी ग्रह हो जाना। इन असर को मुबारिक करेगा।
25	राहु या केतु के साथ दोनों में से किसी एक के साथ बुध का हो जाना उन ग्रहों (राहु या केतु) के दौरा के वक्त अचानक आफ़त या मौत की निशानी होगी।
26	सिर्फ़ राशिफल या महादशा में ग्रह के नेक नजारा (जो चंद्र कुण्डली वर्गैरह का नतीजा हो सकता है) पर इतबार कर लेना वहम और धोके में रख लेने वाला असर हुआ करता है।

- 27 दौरा वाला ग्रह अपने दौरा के वक़्त सबसे पहले उस घर पर अपना असर जाहिर करेगा जहां की वो कुण्डली में बैठा होवे। इसके बाद अपने दुश्मन ग्रहों पर (ख़्वाह वो दुश्मन ग्रह उस घर में हों जहां कि वो खुद बैठा था)। बाद अजां दोस्तों पर और फिर अपने बराबर के ग्रहों पर। अगर किसी घर में एक से ज्यादा ग्रह बैठे हों तो वो दौरा वाला ग्रह हर इक ग्रह से ऊपर की तरतीब से बारी बारी टकरायेगा। (दुश्मनों से) और दोस्ताना बरताव करेगा। (दोस्तों से)। अगर एक ही घर में दौरा वाले ग्रह के कई दोस्त ही या कई दुश्मन ग्रह ही बैठे हों तो ग्रहचाल की तरतीब से (बृहस्पत के बाद सूरज के बाद चंद्र वर्गैरह) असर करेगा। अगर कुण्डली के खानों में दोस्त ग्रह जुदा और दुश्मन ग्रह जुदे घरों में ही होवे तो खानों की तरतीब से (नंबर 1 के बाद नंबर 2 के बाद नंबर 3 वर्गैरह) बरताव करेगा।

टकराव या बरताव पर पैमाना ताक़त :- जब दौरा या तख़्त का मालिक ग्रह और राशि नंबर के ग्रह बाहम टकराव पर हो जावे (टकराव दुश्मनी की हालत में होता है मिलाव या बरताव दोस्ती की हालत में)

सूरज	चंद्र	शुक्र	बृहस्पत	मंगल	बुध	सनी	राहु	केतु
१/१	४/१	७/१	६/१	५/१	५/१	३/१	२/१	१/१

दौरा के वक़्त ग्रहों के बाहमी टकराव से उनके बाहमी असर में कमी बेशी होने के इलावा किसी ग्रह के उपाय के लिये दूसरे ग्रह का उपाय करते वक़्त भी ये ताक़त का पैमाना मददगार होगा।

विसर्ग : चंद्र सनीचर मुश्तरका (हथियार तेज)

- 28 नर ग्रह नरों पर:-

बृहस्पत रूह के तालूकदारों पर असर देगा।

सूरज जिस्म के तालूकदारों पर असर देगा।

मंगल खून के तालूकदारों पर असर देगा।

स्त्री ग्रह मादीनों पर:-

चंद्रमाता की हैसीयत वाली पर असर देगा।

शुक्रऔरत की हैसीयत वालीयों पर असर देगा।

(बुध शुक्र का शादी के हाल में जुदा दर्ज है)

अरमान नंबर																											
खाना पर	मखन्स ग्रह :- सनीचर धाती जमादात पर - बुध बनातात पर - राहु हरकात दिमाग पर - केतु हरकात पांव पर																										
29	<p>साथी ग्रह:- जब कोई ग्रह आपस में अपनी अपनी मुकरर राशि। ऊंच नीच घर की राशि या अपने अपने पक्के घरों में अदल बदल कर बैठ जावें या अपनी जडों के लिहाज़ से इकट्ठे हो जावें तो साथी गह कहलाते हैं। मसलन सूरज का पक्का घर खाना नंबर 5 है और सनीचर का पक्का घर खाना नंबर 10 है। अब अगर सनीचर हो खाना नंबर 5 में और सूरज होवे खाना नंबर 10 में तो दोनों बाहम साथी ग्रह होंगे।</p> <p>बामुकाबिल:- जो ग्रह आपस में दोस्त हों और ऐसी हालत में बैठे हों कि खुद तो वो दोस्त ग्रह ही रहें। मगर उनमें से हरइक या किसी एक की जड पर आगे दुश्मन ग्रह हो जावें। ख़ाह वो खुद दोस्त ही हैं। लफ्च बामुकाबिल से याद होंगे। क्योंकि अब उन में किसी न किसी तरह से दुश्मनी भाव हो गया है।</p> <p>दोस्ती/दुश्मनी करता है/देखता है:- द्रष्टि के वक्त कुण्डली के खानों में एक दो तीन वर्गरेह की तरतीब से पहले घरों का ग्रह अपने बाद के घरों से /को दोस्ती दुश्मनी करता/देखता हुआ कहलाता है। सिवाये खाना नंबर 8 के जो खाना नंबर 2 को (पीछे की तरफ) देखता है। कुण्डली में पहले घरों के या बाद के घरों के ग्रह :-</p> <p>द्रष्टि और एक दो तीन हद बारह की तरतीब से जो घर या खाने पहले आ जावें। उन में बैठे हुए ग्रह पहले घरों के होंगे। यानि जो ग्रह दूसरे ग्रहों को देखते हों और हों भी गिनती की तरतीब से पहले नंबरों के।</p> <p>मसलन ग्रह वाक्या हों</p> <table border="1"> <tr> <td>खाना</td> <td>1</td> <td>7</td> <td>4</td> <td>10</td> <td>2</td> <td>6</td> <td>8</td> <td>12</td> <td>3</td> <td>9</td> <td>11</td> <td>5</td> </tr> <tr> <td>ग्रह</td> <td>सूरज</td> <td>सनीचर</td> <td>बृहस्पत</td> <td>मंगल</td> <td>चंद्र</td> <td>बुध</td> <td>-</td> <td>शुक्र</td> <td>राहु</td> <td>केतू</td> <td>-</td> <td>-</td> </tr> </table> <p>अब सूरज को कहेंगे कि वो सनीचर से पहले घरों का है। बृहस्पत को मंगल से पहले घरों का कहेंगे। अब मंगल से सूरज ,बृहस्पत,सनीचर हर एक या तीनों ही गिनती पर तो जरूर पहले नंबरों पर हैं। मगर मंगल से पहले घरों के ग्रह</p>	खाना	1	7	4	10	2	6	8	12	3	9	11	5	ग्रह	सूरज	सनीचर	बृहस्पत	मंगल	चंद्र	बुध	-	शुक्र	राहु	केतू	-	-
खाना	1	7	4	10	2	6	8	12	3	9	11	5															
ग्रह	सूरज	सनीचर	बृहस्पत	मंगल	चंद्र	बुध	-	शुक्र	राहु	केतू	-	-															

से मुराद सिर्फ़ बृहस्पत से होगी या मंगल अब बृहस्पत के बाद के घरों का ग्रह है। एक ही घर का ग्रह जब दों और घरों को देखें मसलन ख़ाना नंबर 3 देखता है। ख़ाना नंबर 9 और ख़ाना नंबर 11 को। अब ख़ाना नंबर 9-11 दोनों ही घरों के ग्रह ख़ाना नंबर 3 में बैठे हुए ग्रह से बाद के घरों के ग्रह होंगे।

(बे) पहले घरों वाले ग्रह अपने बाद के घरों में अपना फल मिलाया करते हैं। जब बोलें कि चंद्र दुश्मनी करता है शुक्र से तो मुराद होगी कि चंद्र है पहले घरों में शुक्र से।

कायम ग्रह

जो ग्रह हर तरह से दुरुस्त और अपना असर बग़ैर किसी दुश्मन ग्रह की मिलावट के साफ़ साफ़ और कायम रख रहा हो। यानि राशि नंबर-पक्के घर या दृष्टि बग़ैर किसी तरह से भी उसमें दुश्मन का असर न हो और न ही वो किसी दुश्मन ग्रह का साथी ग्रह बन रहा हो।

ग्रह का घर :- ग्रह की अपनी मुकर्रर राशि (लाल किताब सफ़ा 114 घर का मालिक होने की ऊंच या नीच फल की राशि) इस ग्रह के लिये इस ग्रह का घर कहलाता है। मसलन ख़ाना नंबर 3-6 बुध के लिये।

घर का ग्रह :- ग्रह का पक्का घर (लाल किताब सफ़ा नंबर 97 फ़रमान नंबर 103) इस ग्रह का घर कहलायेगा। मसलन ख़ाना नंबर 7 बुध के लिये।

दोस्त ग्रह/दुश्मन ग्रह :- लाल किताब सफ़ा 105 किसी ग्रह के सामने ख़ाना दोस्त-दुश्मन में लिखे हुए ग्रह उसके दोस्त/दुश्मन ग्रह कहलायेंगे। किसी दूसरे की मारफत दोस्त दुश्मन न गिनेंगे।

पापी ग्रह :- हमेशा राहु केतु और सनीचर से ही मुराद होगी।

ऊंच/नीच ग्रह :- जब कोई ग्रह ऐसी राशि में हों जो उसके लिये ऊंच फल/नीच फल की मुकर्रर की हैं। (लाल किताब सफ़ा 114)

बराबर के ग्रह :- लाल किताब सफ़ा नंबर 105 के ख़ाना वासते "बराबर की ताक़त के" में लिखे हुए ग्रह। मसलन नंबर 1 बृहस्पत के ग्रह की बराबर की ताक़त के।

पापी ग्रह :- सनीचर, राहु, केतु तीनों मुश्तरका (पापी ग्रह) लिखे जाते हैं। वो बृहस्पत के बराबर के ग्रह कहलायेंगे। सिर्फ़ राहु केतु मुश्तरका (पाप) के लिखे जाते हैं। वो शुक्र के बराबर के ग्रह कहलायेंगे। अरमान नंबर 113 A में मशनोई ग्रह के हाल में मुफ़सल पापीयों का हाल दर्ज है।

अरमान नंबर	
30	रेखा की दुरुस्त हालत के असर से मुराद ग्रह के कायम होने की हालत का असर और टूटी फूटी रेखा के असर से मुराद ग्रह के कायम न होने यानि दुश्मनी भाव वाली हालत या मंदी हालत का होने की हालत से मुराद होगी। दुरुस्त हालत में ग्रह की ऊंच हालत और टूटी फूटी की हालत में ग्रह की नीच हालत भी शामिल होगी। आगे दिये हुए अरमान नंबर 31 ता 56 में द्रष्टि के सब घर खाली माने गये हैं।
31	बृहस्पत होवे अपने पक्के घर खाना नंबर 2 में और खाना नंबर 6 में हो सनीचर या सूरज या चंद्र। (32-33 काम देव से दूर रहने वाला)
32	सूरज होवे अपने पक्के घर खाना नंबर 1 में और खाना नंबर 7 में हो बुध।
33	चंद्र होवे अपने पक्के घर खाना नंबर 4 में और खाना नंबर 7 में हो शुक्र। चंद्र शुक्र मुशतरका अपने पक्के घर खाना नंबर 4 या खाना नंबर 7 में और द्रष्टि के नंबर 10 व 1 खाने खाली हों।
34	चंद्र शुक्र मुशतरका पक्के घर खाना नंबर 4 में और खाना नंबर 10 में सनीचर मां का नेक असर मिला होगा। चंद्र शुक्र मुशतरका पक्के घर खाना नंबर 7 में और खाना नंबर 1 में सूरज। बाप का नेक असर मिला होगा।
35	चंद्र और बुध - बुध पहले घरों में चंद्र बाद के घरों की द्रष्टि के हिसाब से या दोनों बुध के किसी एक ही घर में इकट्ठे हों जावें तो मंदे नतीजे होंगे। चंद्र बृहस्पत मय बुध :- इकट्ठे हो जावें तो बृहस्पत और चंद्र दोनों मिलकर बुध को दबा लेंगे और कोई बुरा असर न होगा। अकेले चंद्र या अकेले बृहस्पत को बुध मार लेता है और बुरा असर कर देता है।
36	चंद्र बृहस्पत:- दोनों इकट्ठे होवें तो दोनों का मिला हुआ असर निहायत उत्तम होगा।
37	चंद्र के साथी/बामुकाबिल पापी ग्रह:- हो जावें तो चंद्र का अपना फल तो कुण्डली वाले के लिये उत्तम ही रहेगा। मगर वो दूसरो की मुसीबत पर मुसीबत देखता हुआ बेचैन ही रहतारहेगा।
38	चंद्र व चंद्र का पक्का घर - अगर चंद्र खुद तो अपने घर से बाहर किसी और जगह जाकर खराब नीच या नष्ट हो जावे। लेकिन चंद्र के पक्के घर (खाना नंबर 4) में कोई भी ग्रह सिर्फ अकेला ही ख़ाह वो चंद्र का दोस्त हो या दुश्मन आ बैठे

तो चंद्र का घर ही इस खाना नंबर 4 में आ बैठने वाले ग्रह को नेक फल का कर देगा। ख्वाह चंद्र इस ग्रह का साथी ग्रह हो या न हो। लेकिन अगर चंद्र अपने घर से बाहर मगर कायम या दरुस्त होवे। मगर इस ग्रह का साथी ग्रह न होवे तो वो दोस्ती या दुश्मनी का अपना असर जैसा भी कि इसका अपने घर से बाहर के घर में हो कायम रखेगा खाना नंबर 4 खाली और इधर उधर हर तरह से खाली तो तमाम ही ग्रह रद्दी होते हुए भी अकेला चंद्र का घर ही (चंद्र की भी परवाह नहीं कि ख्वाह कैसा ही मंदा होवे मगर होवे। खाना नंबर 4-10 से बाहर) मुकाबला करेगा और उत्तम फल देगा। अगर चंद्र के घर बैठने वाला ग्रह चंद्र का साथी ग्रह बन रहा हो तो चंद्र हमेशा नेक फल देगा। ख्वाह वो ग्रह चंद्र का दुश्मन ही हो। चंद्र से कोई दुश्मनी नहीं करता। चंद्र खुद ही अपना फल बंद कर दिया करता है। लेकिन ऐसी हालत में चंद्र अपना नेक फल देना बदस्तूर कायम रखेगा।

- 39 चंद्र बुध- 1) चंद्र पहले घरों में और बुध बाद के घरों की दृष्टि के हिसाब से या दोनों चंद्र के घर (खाना नंबर 4) में इकट्ठे हो जावे तो गैबी हाल अच्छा मगर दुन्यावी हालत में दोनों ग्रहों का मंदा फल होगा। अगर पापी ग्रह या दोनों में से किसी एक या दोनों के दुश्मन ग्रह का ताल्लुक हो जावे तो दोनों ग्रहों का अंदरूनी गैबी और जाहिरा दुन्यावी दोनों ही तरह का फल मंदा होगा।
- 2) दोनों ही जुदा जुदा होने की हालत में दोनों में से कोई भी जब दूसरे के घर हर तरह से अकेला हो नेक फल देगा। मगर जब दोनों मुश्तरका हों तो दोनों किसी एक के घर भी होने पर नेक फल न देंगे।
- 40 चंद्र मंगल दोनों ग्रह इकट्ठे साथी ग्रह की हँसीयत के या दोनों ही धन रेखा
- 41 या **3** इकट्ठे दोनो में से किसी एक के पक्के घर में बैठ जावे और हर हालत में दृष्टि के घर खाली हों धन श्रेष्ठ रेखा तो मंगल बद को भी मंगल नेक कर लेंगे या मंगल बद का तुख्म बद भी उडा देंगे और जंग व जदल- दुन्यावी गृहस्त (चंद्र मंगल के ताल्लुक) में हर तरह का नेक फल होगा।
- 42 चंद्र शनीचर :- अगर दोनों मुश्तरका चंद्र के घर खाना नंबर 4 में या दोनों

तो चंद्र का घर ही इस खाना नंबर 4 में आ बैठने वाले ग्रह को नेक फल का कर देगा। ख्वाह चंद्र इस ग्रह का साथी ग्रह हो या न हो। लेकिन अगर चंद्र अपने घर से बाहर मगर कायम या दुरुस्त होवे। मगर इस ग्रह का साथी ग्रह न होवे तो वो दोस्ती या दुश्मनी का अपना असर जैसा भी कि इसका अपने घर से बाहर के घर में हो कायम रखेगा खाना नंबर 4 खाली और इधर उधर हर तरह से खाली तो तमाम ही ग्रह रद्दी होते हुए भी अकेला चंद्र का घर ही (चंद्र की भी परवाह नहीं कि ख्वाह कैसा ही मंदा होवे मगर होवे खाना नंबर 4-10 से बाहर) मुकाबला करेगा और उत्तम फल देगा। अगर चंद्र के घर बैठने वाला ग्रह चंद्र का साथी ग्रह बन रहा हो तो चंद्र हमेशा नेक फल देगा। ख्वाह वो ग्रह चंद्र का दुश्मन ही हो। चंद्र से कोई दुश्मनी नहीं करता। चंद्र खुद ही अपना फल बंद कर दिया करता है। लेकिन ऐसी हालत में चंद्र अपना नेक फल देना बदस्तूर कायम रखेगा।

39	<p>चंद्र बुध :- 1) चंद्र पहले घरों में और बुध बाद के घरों की दृष्टि के हिसाब से या दोनों चंद्र के घर (खाना नंबर 4) में इकट्ठे हो जावें तो गैबी हाल अच्छा मगर दुन्यावी हालत में दोनों ग्रहों का मंदा फल होगा। अगर पापी ग्रह या दोनों में से किसी एक या दोनों के दुश्मन ग्रह का ताल्लुक हो जावे तो दोनों ग्रहों का अंदरूनी गैबी और जाहिरा दुन्यावी दोनों ही तरह का फल मंदा होगा।</p> <p>2) दोनों ही जुदा जुदा होने की हालत में दोनों में से कोई भी जब दूसरे के घर हर तरह से अकेला हो नेक फल देगा। मगर जब दोनों मुश्तरका हों तो दोनों किसी एक के घर भी होने पर नेक फल न देंगे।</p>
40	<p>चंद्र मंगल दोनों ग्रह इकट्ठे साथी ग्रह की हैसीयत के या दोनों ही धन रेखा</p>
41	<p>या</p> <p>इकट्ठे दोनो में से किसी एक के पक्के घर में बैठ जावें और हर हालत में दृष्टि के घर खाली हों धन श्रेष्ठ रेखा तो मंगल बंद को भी मंगल नेक कर लेंगे या मंगल बंद का तुख्म बंद भी उडा देंगे और जंग व जदल- दुन्यावी गृहस्त (चंद्र मंगल के ताल्लुक) में हर तरह का नेक फल होगा।</p>
42	<p>चंद्र शनीचर :- अगर दोनों मुश्तरका चंद्र के घर खाना नंबर 4 में या दोनों</p>

या साथी ग्रह हो जावें। पितृ रेखा का असर होगा। सनीचर ऐसी हालत में कुण्डली वाले के लिये इच्छाधारी मददगार सांप मगर गैरों के लिये खूनी सांप होगा। चंद्र खुनी कुआ होगा। दूसरो के लिये। कुण्डली वाले के लिये मानसरोवर इव्वत वाला होगा।

- 43 **शुक्र शनीचर :-** 1) शुक्र पहले घरों में होता हुआ सनीचर को देखता होवे तो सनीचर की तरह इसके दूसरे साथी इसका धन खाते जावें या वो दूसरों को खिलावे।
 2) दोनों ही शुक्र के पक्के घर मुश्तरका हों। निहायत करीबी रिश्तेदार इसका धन खा जाने वाले होंगे।
 3) दोनों ही सनीचर के पक्के और सनीचर के जाती घर खाना नंबर 10 में। सनीचर के काले कीड़े के भौन की तरह बेशुमार गृहस्ती इसके साथी होंगे खाने वाले और खिलाने वालों की क्रिस्मत का धन खाने पीने के लिये हर तरह से काफी होगा। मकानात बहुत बनेंगे। ख्वाह अपने ख्वाह दूसरों को बना दें।
 4) दोनों मुश्तरका सनीचर के घर खाना नंबर 10 में और मुकाबला में सूरज खाना नंबर 4 पर तो सनीचर का बुरा असर होगा। मगर उम्र लंबी होगी।
 5) दोनों मुश्तरका चंद्र के घर खाना नंबर 4 में और सूरज मुकाबला पर। सनीचर के अपने घर खाना नंबर 10 में। निहायत पुरदर्द मौत होगी।
- 44 **शुक्र सूरज :-** दोनों मुश्तरका बाद के घरों में और बृहस्पत इन से पहले घरों में देखता हो। शुक्र दोनों ही सूरज बृहस्पत के उत्तम असर का होगा। हालांकि वो दोनों अकेले अकेले का दुश्मन हैं।
- 45 शुक्र देखता हो सूरज को ख़ास कर जब शुक्र हो नंबर 1 में सूरज नंबर 7 हो तो निहायत बुरा असर मुतल्लका सेहत व जिस्म होगा तपेदिक वगैरह।
- 46 **शुक्र बुध :-** दोनों ग्रह मुश्तरका या बाहम इकट्टे हो रहे हों बलिहाजा द्रष्टि मगर सूरज का ताल्लुक न हो तो दोनों का उत्तम असर ख़ास कर बुध का निहायत उत्तम या मशनोई सूरज होगा।

47	<p>शुक्र मंगल :- दोनो मुश्तरका बृहस्पत के पक्के घर (खाना नंबर 2) में तो ससुराल खानदान से मीठी खांड की तरह का उमदा असर व दौलत का फायदा होवे।</p>
48	<p>बुध अकेला :- बृहस्पत के पक्के घर नंबर 2 में या अपनी ऊंची राशि के फल के खाना नंबर 6 में अकेला मगर हर दो हालत में द्रष्टि के सब घर खाली और बुध हर तरह से अकेला ही हो तो बुध का अपना असर उत्तम और "राज योग " होगा।</p>
49	<p>बुध सूरज :- 1) बुध जब सूरज को या सूरज बुध को देखता हो या दोनो बुध के पक्के घर (खाना नंबर 7) या दोनों साथी ग्रह या दोनो सूरज के ऊंच घर (खाना नंबर 1) में हों तो उमदा असर होगा।</p> <p>2) दोनों बृहस्पत के पक्के घर (खाना नंबर 2) में मुश्तरका या इकट्टे हो रहे हों यानि सूरज नंबर 8 और बुध नंबर 2 में तो असर जिस्मानी दिमागी उमदा मगर माली हल्का।</p> <p>बुध शनीचर :- (1) दोनो मुश्तरका या दोनों बाहम द्रष्टि से मिल रहे हों या साथी ग्रह हो जावें तो परिंदा होता हुआ उडने वाले बाज की नजर व ताकत का और सांप होता हुआ उडने वाला सांप। हर दो हालत में कुण्डली वाले के लिये उमदा असर के।</p> <p>(2) दोनों मुश्तरका या ऊपर की हालत में होने पर चंद्र का साथ हो जावे या दोनों मुश्तरका खाना नंबर 4 चंद्र के पक्के घर में ही हो जावें तो दोनों दूसरों के लिये खूनी होंगे और साथ ही कुण्डली वाले के लिये चंद्र का फल मंदा होगा।</p>
50	<p>(3) ऊपर की शर्त मजकूर नंबर 2 यानि चंद्र का साथ या चंद्र का असर बजरिया द्रष्टि साथ होते हुए दोनों बुध के पक्के घर सूरज की ऊंच फल की राशि या पक्का घर (खाना नंबर 1) या शनीचर के पक्के घर (खाना नंबर 10) या बृहस्पत के पक्के घर (खाना नंबर 2) में हों तो दोनों का नेक असर होगा। अपने पक्के घर का बुध (खाना नंबर 7 का) कभी भी किसी दूसरे साथी ग्रह-द्रष्टि के असर से मिलने वाले का या मुश्तरका ही साथ होने वाले का ख्वाह दोस्त हो ख्वाह दुश्मन बुरा असर न होने देगा।</p>

51	<p>मंगल नेक बृहस्पतः- दोनों किसी तरह भी बृहस्पत के पक्के घर खाना नंबर 2 में इकट्ठे हो रहे हों तो औरत खानदान या ससुराल का ताल्लुक होगा। लेकिन खाना नंबर 8 में उन दोनों के इकट्ठे होने से (दृष्टि वगैरह या मुश्तरका ही) कुण्डली वाले के अपने ही खानदान वालों के हालात पर असर होगा।</p>
52	<p>मंगल बद व सूरजः- अकेले मंगल को सूरज का ताल्लुक मंगल नेक करता है। लेकिन मंगल बद (मुफ़फ़सल जुदी जगह लिखा है कि किन किन हालतों में मंगल को मंगल बद लेंगे) को सूरज की मदद या मंगल बद से सूरज का ताल्लुक मंदे हाल और करीबी रिश्तेदारों की माँतें वगैरह होगा।</p>
53	<p>दो ग्रह मुश्तरका ख़ाह बाहम दोस्त हों या दुश्मनः- बंद मुट्टी के अंदर के ग्रह हवाला अरमान नंबर 1 (सूरज -बृहस्पत-मंगल-शनीचर) मय बुध अपने पक्के घर का। हवाला अरमान नंबर 50 में से कोई खाना नंबर 1-7-4-10 (बंद मुट्टी के खाने) और खाना नंबर 2 (गुरुद्वारा धर्म मंदिर के अंदर) जानों पर (यानि मुतल्लका उम्र) कभी बुरा असर न देंगे। जब तक जब तक कि स्त्री ग्रहों (चंद्र शुक्र) का ताल्लुक या साथ न हो जावे। स्त्री ग्रहों के साथ या ताल्लुक हो जाने पर सनीचर का असर (अगर सनीचर शामिल हो) अपने एँवंट राहु केतु का बुरा असर देगा। क्योंकि राहु केतु को सनीचर की बुनियाद गिना जाता है।</p>
54	<p>तीसरे घर का असर- कुण्डली के खानों में पहले व तीसरे या हर तीसरे घर (दोनों के दरम्यान सिर्फ़ एक खाना छोड़कर मसलन 1-3-5-7 में पहला तीसरा, तीसरा व पांचवां, पांचवा व सातवां) का असर कभी पहले घर में नहीं आ सकता। पहले व तीसरे को इस तीसरे घर की शर्त में लेंगे। पहले व पांचवे को इस तीसरे घर की शर्त में न लेंगे। लेकिन अगर बुध की नाली के वक़्त (जिस का मुफ़फ़सल ज़िकर बुध में है) तीसरे घर का असर पहले घर में आ जावे तो ऐसी हालत में पहला घर ख़राब असर का या गला सडा हुआ या पहले घर के ग्रहों का असर बुरा ही लेंगे। ख़ाह वो सब मिलने वाले ग्रह बाहम या बुध या शुक्र या दोनों के दोस्त या दुश्मन ही हों। बुध की नाली के वक़्त</p>

	<p>पहले घर के ग्रहों का असर तीसरे घर के ग्रहों में भी मिल सकता है। ऐसी हालत में तीसरे घर में इकट्ठे होने वाले ग्रहों का मंदा ही असर न लेंगे। हो सकता है कि वो मौका के मुताबिक नेक फल के हों। तीसरा रलिया ते घर गलिया (तीसरा घर मिला तो पहला बरबाद या खराब हुआ) मगर पहला रलिया ते तीसरा गलिया न लेंगे।</p>
55	<p>जो पहले घरों का असर बाद के घरों में मिलने का नतीजा ये होगा कि जब तक नंबर 16 से पीछे से बाद के घरों में किसी ग्रह का बुरा असर आना बंद न हो जावे या पहले मिला है घरों के बुरे ग्रह की म्याद तक बाद के घरों के ग्रहों का नेक असर न होगा। यही असूल खाना नंबर 8 के ग्रहों का नंबर 2 के ग्रहों के लिये होगा। लेकिन अगर खाना नंबर 8 में सूरज बृहस्पत या चंद्र में से कोई भी अकेला अकेला या कोई दो या तीनों ही मुश्तरका बैठ जावें तो खाना नंबर 8 न आगे को खाना नंबर 12 को और न ही पीछे को खाना नंबर 2 को देखेगा। बल्कि खाना नंबर 8 का ऐसा असर सिर्फ खाना नंबर 8 में ही बंद हुआ गिना जायेगा। गोया मौत के घर को (सूरज बृहस्पत चंद्र मुश्तरका) योगी जीत लेगा।</p>
56	<p>दो से ज्यादा ग्रह मुश्तरका- (लाल किताब सफ़ा 266 नोट के नीचे जुज 9 से मुतल्लका अश्मान नंबर 151 का नोट):- जब दो से ज्यादा ग्रह एक ही घर में (दृष्टि से मिले हुए दो से ज्यादा से मुराद नहीं बल्कि एक ही घर में मुश्तरका और दो से ज्यादा) बैठ जावें तो वो अपनी दृष्टि के जरिये अपना असर अपने बैठे हुए घर के बाहर किसी दूसरे घर पर नहीं कर सकते। जब तक कि उस घर में जहां की उनकी दृष्टि हो सकती है कोई और ग्रह न बैठा होवे। अगर इनकी दृष्टि पहुंचने के घर का ग्रह (अगर बहुत ग्रह हों तो हरइक को अल्लैहदा अल्लैहदा गिन कर देखेंगे।) उन ग्रहों का दोस्त ग्रह हो (किसी एक का या सब का ही) तो बाद के घर का ग्रह जो इन का दोस्त है खुद खराब न होगा। यानि इसका असर अपना खराब न होगा। बल्कि बाद के घर की चीजों पर उनका पहले घर के मिले हुए ग्रहों का असर उस बाद के घरों में अच्छा या बुरा जैसा भी होगा। यानि वो ग्रह उन ग्रहों की रोशनी को नाली की तरह उस घर में आ जाने देगा।</p>

लेकिन अगर वो ग्रह उन का दुश्मन हो तो वो खुद ही बरबाद होगा और उन ग्रहों के असर को अपने बैठने वाले घर की चीजों पर न फैलने देगा। (दो से ज्यादा ग्रहों का उस घर के अंदर अंदर का बाहमी ताल्लुक दूसरी जगह दर्ज है। (अरमान नंबर 151 के आखिरी नोट में)

57 बाप बेटे की मुश्तरका किस्मत- दोनों की किस्मत का जुदा जुदा असर 100 फ़ीसदी की दृष्टि से मिला हुआ असर गिना जाता है। दोनों के वर्षफल के हिसाब से तख्त के मालिक ग्रहों से जो ग्रह (बृहस्पत के बाद सूरज के बाद चंद्र के बाद शुक्र के बाद मंगल वगैरह) असर की तरतीब से पहली तरफ का हो वो दोनों की मुश्तरका किस्मत का असर लेने के वक़्त अब तख्त का मालिक ग्रह और ग्रह फल का होगा। दोनों की जुदी जुदी उम्र के सालों के हिसाब से राशि नंबर के बोलने के ग्रहों को जुदा जुदा दोनों के लिये राशिफल के लेंगे। यानि दोनों की मुश्तरका किस्मत का हाल देखने के लिये तख्त का मालिक ग्रह तो दोनों के लिये एक ही ऊपर के ढंग से लिया हुआ होगा। मगर उम्र के लिहाज़ से राशि नंबर के बोलने वाले ग्रह दोनों के अपने अपने और जुदा जुदा होंगे। ऐसी मुश्तरका किस्मत की तबदीली का साल जो हर शख्स के लिये अकेले हाल के लिये गिना जाता है। लाल किताब सफ़ा 25 पर बाप बेटे की औसत किस्मत के लिये दिये हुए नक्शे के मुताबिक होगा। यानि बेटे की एक साला उम्र बाप की 70 साला उम्र पर असर करेगी और बेटे की सात साला उम्र की किस्मत का असर बाप की 63 साला उम्र की किस्मत पर असर देगा। ऊपर का असर देखने के लिये दोनों के ग्रहों का बालिग़ या नाबालिग़ होने का तरीका जो जुदा जुदा है। भूल न जावें। ऊपर का असूल दोनों के बालिग़ होने की हालत का है। दोनों में से ग्रहचाल में (उम्र के लिहाज़ से नहीं) जो नाबालिग़ हो उसका हाल छोड़ ही देंगे और बालिग़ ग्रहों वाले का आम अकेले आदमी का हाल देखने के असूल पर देख लें। अब बालिग़ ग्रहों वाले की किस्मत का असर नाबालिग़ ग्रहों वाले की किस्मत पर प्रबल होगा।

58 (ये अरमान दरअसल अरमान नंबर 97 व 98 का जुज है।)

अंगूठा :- राहु केतु मुश्तरका का मशनोई शुक्र (दुन्यावी मुहब्बत का ताल्लुक) लाल किताब सफ़ा 31 के जुज (अंगूठे की पोरीयां) अलिफ) नाखून वाली पोरी..केतु से मुतल्लका। (बे) (बचपन-फैलना-मरजी)

दरम्यानी पोरीराहु से मुतल्लका। जवानी, सिकुडना, दलील **निचली पोरी**..शुक्र पक्का ग्रहसे मुतल्लका बुढापा, टूट फूट की रेत(बुध का पैदा हो जाना)-इश्क।

सीन) (मोटा हिस्सा) - केतु होवे दुश्मन ग्रह की राशि में मुफलिसी देगा। गरीब करेगा।

(छोटा हिस्सा)- केतु होवेदुश्मनों के साथ या उनके पक्के घरों में :- वहशी, हँवानी ताक़त, कम-दौलत।

बाहर को झुकाव:- केतु होवे...खाना नंबर 12 मेंरिश्तेदारों को तारे।

सीधा रहे:- केतु होवे....खाना नंबर 6 में.....अपने दुश्मनों को मारे केतु होवे..... 9 में.....वालदैन को तारे यानि नेक असर देवे।

अंदर को झुके:- केतु होवे.....3 में..... भाइयों से तंग करावे।

राहु:- राहु का गृहस्त से ताल्लुक नहीं। फर्जी सोच विचार। अपने ही आप पर या दुश्मनों पर छुपा छुपाया असर। रुहानी ख़ासीयतें और उनका या उन पर असर जिस्मानी या बदनी असर न होगा।

जिस कदर ख़ाना नंबर 8 में राहु केतु मुश्तरका के उनके अपने दुश्मन ग्रहों का जोर बढता जावे उसी कदर ही ऐंसा शख्स जन मुरीदी और जादु मंतर की ख़ासीयतों की तरफ बढने वाला होवे।

अंगूठे की पोरीयां पर जौ के निशान को चंद्र का निशान माना गया है।

(1) अंगूठे की नाखून वाली पोरी की जड पर हो जौ के निशान यानि चंद्र होवे :- केतु के घर की जड पर यानि ख़ाना नंबर 6 को ख़ाना नंबर 2 से देखता हो। (मगर केतु के साथ नहीं अकेला चंद्र) तो बचपन का जमाना चंद्र की ठंडी और साफ रोशनी की तरह उमदा असर का होगा। जनम भी इसका चानन पक्ष का होगा।

2) अंगूठे की दरम्यानी पोरी की जड पर हो जौ का निशान यानि चंद्र होवे राहु के घर ख़ाना नंबर 12 की जड या ख़ाना नंबर 6 में (मगर राहु के साथ नहीं सिर्फ़ अकेला ही चंद्र वहां हो) तो जवानी का जमाना उमदा असर का होगा। जनम इसका अमावस का होगा।

(iii) अंगूठे की निचली पोरी की जड पर हो जो का निशान चंद्र होवे राहु केतु दोनों के मुश्तरका काम करने के मैदान यानि खाना नंबर 8 की जड खाना नंबर 4 "नाभी" (अरमान नंबर 59) में (मगर दोनों ग्रहों का साथ न हो वहां खाना नंबर 4 में और सिर्फ चंद्र अकेला ही खाना नंबर 4 में हो) तो इस शस्त्र की उम्र लंबी और बुढापा उमदा असर का होगा और इसका जनम शुक्ल पक्ष का होगा।

(1) राहु केतु मुश्तरका - हवाई ताकतों (बेवान चीजों पर) के कारोबार करने के मैदान खाना नंबर 2 को मशानोई शुक्र मानते हैं। मगर राहु केतु मय सनीचर मुश्तरका या तीनों के इकट्ठे सांस (जानदार चीजों पर) के काम करने के मैदान खाना नंबर 8 को मशानोई शुक्र का मैदान नहीं मान लेते। राहु केतु सिर्फ दोनों के लिये खाना नंबर 2 अंगूठे की निचली पोरी पर उन का बैठक खाना है।

सनीचर का हैडकवाटर सनीचर के साथ या तीनों का बैठक खाना नंबर 8 माना गया है। खाना नंबर 8 में बृहस्पत सूरज या चंद्र की हालत का असर जुदा दर्ज है।

(2) - हरइक पोरी की जड पर चंद्र का असर सिर्फ उम्र के एक ही हिस्सा में जिकर किया है। हर पोरी के लिये उम्र के बाकी दो हिस्सों के ऊपर लिखे हुए हाल के लिये सूरज का ताल्लुक देख कर फ़सला करे।

अरमान नंबर 59

कुण्डली व दिमाग का ताल्लुक:- ग्रह अकेले अकेले या मुश्तरका हो कर जो हाल इन्सान की दिमागी हालत का कर सकते हैं। हू बहू वही हालत इन्सानी किस्मत की वो ग्रह कुण्डली में करेंगे या जो हालत ग्रहों के हिसाब से इस की किस्मत की होगी। वही हालत इसके दिमाग की होगी।

दिमाग के खाने

कुण्डली का खाना	दिमाग का खाना	ताकत	कुण्डली का खाना	दिमाग का खाना	ताकत
।	।	शुक्र (गृहस्ती) सनीचर से मुश्तरका -शुक्र का पतंग,इश्क (जबानी) 16 से 36 साला उम्र तक।	।	।	सनीचर इश्क जवानी शूकर से मुश्तरका। चारों तरफ की खुदगर्जी हमदर्दी

कुण्डली का खाना	दिमाग का खाना	शुक्र जारी	कुण्डली का खाना	दिमाग का खाना	सनीचर जारी
2	2	बृहस्पत से मुश्तरका-शादी की ख्वाहिश-इश्क के बाद का गलबा। बूढी औरत 100 चूहे खाकर बिल्ली हज को जावे। 37 ता 70/72 साला उम्र तक।	2 3 4	7 10 4	शुक्र से मुश्तरका। जिदगी बढने की ख्वाहिशा। (अरुज उम्र नहीं।) बुध से मुश्तरका। जायका। चंद्र से मुश्तरका
3	3	मंगल से मुश्तरका। इश्क से पहली उल्फत। वालदेनी मुहब्बत 1 से 15 साला उम्र तक।			दोस्ती - मुलाकात - उल्फत - इश्क - और गलबा इश्क के मुश्तरका मजमूआ का
4	4	चंद्र से मुश्तरका। दोस्ती, मुलाकात, उल्फत, इश्क और गलबा इश्क का मजमूआ।	5 6	15 16	असरा। बृहस्पत से मुश्तरका खुदारी केतु से मुश्तरका -
5	5	बृहस्पत से मुश्तरका। वतन की मुहब्बत।			इस्तकलाल
6	6	केतु से मुश्तरका दिलचस्पी, पक्की मुहब्बत। आलाद जर का फल नदारद होगा।	7	7	शुक्र से मुश्तरका जिदगी बढने की ख्वाहिशा। (अरुज-उम्र लंबी नहीं)
7	7	बुध से मुश्तरका। जिदगी बढने की ताकत। (अरुज उम्र नहीं) मंगल (बुजुर्गाना)	8 9	14 9	मंगल बढ से मुश्तरका तकब्बर या खुदपसंदी जाती बदला लेने की ताकत।
1	8	सूरज से मुश्तरका हमला रोकने की हिम्मत।	10	13	जाती होशयारी की ताकत।
3	17	बृहस्पत से मुश्तरका अदल मुनसिफ मिजाजी	11	11	जाती जखीरा जमा करने की ताकत।
8	14	सनीचर से मुश्तरका तकब्बर या खुदपसंदी	12	12	राहु से मुश्तरका - राजदारी।
4	4	मंगल बढ मंगलिक मुहब्बत के तीनों हिस्सो को तबाह करने वाला गुहस्त खराब हर तरह की तबाही।			

		बृहस्पत (शरीफाना)			बृहस्पत जारी
			11	35	चंद्र से मुश्तरका- वाक्यात गुजरते हुए की याद।
2	2	शुक्र से मुश्तरका- शादी की खाहिश। इश्क के बाद का गलबा। गुरु घन्टाल। सौं चूहे खाकर बिल्ली हज की चली। 37 से 70/72 साला उम्र तक।	12	12	राहु से मुश्तरका राजदारी सूरज (दिमागी) बृहस्पत से मुश्तरका इज्जत बुजुर्गी जाती अकल
			5	20	केतु से मुश्तरका पसंदीदगी
			6	23	बुध से मुश्तरका हौसला।
3	17	मंगल से मुश्तरका -अदल या मुन्सिफ मिजाजी।	7	24	पापी ग्रहों से मुश्तरका नकल करने की ताकत।
			8	25	बहस्पियापन का सूरज, झगडा -फसाद बृहस्पत से मुश्तरका मसखरगी।
4	21	चंद्र से मुश्तरका-हमदर्दी या रहम मिजाजी।	9	26	बुध से मुश्तरका -हद से ज्यादा मसखरगी- बेवकूफी बहुत ही भोलापन बुध्दु चंद्र (गैबी या महसूस करने की)
			3	27	मंगल से मुश्तरका- गौर-व-खोज की ताकत।
5	20	सूरज से मुश्तरका-इज्जत या बुजुर्गी। लीद में मानक। पत्थर में मोती की ताकत।	4	28	(जाती)- पुरानी याददास्त
			5	29	सूरज से मुश्तरका- कद व कामत व औसत तनासब की ताकत। चिडीयों से बाज लडाने की ताकत।
6	18	बुध से मुश्तरका -फोकी उम्मीद बायस तबाही- गणेश जी की गरुड़ की सवारी। केतु से मुश्तरका - भरोसा सिर्फ फोकी उम्मीद नहीं। कुछ हौसले की उम्मीद या आस होगी। गणेश जी चूहे की सवारी।	6	30	केतु से मुश्तरका- दबाव बौझ मसावीपन की ताकत यानि जैसा मुहं वैसी चपेट। अच्छे से
			9	19	जाती- मजहब या स्हानी

बुध (अंदरूनी अकल)			चंद्र जारी		
1	37	सनीचर से मुश्तरका - राग	7	31	शुक्र से मुश्तरका-रंग रूप में फर्क दूध से दही और दोनों की शक्ल और रंग में फर्क का मालिक यानि अगर बुध माता खानदान को उजाड़े तो चंद्र पिता के खानदान को मारे।
2	38	बृहस्पत से मुश्तरका-जबानदानी			
3	39	मंगल से मुश्तरका - वजह सब दरियाफ्त करने की ताकत।	8	32	सनीचर से मुश्तरका- सफाई, शास्तगी, डीलापन, जाहिरा मानसरोवर तो अंदर से कपट की खान।
4	40	चंद्र से मुश्तरका- मुकाबला एक चीज का दूसरी से	9	33	बुध से मुश्तरका-इल्म रियाजी के असूल
			10	34	मंगल बंद से मुश्तरका-जगह मकाम की याद, पूरा धोकेबाज और तंते को डुबा लेने वाला।
5	41	सूरज से मुश्तरका - इसानी खसलत जाती - रजामंदी।	11	35	बृहस्पत से मुश्तरका- पेशानी, वाक्यात गुजरते हुए की याद। ⁶
	42	खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलने वाली हिम्मत।	12	30	राहु से मुश्तरका- वक्त गुजरे - मर्द पछताये, 1) आता है याद मुझको गुजरा हुआ जमाना 2) कभी हम भी बाइकबाल थे। 3) पिदरम सुल्तान बोद।

राहु केतु को कोई पक्की जगह नहीं दी गई। लहरों के मालिक हैं। एक ने इन्सान को सिर से पकडा और दूसरे ने पावों से तो खुदबखुद ही उन को जगह मिल गई। चंद्र का घर व चंद्र

नाभी:- दिमाग के खानों में राहु या केतु को अलहैदा जगह नहीं मिली। हथेली पर भी ये नहीं गिने थे और बाहर कलाई पर माने थे। कुण्डली में भी जुदी जुदी जगह न पा सके थे। तमाम जिस्म की दरम्यानी जगह नाभी (धुन्नी) को मंगल माना है।

नाभी से ऊपर सिर की तरफ का हिस्सा राहु की राजधानी और नाभी से नीचे पांव की तरफ का हिस्सा केतु की राजधानी माना गया है। लाल किताब सफ़ा 201 दोनों पार्टियां मंगल की “नाभी” मंगल बंद की जगह या मंगल का मुंह है। मंगल की दोनो राशियां नंबर 1-8 को मिलाने वाली कुण्डली की नाभी ख़ाना नंबर 4 मुकर्रर है। जो राशियों के हिसाब से और ग्रहों के पक्के घरों के लिहाज़ से सिर्फ़ चंद्र को ही दे दिया गया है। चंद्र कभी ग्रह फल का नहीं माना गया। हमेशा ही राशिफल का होता है और ख़ाना नंबर 4 सनीचर के जाती असर के घर ख़ाना नंबर 10 का सेहन या मैदान गिना है। जिसमें सनीचर का फ़ैसला यानि कि वो (सनीचर) कुण्डली में जैसा भी होवे होगा। सबसे आख़िरी फ़ैसला बृहस्पत का होगा। यानि कुंडली में बृहस्पत जिस हैसीयत का होगा। वैसा ही ख़ाना नंबर 4 का आख़री फ़ैसला होगा। इस घर से चंद्र का ताल्लुक जुदी जगह लिखा है। (यानि चंद्र के ख़राब होने पर इसका अपना घर ही चंद्र की दयालुता मेहरबानी की पूरी ताक़त का होता है।) कुण्डली में माँत के खाने नंबर 8 का भेद का रास्ता चंद्र की ग़ैबी ताक़त का चश्मा ख़ाना नंबर 4 या कुण्डली की नाभी का ताल्लुक माँत से होने या करने वाले रास्ते में राहु केतु का असर नहीं माना गया। चंद्र के पानी की नदीयां कुदरत के अक्स को दिमाग के रास्ते से हाथ की हथेली की रेखायों से राशियों व ग्रहों के जरिये सब की दरम्यानी जगह या जिस्म के दरम्यानी निशान नाभी से जाहिर कर देते हैं। यही नाभी का रास्ता माता के पेट में बच्चे को खुराक देता रहता है या कुण्डली में ख़ाना नंबर 4 सब की मदद और दोनों जहानों के मालिक बृहस्पत को ऊंच करता है। माँत ने सब को मारा मगर चंद्र ख़ाना नंबर 8 में माँत को मार लेता है।

आंखः- अगर पेट के दरम्यान से पेट के अन्दर का हाल बताने वाली चीज नाभी को चंद्र का घर ख़ाना नंबर 4 माना गया तो चेहरे पर ऐसी ताक़त वाली चीज आंख को भी ख़ाना नंबर 4 माना है। जो ख़ाना नंबर 10 सनीचर के घर को देखता है। सनीचर का ख़ाना नंबर 10 कनपटी (पुडपुडी) माना है। पापी ग्रहों की जगह हल्क का कौआ व तालु है। (मुफ़स्सल अरमान नंबर 180 चार ग्रह मुश्तरका में लिखा है।)

दो लफजों में

ख़ाना नंबर 4 हालात ग़ैबी और ख़ाना नंबर 2 इस दुनिया की बेस्नी हालत को जाहिर कर देते हैं।

अरमान नंबर 60

35 साला चक्कर- ग्रहों की आम मियाद के सालों का मजमूआ 35 साल होता है। ये 35 साला मिआद 35 साला चक्कर कहलाता है। ग्रहों का 35 साला चक्कर और उम्र का 35 साला चक्कर (या इन्सान का 35 साला चक्कर) दो जुदी जुदी बातें हैं। फ़रज़न "एक शख्स के जन्मदिन से ही बृहस्पत का दौरा शुरू हुआ। बाकी ग्रह एक के बाद दूसरा यानि बृहस्पत (6 साल), सूरज (2 साल), चंद्र (1 साल), शुक्र (3 साल), मंगल (3 साल), बुध (2 साल), सनीचर (6 साल), राहु (6 साल), केतु(3 साल) कुल 35 साल का दौरा तमाम ग्रहों ने इसकी 35 साला उम्र तक ही पूरा कर दिया लेकिन हो सकता है कि इसका पहला ग्रह बृहस्पत के बजाये सनीचर शुरू होवे और जनम दिन की बजाये सातवें साल से शुरू होवे। अब तमाम ग्रह तो 35 साल में ही दौरा पूरा कर लेंगे। जबकि आखरी ग्रह का आखरी दिन होगा। इस वक़्त इन्सान की उम्र 35 साला ग्रहों का दौरा जमा 6 साल जब अभी सनीचर या उम्र का पहला ग्रह शुरू भी न हुआ था यानि कुल उम्र 41 साल हो चुकी होगी। जो 35 साला चक्कर के हिसाब से इन्सान का दूसरा 35 साला दौरा होगा। अब जिस दिन से ग्रहों का दूसरा दौरा शुरू हुआ। यानि जिस दिन जनम दिन से शुरू होने वाला ग्रह दूसरी दफा शुरू हुआ। उस दिन से जिन ग्रहों ने पहले बुरा असर दिया था वो अब अपनी दूसरी चाल में बुरा असर न देंगे। ये जरूरी नहीं कि वो बुरा फल देने वाला अच्छा फल ही दें। मगर अब बुरा फल न देगा।

तोते की 35 - (बुध के ग्रह का भेद) तोते की 35 के कुण्डली के खानों का गौर से मुलाहजा करें तो.....कुण्डली का खाना नंबर 9 कहीं नहीं मिलेगा। बुध का ये खाना नंबर 9 वो खुद खाना नंबर 9 एक अजब हालत का है। जिसका जिक्र जुदी जगह दर्ज है। यही खाना नंबर 9 एक चीज है जो इन्सान व हँवान में फर्क कर देता है और तमाम ग्रहों की बुनियाद है या दोनों जहान की हवा बृहस्पत असल है। इस 35 के 11 खाने दरअसल बुध के 12 खानों की हालत बताते हैं। यानि खाना नंबर 10 के बुध को सनीचर, 2 के बुध को बृहस्पत वगैरह जिस तरह कि इस तोते की 35 की कुण्डली में लिखे हैं लेंगे। यानि असर के लिये बुध के अपने असर की बजाये दिये

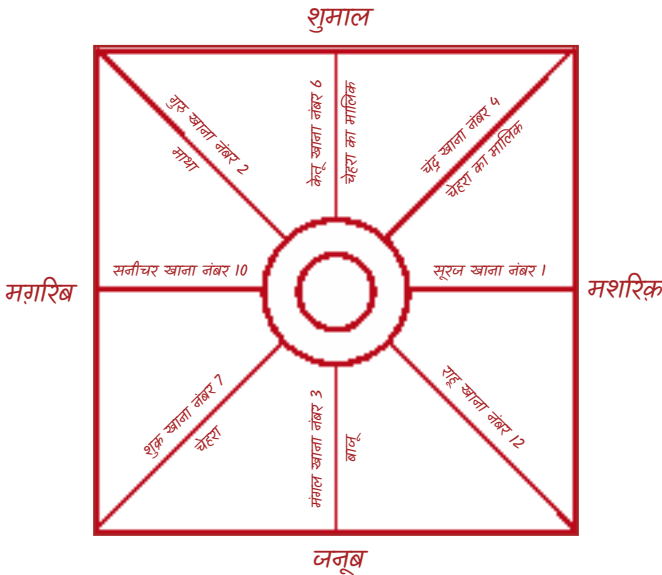
हुए ग्रहों की हालत का असर लेंगे।

अरमान नंबर 61

सिर - (दिमागी ताकतें राहु की, ढान्या बुध का) कुण्डली का खाना नंबर 12

माथा - कुण्डली का खाना नंबर 2 (हवाई खयालों में तमाम ताकतों का राहू केतु की बैठक का मैदान मशनोई शुक की जगह)

चेहरा - (आकार बुध का चेहरे की पसंदीदगी खूबसूरती केतु) खाना नंबर 6 यानि चेहरा खाना नंबर 6 और सिर खाना नंबर 12 दोनों का दरमियान माथा खाना नंबर 2 होगा।



खाना नंबर 5- मुस्तकबिल, खाना नंबर 9 -माजी, नंबर 11- दुनिया का अंदरा
नंबर 8 - दुनिया से बाहर।

चौडाई - केतु की ताकत, लंबाई- बृहस्पत की ताकत। (सूरज सनीचर दोनों का मालिक गुरु)

गोराई - बाहर को उभार - बुलंदी - बुध की ताकत। पशती - गहराई नीचे अंदर को दबना राहू की ताकत

ऊपर की ताकतों का घटना बढना ग्रहों की दृष्टि के दर्जे की ताकत के घटने या बढने से मुराद होगी।

100 फ्रीसदी दृष्टि की हालत में दो ग्रह एक दूसरे के ज्यादा नजदीक या एक ही हो जाते या मिल जाते हैं।

50 फ्रीसदी पर हालत पर उनका दरम्यानी फासला नसफ रह जाता है। या दोनों की ताकत आधी

आधी बाहम मिल जाती हैं।

25 फ्रीसदी पर सिर्फ एक चौथाई मिलते हैं। यानि तीन चौथाई वो एक दूसरे से दूर रह जाते हैं।

(लाल किताब सफ़ा 43) ख़ाना नंबर 2 को पेशानी माना है। पेशानी पर तिलक लगाने की जगह। (दोनों भवों का दरम्यान व नाक का आखिरी हिस्सा का मरकज़) असल पेशानी या ख़ाना नंबर 2 की असल जगह है। इस तिलक के निशान की जगह को छोडकर बाकी तमाम पेशानी की जगह ख़ाना नंबर 2 का बाकी मैदान है। इस बाकी मैदान में राहु केतु की बैठक या ख़ाना नंबर 8 का असर भी आना माना है। ख़ाना नंबर 2 का ये मैदान ख़ाना नंबर 6 को भी देखता है। खुलासतन तिलक की ख़ास जगह (बृहस्पत का ख़ाना नंबर 2) राहु केतु की मुश्तरका की बैठक की जगह (मशनोई शुक्र की राशि भी है) का दरवाजा है। दूसरे लफजों में ख़ाना नंबर 8 को राहु केतु की सनीचर के साथ होने की बैठक गिनें तो इस बैठक या यमों के दीवानख़ाना का दरवाजा ख़ाना नंबर 2 राहु केतु दोनों की मुश्तरका (मगर सनीचर के बहैसीयत मौत का यम) बैठक होगी। जिसमें सनीचर की मौत का ताल्लुक न होगा। सिर्फ़ राहु केतु की अपनी नेकी बढी का मैदान गुस्दवारा - मस्जिद - मंदिर होगा। इस धर्मस्थान का दरवाजा दोनों भवों की एँज दरम्यानी जगह होगी। जिस का मालिक बृहस्पत है। जो दोनों जहानो का मालिक है। जिसके रास्तों की लंबाई के दोनों सिरों पर सूरज और सनीचर (दिन रात) गिनते हैं। यानि "दुनिया से बाहर ख़ाना नंबर 8 और दुनिया का अंदर ख़ाना नंबर 11 "के साथ बृहस्पत की दूसरी ताक़त "ख़ाना नंबर 5 मुस्तकबिल और ख़ाना 9 माजी " का दरम्यान जमाना हाल (या बंद मुट्टी के खाने 1-7-4-10) होगा। थोडे लफजों में जिस तरह ख़ाना नंबर 4 ने अपनी नेकी न छोडी थी। इसी तरह ही ख़ाना नंबर 2 ने कुल दुनिया से ताल्लुक न छोडा। अगर नाभी तमाम जिस्म का दरम्यान था और बंद मुट्टी के खानों में ख़ाना नंबर 4 बच्चे के साथ लाये हुए खजाने का भेद था तो चेहरा पर तिलक की जगह या दुनिया में बच्चे के लिये बाकी सब तरफों से मिलने मिलाने वाले खजाने का भेदी ख़ाना नंबर 2 हुआ। इन दो खानों यानि ख़ाना नंबर 4 और ख़ाना नंबर 2 का मुश्तरका असर क्रिस्मत का करिश्मा हुआ। जो ग्रह फल व राशिफल दोनों का लब लबाब भी कहा जा सकता है।

खाना नंबर 4 बढाता है चंद्र को। खाना नंबर 2 बढाता है बृहस्पत को। दोनों मिले मिलाये (माता पिता) वालदैन या अकेला बृहस्पत जो दोनों जहानों का मालिक है होगा। जो बच्चे को मदद देने के लिये खाना नंबर 5 में सूरज के साथ और खाना नंबर 11 में सनीचर के साथ जा मिलता है। बृहस्पत की इस लंबाई को सब की लंबाई गिनते है। ख्वाह चेहरे की कहो ख्वाह पेशानी की।

लाल किताब सफ़ा 43 की जुज नंबर (1) चेहरे की चौडाई = खाना नंबर 6 के केतु से या खाना नंबर 6 से जिस कदर बृहस्पत का साथ होवे उसी कदर चेहरा लंबा होगा। जिस कदर कम असर या ताल्लुक बृहस्पत का खाना नंबर 6 से हो उसी कदर चेहरा चौडा होगा। जिस कदर चेहरे की लंबाई ज्यादा उसी कदर नेक असर ज्यादा होवे साथ लाई हुई जाती किस्मत का।

(सफ़ा 43 की जुज 3) पेशानी की चौडाई-खाना नंबर 2 के बृहस्पत से या खाना नंबर 2 से जिस कदर केतु का साथ होवे। इसी कदर पेशानी चौडी होगी। जिस कदर कम असर या ताल्लुक केतु का खाना नंबर 2 से होवे। इसी कदर पेशानी लंबी होगी। जिस कदर पेशानी की चौडाई बढे। इसी कदर नेक असर ज्यादा होवे। तमाम मुतल्लका दुनिया का।

मुखतसरन केतु जब बृहस्पत के साथ या बृहस्पत के घरों में हो तो पेशानी कुशादा होगी।

बृहस्पत जब केतु के साथ हो या केतु के घरों में हो तो चेहरा लंबा होगा। जब इकट्टे ही दोनों (बृहस्पत व केतु) खाना नंबर 2 में हों लंबा चेहरा कुशादा पेशानी (हमदर्द व बुलंद मरतबा) होगा। बशर्तेकि खाना नंबर 8 खाली हो। लेकिन अगर दोनों खाना नंबर 6 में इकट्टे हों और खाना नंबर 2 खाली हो तो लंबा चेहरा होगा।

लाल किताब सफ़ा 43 जुज नंबर (3) :- खाना नंबर 2 का असर खाना नंबर 6 के रास्ता खाना नंबर 12 में जाने से पेशानी का ऊपर का हिस्सा मुराद होगी।

जुज नंबर (4) :- खाना नंबर 8 का असर खाना नंबर 2 में जावे।

जुज नंबर (5)- खाना नंबर 8 का असर खाना नंबर 2 की मारफत खाना नंबर 6 में जावे।

जुज नंबर (6) - तिलक की जगह छोड कर पेशानी पर निशान जब खाना नंबर 2 हर तरह से और हर तरफ से (खाना नंबर 8 की दृष्टि वगैरह) खाली हो तो खाना नंबर 2 को तिलक

की जगह गिनते हैं।

खाना नंबर 2 में ग्रहों का असर मय खाना नंबर 8 के

जुज नंबर (7):-पेशानी पर कव्चे के पांव का निशान। खाना नंबर 8 के मदे ग्रहों का असर मंगल बंद वर्गैरह का।

जुज नंबर (8):- पेशानी पर टूटी फूटी लकीरें। खाना नंबर 2 मे बृहस्पत या केतु के दुश्मन ग्रह।

लाल किताब सफ़ा 43 के जुज नंबर (9) :-खानानंबर 2 व खाना नंबर 6 का फ़ैसला खाना नंबर 8 को साथ लेकर होगा।

जुज नंबर (10):- पेशानी पर तिलक की जगह केतु का निशान खाना नंबर 2 में हर तरह से अकेला केतु।

जुज नंबर (11):-चौड़े चेहरे में :- बृहस्पत की बजाये राहू के साथ - सनीचर की खुदगर्जना ताकतें (लाल किताब सफ़ा 35 - दिमाग के खाने नंबर 7 से 12) होंगी।

लंबा चेहरा:- बृहस्पत के साथ व ताल्लुक से केतु में सनीचर की हमदर्दानी ताकतें (लाल किताब सफ़ा 36 दिमाग के खाने 13 से 16) होंगी।

जुज नंबर 12 से 15:- मर्द के लिये पेशानी व चेहरा जिन जिन हालतों में अच्छे गिने गये हैं वही हालतें औरत के हाल के लिये उलट मायनों की होंगी।

जुज नंबर (16) माथे पर सुर्ख रगायें:- खाना नंबर 2 में मंगल बुध या सूरज बुध हों।

माथे पर सब्ज रंग रगायें :- खाना नंबर 2 में अकेला बुध या राहु बृहस्पत मुशतरका हों।

चेहरे पर तमाम ग्रह:-

बृहस्पत-नाक व माथा बुध- दांत. नाक का अगला सिरा गांठ

सूरज-दायीं आंख का डेला सनीचर-बाल(भवों व पलकों के खासकर)

चंद्र- बायीं आंख का डेला राहु- ठोडी

शुक्र- स्खसारा केतु- कान

मंगल दोनों होठ ऊपर का मंगल नेक और नीचे का मंगल बंद

अरमान नंबर 62/94 बजज 92

दरुस्ती किताब में दर्ज किया गया है और इल्म कयाफा के खास खास जुज दूसरे हिस्सों में मिलाये गये हैं।

हर इन्सान किस ग्रह का है (बस्ये क्याफा)

बृहस्पत के ग्रह के प्रबल होने का-इस शख्स का माथा चूहे के माथे की तरह तंग सा न होगा। न ही वो दमा की बीमारी वाला या नाक कटा हुआ का होगा। इसका बोलना चलना बैठना वगैरह गुरु की तरह शाहाना गंभीर और नेक होगा। हाथ की पहली या तर्जनी अंगुली लंबी होगी। मगर कटी हुई या रद्दी हो चुकी न होगी। तबीयत में सुथरे (लापरवाह जिस में किसी से भी मुहब्बत की बू न हो) की तरह का रुखापन न होगा और न ही जानवरों को जिबह करने वाले कसाई की तबीयत का होगा। रंग जिस्म व चेहरे का सोने की तरह दमकने वाला होगा। मगर धक्के या धडक्के की मरज वाले की तरह जर्द रंग हो चुका न होगा। आंखें मस्त शेर की तरह रोशन मगर डरावनी न होंगी। मुंदरजा जैल में से बृहस्पत की उत्तम निशानीयां साथ होगी।

रहानी हाथ..लाल किताब सफ़ा 47 फ़रमान नंबर 67 जुज नंबर 4

नाक.....लाल किताब सफ़ा 112A व 112B

कद.....लाल किताब सफ़ा 69 फ़रमान नंबर 78

सूरज के प्रबल ग्रह वाला अंगहीन (जिस्म का कोई अजू या हिस्सा कटे होने वाला) न होगा। इसका रंग गंदमी। आंखें शेर नर की तरह रोशन मगर डरावनी न होंगी। कद इसका लंबा जिस्म पतला (इकहरे जिस्म वाला मगर दुबला सा मरियल नहीं) हर तरह की मुसीबत बरदाश्त करने वाला और मजबूत तबे होगा। लंबा चेहरा कशादा पेशानी वाला होगा। रफ़्तार गुफ़्तार में दायों हिस्सा जिस्म का पहले चलाने वाला होगा। शक़्ल व शबाहत में जाहिरा तो भोला भाला सा होगा। मगर अंदर से दबी हुई आग की तरह गर्म होगा। चाल चलन (कामदेव) का पूरा नेक होगा। शराब से दूर रहने वाला और शरारत का माकूल जवाब देने वाला होगा। हर बात में पहला हिस्सा लेने वाला होगा। मुंदरजा जैल बातों का साथ होगा।

सपाट हाथ.....लाल किताब सफ़ा नंबर 47 फ़रमान नंबर 67 जुज नंबर 1

चंद्र प्रबल वाला सफ़ेद रंग (दूध की झलक वाला दही के रंग की

सफ़ेदी नहीं) शांति स्वभाव। चॉडाई वाला चेहरा। चकोर या घोड़े की आंखों की तरह की आंखों वाला। दूसरे की बात में हां से हां मिलाकर फिर उस दूसरे को नर्म सा जवाब देकर और उसके दिल को मना कर अपनी तरफ कर लेने वाला। लिबास में सफ़ेदी पसंद। जिस्म का निचला हिस्सा (नाभी या नाफ से नीचे या पांव की तरफ का हिस्सा पले हुए हाथी की तरह भारी भद्दा सा और बेडौल न होगा। मुंदरजा जैल बातों का साथ होगा।

मुतफ़रक हाथ... लाल किताब सफ़ा 48 फ़रमान नंबर 67 जुज नंबर 6

ख़ुददस्ती तहरीर.....लाल किताब सफ़ा 71 फ़रमान नंबर 83

अंग फडकना.....लाल किताब सफ़ा 74 फ़रमान नंबर 89

शुक्र के प्रबल ग्रह वाला रंग में सफ़ेद (दही के सफ़ेद रंग की झलक दूध के सफ़ेद रंग की नहीं) चेहरा गोल मोल सा ख़ूबसूरत। आंखें बैल की आंखों की तरह की मगर मस्ताना और आशकाना ढंग की। रूख़सारे बुलंद व पुरगोश्त व गोल। तबीयत में ऐश पसंद (कोई रोये कोई हंसे मगर वो ख़ुद अपने आप में ख़ुश) और हरदम अपने आप को औरतों की तरह संवारता रहे। मुंदरजा जैल बातों का साथ होगा।

मशलशी हाथ.....लालकिताब सफ़ा 47 फ़रमान नंबर 67 जुज नंबर 3

मंगल नेक के प्रबल ग्रह वाला एक तरफ़ा तबीयत। दहाना (मुंह का) कशादा। दोनों होंठ एकसां वे सुर्ख़ रंग। आंखें सुर्ख़ और शेर की तरह डरावनी और ख़ुंखार सी। बृहस्पत व चंद्र सूरज की निशानीयां भी साथ मिलती सी मालूम होंगी। गुंबन्द (मीनार) की तरह ऊपर से उभरा हुआ और भारी मगर नीचे पांव की तरफ़ से हलका होगा। मुंदरजा जैल का साथ होगा।

मुरब्बा हाथ..... लाल किताब सफ़ा 47 फ़रमान नंबर 67 जुज नंबर 2

मुंह का दहाना..... लाल किताब सफ़ा 68 फ़रमान नंबर 73

बाजू लंबे.....लाल किताब सफ़ा 70 फ़रमान नंबर 79

मंगल बद जल्लाद कसाई और हाथ पर आग और छुरी साथ लिये फिरता सा मेंदाने

जंग का मितलाशी (दूँढ कर पाने वाला खुद कोशिष करके लड पडने वाला) आंखे खुंखारी में शेर की तरह और सुर्ख मगर हिरण की तरह की भी। यानि दोनों हालतों में से पता न चले कि किस से मिलती हैं। कद काठ का उमदा लंबी उम्र वाला। खुद न जले मगर "हरजों कि रोद कदम शरीफाना - न फसल रब्बी शुद न खरीफाना" की तासीर वाला। आवाज में दहाडने की गूँज व भारीपन और अपने आप में ही मौत का यम हो कर चलने वाला होगा। मुंदरजा जैल बातों का साथ होगा।

पेट पर सिकन या बल....लालकिताब सफ़ा नंबर 45 फ़रमान नंबर 65
छाती..... लालकिताब सफ़ा नंबर 70 फ़रमान नंबर 80

बुध के ग्रह के प्रबल वाला कबूतर की आंखों से मिलती हुई आंखों वाला मगर डरपोक। चाल में मसकीन बिल्ली की तरह का। जबान मासूम लडकियों की तरह की मगर जादु की ताक़त की। दांत शानदार। बहस्पियापन (नकल करने या संवाग उतारने की ताक़त) दर्जा कमाल। जबान को होठों पर फेरने की आम आदत। गुफ्तगू में तेज रव्वानी। बातों बातों में फर्जी व कियासी महल बना देवे मगर बकवासी व गप्पी न होगा। हरइक को अपना कायल और साथी बना लेगा। मगर खुद रहनुमा बनने वाला न होगा। जबान का चस्का ज्यादा मगर खुराक कम। खूबसूरती पसंद मगर ज्यादा चीजों की परवाह नहीं। मुंदरजा जैल बातों का साथ होगा।

दांत.....लाल किताब सफ़ा 46 फ़रमान नंबर 66A

रगायें (नाड़ें).....लाल किताब सफ़ा 69 फ़रमान नंबर 76

नाक की गांठ (अगला हिस्सा) ...लाल किताब सफ़ा 112B

मनतकी हाथ.....लाल किताब सफ़ा 48 फ़रमान नंबर 68 जुज 5

सिर का ढांचा.....लाल किताब सफ़ा 44 फ़रमान नंबर 62

सनीचर के प्रबल ग्रह वाला सांप सुभाओ। आंखे सांप की आंखों से मिलती हुई गहरी व गोला। रंगत में सफ़ेद व सुर्ख न होगा। बल्कि रयाही पर या रयाह रंग ही होगा। भंवे लेटी लकीर की तरह सीधी या भंवों पर बाल कम। आवाज में सांप की तरह की टिक टिक करने वाला। आंखे बहुत देर बाद झपकने

वाला होगा। बात में पता न लगने देगा कि उसका असली मतलब क्या है। दोनों पहलू चारों तरफ घूम जाने वाला होगा। अगर मदद पर हुआ तो दूसरे की मदद को पूरा करने के लिये अपना सब कुछ कुरबान कर देगा। पक्का हठधर्म होगा। अगर बरखिलाफी पर हो तो मुकाबिल वाले का सब कुछ बरबाद व जहरीला कर देगा और सिर्फ दुन्यावी तमाशा दिखला देगा। ख्वाह दुश्मन का और अपना दोनों का ही कुछ न रहे। सुनने की बजाये आंखों से ही काम लेगा। दूसरों पर सांप आ निकलने की तरह का डर पैदा कर देगा। कान छोटे। अलहँदा बैठने का आदी होगा। मुंदरजा जैल का साथ होगा।

जिस्म पर बाल..... लाल किताब सफ़ा 45 फ़रमान नंबर 66

अबर..... लाल किताब सफ़ा 68 फ़रमान नंबर 74

हाथों की रहनुमायी..... लाल किताब सफ़ा 49 फ़रमान नंबर 68

छिक..... लाल किताब सफ़ा 74 फ़रमान नंबर 88

तालु (हलक़ का कोआ)..लाल किताब सफ़ा 72(10) फ़रमान नंबर 84

पापी ग्रह मुशतरका - हल्क का काँआ खाना नंबर 8 जिसमें दांयी तरफ राहु और बायीं तरफ़ केतु और दरम्यान में सनीचर होगा।

राहु के प्रबल ग्रह वाला बुलंद ठोड़ी। रंग पूरा रयाह (अगर राहु ऊंच हो तो रंग रयाह न होगा मगर बाकी सब राहु में इस जगह लिखी हुई बातें जरूर होंगी) अमूमन काला। आंख से काना या औलाद की तरफ से लावल्द होगा। टेढा चलने वाला। हाथी का जिस्म रंग व हाथी की ही आंखों से मिलती हुई आंखें होंगी। तबीयत में कच्चे धुये की तरह की बेआरामी सी होगी। जिस तरफ मिल गया वही तरफ दूसरी तरफ का नाश करने वाली हो गई। दिमागी ताक़त हमेशा शरारत और बरबादी का ढंग खडा कर देगी। खुराक ज्यादा मगर चस्का कम। चीजों की ज्यादाती का शौकीन मगर उनकी खूबसूरती की परवाह नहीं। मसकीन बिल्ली की तरह अगर उसे उडने के पर मिल जावे चिडीयों का बीज नाश करना शुरू कर देगा। बिल्ली की तरह उसे मकान से मुहब्बत होगी। मालिक की जान से मुहब्बत न होगी। मुंदरजा जैल का साथ होगा।

सीने की हड्डीयां.....लाल किताब सफ़ा 44 फ़रमान नंबर 63

झगडालु हाथ... लालकिताब सफ़ा 48 फ़रमान नंबर 67 जुज नंबर 8
 ख़्वाब..... लालकिताब सफ़ा 75 फ़रमान नंबर 91
 हाथ के नाखून..... लालकिताब सफ़ा 68 फ़रमान नंबर 72
 छीक लालकिताब सफ़ा 74 फ़रमान नंबर 88
 हथेली की गहराई लालकिताब सफ़ा 49 फ़रमान नंबर 68

केतु प्रबल वाले के कान बड़े बड़े। भंवो का दरम्यानी हिस्सा बुलंद बल्कि ऊपर बाहर को उभरा हुआ सा। जिस्म खूब मजबूत ख़ास कर टांगो का हिस्सा भारी। गाजर की तरह उसका जिस्म नीचे से मोटा और ऊपर सिर की तरफ से हलका। तबीयत नेक दरवेश (कुत्ता-सूअर या साधु) की होगी। मुंदरजा जैल का साथ होगा।

गरदन पर सिकन या बल.....लालकिताब सफ़ा 45 फ़रमान नंबर 64
 अंगूठा व अंगुलियां (छोटे छोटे).. लालकिताब सफ़ा 48 फ़रमान नंबर 67 जुज 8

उंगलियां लंबी.....लालकिताब सफ़ा 49 फ़रमान नंबर 68 जुज 10
 कान.....लालकिताब सफ़ा 68 फ़रमान नंबर 75
 पीठ..... लालकिताब सफ़ा 70 फ़रमान नंबर 81
 पांव के नाखून..... लालकिताब सफ़ा 68 फ़रमान नंबर 72
 हाथ का अंगूठा..... लालकिताब सफ़ा 27 ता 33 फ़रमान नंबर 58
 मुंदरजा बाला 9 ग्रहों का असर - जब किसी का बृहस्पत प्रबल मालूम हो तो जिस घर में बृहस्पत बैठा हुआ होवे तो इस शख्स के इस ख़ाना नंबर के तालुकदार जिसमें कि बृहस्पत हो। बृहस्पत की ऊपर लिखी हुई सिफ़्त के होंगे। अगर बृहस्पत हो ही अपने घरों में या घर का तो इसके बाबे या बाप की वही हालत होगी। जो ऊपर बृहस्पत की कही गयी है। इसी तरह ही और ग्रह लेगे। मसलन ऊपर के सबूत से किसी का सूरज प्रबल साबत होगा। मगर सूरज पडा है कुंडली में केतु के घर ख़ाना नंबर 6 में तो उस शख्स का लडका (केतु) सूरज की ऊपर लिखी सिफ़्तों का होगा। 2) अगर केतु पडा होवे मंगल के पक्के घर ख़ाना नंबर 3 में तो उस के भाई में केतु की ऊपर लिखी बातें पायी जाएंगी।

इन्सान जिस ग्रह का साबत हो वो ग्रह उसे खाना नंबर १ का काम देगा। बेशक वो कुण्डली में कहीं ही हो।

इन्सान का कोई ग्रह ख़तम हो गया नष्ट हो गया या मर ही तो नहीं गया

बृहस्पत - सिर पर चोटी या बोदी की जगह के बाल खुद-ब-खुद ही (किसी बीमारी या टटरी से नहीं) ख़तम हो जावें यानि उड जावें और जिल्द सिर की नंगी सी रह जावे या वो अपने गले में हरदम माला या तस्बीह (पूजा पाठ के लिये गांठे दे देकर या मनके वगैरह इकट्ठे करके कंठी सी बना लेते हैं) डाले रखने का आदी हो जावे तो समझ लो कि इसका बृहस्पत (खुद इसकी जाती किस्मत इस दुनिया के ताल्लुक के लिये) ख़तम हुआ।

सूरज - अजायें जिस्मानी (जिस्म के अंग या हिस्से) को हरकत करने या कराने की ताक़त (खींचना या फ़ैला देना) जाती रहे या इसके मुहं से हरदम थूक जारी होता रहे तो सूरज ख़तम की निशानी होगी।

चंद्र - महसूस करने की ताक़त ख़तम (पता न लगे कि इसके जिस्म से कोई चीज छू गयी या लग गयी है) तो चंद्र ख़तम गिनेंगे।

शुक्र - अंगूठा ख़राब, ख़तम या नाकारा और निकम्मा हो जावे। (बीमारी से या कट कर नहीं) तो शुक्र बरबाद हुआ।

मंगल - जिस्म के जोड चलने से रह जावें। जिस्म के खून का रंग जिल्द को देखने से मर गया मालूम होवे यानि इसके खून का रंग बरबाद हो जावे कुव्वत ए बाह तो हो मगर बच्चा पैदा करने की ताक़त कायम न रहे। (ये दो जुदा जुदा चीजें हैं) तो मंगल ख़तम लेंगे।

बुध - ऊपर के जबाडे के सामने के और पहले ही तीन दांत ख़तम। खुशबू बदबू का फर्क ख़तम। कुव्वत ए बाह ख़तम। तो बुध मर गया ही गिना जावेगा।

सनीचर - जिस्म पर से बाल उड जावें खासकर पलकों और भवों के (बीमारी का ताल्लुक न लेंगे) तो सनीचर बरबाद कहेंगे।

राहु - हाथ के नाखून झड़ जावें। दिमागी खराबियां।

दुश्मन के ताल्लुक के दुखा।

केतु- पावों के नाखून झड़ जावें पेशाब की बीमारियां या

औलाद के दुखा। मंदे असर का।

3 ग्रह
खतम
हो गया।

नष्ट ग्रह वाले की मदद

ऊंच घर के ग्रह अपना नेक फल देंगे और नेक फल छोड़ेंगे। मगर दुश्मन ग्रह के साथ वो नेकी न छोड़ देंगे मगर बढ़ी न करेंगे।

बृहस्पत खराब शुदा वाले को माथे/पगडी पर बृहस्पत के जरद रंग का तिलक। नाक का पानी खुस्क करने के बाद यानि नाक सफा करने के बाद काम शुरू करना मददगार। अगर उम्र छोटी में ही बृहस्पत खत्म का पता लग जावे तो जिस दिन से नाक का पानी खुद-ब-खुद बंद हो जावे बृहस्पत कायम होगा या नाक का पानी खुस्क रहने की उम्र तक ऊपर का जिकर मददगार होगा।

सूरज की मदद के लिये मुंह में मीठा डाल कर पानी के चंद घूंट पीकर काम शुरू करना मुबारिक होगा। अगर बचपन से ही पता चल जावे तो शुरू उम्र से ही ये बात मदद देगी।

चंद्र की मदद के लिए दूसरों की आशीर्वाद बज़रिआ पेंरी पौना वगैरह कह कह कर काम करें। खबर पहले ही मिलने पर बुढ़ापे तक ये बात काम देगी।

शुक्र नष्ट वाले को पोशाक का खयाल रखना बाल कायम रहने तक मददगार होगा।

मंगल बरबाद वाले को सुरमा सफेद का इस्तेमाल एँन शबाब तक मददगार होगा।

बुध बरबाद वाले को नाक छेद देना या सुराख कर देना। दांत सफा रखना ढलती जवानी तक मददगार होगा।

सनीचर बरबाद वाले को मसवाक या दातुन का इस्तेमाल आंखों का पानी खुस्क होने तक या बालों के सफेद होने तक मददगार होगा।

राहु बरबाद वाले को सिर पर चोटी या बोदी का कायम करना। खानदान से अलहँदा होकर

खुद मुख्तयारी न करना या सुसराल से ताल्लुक न तोडना मुबारिक होगा।
केतु बरबाद वाले को कान में सुराख करना। उम्र औलाद व सफर में मदद देगा।

अरमान नंबर १२

१- पानी से भरा हुआ घडा -शनीचर खाना नंबर ११ में दृष्टि खाली

दूध चंदर खाना नंबर ५ में दृष्टि खाली

कन्या, लडकी, फूल बुध खाना नंबर ६ में दृष्टि खाली

ब्याह शादी-..... शुक्र खाना नंबर ७ में दृष्टि खाली

२. लकडी सनीचर खाना नंबर ३ में

हथियार या औजार - सनीचर चंदर मुश्तरका } ३. कुत्ता - केतु } बुलंद आवाज
आगे से उल्ट छीक- राहु नीच असर का } बिल्ली - राहु } बुध का साथ
जानवर मंडराने लगें। खासकर बुध होवे खाना नंबर १२ का। (यानि राहु केतु का
भी साथ खाना नंबर १२/६ में होवे)।

४. नेक जानवर - काला कुत्ता (पूरा काला) ऊंच राहु। गाय - शुक्र खाना नंबर
१२। हिरण - मंगल खाना नंबर १० में।

अरमान नंबर १५

हर मकान किस ग्रह का है (अरमान नंबर ५ से मुतल्लका)

बृहस्पत- सेहन मकान का मकान के किसी एक सिरे पर होगा ख्वाह
मकान के शुरू में ही हो ख्वाह बिल्कुल आखिर पर ख्वाह दायीं बायीं
तरफ मकान के एक तरफ मगर दरम्यान में न होगा। मकान का दरवाजा
शुमालन जनुबन न होगा। हो सकता है कि पीपल का दरखत या कोई
धर्मस्थान मंदिर मस्जिद गुस्दवारा वगैरह मकान में या मकान के
बिल्कुल साथ ही होवे।

सूरज- मकान का दरवाजा निकलते सूरज मशरिक की तरफ होगा और
सेहन मकान के दरम्यान में होगा। आग का ताल्लुक सेहन में

होगा और हो सकता है कि पानी का तालूक भी निकलते वकत (मकान से बाहर निकलते हुए) दायें हाथ पर सेहन में ही हो। इधर उधर किसी और जगह न होगा। औलाद का फल उत्तम और किस्मत खुद अपनी का असर चढते सूरज की तरह उमदा होगा।

चंद्र - ये ग्रह सूरज से मिलता है। मकान के अक्वल तो अंदर ही वर्ना

तह लमीन और धन दौलत का मालिक है।

मकान के बाहर की चार दीवारी के ऐन साथ लगा या लगता हुआ और आखिर अगर दूर भी कहे तो कुण्डली वाले की अपनी 24 कदम तक उस मकान से और उस मकान के बडे दरवाजे के ऐन सामने कुआं या हैण्ड पम्प वर्गैरह चलता हुआ पानी जरूर होगा। जमीन के अंदर से कुदरती पानी को चंद्र लेगे। मशनुई नल का चंद्र न होगा। आबशार चश्मा वर्गैरह चंद्र गिने जाते हैं।

शक्र - ये सूरज के बरखिलाफ होगा। डियोढी का शहतीर शुमालन जनूबन

सफेदी पलस्तर

होगा। मकान में कच्चा हिस्सा जरूर होगा। दरवाजा मकान भी शुमालन जनूबन होगा।

मंगल नेक - ये ग्रह बृहस्पत सूरज और चंद्र के साथ चलता है। मगर उन के

मई औरत वानदारों की आमदों रफ्त

दायें या बायें मानिद चौकीदार (पहरेदार) होगा। मकान का दरवाजा शुमालन जनूबन होगा। कच्चे या पक्के होने की कोई खास शर्त नहीं।

मंगल बद- मकान का दरवाजा सिर्फ जनूब में होगा। मकान के साथ या

ऊपर मकान के दरखत का साया आग हलवाई की हट्टी का साथ होगा। मकान में या मकान के साथ कब्रिस्तान या शमसान भूमि होगी। लावल्द का साथ होगा और हो सकता है कि खुद वा इन्सान भी काला काना या लावल्द होवे। अगर किस्मत भली होगी तो उसे इस में रहने का इतफाक ही नहीं होगा।

बुध - मकान चारों तरफ दायरा में हर तरह से खाली या खुला हुआ होगा

ईर्गिद के हस्त्याय बलाएगा

या अकेला ही मकान होवे। मकान के साथ चौडे पत्तों के

दरखत का साथ होगा। (पीपल का दरखत बृहस्पत, बड चंद्र, शहतूत या लसूहडा बुध होता है। इसलिये बृहस्पत या चंद्र के दरखत का साथ न होगा और अगर होगा तो वो घर बुध की दुश्मनी का पूरा सबूत देगा)

सनीचर - ये ग्रह सूरज के उल्ट चलता है। मकान का शारेआम का बडा

चार दीवारों से मुतलका होगा।

दरवाजा (अंदर के दरवाजे किसी भी ग्रह में नहीं माने गये) मगरब में होगा। मकान की सबसे आखरी कोठडी जो बाहर से मकान के अंदर दाखिल होते वकत दायें हाथ की तरफ की होगी। पूरी अंधेर कोठडी होगी। जिस दिन तक उस में रोशनी का बंदोबस्त ना होगा। सनीचर का उत्तम फल होगा। जिस दिन जरा भी रोशनी या सूरज के आने का बंदोबस्त हुआ। सूरज सनीचर का झगडा या वो घर बरबाद हालत का हो जायेगा।

मकान में पथर गढा हुआ होगा। मकान के सबसे पहले दरवाजे की दहलीज पुरानी लकडी की (शीशम या कीकर या बेरी फलाही वगैरह की होगी। हर हालत में नये जमाना की लकडी दयार चीड वगैरह न होगी) होगी। छत पर भी पुरानी लकडी का साथ आम होगा। हो सकता है कि इस मकान में स्तून-मीनार या थम्म का साथ होवे।

राहु - बाहर से अंदर जाते वकत इस मकान में दायें हाथ पर कोई गुमनाम


बालिगों से मुतलका बीमारी झगडे राहु छत बलाए बंद

गढा बना होगा। बडे दरवाजे की दहलीज के ऐन नीचे से मकान का पानी बाहर निकलता होगा। मकान के सामने का हमसाया लावल्द होगा या गौर आबाद ही होगा। हो सकता है कि मकान की दीवारें तो तबदील न होवें मगर छत कई बार बदली जावे। मकान के साथ लगती हुइ भडभूंजे की भट्टी कोई कच्चा धुआं गर्की (गंदे पानी को जमा करने का गढा) वगैरह का साथ होगा।

केतु- कोने का मकान होगा। तीन तरफ मकान एक तरफ खुला। या

बच्चों से मुतलका

तीन तरफ खुला और एक तरफ कोई साथी मकान। या खुद इस मकान की तीन तरफें खुली होगी। केतु के मकान में नर आँलाद ख्वाह लडके ख्वाह

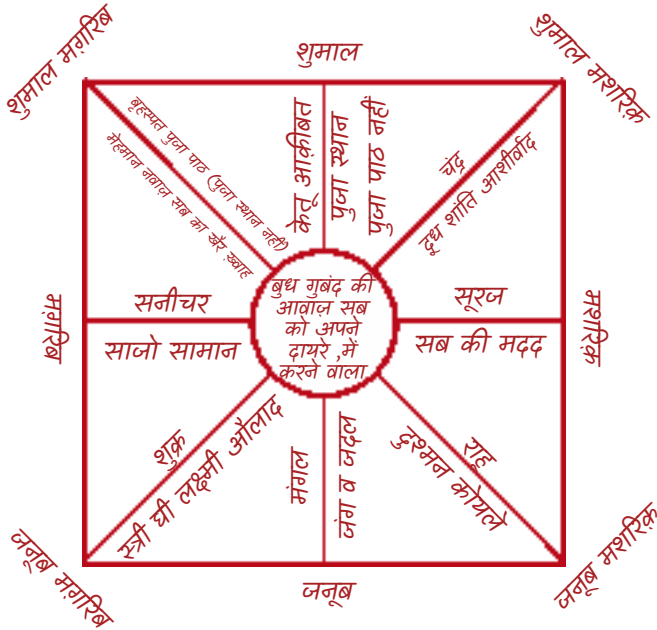
पोते तीन से ज्यादा न होंगे। अगर एक ही लडका तो 3 पोते। अगर तीन लडके तो एक पोता। या एक ही लडका एक ही पोता कायम होगा। इस मकान के दो तरफ काटता हुआ रास्ता  होगा। साथ का हमसाया मकान कोई न कोई जरूर गिरा हुआ बरबाद या कुत्तों के आने जाने का खाली मैदान बरबाद सा होगा।

मकान की शकल जिस ग्रह की मुकरर शकल

(लाल किताब सफ़ा 124 अरमान नंबर 117)

से मिलती होवे वो मकान उस ग्रह का होगा।

मकान में हर गोशे के दिये हुए ग्रह अपने अपने मकान में अपना अपना असर जाहिर कर दिया करते हैं जैसा कि वो कुण्डली में बैठे हों।



एक मकान में हर ग्रह की पक्की जगह ऊपर दी हुई जगह होगी।

मकान के गोशे

आठ कोना- सनीचर खाना नंबर 8 का असर देगा। यानि मातम के वाकयात या बीमारी आम होगी।

अठाराह कोना- बृहस्पत (सोना चांदी) का फल खराब होगा।

तेरह कोना- मंगल बद का असर यानि भाई बंदो की आफतों में तबाह होगा।

माँते और आग के नुकसान बहुत होंगे। फांसी का वाकया भी हो सकता है।
बच्चों चुक- (दरम्यान से बाहर को मछली के पेट की तरह उठा हुआ)। काग रेखा
का असर देगा। खानदानी नसल घटती जावे। आखिर पर खुद भी लावलद होगा।
यानि अगर बाबे तीन भाई हों तो बाप दो भाई और आखिर पर खुद अकेला और
आइंदा लावलद होगा।

भुजा बल हीन- (बाजू के बगैर या बाजू कटे हुए मर्द की शक्ल का) माँते ही माँते।
मुर्दा पर मुर्दा दिखलावे। अगर कोई शादी भी इस मकान में होवे तो शादी वाला
मर्द या औरत जिसकी वहां शादी हुई हो रंडवा और बेवाह होवे।

पांच कोना- पांच गोशे वाला। औलाद का दुख और उन की बरबादी की कारवाईयां
व दिखलावे।

मुंदरजा बाला गोशे मकान की दीवारें बनने से पहले काबिले गौर होंगे।
ग्रह कुण्डली की मकान के हिसाब से दरुस्ती की जांच

कुण्डली के खाना नंबर १ वाले ग्रह का मुतल्लका मकान इस कुण्डली
वाले का जद्दी मकान होगा और खाना नंबर १ के ग्रह की ऊपर की लिखी तमाम
शर्ते इसके अपने बनाये हुए मकान में मौजूद होगी। अगर ये खाने खाली हों तो
दूसरे मकान से ग्रह कुण्डली की दरुस्ती देखेंगे।

कुण्डली के खाना नंबर १ से चलकर अगर नौवें को जायें या मकान से
बाहर को निकलें तो जिस तरफ दायां हाथ होगा। उस तरफ मकान के तमाम ग्रह
जो खाना नंबर १ से ४ तक हों अपना सबूत देंगे। इसी तरह अगर १२ नंबर खाने
से अपने आप को खाना नंबर १ की तरफ आते हुए गिने या मकान में बाहर से
आकर दाखिल होने लगें तो खाना नंबर १२ से १२-११-१० के घरों के ग्रह दायां
तरफ मकान के सबूत देंगे।

किस्मत का ग्रह जिस घर में मिले। उसी खाना नंबर के मुतल्लका मकान
से तमाम कुण्डली की ग्रह की दरुस्ती मालूम होगी।

कुण्डली का खाना नंबर

किस मकान को जाहिर करेगा

कुंडली का खाना नंबर	किस मकान को जाहिर करेगा	कुंडली का खाना नंबर	किस मकान को जाहिर करेगा
1	खुद साख्ता। अपना बनाया हुआ मकान।	7	स्त्री घर व लडकियों की तरफ के रिश्तेदारों के घर के मकान
2	ससुराल का मकान	8	उस शख्स के जद्दी घर का
3	भाई का घर। ताये चाचे का मकान।		मुतल्लका कब्रस्तान या शमसान भूमि की जगह।
4	माता खानदान। मासी-फूफी का मकान।	9	जद्दी मकान। बचुरगों के बनाये हुए।
5	औलाद के बनाये हुए मकान।	10	वो मकान जिसमें कि कम अज कम 3 साला लगातार रहा हो।
6	नानका घर। नानी नाने का मकान।	11	खरीद करदा मगर खुद न बनायेंहों।
		12	हमसायों के मकानात।

मकान से ग्रह दुरुस्ती देखते वकत जिस तरह से किस्मत का ग्रह दूढते हैं। उसी तरह ही तरतीब वार हर खाने में से ग्रह दूढेंगे। मकान की शक्ल जिस ग्रह से मिल जावे वो ग्रह कुण्डली में जिस जगह हो वो दुरुस्त गिना जायेगा। जिस ग्रह का असर इसके मुतल्लका मकान में देखना हो उसे बुध की खाली जगह (मकान के दरम्यान खाली जगह समझकर) रख कर इस ग्रह के दांये बायें की चीजों का असर देखेंगे।

मकान की हैसीयत - लाल किताब सफ़ा 80 पर दिये हुए कायदे से जवाब में अगर बाकी बचता होवे:-

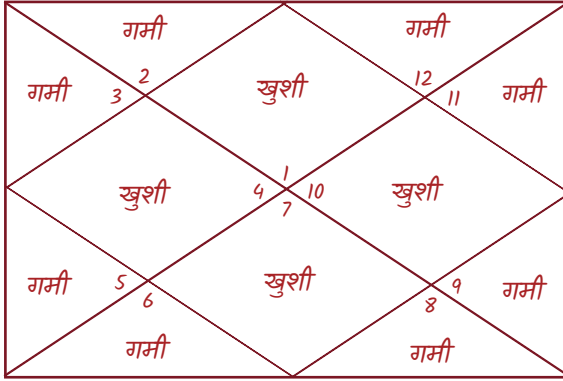
- एक बाकी - बृहस्पत सूरज होगा खाना नंबर 1 का
- दो बाकी - बृहस्पत शुक्र मुश्तरका खाना नंबर 2 में
- तीन बाकी - बृहस्पत मंगल खाना नंबर 3 के
- चार बाकी - सनीचर चंद्र मुश्तरका खाना नंबर 4 में
- पांच बाकी - सूरज बृहस्पत खाना नंबर 5 में
- छ बाकी - सूरज सनीचर मुश्तरका खाना नंबर 6 में
- सात बाकी - चंद्र शुक्र मुश्तरका खाना नंबर 7 में
- आठ बाकी - मंगल सनीचर मुश्तरका खाना नंबर 8 में होंगे

अरमान नंबर 96

खुशी :- बंद मुट्टी में साथ लाये हुए खजाने के ग्रह यानि खाना नंबर 1-7-4-10 के ग्रह खुशी का सबब होंगे। यानि जो ग्रह इन चारों खानों में हों वो हंमेशा खुशी दिखलाते रहेंगे।

गमी :- ऊपर कहे हुए चारों खानों को छोडकर कुण्डली के बाकी खानों के ग्रह यानि

खाना नंबर 2-3-5-6-8-9-11-12 गमी का सबब करने वाले हो सकते हैं। सूरज दिन का मालिक तो सनीचर रात का। अगर दिन का मालिक सूरज हुआ तो रात का मालिक चंद्र भी है। गोया राहत व आराम में चंद्र व सनीचर का झगडा हुआ। सूरज



जाहिरा तो चंद्र गैबी ताकत का मालिक है। सूरज जाहिरा मदद करता है और सनीचर नीचे से अंदर अंदर मदद देता है। मगर बुरा करने के वकत दोनों का असूल उल्ट है। गर्जेकि चंद्र व सनीचर दोनों में से जो दोनों ही पोशीदा चलते हैं मदद देते हैं। चंद्र खाना नंबर 4 का मालिक है। खुशी का और सनीचर खाना नंबर 10 का मालिक है गमी का। जाती खुशी का खाना नंबर 4 और गमी का खाना नंबर 10 मुतल्लका होगा। मुटठी का अंदर और बाहर तमाम मुतल्लका दुनिया से इन्सान का तालूक होगा। खाना नंबर 10 सनीचर का है। जो चारों तरफ ही चलता है। इस खाने से जाती मगर पिता के तालूक की खुशी। जब ये खाना मृट्टी के अंदर का हुआ और जब गमी में लिया तो दूसरे दुनियादारो से मुतल्लका होगा। इसलिये अंगुली की पोरीयों पर की लकीरों चंद्र के निशान 32 खुशी के होंगे। जिन के मुकाबला पर सनीचर भी इसी ताकत का होगा। यानि कुल जितने निशान हों (सिर्फ एक ही हाथ पर) उन से 12 का हिंदसा (चंद्र की 12 राशियों की खुशी) तफरीक करें तो। बाकी के हिंदसे वाले राशि के घर का सनीचर का असर होगा। सिफर बाकी बचने की हालत में सनीचर अपने पक्के घर खाना नंबर 10 का ही होगा। मसलन

खाना नंबर जिसका	10	1	2	3	4	5	6	7	8	9	आगे कोई	10	11	12
सनीचर फल देगा											फकीर साथ			
निशान हो तादाद में	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	हो तो	22	23	24

अरमान नंबर 97

लाल किताब के फरमान नंबर 58 सफ़ा 32 जुज 3 और फरमान नंबर 97 को इकट्ठा ही देखें तो एक ही मालूम होंगे। फर्क सिर्फ़ ये है कि सफ़ा 32 जुज 3 पर जौ के निशान के लिये लिखा है कि "पोरी की जड" पर हो और फरमान नंबर 97 में लिखा है कि "हिस्सा पर" निशान होवे। पोरी की जड पर निशान से मुराद है कि उस पोरी के लिये जो घर कुण्डली में मुकर्रर किया है। चंद्र उस घर को देखता है। मसलन नाखून वाली पोरी को केतु का घर खाना नंबर 6 माना है। अब चंद्र इसे देखता है से मुराद होगी कि चंद्र खाना नंबर 2 में है। पोरी पर निशान से मुराद ये है कि चंद्र है ही इस घर में जो घर कि इस पोरी के लिये मुकर्रर है।

जायदादी सुख (बालदैनी सुख सागर का तालुक नहीं)

(ये अरमान नंबर 58 व 98 का हिस्सा है।)

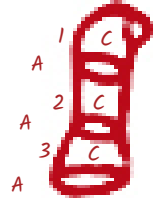
किस हिस्सा पर जौ का निशान हो या किस खाना नंबर में चंद्र होवे	निशान दरुस्त हो या चंद्र कायम हो	निशान टूटा फूटा हुआ या चंद्र दुश्मनों से खराब हो रहा हो
नाखून वाले हिस्सा पर निशान हो खाना नंबर 6 में चंद्र हो	सारी उम्र आराम या दौलतमंद हो सिर्फ	चंद्र की जायदाद का बुढापे में सुख नसीब होगा
दरम्यानी हिस्सा पर निशान हो खाना नंबर 12 में चंद्र हो	चंद्र के वक्त से जायदाद का फल	चंद्र की जायदाद का सिर्फ बचपन उमदा होगा मद्धम बाकी हालत उमदा
निचली पोरी पर निशान हो खाना नंबर 2 में चंद्र हो बचपन व जवानी उमदा	हर तरह से उमदा	चंद्र की जायदाद का

पोरी की जड और पोरी पर - निशान की पहचान :- ये निशान चंद्र के आधे आकार के दो निशानों से मिल कर बनता है। जिस तरफ का हिस्सा बड़ा होवे। वो तरफ चंद्र के खतम होने की होगी। यानि इस बड़े निशान की हद के बाद चंद्र न होगा या चंद्र इस बड़े निशान की हदबंदी से पहली पोरी में (इस पोरी की पहली पोरी जिसमें कि या जिस के सिरे पर कि वो बड़ा निशान होवे)

होगा। खत A - A फरजन बडा खत है और लकीर A - C - A

छोटी लकीर। अब हिस्सा नंबर A1 में (नाखुन वाले हिस्सा पर) लकीर A - A बडी है या दूसरी लकीर A - C - A

नाखुन वाले हिस्सा में ही रह गयी है। इस हालत में जो का निशान नाखुन वाली पोरी में गिना जायेगा। और नाखुन वाली पोरी की जड पर न होगा।



अरमान नंबर १४

जाती गृहस्ती सुख (वालदैनी सुख सागर व जायदाद के सुख के इलावा)

ये अरमान नंबर १७ व ५४ का हिस्सा है

उंगलियों की जडों में सुराख न होने से मुराद ग्रहों के बाहम अपनी अपनी नेक हालत, दोस्त हालत या साथी ग्रह हो जाने से है। सुराख होने से मुराद ये है कि अंगुली के मुतल्लका ग्रह बुरे या पापी फल के है।

कौन कौन ग्रह साथी ग्रह हों।	कौन कौन सी अंगुली की जड मिली हुई गिनी जाएगी।	दोनों उंगलियों के मुतल्लका ग्रह बुरे फल के होंगे
बृहस्पत सनीचर	तरजनी व मध्यमा	बुढापे में तकलीफ हो
सनीचर व सूरज	मध्यमा व अनामिका	जवानी में तकलीफ हो
सूरज व बुध	अनामिका व कनिष्का	बचपन में तकलीफ हो
शुक्र व बृहस्पत	तरजनी व अंगूठा	जनम लेते वक्त

अरमान नंबर 99

आम बरताव मुतल्लका दुनिया व खुद साहुकारा कुण्डली के खाना नंबर 6 से देखा जायेगा। खाना नंबर 6 के मालिक ग्रहों का इस बात से कोई तालुक नहीं। इस घर में दोस्त ग्रह कुण्डली वाले के मददगार और दुश्मन ग्रह इसके बरखिलाफ होंगे।

अरमान नंबर 100

खर्च बचत- चंद्र धन सनीचर खजानची होता है। दोनों की हालत जेब की हालत बतायेगी।

आमदन का हाल देखा जायेगा ...खाना नंबर॥ से

खर्च का हाल देखा जायेगा.....खाना नंबर.....॥२ से

बचत का हाल देखा जायेगा खाना नंबर..... १ से (बचुरगों की तरफ का तालुक)

बचत अज जाती कमाई देखा जायेगा खाना नंबर.....२ से

बचत अज औलाद कमाई देखा जायेगा खाना नंबर 5 से खर्च पर

काबू पाना।

1) बृहस्पत सूरज मुश्तरका मगर नेक घर के।

या दोनों साथी ग्रह या दोनों जुदा जुदा कायम या

दोनों जुदा जुदा अपने अपने दोस्तो के साथ हों।

या

2) एँसे ही सूरज बुध 3) बृहस्पत सनीचर 4) बुध सनीचर जरूर होवे।

1. बुध बृहस्पत 2. शुक्र बृहस्पत

3. सनीचर सुरज मुश्तरका हों। मगर साथी वर्गैरह न हों।

अगर बृहस्पत का साथ सूरज या सनीचर में से किसी

को भी न मिले यानि सूरज या सनीचर दोनों में से कोई

एक भी बृहस्पत की राशि या दोस्ती वर्गैरह के तालुक

में न होवे।

3

बचत खुद ब

खुद होती

चली जावे।

जरूर होवे।

खर्च ख्वाहमखाह होता

जावे आमदन ख्वाह हो

या ना हो।

खर्च व आमदन महदूद

होंगे।

अगर खर्च घटावे तो

आमदन खुदबखुद घटे।

बाकी बचत वही रहे। जो

मुकर्रर है।

सनीचर और मंगल जायदाद के मालिक हैं। चंद्र बृहस्पत सोने चांदी की दौलत के मालिक हैं।

अरमान नंबर 100 B

कर्जा व जायदाद जद्दी में इज़ाफ़ा - औसत ज़िंदगी

ख़ाना नंबर 11 व 12 की तफ़रीक़ का नतीजा होगा। कुंडली में 9 ग्रहों से जीतने ग्रह उम्दा (कायम या दोस्त वगैरह) हों इतने हिस्से नेक और जीतने ग्रह मंदे उतना हिस्सा बुरा होगा। दोनों की तफ़रीक़ व आख़री औसत का नतीजा फ़ैसला होगा। मसलन 9 ग्रहों से 5 अच्छे और 4 मंदे हो तो आमदन खर्च के लिहाज़ से एक बाकी दे जाएगा।

9 जमा 5 अच्छे ग्रह = 14, 14 जमा 5 तक़सीम 2 वास्ते औसत दो की

9 मनफ़ी 4 बुरे ग्रह = 5 19/2 की 9 1/2 खुद

बचत आख़री 12 राशि की औसत के लिए 19/2 को 12 पर तक़सीम किया तो 19/2 X 1/12 = 19/24

जायदाद जद्दी का नतीजा उम्र के हर 35 साला चक्कर में कर देगा। यानि 24 के लिए 19 पैदा करके 5 की कमी या बेशी कर देगा। अगर किसी भी पितृ ऋण को अदा न करे। पितृ ऋण बजाते खुद राहु केतु की मंदी हालत या ख़ाना नंबर 6 केतु, 12 राहु, ख़ाना नंबर 2, दोनों की बैठक और 8 पापी ग्रहों की बैठक में कोई भी मददगार ग्रह न हो तो पितृ ऋण का बोझ होगा। लेकिन अगर कोई पितृ ऋण उसके जिम्मे न हो तो यही 5 की बचत उम्र के हर 35 साला चक्कर में कर जाएगा। यह औसत ज़िंदगी होगी। माहवारी आमदन न होगी (पितृ ऋण से मुराद महादशा का ग्रह भी होता है। यानी कोई ग्रह महादशा का हो जावे तो कमी होगी वरना बचत होगी। अगर महादशा के मुकाबले में कोई भी बन्द मुट्टी के अंदर के ख़ानों में ग्रह या मुट्टी से बाहर कोई भी ऊंच घर का ग्रह मिल जावे या सिर्फ़ ख़ाना नंबर 4 या चन्द्र अकेला ही अच्छे हों तो महादशा की शर्त मन्सूख़ हो जाएगी।

नेकी बढ़ी ख़ाना-नंबर 9 के ग्रह "तोहफ़ा" जो दूसरों के लिए जन्म पर साथ लाएगा की औसत और ख़ाना नंबर 2 के ग्रह "तोशा" जो आख़री दम अपने साथ ले जाएगा।

औसत आमदन माहवार (खुद जाती)

ऊंच घर के ग्रह-कायम ग्रह या किस्मत के ग्रह के हिसाब से यानि जो भी सबसे प्रबल होवे। इसके लिहाज से:-

नाम ग्रह रूपये		कैफियत
बृहस्पत	11	अगर कोई दो ग्रह इकट्ठे हों और उम्दा तो उन इकट्ठे शुदा की
सूरज	10	रकम का मजमुआ होगा। मसलन
सूरज बृहस्पत मुश्तरका	21	रूपये।
चंद्र	9	मंगल सनीचर मुश्तरका = 18 रूपये
शुक्र	6	बृहस्पत सनीचर मुश्तरका = 21.5 रूपये
मंगल	7.5	बृहस्पत चंद्र मुश्तरका = 21 रूपये
बुध	3	चंद्र सूरज मुश्तरका = 20 रूपये
सनीचर	10.5	बुध सूरज मुश्तरका = 13 रूपये
राहु	8	मंगल चंद्र मुश्तरका = 16.5 रूपये
केतु	5	शुक्र बुध मुश्तरका = 9 रूपये
कुल	70	राहु केतु और शुक्र सनीचर मुश्तरका नहीं गिनते। क्योंकि शुक्र सनीचर ऐयाशी।

और राहु केतु खाली शुक्र मशनुई शुक्र या हवाई बृहस्पत या सिर्फ कागजी हिसाब किताब जिसकी वसूली न होवे होगा। बुध मंगल को मंगल बद लेंगे। और बुध सनीचर जायदाद में गिने जाते हैं।

तरीका- जिस दिन से कोई आदमी जाती कमाई (खुद अपनी रोटी कमाना) शुरू करे। इस दिन से जितने साल के बाद इसकी औसत आमदन माहवार देखनी हो। ऊपर के रूपये के हिंदसे को कमाते हुए अरसा के सालों से जरब दें। जवाब का हिंदसा माहवारी औसत आमदन होगा। फ़रजन किसी के मंगल सनीचर मुश्तरका हैं और उसने 19 साल कमाई करते हुए होने के बाद देखना चाहा । तो $18 \times 19 = 262$ रूपये माहवार 19 साल पूरे करने पर होगी।

ऊपर लिखी हुई आमदन व खर्च जाती कमाई से होगी। या कर्जा लाकर या किसी और ढंग से रुपया लेकर इस कर्जे से खर्च करके बाकी कुछ बचा जायेगा।

बंद मुट्टी के अंदर के खानों के ग्रहों वाला या खाना नंबर ॥ में कोई भी नर ग्रह वाला अपनी जाती कमाई से सब कुछ आमदन खर्च व बचत करेगा। बाकीयों के लिये ये शर्त न होगी। आरजी उधार को कर्जा नहीं गिनते। कर्जा वो होगा। जो बाबे ने लिया पोते तक मार करता चला जावे। मंगल सनीचर डाकु हैं। जब इकट्टे हों और सिर्फ दोनों ही हों। जब इनके साथ साधु ग्रह बृहस्पत का साथ हो जावे। सिवाये खाना नंबर 2 के बृहस्पत के तो "माकूल आमदन होते हुए भी कर्जाई" होगा। खासकर बाप की तमाम ज़दी चीजों के खतम होने तक।

मंगल सनीचर के खाना नंबर 10 में राजा होगा। जब तक कोई और ग्रह साथी न हो। मगर सनीचर मंगल के पक्के घर खाना नंबर 3 में निर्धन कंगाल होगा। जायदाद हो सकती है मगर नकद माल न होगा।

धन दौलत के नाम:- (लाल किताब सफ़ा 298/5 ता 304/20)

- 1) **चंद्र मंगल** मुश्तरका श्रेष्ठ धन होगा। (खासकर खाना नंबर 3 का) और दान कल्याण से बढ़ने वाला धन होगा। अगर ये दोनों ग्रह खाना नंबर 10-11 में या सनीचर के तालुक में हो जावें तो लालची होगा।
- 2) **चंद्र बृहस्पत** दबा हुआ धन जो फिर चल पड़े और काम आवे। सोना चांदी छतरधारी बड के दरख्त का साया का दूसरों को भी बडा भारी सहारा।
- 3) **चंद्र सनीचर** बृहस्पत के घरों में और बृहस्पत के साथ से उमदा वर्ना स्याह मुहं माया। खुद स्याह मुहं बंदर की तरह छलांग लगा कर चली जाने वाली और मुहं काला बनाने वाली।
- 4) **मंगल शुक्र:** स्त्री धन जो माया कि स्त्री की तरफ (सुसराल) और स्त्री की किस्मत पर चले।
- 5) **सनीचर बृहस्पत:** फ़कीरी व तालीमी ताल्लुक की माया। सन्यासी का धन शादी के दिन से बढेगा।
- 6) **मंगल बृहस्पत:** श्रेष्ठ गृहस्ती धन अपने मर्द के कबीला से मुतल्लका।
- 7) **मंगल सनीचर:** डाकू का धन दौलत।
- 8) **मंगल सूरज:** जागीरदारी हकूमत का धन। तालीमी रूहानी ताल्लुक।
- 9) **शुक्र बृहस्पत:** बूर के लड्डू झाग के पतासे।
- 10) **सूरज बृहस्पत:** सब

से ऊपर शाही धन।

हर इक धन रेखा का मुफसिल हाल जुदी जगह लिखा है। खाना नंबर 3 के दुश्मन ग्रह या दुश्मन ग्रहों का तखत की मालकीयत का जमाना धन हानि, चोरी, बिलावजह फ़ालतू खर्चा और नुकसान का सबब होता है और खाना नंबर 11 धन रेखा की आमदन का होगा या धन रेखा खाना नंबर 11 के रास्ते आती है और खाना नंबर 3 के रास्ते चली जाती है या तीसरी पुस्त पर धन रेखा का रास्ता बदला हुआ होता है।

माया तेरे तीन नाम - परसू परसा परसराम

खाना नंबर 3 मे धन रेखा का नाम होगा = परसू

खाना नंबर 11 मे धन रेखा का नाम होगा = परसा

खाना नंबर 5 में धन रेखा का नाम होगा = परस राम

खुलास्तन बंद मुट्टी के अंदर के घरों में कोई ग्रह न हो तो अपने साथ कुछ न लाया। सब ही ग्रह बंद मुट्टी के अंदर ही सब ग्रह होंगे तो मर्द की माया दरखत का साया इस के साथ ही उठ गया।

अरमान नंबर 101 से 107

ग्रहों व राशियों का बाहमी तालूक

नंबर	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
राशि का	मेख	बिस्ख	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	बृच्छक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
मालिक	मंगल केक	शुक्र	बुध	चंद्र	सूर्य	बुध केत्	शुक्र	मंगल बंद	बृहस्पत	सनी	सनी	बृहस्पत
ऊंच	सूर्य	चंद्र	राहु	बृहस्पत		बुध राहु	सनी		केतु	मंगल		शुक्र केतु
नीच	सनी		केतु	मंगल		केतु शुक्र	सूर्य	चंद्र	राहु	बृहस्पत		बुध राहु
पक्का घर	सूर्य	बृहस्पत	मंगल	चंद्र	बृहस्पत	केतु	शुक्र बुध	सनी मंगल बंद	बृहस्पत	सनी	बृहस्पत	राहु
किस्मत को जगाने वाला	मंगल	चंद्र	बुध	चंद्र	सूर्य	राहु	शुक्र	चंद्र	बृहस्पत	सनी	बृहस्पत	केतु
ग्रहफल का	मंगल केक	राहु	सनी केत्	चंद्र	सूर्य बृहस्पत या केत्	बुध	शुक्र	मंगल बंद	बृहस्पत	सनी	सनी	बृहस्पत राहु
राशि फल	राहु		सनी	शुक्र मंगल केत्	सूर्य बृहस्पत मंगल सनी	सूर्य बृहस्पत राहु		सनी		बुध केत्		बुध

खाना नंबर 2 का नीच नहीं होता और ये खाना राहु केतु (सिर्फ दोनों) की मुश्तरका बैठक है। जिस के राशिफल का ग्रह नहीं है। यानी कि इस खाना के ग्रह अपना अपना या अपने अपने कर्मों (पुन पाप का बजाते खुद अपनी जान से मुतल्लका) के करने कराने का खुद अख्तियारी है।

खाना नंबर 5 का ऊंच नीच दोनों ही हिस्से नहीं होते। अपनी खुद जाती जिस्मानी/औलाद खुद की किस्मत का ग्रह है।

खाना नंबर 11 का ऊंच नीच दोनों हिस्से नहीं होते। ये आम दुनिया मुतल्लका से किस्मत का लेन देन है।

खाना नंबर 8 का ऊंच नहीं होता। कोई मौत को नहीं मार सकता। सिवाय चंद्र के जो दिल की शांति व गेंबी मदद वगैरह है। (दुनिया को माता तो इन्सान को बच्चा। माता के पेट में बच्चे की तरह रहने वाला)।

खाना नंबर 3 का सनीचर ग्रहफल में माया धन दौलत नकद से दूर होगा। मगर जायदाद के लिये मंदा न होगा। अगर जायदाद के लिये मंदा हो भी तो काबिले उपाय है।

अरमान नंबर 108

ग्रहों की बाहम दृष्टि व राशियों (कुण्डली के खानों) से तालूक

बात को समझने के लिये राशि को स्त्री और ग्रह को मर्द कहें। दोनों का मिलाप ग्रह व राशि या मर्द औरत का जोडा मिथुन राशि बुध के खाली आकाश में शुक्र की गृहस्ती मुहब्बत (हकीकी व गैर हकीकी में कुल सृष्टि दुनिया) की त्रिलोकी (तीनों जमाने या खाना नंबर 3 में मंगल के पक्के घर भाईबंदी से चल रहा है। इस जोड़े की नीयत तीन हिस्सों में बटी हुई समझें:-

- 1- घर की मालकीयत या साधारण जैसी कि हर मर्द औरत की गिनी जा सकती है।
- 2- ऊंच हालत की यानि जो हरइक या बाहम एक के लिये दूसरे की नेक हो सकती है।
- 3- नीच या मंदी या दुश्मनी भरी बुरी या एक के हाथों दूसरे का बुरा करने वाली होगी।

हर इक राशि के असर के लिये इसके घर का मालिक ग्रह साधारण या आम हालत का (न भला न बुरा) ऊंच फल की राशि से मुराद नेक फल देने का तालूक ख्वाह राशि को ग्रह

के लिये या ग्रह को राशि के लिये मानों और ये नीच फल की राशि का ग्रह बुरे असर से मुतल्लका होगा। या जिस की (ख्वाह राशि की उस मुतल्लका ग्रह के लिये कहो ख्वाह ग्रह के लिये उस राशि के ताल्लुक से समझो) नीयत बद् गिनी जायेगी। हर इक राशि के किसी खास ग्रह के लिये खास खास ताल्लुक (बुरा या भला) की और हरइक ग्रह किसी खास राशि के लिये खास खास ताल्लुक का मुकरर किया गया है। इस तरह पर मुकरर किये हुए जोडे में से जब कोई ग्रह अपनी मुकरर राशि की बजाये किसी और ग्रह की ताल्लुकदार राशि में जा बैठे तो वा ग्रह जो चल कर दूसरी जगह जा बैठा है। कुण्डली वाले की किस्मत पर वैंसा ही असर करेगा। जैंसा कि वो दूसरी जगह जाकर हो गया है।

ग्रह की दृष्टि।- हस्त रेखा में रेखा की शाखों या रेखा के उतार झुकाव को इल्म ज्योतिष में ग्रह दृष्टि गिनते हैं।

2- कुण्डली के बारह खानों को एक बडे मकान की बारह कोठडियां फर्ज करें। हर इक खाना की लकीर को उस कोठडी की दीवार समझें तो खयाल आयेगा कि कुण्डली के अंदर के चार खाने चार चार दीवारों वाले चार खाने हैं। जिस में साथ लाया हुआ खलाना गिना गया है। बाकी 8 खाने सिर्फ तीन तीन दीवारों से बने हुए आधे आधे मकानों की तरह की 8 मशलशे हैं। जिनमें कुण्डली वाले का आधा आधा हिस्सा गिन कर कुल आठ से आधा या चार पूरे घर और हैं। गोया बच्चे के कुल आठ घर हो गये। या पहला घर अपना जनम का जिस्म और आठवां खाना मौत है। ग्रहों को लैम्प मानियें। सब कोठडियो के दरवाजे किसी न किसी तरफ खुलते हुए माने गये हैं या एक घर में चमकते या जलते हुए लैम्प की रोशनी इस के दरवाजे से दूसरे के अंदर जाती हुई मानी गयी है। रोशनी के इस तरह दूसरे के घर पहुंच जाने के ढंग को ग्रह की दृष्टि (देखना) कहलाती है। लालकिताब सफ़ा 103 की सबसे पहली और ऊपर की सतर कि हरइक ग्रह अपने से सातवें (इसी तरह फलाने घर के ग्रह फलाने घर को 100 फीसदी, 50 फीसदी या 25 फीसदी की नजर से) देखता है से मुराद है कि वो अपने उस घर से अपने से बाद के घर को देखता है या उस का अपने बैठे हुए घर का असर वो अपने बाद वाले में भी पहुंचा रहा है।

मगर ये मतलब नहीं है कि वो अपने से बाद वाले सातवें घर के ग्रह के असर को अपनी तरफ अपने बैठे हुए खाना नंबर में खींच कर ला रहा है। खाना नंबर 8 माँत का घर उल्टा देखता है। यानि कि वो अपना असर खाना नंबर 2 की तरफ भेजता है। ये खाना नंबर 2 गो सब के लिये राहु केतु की मुश्तरका बैठक के असर (पाप पुन का मक़ाम) का मुकर्रर है। मगर इस नंबर 2 में खाना नंबर 8 से आने वाले असर में तमाम पापी ग्रहों (राहु केतु के इलावा सनीचर) का जुज भी शामिल है। राशियों के बगैर सिर्फ ग्रहों से ही हर खाने का असर देखने का ढंग

देख लो कि हर एक ग्रह कैसा है। ख़ाह वो कुण्डली के किसी भी खाने में हो। जैसा उस बैठे हुए ग्रह का कुण्डली के हिसाब से होगा। वैसा ही उस का असर (इस जगह दिये हुए खाना नंबर पर होगा) फरजन बृहस्पत शुक्र कुण्डली में रद्दी है तो इस नक्शे के मुताबिक खाना नंबर 2 पर भी इन का रद्दी असर होगा।

नंबर 1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	कैफ़ियत
बुध	बृहस्पत	बुध	बृहस्पत	बृहस्पत	बुध	शुक्र	मंगल	बृहस्पत	सनीचर	सनीचर	राहु	हर खाना नंबर में इस जगह दिये हुए ग्रहों का जुदा जुदा असर देखेंगे। जैसा भी वो असर होवे वैसा ही इस ग्रह का दिये हुए खाने पर का होगा।
सूरज मंगल सनीचर	शुक्र	सनीचर मंगल	सूरज का चंद्र से ताल्लुक	सूरज राहु व केतु का ताल्लुक	केतु शुक्र	बुध	सनीचर चंद्र का ताल्लुक	बजाते खुद	का राहु केतु के दामे बाणे से ताल्लुक	बृहस्पत का साथ	बृहस्पत का सनीचर से ताल्लुक	

इधर उधर राशियों व ग्रहों के मुश्तरका हिसाब से लिखे हुए असूलों के मुताबिक लिया हुआ असर उस ग्रह का अपना और उस घर पर जहां वो बैठे हो होगा। मगर ऊपर लिखे हुए ढंग का असर उस ग्रह का अपने बैठे हुए घर के इलावा ऊपर लिखे मुतल्लका खाना नंबर पर होगा। दृष्टि - लाल किताब सफ़ा 103 पर 100 फीसदी, 50 फीसदी, 25 फीसदी के घर तो लिखे हैं मगर अपने से बाद के सातवें को देखने वाले घर दर्ज

नहीं हैं। वो ये हैं।

देखता है खाना नंबर 3-9 को } बुध के ग्रह की अलैहदा ही कहानी है जो जुदी
देखता है खाना नंबर 6-12 को } लिखी है। खुलासतन नंबर 3 से नंबर 9 को
देखता है खाना नंबर 8-2 को } देखता हुआ बुध या नंबर 9 में बैठा हुआ बुध।
नंबर 12 से नंबर 6 को देखता हुआ बुध। सब ही ग्रह का फल बेमायनी कर देता
है। ख्वाह वो तमाम एक तरफ और बुध अकेला ही मुकाबला पर ख्वाह वो इसके
दोस्त हों या दुश्मन। ख्वाह वो इस के साथ ही हों या उस से अलैहदा मुकाबला पर।

खाना नंबर 8 पीछे को देखता है। इसी असूल पर नंबर 8 ने नंबर 2
को देखा और नंबर 2 ने नंबर 6 को तो नंबर 8 का असर नंबर 6 में 25 फीसदी
होगा और नंबर 6 ने नंबर 12 को देखा तो नंबर 8 का असर नंबर 12 में चला
गया या नंबर 8 अपना असर नंबर 12 में 25 फीसदी डालता है। अब नंबर 2 में
100 फीसदी नंबर 8 का असर मिला है और नंबर 12 में 2-6 की मारफत 25
फीसदी नंबर 8 का असर मिला होता है। गोया नंबर 2 देखता है 25 फीसदी नंबर
12 को।

100 फीसदी और अपने से बाद के सातवें को देखने का फर्क

100 फीसदी वाला खाना अपने से बाद के खाने में दुध में खांड की तरह
अपना असर ऐसे का वैसे ही मिला देता है। मगर अपने से सातवें वाला अपने
से बाद के घर के असर को उल्टा देता है। गोया दुध का बरतन ही जहरीला कर
देता है। दोनों हालतों में दृष्टि का असर तो 100 फीसदी ही होता है। फर्क थोडा सा
ये है कि-

1- 100 फीसदी के असर के खाने सिर्फ बंद मुट्टी के अंदर अंदर के मुकर्रर
हैं। (यानि 1-7-4-10) मगर अपने से बाद के खाने बाहर की तिकोनों के घरों से
मुकर्रर हैं। मुट्टी के अंदर अपने से सातवें का असूल न होगा। और न ही बाहर
वालों पर 100 फीसदी का असूल चल सकेगा।

2- जब कोई ग्रह अपने से बाद के घर को 100 फीसदी नजर से देखता
है तो वो देखने वाला ग्रह अपने बाद के घर के ग्रह में (बाद के घर में नहीं) अपना
असर ऐसा मिला देता है कि पहले का असर दूसरे में मिला हुआ मालूम ही न
होगा। जैसे दुध में

खांड (ऐसी मिलावट को बुध की मिलावट कहते हैं) और इस पहले घर वाले ग्रह का वही असर रहेगा। जैसा कि वो पहले घर में था। मगर जब कोई ग्रह अपने से बाद के सातवें को देखे तो न सिर्फ देखने वाले ग्रह का असर उस घर में (ग्रह में नहीं) ऐसे मिला हुआ होगा जैसे एक टांग कटे आदमी को दूसरी टांग लगा दी गयी। (दो चीजों का इकट्ठे होकर काम करना। मगर अपने अपने वजूद को न छोड़ना ये मिलावट मंगल की कहलाती है) बल्कि इस पहले घर वाले ग्रह का असर बाद वाले के लिये बिल्कुल उल्ट होगा। यानि अगर पहले घर वाले का पहले घर में नेक असर था तो बाद के घर में मिलने के वकत वो पहला असर अगर नेक था तो बाद वाले के लिये बुरा ही होगा। मगर पहले का खुद अपने लिये जैसा कि वो होवे वैसा ही रहेगा।

"ग्रह का असर ग्रह में" और "ग्रह का असर दूसरे ग्रह के घर में" और इन का फर्क:-

1) पहले घर के ग्रह का असर बाद के घर के ग्रह में मिल जाने से मतलब ये होगा कि पहले घर के व बाद के घर के ग्रहों का असर एक ही हो गया या बाद के घर के ग्रह में पहले घर के ग्रह का असर ऐसा मिला कि जुदा न गिना गया। लेकिन इस मिलावट ने बाद के घर में यानि बाद के खाना नंबर में अपना कोई असर न डाला हो सकता है कि उस बाद के घर में कई ही ग्रह हों। पहले घर के ग्रह का असर बाद के घर के सब ग्रहों (जितने भी हों) में जब मिला तो हो सकता है कि वो पहले सबके सब जो बाद के घर में थे दोस्त हों तो जब (अलिफ़) उनमें पहले घर के ग्रह की जहर मिली तो वो सब के सब या उन में से चंद बाहम या चंद दूसरों के दुश्मन हो जावें। (बे) उन में दोस्ती पैदा कर देने की ताकत का असर मिल जावे तो जो पहले दुश्मन भाव के थे अब बाहम या चंद दूसरों से दोस्ती का ताल्लुक कर लेंवें।

2) पहले घर के ग्रह का असर बाद के घर में मिल जाने (ग्रह में नहीं) से मुराद होगी कि बाद के घर के ग्रह अलैहदा अलैहदा ही लेंगे। मगर वो मंगल की बनाई हुई मिलावट की तरह अलग अलग होते हुए भी इस आ मिलने वाले ग्रह के असर का सबूत देंगे। क्योंकि उस घर का ही असर आ मिलने वाले ग्रह के असर ने सब के

लिये बदल दिया या बाद के घर के ग्रहों के लिये वो खाना नंबर ही किसी और असर का हो गया। यानि उन ग्रहों ने अपना अपना पहला असर इस घर की तमाम चीजों पर बदल कर दिया। जब ग्रह से ग्रह मिला था तो अमली तौर पर ये फर्क हुआ था कि पहले घर के ग्रह ने बाद के घर के ग्रह के असर को बदला था। यानि बाद के घर का असर जिस में कि वो ग्रह जिसका असर कि बदला गया बैठा था। सिर्फ अपना ही बदला हुआ असर इस खाना की सिर्फ उन चीजों पर किया जो चीजें कि उस असर बदला जाने वाले ग्रह की और उस घर की जिस में बैठा हुआ.....कि वो असर में बदला जाने वाला ग्रह था थी। अगर बहुत ग्रह हों तो उन ग्रहों ने जिन का असर बदला गया अपने बदले हुए असर का सबूत सिर्फ उन ही चीजों पर दिया जो चीजें कि उस खाने की उन ग्रहों से मुतलका हों। मसलन बुध व शुक्र दोनों ही का पक्का घर खाना नंबर 7 है। जिसमें ऊपर से खाना नंबर 1 का असर मिल सकता है। फर्क करें कि खाना नंबर 1 में है सूरज और नंबर 7 में है शुक्र बुध। अब सूरज का असर दोनों में मिल गया। यानि शुक्र व बुध दोनों ही सूरज की तरह चमकने लगे और सूरज का असर नंबर 7 वालों के लिये अपना पहले घर में ऊंच हालत का होने की बजाये उल्ट बुरा न होगा और वो असर दोनो ग्रहों में दूध में खांड की तरह मिल जायेगा। ये है हालत 100 फीसदी की। दूसरी मिसाल फरजन शुक्र हो खाना नंबर 6 में और मंगल हो खाना नंबर 12 में। दृष्टि में 6-12 अपने से सातवें हैं। यानि शुक्र नंबर 6 का जो असर है खाना नंबर 6 में। इसका उल्ट होगा खाना नंबर 12 में उस ग्रह के लिये जो खाना नंबर 12 में है वो है मंगल। गोया अब मंगल के लिये वो खाना नंबर 12 सब ही चीजों के असर के लिये जो खाना नंबर 12 की है। मुबारिक होगा। क्योंकि नंबर 6 का शुक्र नीच है। जब इस का असर नंबर 12 में गया तो वो नंबर 12 के लिये तमाम चीजों के लिये ऊंच फल की होगी। मगर ये ऊंच फल किस के लिये होगा? मंगल के लिये जो खाना नंबर 12 का है। यानि कुण्डली वाले के भाई (मंगल) का गृहस्त का सुख उस भाई के लिये उमदा होगा। मगर कुण्डली वाले के शुक्र (औरत) का फल वैसे का वैसे ही मंदा और नीच होगा। खुलासतन 100 फीसदी की मिलावट की हालत में कुण्डली वाले को जाती अच्छा बुरा असर मिलेगा। मगर अपने से

सातवें की दृष्टि असर करेगी बाद के घर पर जिस की वजह से उस घर का जो ग्रह उस कुण्डली वाले का जैसा भी ताल्लुकदार होवे । उस पर असर देगा। मगर कुण्डली वाले पर सीधा असर न होगा। मसलन बाद के घरों में सातवें मिलावट की हालत में शुक्र है तो असर होगा बाद के घरों का शुक्र पर उल्ट कर या औरत जात के ताल्लुकदार या कुण्डली वाले के ससुराल वगैरह पर अपने असर का उल्टा असर.....होता होगा। अगर पहले घर का कुण्डली वाले को मंदा फल मिल रहा है तो उस मंदे फल का उल्ट अच्छा फल मिलता जायेगा। कुण्डली वाले के उस ग्रह के मुतल्लका रिश्तेदार को जो बाद के घरों के ग्रह से कुण्डली वाले के साथ संबंध हो। यानि मंगल हो तो भाई बुध हो तो बहिन वगैरह।

राहु केतु बाहम बराबर भी हैं दोस्त भी हैं और एक दुसरे के सातवें रहने के असूल पर दूसरे का असर उल्टाते भी हैं। वो कब कब:-

आना नंबर की चीजों पर राहु का असर	सूरज या चंद्र के साथ राहु				आना नंबर का कुण्डली के	सूरज या चंद्र के साथ तो केतु होगा				आना नंबर की चीजों पर केतु का असर
	कुण्डली के आना नंबर का	होवे				कुण्डली के आना नंबर का	केतु होगा			
	केतू से बाहमी ताल्लुक	असर	खुद सूरज का असर	खुद चंद्र का असर		राहु से बाहमी ताल्लुक	असर	खुद सूरज का असर	खुद चंद्र का असर	
आना नंबर की चीजों पर राहु का असर फरमान नंबर 177 में लिखा है	1	दोस्त	राशि फल	नेक	नेक	7	दोस्त		मद्धम	प्रबल
	2	बराबर	बैंक हर दो राहु केतु	निस्फ	नेक	8	बराबर	बैंक तीनों पामी ग्रह	निस्फ	नेक उम्र निस्फ सुख
	3	उंच		नेक	नेक	9	उंच		नेक	नेक
	4	दोस्त		नेक	निस्फ	10	दोस्त	राशि फल	मद्धम	निस्फ
	5	बराबर		नेक	नेक	11	बराबर		निस्फ	निस्फ
	6	उंच		नेक	नेक	12	उंच		नेक	मद्धम
	7	दोस्त	राशि फल	निस्फ	प्रबल	1	दोस्त		नेक	नेक
	8	बराबर	बैंक तीनों पामी ग्रह	नेक	नेक उम्र निस्फ सुख	2	बराबर	बैंक हर दो राहु केतु	निस्फ	नेक
	9	नीच		ग्रहण	ग्रहण	3	नीच		निस्फ	निस्फ
	10	दोस्त		मद्धम	निस्फ	4	दोस्त	राशि फल	नेक	निस्फ
	11	बराबर		नेक	निस्फ	5	बराबर		नेक	नेक
	12	नीच		ग्रहण	निस्फ	6	नीच		निस्फ	ग्रहण
	घरका		प्रबल	मद्धम		घर का		प्रबल	प्रबल	

राहु केतु के अपने से सातवें के ताल्लुक के लिये अरमान नंबर 176 भी देखें।

सूरज/चंद्र ग्रहण राहु केतु की नीच हालतों में (जब दोनों ही नीच) ग्रहण होता है और ग्रहण की म्याद (ग्रहण का सा अंधेरा) राहु की 2 साल केतु की 1 साल दोनों इकट्ठे हों तो 3 साल ज्यादा से ज्यादा होगी।

क्योंकि हो सकता है कि सूरज हो खाना नंबर 12 में चंद्र हो खाना नंबर 6 में

और राहु भी हो खाना नंबर 12 में

और केतु भी हो खाना नंबर 6 में

मंगल बढ़- मुफसिल जुदी जगह लिखा है। ये ग्रह हर तरह से जालिम और क्रूर होता है। (वासते जान व उम्र और दौलत व धन सब के लिये मंदा)।

मंगलीक- सिर्फ खाना नंबर 4 का मंगल मंगलीक होगा। मां, नानी, सास, जनानी औरत की उम्र पर हमला करता है। मगर धन दौलत पर हमला नहीं करता। मंगल बढ़ की तरह।

मुश्तरका असर की मिकदार अरमान नंबर 109

	हर-देखा जानेवाला या दूसरे हमसाया (मुश्तरका होने वाले) ग्रहकी ताकत होगी								
	बृहस्पत	सूरज	चन्द्र	शुक्र	मंगल	बुध	सनीचर	राहु	केतु
बृहस्पत		2	1/2	3 $\frac{3}{4}$	2/1	2/1	3/4	2/1	5/6
सूरज	2/3		3/4	3/4	2/1	1/2	दौलत 2/3 कालिद 1/2 सुख 1/3	ग्रहण	1/2
चन्द्र	2/1	2/1	2/1	2/2	2/1	1/3	1/2	ग्रहण	
शुक्र	1/2	3/4	1/2		4/3	2/2	1/3	2/1	2/1
मंगल	2/1	2	2/1	1/3	मंगल बढ़ 1/3	2/1	4/3	0/1	1/2
बुध	1/2	2/1	1/2	2/2	2/2		5/4	2/1	1/4
सनीचर	5/4	दौलत 2/3 कालिद 1/2 सुख 1/3	1/3	4/3	1/3	4/5		2/1	1/2
राहु	0/1	ग्रहण	1/2	1/2	2/2	2/1	2/1		2/2
केतु	2/1	1/2	ग्रहण	2/1	1/2	3/4	2/1	2/2	

दोस्ती दुश्मनी का भाव नेक व बुरे हिस्से की मिकदार होगी

औसत तनासूब के हिंदसों में हिंदसा का ऊपर का जुल देखा जाने वाले ग्रह के असर की

मिकदार और नीचे का जुज देखने वाले ग्रह की ताकत से मुराद होगी।
ग्रह की मिसाल तरबूज में (इसी तरह नारियल, खरबूजा, अनार, बेर वगैरह में
मिलावट का ताल्लुक)

बृहस्पत - डन्डी, सूरज-वजन

चंद्र - तरबूज के अंदर पानी

शुक्र - बीज का गुद्दा(मगज)

मंगल - बीजों के बगैर तरबूज का गुद्दा

बुध - गोलाई, आकार, जायका

सनीचर - बीज या तरबूज की छाल छिलका

राहु - जायका, कच्चा पक्कापन

केतु - धारियां रंग बिरंग

अरमान नंबर 110

खास खास मुश्तरका ग्रहों का इकट्टा असर अरमान नंबर 180 में लिखा है।

अरमान नंबर 111

हाथ से बनाई हुई और टेवे की जनम कुण्डली व चंद्र कुण्डली का
अरमान नंबर 181 में जिकर है।

अरमान नंबर 112

लाल किताब सफ़ा 113 पर उम्र के हर हिस्सा पर हर इक ग्रह के असर
के साल वगैरह सिर्फ उस शख्स की उम्र के हिसाब से दिये हैं। जो शख्स कि लाल
किताब में हरग्रह की एँन मुकर्रर म्याद के अंदर अंदर ही पैदा हुआ होवे या दिया
हुआ नक्शा दिखलाता है कि इल्म सामुद्रिक के हिसाब से जो उम्रें कि हर ग्रह
की मुकर्रर हैं। वो हर ग्रह की कब जाहिर होंगी। हर इक आम दुन्यावी इन्सान पर
हर ग्रह का दौरा इस के जन्म के साल से और होगा। जो अरमान नंबर 113A में
"वर्षफल" के ब्यान में दर्ज हैं। दुनिया के आगाज में या बुध के आकार में सबसे
पहले अंधेरा (सनीचर का) मान कर इस में सूरज की रौशनी मानी गयी है।
बृहस्पत जो दोनों जहानों का मालिक है। सूरज - सनीचर दोनों के साथ होता हुआ
माना है। यानि हवा अंधेरे में भी

होती है और रोशनी में भी हुआ करती है। मसलन शीशे का एक बक्स हो तो इस के अंदर खाली जगह में भी हवा होगी और बाहर उस बकसे के भी हवा होगी। बुध का शीशा अंधेरे को भी और रोशनी को भी दोनों तरफ अंदर बाहर होने दे देगा। मगर वो शीशा या बुध कभी हवा को अंदर से बाहर या बाहर से अंदर न जाने देगा। यही दुश्मनी बुध की होगी बृहस्पत से या बुध के आकाश की खाली जगह में किस्मत को जाहिर करने वाला बच्चा सूरज या सनीचर को जुदा जुदा और इकट्टे ही होने हवाने की इजाजत बुध की ताकत से दे देगा या बुध का शीशा ही बृहस्पत के दोनों जहानों में गांठ लगा देगा और ये गांठ ही ग्रह है या ये आकाश ही सब के लिये इकट्टा गांठा हुआ मैदान है या यही अकल और बुध सब तरफ गांठे लगा रही हैं।

अरमान नंबर 113

लालकिताब सफा 114 पर दी हुई फ़ेहरिस्त के नंबर 8-9 पर राहु केतु का जिकर है और नंबर 6 पर बुध का। गौर से देखें तो मालूम होगा कि राहु ख़ाना नंबर 12 में घर का मालिक ग्रह भी लिखा है और ख़ाना नंबर 12 में ये नीच भी लिखा है। इसी तरह केतु ख़ाना नंबर 6 में घर का मालिक ग्रह भी लिखा है और इसकी नीचफल की राशि भी इसके लिये ख़ाना नंबर 6 ही लिखी है।

राहु- जब बृहस्पत के घर ख़ाना नंबर सिर्फ़ 12 में हो तो नीच होगा। हालांकि बृहस्पत व राहु बाहम दुश्मन नहीं बराबर के हैं। राहु के वकत (या जब राहु बृहस्पत इकट्टे हों) बृहस्पत चुप ही हो जाता है। राहु को आसमान (ख़ाना नंबर 12) नीला रंग माना है। बृहस्पत की हवा को जब आसमान का साथ मिले या ज्युं ज्युं हवा आसमान की तरफ़ ऊंची होती जाये हल्की होती जायेगी और दुनियादारों के सांस लेने के काम घटती जायेगी। लेकिन जब यही बृहस्पत की हवा नीचे की तरफ़ होती आयेगी तो केतु का साथ होता जायेगा (ख़ाना नंबर 6) तो हर इक की मददगार होगी। इसी असूल पर राहु के साथ जब बृहस्पत हो तो न सिर्फ़ बृहस्पत का असर चुपचाप बंद हालत का होगा। बल्कि राहु का अपना असर बुरा होगा या दम (सांस बृहस्पत की ताकत) घटने पर

या दम घुटजाने या घट जाने पर नतीजा मंदा होगा। इसके बरखिलाफ अगर राहु को बुध के खाली आकाश में खुला ही मैदान मिलता जावे मगर वो खाना नंबर 12 के माने हुए आकाश की बजाये बुध के खाली आकाश में ही हो तो राहु का फल उसका अच्छा बल्कि उमदा असर देगा या राहु को बुध का घर खाना नंबर 6 या बुध का साथ मिले तो नेक असर देगा। राहु है भी बुध का दोस्त। इसलिये दोनों के बाहम साथ से दोनों का फल उमदा होगा या दोनों ही खाना नंबर 6 में ऊंच फल के और दोनों में से हर इक या दोनों ही खाना नंबर 12 में मंदे फल के होंगे। राहु को फर्जी तौर पर अगर आसमान माने तो ये फर्जी दीवार बृहस्पत को साफ कह देगी कि ऐ बृहस्पत तू मेरे ऊपर गैबी जगह (दूसरी दुनिया) या मेरे नीचे इधर इन्साना दुनिया में एक ही तरफ रहो। गोया राहु ने बृहस्पत को दो जहानों में से सिर्फ एक ही तरफ कर दिया या राहु के साथ पर बृहस्पत दोनों जहानों में से एक तरफ के लिये वो (बृहस्पत) चुप ही गिना जायेगा।

केतु - जब बुध के साथ हो तो या वो बुध के घर खाना नंबर 6 में हो तो नीच होगा। लेकिन जब केतु को बृहस्पत का साथ मिल जावे तो केतु ऊंचफल का होगा। केतु बृहस्पत बराबर का फल देंगे।

राहु केतु चूँकि अपने से सातवें देखने के असूल पर के ग्रह हैं। इसलिये राहु अगर 3-6 (बुध के घर) में ऊंच हुआ तो केतु वहां खाना नंबर 3-6 में नीच होगा। यही हाल है केतु का अगर केतु खाना नंबर 9-12 (बृहस्पत के घर) में ऊंच हुआ तो राहु उन घरों में नीच होगा।

बुध - जब बुध होवे राहु के घर खाना नंबर 12 में तो नीच होगा। क्योंकि खाना नंबर 12 इसके दुश्मन ग्रह बृहस्पत का है और जब बुध होवे केतु के घर खाना नंबर 6 में तो ऊंच होगा। क्योंकि ये राशि नंबर 6 बुध की अपनी ही राशि है और बुध व केतु दोनों ही आपस में "बराबर के" ग्रह हैं और दोनों ही शुक्र के दोस्त हुए हैं। बुध पर कोई असर न होगा। मगर केतु (शुक्र) दोनों खाना नंबर 6 में नीच ही होंगे।

खाना नंबर 8 में मंगल सनीचर की बुरी नजर को खाना नंबर 2 का मालिक बृहस्पत देख कर ही पहचान लेगा। मगर बोलेगा नहीं। इस बुरे नजर के असर को बृहस्पत जब खाना नंबर 2 से खाना नंबर 6 के मालिक केतु के हां भेजेगा तो वहां बुध भी होने से केतु बोल कर (बुध की ताकत) बता देगा। (कुत्ते को माँत के यम नजर आ जाने पर कुत्ता पहले ही बोल कर बता देगा) हाथी राहु का जिस्म है तो इस का सूंड बुध है। शुक्र अगर केतु का जिस्म है तो बुध इसकी टेढी दुम है।

राहु जब बृहस्पत के घरों या बृहस्पत के साथ हो तो नीच फल का होगा। केतु जब बुध के साथ या बुध के घर हो तो मंदे फल का होगा।

बुध जिसे कुत्ते की दुम माना है। जब केतु से अलैहदा खाना नंबर 12 में हो तो वो खाना नंबर 6 के सब ही ग्रहों को रद्दी कर देगा। ख्वाह वो बुध के दोस्त हों ख्वाह वो बुध के दुश्मन।

ग्रह की अपनी राशि - हर ग्रह अपनी मुकर्रर राशि में नेक फल देगा बेशक इसकी वो राशि किसी दुसरे ग्रह का पक्का घर मुकर्रर हो चुका है। मसलन-

राशि नंबर	किस ग्रह की राशि है	कौन से ग्रह का पक्का घर मुकर्रर हो चुका है	इस राशि नंबर में किस ग्रह का फल नेक होगा।
3	बुध	मंगल	बुध का नेक फल बशर्ते कि मंगल नेक होवे
2	शुक्र	बृहस्पत	शुक्र का नेक
5	सूरज	बृहस्पत सूरज मुश्तरका	सूरज का
6	बुध केतु	केतु	बुध का उत्तम । केतु का खुद केतु की चीजों पर मंदा मगर दूसरों पर अच्छा। अगर बुध भी साथ हो तो.....केतु दूसरों का मंदा। बुध का अच्छा होगा बुध की चीजों पर।
7	शुक्र	शुक्र बुध	शुक्र का
8	मंगल	मंगल सनीचर चंद्र	अगर तीनों में से हर इक अकेला अकेला होवे तो अच्छा फल वर्ना मंदा।

हर ग्रह की अपने असर जाहिर करने की निशानी के लिए खानावर चीजें

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
बुध	मंगल बंद	मंगल नेक	शुक्र	चंद्र	सूर्य	बृहस्पत						
लबान, सिर मूंग सालम चाँड़े पत्ते का दरख्त तोता, कलाई, चमगााड़ फकीर की आवाल, आशीर्वाद फूल, फलबहरी, अंडा, मैना, लड़की बकरी, घास हरी, भांडी गाय फूल टूटा हुआ, दौमक चमगााड़, सब्ज रंग, थूथला, गंगा दांत, घास खुश्क, शराबी कबाबी सिप, हीरा, फटकड़ी भंड	शत्रु बेमुहार ऊंद हर तरह से सब्ज कदमा नजर बंद वाला। ऊंट किना साल काला काना लावट्ट	भाई, नीम का दरख्त नाभी, धुन्नी दाल मसूर, पहला लड़का बच्चे का जनम लेना, बावू के बापे जिस सुर्ख रंग शहद, मीठा भोजन सिंदूर लाल बुलंद आवाज़ 32 दांत, बावू हिरण, चित्ता पेट, होठ छाली तलवार, इक का दरख्त	रुखसाग, पराई मिट्टी का शौक घी, कापुर शादी दही, चौपाया, चरिद दही, चौपाया, चरिद फल चिड़िया, लड़की औरत, हर दो मुल्बत, गाम सफेद राग, आलू दही का सफेद रंग मोती दही सफेद रंग चौपाये का सुख, लक्ष्मी का सुख	दिल, बाग, बाग्या हिस्सा, बागी आँख का डेला माता दूध चावल रुहानी ताकत घोडा तालाब, कुआ चकोर खरगोश, सफर खेती की लमीन समंदर, मिर्ची की बीमारी, गैंबि मदद या आमदन जायदाद, शांति पानी, तह लमीन, रात का वकत चांदी, मोती सफेद, खुनी कआ सफेद बिल्ली, खुशामद	दिन का वकत दायां हिस्सा गुदम दिन की औलाद दागी आँख का डेला इकलौता लड़का, बंदर लाल मुह का गुदमी रंग, पांवा की खराबिया लाल गाय रुहानी नुकसा रथ गाड़ी भूरा रीछ नेवला भूरा भंस सुर्ख ताबा भूरी चोटी, दिमागी खाली मसुई सूर्य	पेशानी, लई रंग, शेर नर चने की दाल तालिम बारिश सोना नाक केसर मुर्ग गरुड किताबें, दुमे की मर्ग, मंडक अफवाड़, नक्कारा खलाक मंदिर मस्जिद गुरुद्वारा, लड़ी मकान सूखा पीपल, नुकसान वर तालीम खतम गिलद, मुलम्मा साय, आम हवा, पीतल, पीपल का दरख्त						

हर ग्रह की अपने असर जाहिर करने की निशानी के लिए खानावार चीजें

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सनीचर	आग से जलना, गंदा कपड़ा, हलक का कौआ	माश सालम	कीकर, बेरी, भवे	मकान, काले कीड़े	बुद्धू लडका, सुस्मा	कौआ	बिनाई, रयाह रंग गाग्य, चरिद	बिच्छू, मौत, ताल कनपटी, पुडूडी	टाहली, लडकी रयाह रंग	मगर मच्छ, साप	लोहा	मछली, तख्त पोश, मसजुई ताबा, बादाम
राहू	ठोड़ी, नाना-नानी	सरसों, ससुराल, कच्चा धुआं	तेंदुआ लबान का, रिस्तेदार रयाह रंग	खाब	औलाद का सुख बलरिआ दौलत, छत	पूरा रयाह कुत्ता	सट्टे का ब्योपार	मालिखोलिया, झोला	नीला रंग, दहलीज	गंदा नाली, गरकी	नीलम	हाथी, तेंदुआ समंदर का, खोपडी
केतू	टांग, नानका घर	इमली, तिल	रीढ की हड्डी, केला, फाई	सुनवा	पेशाबगाह	चिड़ा, परदेश	गधा, सूअर, दूसरा लडका	कान	दो रंगा कुत्ता	चूहा	कीमती दो रंगा पत्थर	छिपकली, मुतबन्ना

पहला लडका:- औलाद में सबसे पहला ही लडका इकलौता लडका कहलाता है। मगर औलाद में लडकी के बाद का लडका मगर लडको मे पहला लडका होगा पहला लडका।

ग्रह की निशानी - हर ग्रह अपना असर अपनी मुतलका चीजों से अपना असर जाहिर कर देगा। नर ग्रह नरों पर और स्त्री ग्रह स्त्री जात पर असर करेंगे। स्त्री ग्रह (चंद्र शुक्र) मय बुध के साथ जब नर ग्रह होंवें नेक फल होगा।

इन्सान की उम्र और खाना नंबरों की उम्र का 100 साला चक्कर का फर्क

इन्सान की उम्र खतम हो या न हो मगर खाना नंबर की उम्र खास वकत तक मुकरर हैं। जो मुकरर वकत पर खतम गिनी जायेगी। इन्सानी उम्र के लिये सनीचर के हाल में लाल किताब सफा 316 ता 321 मुफसिल लिखा है और खाना नंबर की उम्र लाल किताब सफा 321 के हाथ के खाका के हासिया में दी हुई हैं। यानि-

खाने की उम्र	100	75	90	85	औलाद	80	85	मौत	बुजुर्गी	90	धर्म अस्थान	90
खाना नंबर	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

फर्क ये है कि किसी शख्स की 120 साला उम्र ही हो जाये या हो जाने वाली मालूम होती होवे तो इस के लिये हरएक खाना की चीजों का ज्यादा से ज्यादा अरसा सिर्फ इस नक्शा में दिये हुए सालों तक असर माना जा सकता है। जब खाना की उम्र खतम हो गई। मगर इस शख्स की उम्र अभी चलती ही होवे तो इस खतम वकत वाले खाने की चीजों पर इस की किस्मत का ताल्लुक न होगा। हर खाने की उम्र का शुरू इन्सान के अपने जनम दिन से शुरू गिनेगें। 100 साल के बाद फिर वही दौरा शुरू होगा। जो जनम दिन में था। दांत वगैरह नये आयेंगे। अब जिन घरों ने पहले 100 साला चक्कर में बुरा फल दिया। पहला दिया हुआ फल न देंगे।

अरमान नंबर 113 A

ग्रहों की मियादें

ग्रह की उम्र का अरसा - जब कोई ग्रह हर तरह से कायम अपने वजूद में खुद अपनी ही मुकम्मल ताकत का (खाह ऊंच खाह नीच या घर का मालिक मगर किसी दूसरे का इस पर या इसमें कोई असर न हो रहा हो) तो वह अपनी कुल उम्र तक असर देता रहेगा या इस की उम्र होगी खाना नंबर 5 लाल किताब सफ़ा 116 पर दी हुई यानि बृहस्पत 16 साल, सूरज 22 साल, चंद्र 24 साल वगैरह। (कुल ग्रहों की 120 साला मजमुआ से अपना अपना हिस्सा)।

ग्रह के असर का आम अरसा- अपनी हालत से बाहर जब कोई ग्रह ऊपर की शर्त (ग्रह की उम्र का अरसा) से बाहर दोस्तों या दुश्मनों के बरताव में हो जावे। तो उसके असर के लिये लाल किताब सफ़ा 116 खाना नंबर 3 में दिये हुए साल लेंगे। यानि बृहस्पत 6 साल, सूरज 2 साल और चंद्र एक साल वगैरह।

अपनी मियाद के शुरू दरमियान या आखिर पर हर ग्रह असर करता है। इस लिए खाली हिस्से की आम मियाद में हर ग्रह के साथ कौन से ग्रह का असर शामिल होगा।

दौरा ग्रह का	असर का वक्त	शुरू	दरमियान	आखिर	ग्रह का दौरा	असर का वक्त	शुरू	दरमियान	आखिर
बृहस्पत 6	दरम्यान	केतु	बृहस्पत	सूरज	बुध 2	यकसां	चंद्र	मंगल	बृहस्पत
सूरज 2	शुरू	सूरज	चंद्र	मंगल	सनी 6	आखिर	राहू	बुध	सनीचर
चंद्र 1	आखिर	बृहस्पत	सूरज	चंद्र	राहु 6	आखिर	मंगल	केतु	राहु
शुक्र 3	दरम्यान	मंगल	शुक्र	बुध	केतु 3	आखिर	सनीचर	राहु	केतु
मंगल 6	शुरू	मंगल	सनीचर	शुक्र					

ग्रह की महादशा - किसी ग्रह के बुरे और लगातार ही बुरे असर देने की म्याद इस के महादशा में हो जाना कहलाता है। महादशा के लिये लाल किताब सफ़ा 116 खाना नंबर 4 में दिये हुए साल लेंगे। यानि बृहस्पत 16 साल सूरज 6 साल चंद्र 10 साल वगैरह।

उम्र के एक 35 साला चक्कर में महादशा का सिर्फ एक ही ग्रह हो सकता है। और सारी उम्र में ख़ाह एक ही ग्रह की लगातार ख़ाह किसी दो की एक के बाद दूसरे की साथ ही लगती हुई ख़ाह एक के बाद दूसरी या दूसरे की कुछ फर्क देकर हो। ज्यादा से ज्यादा सिर्फ दो दफा ही महादशा आ सकती है। अगर किसी पितरी ऋण या बजुरगों के पापों के सबब से एक महादशा का ग्रह अपनी म्याद उम्र के 35 साला चक्कर के आखरी 35 वें साल खतम हो और इतफाकन दूसरा महादशा का ग्रह उम्र के दूसरे 35 साला चक्कर के शुरू साल से ही जारी हो जावे तो पहली महादशा का आखरी साल और दूसरी महादशा का पहला साल या दोनों का दरम्यानी साल दो दफा गिना जायेगा यानि महादशा का कुल अरसा दोनों महादशा के मजमुआ से न सिर्फ एक साल कम होगा बल्कि पहली का आखरी साल और दूसरी का शुरू वाला साल या दरम्यानी साल ख़ाह वो दोनों महादशायें लगातार हों ख़ाह दरम्यान में कुछ फर्क देकर होंवे। साफ साल होगा या दरम्यानी साल महादशा का तो न होगा। मगर म्याद में सिर्फ गिना जायेगा या वर्षफल के हिसाब और राशि नंबर के ग्रह बोलने के हिसाब से कोई ऐसा ग्रह आ जावे जो महादशा वाले का दुश्मन ग्रह हो तो पहली महादशा का आखरी साल भी साफ साल होगा। मसलन शुक्र की महादशा होती है 20 साल । जब ऐसी

हालत वाली दोनों ही शुक्र की महादशा आ जावे तो दो दफा की 20 साल के हिसाब से कुल 40 साल के अरसे से एक साल कम या 39 साल का कुल जमाना दोनों महादशाओं का होगा और दरम्यानी 20 वां साल साफ साल होगा। सबसे लंबी महादशा है भी शुक्र की ही। इसलिये माना है कि सारी उम्र में किसी शख्स का बुरे से बुरा जमाना 39 साल ही ज्यादा से ज्यादा हो सकता है। जिसके दरम्यानी साल को महादशा का साल न गिनेगें। कुण्डली में महादशा वाले ग्रह की **दो हालतें-** 1) जब किसी ग्रह के "बराबर के" ग्रह रहीं हों। मगर वो खुद रहीं न हो। लेकिन वर्षफल के हिसाब से वो जिस साल तखत का मालिक बने और उम्र के सालों के हिसाब से राशि नंबर के ग्रह बोलने पर वो खुद भी रहीं हो जाये तो जिस दिन से वो कुण्डली के राशि नंबर के ग्रह बोलने के टकराव पर खुद रहीं हुआ। उस दिन से वो महादशा में हो गया माना जायेगा। बेशक वो तखत पर पहले ही आ चुका हो।

2) जब कोई ग्रह कुण्डली में खुद भी रहीं होवे और उस के बराबर के ग्रह भी रहीं हों तो जिस दिन से वो ग्रह तखत का मालिक हुआ महादशा में हो गया गिना जायेगा। खाह राशि नंबर के हिसाब से बोलने वाले ग्रहों के टकराव का साल कब ही जारी हुआ हो या जारी होवे। लेकिन अगर ऐसी महादशा के वकत कुण्डली के खाना नंबर के हिसाब से उम्र की गिनती पर बोलने वाले ग्रह उस महादशा वाले ग्रह के दोस्त ग्रह ही बोल पड़ें तो वो बोलने वाले दोस्त ग्रह अपने महादशा वाले दोस्त ग्रह के महादशा में हो जाने के मातम में उस ग्रह को (महादशा वाले) कोई नेक फल पैदा करने में मदद न देंगे और न ही इसमें वो ग्रह कोई और बुरा फल पैदा करेंगे। सिर्फ दुनियादारों की तरह आम साधारण मातम परस्ती कर के चले जायेंगे।

जिस ग्रह की महादशा हो वो अपनी महादशा के जमाना में उस महादशा के नीचे दिये हुए सालों में (इन्सान की उम्र या ग्रह की उम्र के हिसाब से नहीं। बल्कि सिर्फ महादशा के अरसा की म्याद के सालों में कोई खास खास साल) अपना

आम असर जैसा भी कि उस का कुण्डली में मौका के मुताबिक इस खास खास साल में होवे। कायम रखा करता है यानि ये जरूरी नहीं कि वो उस खास खास साल में मंदा ही होवे क्योंकि महादशा में हैं या किसी और तरह से रद्दी हैं।

महादशा वाले ग्रह के जाती असर का साल

ग्रह	महादशा के कुल साल	जाती असर कायम रखने का साल	कैफियत																										
बृहस्पत	16	10 वां	ये 10 वां साल बृहस्पत की गुरु पदवी और रियायती साल के इलावा होगा।																										
सूर्य	6	ताक या टांक	जो साल कि 2 पर पूरा तकसीम ना होवे। 1-3-5 वां																										
चंद्र	10	जुफ्त या जोडा	जो साल कि 2 पर पूरा तकसीम हो जावे। 2-4-6वां																										
शुक्र	20	11 वां	इस ग्रह के आम दौरा के 3 साला अरसा का पहला साल																										
मंगल	7	चौथा	शुक्र में मंगल के ग्रह के असर प्रबल होने का होता है महादशा का धोका																										
बुध	17	5 वां	लंबे अरसे वाली अकेली और दो छोटे छोटे अरसा वाली मुश्तरका महादशा में 12 साल का धोका सा लगा रहता है कि शायद मौत ही आने लगे। मगर वो सिर्फ धोका ही होता है और बेमायनी। महादशा का जो साल होवे (उम्र का नहीं) इस अरसा के सालों से एक दो वगैरह ता 12 साल में हर साल के मुतलका ग्रह कुण्डली के मुताबिक अपने असर में धोका दिया करते हैं। ख्वाह उन 12 सालों में धोका देने वाले ग्रह महादशा में हों या न हों।																										
सनीचर	19	6 छटा																											
राहु	18	7 वां																											
केतु	7	तीसरा																											
इन्सानाी उम्र	औसत 120	साल	<table border="1"> <thead> <tr> <th>महादशा का साल</th> <th>सूर्य</th> <th>चंद्र</th> <th>केतू</th> <th>मंगल</th> <th>बुध</th> <th>सनीचर</th> <th>राहु</th> <th>मौत</th> <th>पितृ</th> <th>बृहस्पत</th> <th>शुक्र</th> <th>राशि खतम</th> </tr> </thead> <tbody> <tr> <td>1</td> <td>2</td> <td>3</td> <td>4</td> <td>5</td> <td>6</td> <td>7</td> <td>8</td> <td>9</td> <td>10</td> <td>11</td> <td>12</td> <td></td> </tr> </tbody> </table>	महादशा का साल	सूर्य	चंद्र	केतू	मंगल	बुध	सनीचर	राहु	मौत	पितृ	बृहस्पत	शुक्र	राशि खतम	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
महादशा का साल	सूर्य	चंद्र	केतू	मंगल	बुध	सनीचर	राहु	मौत	पितृ	बृहस्पत	शुक्र	राशि खतम																	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12																		

महादशा के वक्त न सिर्फ महादशा वाले ग्रह का मंदा फल होगा। बल्कि उस महादशा वाले ग्रह के "बराबर के ग्रह" भी (लाल किताब सफ़ा 105 फरमान नंबर 109) ख्वाह वो

कुण्डली में अपनी अपनी जगह ऊंच फल के ही या उस महादशा वाले के "साथी ग्रह" या उनके साथ ही एक ही खाना में क्यूं न हों सो जाया करते हैं। यही हाल दोस्त ग्रहों का होगा। जो सिर्फ मातम पुरस्ती करके चले जाया करते हैं। लेकिन खुद बुरा नहीं करते और न ही महादशा वाले का मंदा फल अच्छा करते हैं। महादशा वाले के लिये इसके महादशा के जमाने में जखम पर नमक डालने का असर करते हैं।

महादशा के असर के वकत महादशा वाले ग्रह का कुण्डली के सिर्फ उस खाना नंबर का जिसमें कि वो ग्रह बैठा हो और इन्हीं चीजों पर जो चीजें कि उस ग्रह (महादशा वाले) की उस बैठे हुए खाना की मुतलका हों पर मंदा असर होता है। "बराबर के" ग्रहों का जो महादशा वाले के महादशा शुरू होने के वकत उस महादशा वाले के लिये सो जाते हैं। सोया हुआ असर भी सिर्फ उन ही चीजों से मुतलका होगा जो कि वो बराबर के ग्रह उसे दे सकते थे उस खाने/उन खानों के हिसाब से जिस में कि वो महादशा वाला ग्रह और वो बराबर वाले कुण्डली में बैठे हों। यानि कि अगर महादशा न होती तो जो असर उनका हो सकता था। वो अब महादशा में सोया हुआ होगा। यही असूल दोस्त ग्रहों की मातम परस्ती और दुश्मन ग्रहों का जखम पर नमक मलने की तरह का होगा। बरअकस इसके महादशा वाले ग्रह का खुद अपना असर दूसरों के लिये ख्वाह वो "बराबर के" दोस्त या दुश्मन हों। महादशा का कोई असर न होगा। वो असर वैसा ही होगा। जैसा कि महादशा के बगैर होता था। याद रहे कि धोके के 12 साला चक्कर में हर सातवें (राहु का) या आठवें (खुद मौत नमानी का) साल तबदीली हालत का हुआ करता है। ख्वाह महादशा ही क्यूं न हो। इस तबदीली हालत के लिये लाल किताब सफ़ा 10 फरमान नंबर 23 की हिदायत मददगार होगी।

धोके का 12 साला चक्कर

महादशा के इलावा तमाम उम्र पर भी अपना असर किया करता है। इस चक्कर के 12 सालों में हर साल के सामने लिखे हुए ग्रह अगर दुरस्त और कायम या अपनी बुनियाद पर कुण्डली में खड़े न हों। (यानि बुध वर्गैरह से बुनियाद खोखली या दुश्मन ग्रहों से खराब और नष्ट वर्गैरह) तो नाबालिग (ख्वाह बच्चा ख्वाह मर्द जैसा कि बालिग नाबालिग होने की शर्त अरमान नंबर 12-13

में लिखी गयी है) की किस्मत बल्कि उम्र तक बेमायनी होगी और बालिग के लिये ये धोका इस ग्रह का जो उम्र के हिसाब से मालूम होता होवे राशिफल का होगा। यानि शक का फायदा उठाया जा सकता है।

धोके के ग्रह का धक्का

जिस तरह से उम्र का पहला 35 साला चक्कर जब दुबारा आता है तो अपने पहले दौरा के बुरे ग्रहों के असर में तबदीली कर दिया करता है। उसी तरह ही ये 12 साला धोके का चक्कर महादशा के जमाना में और उम्र आम के जमाना में (हर ग्रह की महादशा के सालों के अरसा का उम्र से टुकड़ा) जब दूसरी दफा (एक ही ग्रह का दूसरी दफा धोके का साल) आवे तो सोये हुए ग्रहों के असर को जगा दिया करता है और तबदीली हालात किया करता है। ख्वाह भली तरफ हो ख्वाह बुरी तरफ। जिस का उपाय फरमान नंबर 23 लाल किताब सफ़ा नंबर 10 पर लिखा ही हुआ है।

धोके का 12 साला चक्कर

सूरज	चंद्र	केतु	मंगल	बुध	सनीचर	राहु	मौत	पितरी ग्रह	बृहस्पत	शुक्र	राशि खत्म
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
109	110	111	112	113	114	115	116	117	118	119	120

तरीका इस्तमाल जुदा लिखा है।

ऊपर लिखा हुआ चक्कर देखने का ढंग

महादशा के वकत ख्वाह किसी भी ग्रह की हो। ज्यादा से ज्यादा 1 से 40 तक हिंदसे उसी तरतीब से लिख लेंगे। जिस तरह कि ऊपर की फेहरिस्त में दिखलाये हैं। गोया 12 खानों में हिंदसे लिखे मौजूद हैं। मगर ऊपर इन खानों की पेशानी पर ग्रहों के नाम न लिखें। अब जिस ग्रह की महादशा शुरू होवे। पहली दफा या पहली ही महादशा वाले ग्रह का नाम एक के हिंदसा वाले खाना के ऊपर लिख दें और बाकी ग्रहों को नक्शा में दी हुई तरतीब से यानि सूरज के बाद के खाने में चंद्र के बाद के खाने में केतु वगैरह। अब जिस हिंदसे की पेशानी पर कोई ग्रह लिखा हुआ होगा वो साल उस धोके वाले ग्रह के असर का महादशा के महादशा के सालों में तबदीली हालात का होगा। महादशा में पडा हुआ ख्वाह कोई भी ग्रह हो। लेकिन अगर दो महादशा लगातार एक के बाद दूसरी शुरू हो जावें तो दोनों के दरम्यान के साल वाले हिंदसा के ग्रह का असर बिल्कुल न होगा। लेकिन बाकीयों का बदस्तूर होगा। यानि कि महादशा गिनी तो पूरे साल ही जायेगी। मगर दरम्यानी साल महादशा के बुरे ही असर का जरूरी न होगा। मसलन शुक्र की दोनों ही 35 साला चक्करों में दो लगातार महादशा आती मान लें तो महादशा के सालों के ग्रह मंदरजा जैल होंगे।

शुक्र	राशि	सूर्य	चंद्र	केतु	मंगल	बुध	शनी	राहु	माँत	पितरी	बृहस्पत
	खतम										
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
37	38	39	40								

इन्हीं चालीस मंटे सालों के धोके को खोलने के लिये चालीस दिन रियायती या चालीस दिन तक हर उपाय की म्याद मुकर्रर की है।

ऊपर दिये हुए हिंदसे दरअसल महादशा के अरसा या महादशा की म्याद का हर साल नंबर है। उम्र का साल नहीं। अगर उम्र का कौन सा साल महादशा

में किस किस ग्रह के धोके का साल है मालूम करना है तो जिस जगह अब हिंदसा नंबर 1 लिखा है। वहां उम्र का वो साल नंबर लिख दें। जिस साल कि महादशा शुरू हुई और महादशा मजकूरा की म्याद के बराबर हिंदसे उम्र के सालों के तरतीबवार लिख कर उम्र के सालों का साल नंबर देख लें। इस दिये हुए नक्शे में तो महादशा की म्याद के साल नंबर है यानि हिंदसा नंबर 1 से मुराद है कि महादशा का पहला साल। हिंदसा नंबर 2 से मुराद है महादशा का दूसरा साल। फरजन किसी की 23 साला उम्र में शुक्र की महादशा शुरू हुई तो जहां अब नंबर 1 का हिंदसा लिखा है वहां 23 का हिंदसा लिखा तो नंबर 2 की जगह 24 वां हिंदसा उम्र के सालों का हो जायेगा या इस तरह हिंदसे लिख लेने पर उम्र के सालों में महादशा की म्याद का हर इक साल नंबर मालूम हो जायेगा।

पहली महादशा शुक्र के 20 वें साल खतम हुई और दूसरी भी 20 वें साल शुरू हुई। गोया 20 वां साल दोनों महादशायों का दरम्यानी साल हुआ। ये दरम्यानी 20 वां साल। असर देखने के लिये मिटा ही दिया। यानि इस 20 वें साल न शुक्र ही महादशा में गिनेगें न ही सनीचर को जो 20 वें साल की पेशानी पर लिखा गया है। अब कुण्डली के हिसाब से जहां जहां कि शुक्र और सनीचर हों और मौका के मुताबिक जैसा जैसा उनका असर हो गिना जायेगा। बाकी सालों में हर ग्रह जो कि ऊपर के नक्शा की पेशानी पर लिखा है। महादशा के सालों में धोका देगा और तबदीली हालात पैदा करेगा। एक तरफ तो इस फेहरिस्त के हिसाब से जो ग्रह आवे ले लेंगे। दूसरी तरफ वर्षफल के हिसाब से जिस ग्रह का दौरा हो (उम्र के जिस साल कि देखना हो) वो लेंगे। तीसरी तरफ राशि नंबर के ग्रह बोलने के हिसाब का ग्रह (उम्र के जिस साल कि देखना हो) वो ले लेंगे। अब इन तीनों ग्रहों में से एक ही ग्रह दोनों तरफ या दो दफा निकल पडे वो ग्रह धोके का ग्रह होगा। महादशा के जमाना में?। (अच्छी या निहायत बुरी)। क्योंकि शुक्र महादशा में है। दुश्मन ग्रह भी सतायेंगे। मगर वो भी अपने अपने सालों में। यानि एक तरफ तो ऊपर के नक्शा के सालों में सूरज चंद्र राहू बुरा फल देंगे। सिर्फ पक्के दुश्मन ही दुश्मन

ग्रह गिने जायेंगे। यानि सिर्फ वही दुश्मन ग्रह जो शुक्र के सामने लाल किताब सफ़ा 105 फरमान नंबर 119 की फ़ेहरिस्त में दुश्मन के खाने में लिखे हैं। बाकी जो ग्रह रह गये वो बृहस्पत व मंगल हैं जो शुक्र के बराबर के हैं। वो चुप या सो गये गिने जायेंगे और सनीचर बुध केतु तीनों शुक्र के दोस्त हैं। वो सिर्फ मातम पुरस्ती करके चले जाएंगे।

दूसरी तरफ तख्त का मालिक ग्रह व राशि नंबर बोलने वाले ग्रहों का मुश्तरका असर भी साथ होगा। महादशा का 11 वां साल शुक्र के लिये महादशा के जमाना में शियायती साल होगा। ऊपर की नक्शा की पेशानी के खाने राशि खतम- मौत-पितरी ग्रह का मतलब ये होगा। कि:-

1) **मौत** - इस शख्स के खाना नंबर 8 में जो ग्रह हैं वो गिने जायेंगे। उन सालों की हिंदसा की पेशानी पर जहां की लफ़्ज़ मौत लिखा है। अगर खाना नंबर 8 इस शख्स की कुण्डली का खाली हो तो लफ़्ज़ मौत के खाने के नीचे लिखे हुए हिंदसों वाले साल धोके के साल न होंगे और अगर खाना नंबर 8 (बमूजब जनम कुण्डली) कोई ग्रह या कई ग्रह हों तो वो खाना नंबर 8 वाले ग्रह दो दफा (अगर एक ही ग्रह हो तो वो अकेला अगर कई हों तो हर इक अपने अपने साल जहां की हर इक या वो अकेला ऊपर दिये धोके वाले नक्शा में हो) धोका देंगे। इसी तरह ही-

पितरी ग्रह - से मुराद खाना नंबर 9 (जनम कुण्डली के चंद्र कुण्डली के नहीं) से होगी और राशि खतम से मुराद खाना नंबर 12 के ग्रहों से होगी।

महादशा के बग़ैर बाकी उम्र के सालों में ऊपर का असूल बदस्तूर होगा। सिर्फ पेशानी भरने का ढंग जरा फर्क पर होगा।

आम उम्र में धोके का 12 साला चक्कर- एक से लेकर 120 साल तक जो औसत उम्र माना गया है। ऊपर दी हुई तरतीब से तमाम हिंदसे लिख दें। कुण्डली वाले के वर्षफल के हिसाब से जिस साल सूरज का दौरा पहली दफा शुरू होता होवे। उस साल के हिंदसा वाले खाने की पेशानी पर लफ़्ज़ सूरज लिख दें और ऊपर दी हुई तरतीब से पेशानी के बाकी खानों में बाकी तमाम ग्रह लिख दें और सालों के सब खाने आगे पीछे के पूरे कर लें और ऊपर के ढंग पर धोके का साल देख लें।

फरवण उम्र जारी के साल धोके की फ़ेहरिस्त में है बुध। उधर वर्षफल के हिसाब से उम्र के जारी साल का ग्रह या राशि नंबर के हिसाब से जारी उम्र का ग्रह भी बुध ही आ जावे तो बुध धोके का ग्रह होगा। यानि अगर एक ही साल में वर्षफल का ग्रह या राशि नंबर बोलने का ग्रह और धोके की फ़ेहरिस्त का ग्रह एक ही हो जावें तो वो ग्रह आम उम्र के लिहाज से धोके का ग्रह होगा।

(1) और अगर आम उम्र में धोके का ग्रह और महादशा की फ़ेहरिस्त का धोके का ग्रह एक ही हो जावे तो वो ग्रह मौत तक की नाँबत के लिये धोका दे देगा।

(2) धोके के ग्रह का जरूरी नहीं कि नीच ग्रह ही होवे। सबसे ऊंच होता हुआ भी हर इक ग्रह धोके का ग्रह गिना जाता है। ख़ाह वो लाख ऊंच हालत का ही क्यूं न हो।

नाबालिग की हालत में या नाबालिग रहने के दिन तक ये धोका ग्रहफल का या पक्का धोका होगा और उम्र ही खतम कर देने तक हो सकता है। मगर बालिग की हालत या बालिग होने के दिन से ये धोका राशि फल का (यानि काबिल उपाय) होगा। मगर हर दो हालत में धोका होगा जरूर। वो किस बात में? हर इक ग्रह के धोके का साल आम उम्र और महादशा के जमाना के सालों में तो मालूम हो गया और ग्रह का नाम भी पता लग गया। अब धोका देने वाला ग्रह जनम कुण्डली में जिस ख़ाना नंबर का होवे। उस ग्रह का उस बैठे हुए होने के ख़ाने के मुताबिक जिन जिन चीजों का ताल्लुक हो उन में वो ग्रह उस साल धोका देगा। जिस तरह महादशा के जमाना में हर ग्रह को अपना जाती फल (बमुजब जनम कुण्डली) देने का रियायती साल मिल गया गिना जाता है। इसी तरह ही इन्सान की उम्र के हर सातवें (आम हालत) और हर आठवें (अल्प आयू वाले) तबदीली हालात होगी। उस सातवें खतम या आठवें शुरू के दरम्यानी अरसा में तबदीली हालत जरूर होगी। ख़ाह कोई ग्रह 12 साला धोके के नक्शा के हिसाब से या वर्षफल वगैरह के हिसाब से प्रबल हो रहा हो।

ऊपर का तमाम हिसाब अगर सालों में लिख कर देखा तो साल के 12 महीनों में भी वही असर जाहिर होगा। यानि नक्शा में सालों की जगह लफ़्ज़ महीना समझें और महीनों

के वक्त खाना नंबर 1 से मुराद बैसाख का महीना लेंगे। जिसके बाद देसी नामों के बारह महीने होंगे। यानि नंबर 1 बैसाख 2 ज्येष्ठ 3 आषाढ़ 4 सावन 5 भादों 6 अस्सूज 7 कार्तिक 8 मगधर 9 पोह 10 माघ 11 फाल्गुन 12 चेत तरतीब वार होंगे। फिर देसी महीनों के मुताबिक अंग्रेजी तारीख भी देखी जा सकती है। साल और महीने के बाद खास दिन के लिये इसी नक्शा में सिर्फ 1-32 तक हिंदसे लिख कर नंबर 1 के हिंदसा वाले खाने पर जनम दिन अरमान नंबर 9 का ग्रह लिख कर तमाम ग्रह पूरे कर लें।

धोके के चक्कर की म्याद एक साल होती है। मगर इस एक साल में से भी आगे पूरा वक्त देखने के लिये हर इक ग्रह के तखत के मालकीयत के जमाने के दौरा में इस के शुरू दरम्यान व आखिर पर के दूसरे साथियों का ताल्लुक भी देख लें। जो कि अरमान नंबर 113A में दर्ज है।

महादशा दरअसल किसी ग्रह के किसी एक खास हिस्सा की ताकत के सो जाने से मुराद होती है। जिस तरह कि तमाम जिस्म से कोई अंग नाकारा हो जावे। किसी ग्रह का कुण्डली के 12 ही खानों के असर का सो जाना ग्रह के नष्ट हो जाने से मुराद होती है।

महादशा के जमाना में महादशा वाले ग्रह पर इसके दुश्मन ग्रहों का असर इस ग्रह की अपनी मुतलका रेखा का यकायक टूट जाना या मौत की निशानी होती है। महादशा के जमाना में महादशा वाले ग्रह से इस के दोस्त ग्रहों का मातम पुरस्ती के लिये ही आ मिलना इस ग्रह का अपनी मुतलका रेखा खतम होने से पहले ही दूसरी रेखा का शुरू हो जाना होगा। यानि वो मौत की निशानी होते हुए भी उम्र व जिंदगी का मालिक होगा। बल्कि तबदीली हालात की निशानी होगी।

दो ग्रहों की महादशा - अगर किसी वक्त दो ग्रह महादशा के मालूम होते हों तो जो उन दोनों में से रद्दी हो जाएगा वो महादशा का होगा।

मशनुई ग्रहों और असल ग्रहों के टोले में से मशनुई हालत

वालों से जो रद्दी होगा वो महादशा का होगा। मसलन सूरज और मशनुई सूरज (शुक्र बुध) दोनों ही टोले शक्की हो जावें तो मशनुई हिस्से का जुज ज्यादा रद्दी होवे तो वो महादशा का होगा।

कायम ग्रह या दुरस्त और नेक बुनियाद का ग्रह - कभी महादशा का न होगा और हर ग्रह जहां कि वो राशिफल का है। (अरमान नंबर 6 नीच कहलायेगा। मगर महादशा का न होगा। क्योंकि काबिल उपाय ही हो चुका है।)

महादशा में कौन कौन से ग्रह कितने कितने साल सोये हुए होंगे।

महादशा का ग्रह	बृहस्पत	सूरज	चंद्र	शुक्र	मंगल	बुध	सनी	राहु	केतु
ग्रह जो सो जाएंगे	सनीचर 6	मंगल बद 6	बृहस्पत 2	बृहस्पत 6	शुक्र 1	बृहस्पत 6	बृहस्पत 16	बृहस्पत 8	बृहस्पत 6
	राहु 6		मंगल 6	मंगल 6	सनीचर 6	मंगल 6	केतु 3	सूरज चंद्र	सूरज
	केतु 3		सनीचर 2	बुध 2	राहु सनीचर 6	सनीचर 5	शुक्र 3	1 शुक्र 3	बुध सनी 1
						केतू 6		मंगल 6	
कुल साल	15	6	10	20	7	17	19	18	7

ऊपर की फ़ेहरिस्त में जिस तरतीब से "बराबर के ग्रह" लिखे हैं। वो उसी तरतीब से एक के बाद दूसरा सोते हुए होते चले जायेंगे। जिन ग्रहों के सामने कोई हिंदसा नहीं लिखा गया वो ग्रह निरपक्ष गिने जायेंगे।

बृहस्पत- की कुल महादशा 16 साल होती है। मगर इसकी महादशा के जमाना में सो जाने वाले ग्रहों के मिकान कुल 15 साल हैं। ये एक साल का फर्क बृहस्पत अपनी महादशा के वक्त बहँसीयत गुरु अपना जाती असर के लिये रखा करता है। जो इसकी महादशा का शुरू होने का ही साल होता है या यूँ कहो कि बृहस्पत की महादशा के कुल 15 साल मंदे और 16 साल

कुल में से महादशा का पहला ही साल बृहस्पत की अपनी मर्जी का होता है। इसी तरह ही बृहस्पत हर एक सोने वाले ग्रह का पहला साल भी दूसरे ग्रहों की तरफ से खुद बृहस्पत की गुर्यायी के लिये रख लेता है। जिसमें भी बृहस्पत का अपनी मर्जी का फल होगा। इस तरह पर 16 साला महादशा के अरसा के सालों में बृहस्पत का खुद अपना अखत्यार किस किस साल हुआ।

बृहस्पत की महादशा के वक्त सो जाने वाले ग्रह सनीचर 6 साल राहु 6 साल और केतु 3 साल यानि बृहस्पत की महादशा के वक्त तमाम पापी ग्रह 15 साल की म्याद के होते हैं। बृहस्पत की महादशा शुरू होवे तो उस महादशा का :-

साल नंबर 1 पहला- बृहस्पत खुद अपनी गुर्यायी का ले गया।

सनीचर के 6 सालों में से 3 सनीचर का पहला मगर बृहस्पत का

(2-3-4-5-6-7) दूसरा साल बृहस्पत सनीचर से गुरु दान का ले गया।

राहु के 6 सालों

(8-9-10-11-12-13) में से 3 ये आठवां साल है बृहस्पत की महादशा का मगर राहु का होगा पहला साल। बृहस्पत राहु से अपना बतौर गुरु गुरुदान का ले गया।

केतु के 3 सालों 3 ये केतु का पहला मगर बृहस्पत का 14

(14-15-16) में से 3 वां साल है। जो बृहस्पत केतु से गुरुदान का ले गया।

खुलासतन बृहस्पत अपनी महादशा के वक्त का पहला दूसरा आठवां साल व चौदहवां कुल 5 साल तो इस तरह ले गया और अपने दूसरे असूल के मुताबिक कि अपनी उम्र का पहला हिस्सा यानि 8 साल कभी बुरा फल न देगा। भला असर ख्वाह दे ख्वाह न देवे। यानि बृहस्पत की महादशा दरअसल 9 वें ही साल से शुरू होगी और 8 साल बाकी में से भी 14वां और 10 वां दो साल और अपनी मर्जी के रख लेगा।

धोके के ग्रह के मायने:- लफज धोका दरअसल गुमराही का नाम है। धोके का ग्रह अगर तारने वाला हुआ तो तारेगा दोगुना। अगर मारेगा तो भी दो गुना। गर्जे कि धोके के चक्कर से जाहिर होने वाला ग्रह होता है दो गुना ताकत का। ख्वाह भला करे ख्वाह बुरा करे।

महादशा के वकत में किन किन ग्रहों पर महादशा का असर न मानेंगे।

महादशा में होवे	तो कौन कौन से ग्रह बदस्तूर होंगे।
बृहस्पत	सिवाये पापी ग्रहों के सब और ग्रह बदस्तूर होंगे।
सूरज	सिवाये मंगल बद के बाकी और सब ग्रह बदस्तूर होंगे।।
चंद्र	बुध शुक्र सूरज राहू केतु
शुक्र	सूरज चंद्र राहु केतु
मंगल	सूरज चंद्र बृहस्पत केतु बुध राहु नदारद
बुध	सूरज चंद्र शुक्र राहु केतु नदारद
सनीचर	सूरज चंद्र मंगल बुध शुक्र राहु।
राहु	सनीचर बुध केतु सूरज नदारद।
केतु	चंद्र शुक्र मंगल राहु सूरज नदारद व बुध नदारद

महादशा का असर ग्रह मुतलका की चीजों के असर के जरिया भी जाहिर और सबूत दे देता है।

नष्ट ग्रह के वकत इस ग्रह का मशनुई हालत का ग्रह काम देता है।
दो पक्के ग्रहों से मशनुई ग्रह कौन कौन सा बन जाता है

पक्का ग्रह	बृहस्पत	सूरज	चंद्र	शुक्र	मंगल	बुध	सनीचर	राहू	केतु
मशनुई ग्रह	सूरज	बुध	सूरज	राहू	सूरज	बृहस्पत	शुक्र	मंगल	शुक्र
	शुक्र	शुक्र	बृहस्पत	केतु	बुध	राहु	बृहस्पत	बुध	सनीचर
	खाली				मंगल		केतु	(ऊंच)	(ऊंच)
	हवाई				नेक		सुभाओ	सूरज	चंद्र
					सूरज		मंगल	सनीचर	सनीचर
					सनीचर		बुध	(नीच)	(नीच)
					मंगल		राहु		
					बद		सुभाओ		

मशनुई ग्रह - मौत दरअसल पापी ग्रहों के पाप का नतीजा है और पापी ग्रह तीन है।

पाप } राहु- परसा चलाने वाला परसू मगर परसे कुल्हाड़े का साथ न होगा।
केतु- सिर्फ खाली परसा या परसा कुल्हाडा। कुल्हाड़े वाले का साथ न होगा।

पापी } सनीचर:- परशरामा परसू परसा दोनों की जमा यानि कुल्हाडा व कुल्हाड़े वाला दोनों ही इकट्टे।

मंगल के दो हिस्से } सूरज बुध (नेक) केतु, } शुक्र होता है।
नेक व बद } सूरज सनीचर (बद) राहु, }

सूरज सनीचर (रात दिन इकट्टे ही) खाली बुध होते हैं। अगर बुरी खासीयत में हों तो राहु नीच या मंगल बद होगा।

असर:- मशनुई बनावट के ग्रहों का असर खास खास बातों का होगा।

मशनुई बृहस्पत

औलाद की पैदाइश का मालिक होगा।

मशनुई सूरज

सेहत का मालिक होगा।

मशनुई चंद्र

वालदैंनी खून (नतफा) का ताल्लुक

मशनुई शुक्र

दुन्यावी सुख बजज औलाद

मशनुई मंगल

औलाद जिदा रखने का मालिक (बेल-सब्जी का मालिक हैं)।

मशनुई बुध

इच्चत - शोहरत

मशनुई सनीचर

सख्त बीमारी

मशनुई राहु

झगडे फसाद

मशनुई केतु

ऐश का मालिक होगा

मशनुई हालत की बनावट के ग्रह की हालत में उसके हर दो ग्रहों का असर जुदा जुदा कर लेना या दो का मुश्तरका कर लेना हो सकता है। यानि राशिफल का होगा।

वर्षफल:- किस्मत का सालावार हाल देखने के लिये ये जरूरी जुज हैं और सामुद्रिक में वाक्या की बुनियाद पर बनाया हुआ वर्षफल ज्यादा तसल्ली बख्श होगा। वाक्यात से मुराद खुशी या गमी के पक्के वाक्या से होती है। मसलन शादी का दिन, महीना और साल किसी हकीकी खून के ताल्लुकदार की पैदाइश या माँत। नरग्रहों - स्त्रीग्रहों या मख्खनस ग्रहों के मुतलका असर में से किसी एक चीज का पक्का वाक्या। जनमदिन (तारीख पैदाइश नही इतवार सोमवार वगैरह), इन्सान किस ग्रह का है वाला ग्रह या इसका जद्दी या खुद साखता मकान किस ग्रह का है वाला ग्रह। जनम कुण्डली में लगन के खाना का ग्रह और अगर लगन का खाना खाली हो तो जनम राशि के घर का मालिक ग्रह। गर्जेकि जो भी सही सही और दुरसत व पक्का वाक्या

मिल सके ले लें। फरजान किसी शख्स की शादी का वाकया पक्का मिल गया है। पहली शादी का (अगर कई दफा शादी हो तो पहली शादी का दिन ही गिनने के काबिल होगा)। जो इसकी 17 साला उम्र में उम्र में हुई। यानि 17 साल उम्र से शुक्र शुरु हो गया। अगर शादी का साल महीना दिन मालूम न हो और पहली शादी की औरत का मौत का दिन महीना या साल ही मालूम होवे तो औरत के गुजर जाने या शुक्र के खतम होने का साल होगा। लाल किताब सफा 116 खाना नंबर 3 में हर ग्रह की दी हुई आम मियाद में शुक्र का अरसा 3 साल दिया है। 17 साल उम्र में शादी हुई तो इसका शुक्र का ग्रह 17 से शुरु हो गया मान कर 3 साल यानि 19 साल उम्र के आखिर तक रहा। अगर 17 साल उम्र में औरत मर गई तो 17 वें साल या औरत के मरने के दिन शुक्र खतम हुआ या औरत की मौत के दिन से 3 साल पहले से चल कर मरने के दिन तक शुक्र का दौरा था।

वर्षफल बनाने के लिये ग्रहों का दौरा यानि कौन ग्रह किस ग्रह के पहले या बाद अपना असर देगा। लाल किताब सफा नंबर 7 पर तरतीब वार दिया है। यानि सबसे पहले बृहस्पत के बाद सूरज के बाद चंद्र वगैरह आखरी 9 वां नंबर केतु का है। ग्रहों की आम म्याद के सालों की तादाद और तरतीब भी लाल किताब सफा 116 खाना नंबर 3 पर दर्ज है। सारे ही ग्रहों की कुल म्याद का मजमूआं 35 साल उम्र का एक चक्कर होगा।

मिसाल - किसी शख्स का शुक्र शुरु हुआ 17 साल उम्र में तो वर्षफल होगा-

6 साल बृहस्पत	2 साल सूरज	1 साल चंद्र	3 साल शुक्र	6 साल मंगल	2 साल बुध	6 साल सनी	6 साल राहू	3 साल केतु
							1 ता 4	5 ता 7
8 - 13	14 - 15	16	17-19	20-25	26-27	28-33	34-39	40-42
43-48	49-50	51	52-54	55-60	61-62	63-68	69-74	75-77
78-83	84-85	86	87-89	90-95	96-97	98-103	104-109	110-112
113-118	119-120							

जितने साल तक उम्र चलती या हो जाने वाली होवे लिख लेवें।(दोनों हिंदसे शामिल गिनकर हरग्रह की मयाद होगी।)

पहचान:- कि वर्षफल दुरस्त है या गलत। उम्र के शुरू होने का पहला साल या हिंदसा नंबर । जिस खाना में हो। वहां देखें कि पेशानी पर कौनसे ग्रह का नाम लिखा है। दुरस्त हालत में हिंदसा नंबर । के खाने वाला ग्रह इसकी कुण्डली के खाना नंबर १ या खाना नंबर । में होगा या उस शख्स का जदी मकान हिंदसा नंबर । के खाना के ग्रह से मिलता या वो शख्स खुद उस ग्रह का होगा। जनम के दिन का ग्रह (इतवार के लिये सूरज, सोमवार के लिये चंद्र वगैरह) भी हिंदसा नंबर । के ग्रह का हो सकता है। इस जांच के लिये मंगल और सनीचर या सूरज और बुध या सूरज और चंद्र एक ही गिने जायेंगे। वरना लालकिताब सफा 113 पर दिया हुआ वर्षफल इस्तेमाल करें। अगर ऊपर जिकर करदा बातों से कोई भी दुरस्त मालूम न होवे यानि हिंदसा नंबर । से न मिलें तो कोई और वाकया लेकर वर्षफल बनावें।

उम्र के कौन से साल में किस राशि नंबर (खाना नंबर) के ग्रह असर देंगे
हर खाने में उम्र के 3 साल होंगे

उम्र के साल

1	मेख	1 ता 3	37 ता 39	73 ता 75	109 ता 111
2	बृख	4 ता 6	40 ता 42	76 ता 78	112 ता 114
3	मिथुन	7 ता 9	43 ता 45	79 ता 81	115 ता 117
4	कर्क	19 ता 21	55 ता 57	91 ता 93	
5	सिंह	22 ता 24	58 ता 60	94 ता 96	
6	कन्या	25 ता 27	61 ता 63	97 ता 99	
7	तुला	28 ता 30	64 ता 66	100 ता 102	
8	बृच्छक	31 ता 33	67 ता 69	103 ता 105	
9	धन	34 ता 36	70 ता 72	106 ता 108	118 ता 120
10	मकर	10 ता 12	46 ता 48	82 ता 84	
11	कुंभ	13 ता 15	49 ता 51	85 ता 87	
12	मीन	16 ता 18	52 ता 54	88 ता 90	

उम्र के हिसाब से असर का खाना नंबर देखते जावें। अगर कोई खाना नंबर खाली ही आ जावे तो इस खाली खाना नंबर की राशि के मालिक ग्रह (घर का मालिक) जिस खाने में हो वो खाना लेंवे। मगर ये वहम न करें कि एक ही खाना नंबर के ग्रह कई बार क्यूं बोले।

एक दिन का हाल

i) हर इक शख्स की क्रिस्मत का आगाज इसके जनम वकत के ग्रह (अरमान नंबर १)के शुरू होने से गिना जाता है। यानि इस की क्रिस्मत का दिन जनम वकत से शुरू करके 24 घंटे बाद तक मुकम्मल होगा।

ii) ज्योतिष की बनाई हुई कुण्डली (जनम कुण्डली हो या चंद्र कुण्डली) जो लाल किताब के इल्म सामुद्रिक के मुताबक खाना नंबर 1 देकर तैयार कर ली हो (अरमान नंबर 181) या खाना नंबर एक से ही शुरू होने वाली इल्म सामुद्रिक की कुण्डली बात की बुनियाद होगी।

नाबालिग कुण्डली (अरमान नंबर 12)

पहले हफते में - (जनम वकत से शुरू करके उम्र के पहले सात दिन का अरसा) खाना नंबर 1 दी हुई वाली कुण्डली मौजूद है। क्रिस्मत का असर देखने के लिये।

(अलफ) तख्त के मालिक ग्रहों के लिये (यानि वर्षफल वाली फेहरिस्त) जनम वकत का ग्रह सबसे पहले दर्जा पर शुरू होने वाले गिनेंगे। उसके बाद लाल किताब सफ़ा 7 पर की दी हुई तरतीब से बाकी ग्रहों को लिखेंगे। मगर म्याद हर इक ग्रह की तख्त की मलकीयत के 35 साला चक्कर सालों की बजाये अब सिर्फ़ 40 मिनट फी यूनिट के हिसाब की जो लाल किताब सफ़ा 117 पर दर्ज है होगी यानि आम वर्षफल में जहां 35 साला चक्कर में बृहस्पत को 6 साल तख्त का मालिक गिना है वहां अब उम्र के पहले हफते के वर्षफल के लिये बृहस्पत की तख्त की मलकीयत का जमाना सिर्फ़ चार घंटे (सफ़ा 117 लाल किताब) होगा। इसी तरह ही बाकी सब ग्रहों की म्याद होगी।

(बे) राशि नंबर के ग्रहों के लिये तमाम खानों के ग्रह उस तरतीब से बोलेंगे। जो तरतीब कि अरमान नंबर 13 में लिखी है। मगर वो सालों की म्याद की बजाये अब सिर्फ़ दो घंटे फी खाना की म्याद पर एक के बाद दीगरे गिने जाएंगे।

(जीम) धोके के ग्रह - का साथ अरमान नंबर 113 A "आम उम्र

वाले हिसाब का" होगा। जो कि 32 दिन की तरतीब का है। 32 दिन (एक महीना) के बाद धोके के ग्रह का "12 महीने के हिसाब वाला" चक्कर लिया जाएगा। फिर एक साल की उम्र के बाद "120 साल में हर साल के असर का" धोके का ग्रह साथ देखेंगे। हर हालत में धोके के ग्रह का धक्का न भूल जाएंगे।

ii) दूसरे हफते से 12 हफते तक - तख्त के मालिक ग्रह, राशि नंबर के बोलने वाले ग्रह, धोके के ग्रह का चक्कर वगैरह सब के सब पहले हफते की उम्र वाले होंगे। सिर्फ कुण्डली में थोडा सा फर्क होगा वो ये कि जिस खाने को पहले नंबर 1 का हिंदसा दिया था दूसरे हफते के शुरू होने के वकत से अब हिंदसा नंबर 2 देकर बाकी सब खाने बातरतीब मुकम्मल कर करेंगे। तीसरे हफते के शुरू वकत से उसी एक नंबर का हिंदसा दिया जाने वाले खाने को नंबर 3 का हिंदसा देकर बाकी खानों के नंबर बातरतीब कर लेंगे। गर्जोकि 12 हफते तक इसी तरह ही हिंदसा नंबर 12 तक चलाया जाएगा। 12 हफतो की उम्र हो चुकने पर (जबकि 9 ग्रह 12 खानों में घूम गये गिने जाएंगे या $9 \times 12 = 108$ की माला का चक्कर पूरा हो जायेगा) कुल उम्र के लिये ही ख्वाह उम्र का 85वां दिन ही हो 10000 वां दिन हो। कुल गुजरी हुई उम्र के दिन बना लेंगे और कुल दिनों की तादाद को सात पर तकसीम करके हफते बना लेंगे और बाकी बचे हुए दिन छोड़ देंगे। ख्वाह वो छः दिन तक ही क्यों न हों। अब जिस कदर पूरे पूरे हफते बने हों उन पूरे पूरे हफतों की तादाद को 12 पर तकसीम करेंगे। जो हिंदसा बाकी बचे वो हिंदसा नंबर उस खाने को देंगे। जिस खाने को कि नंबर 1 का हिंदसा देते थे यानि अगर एक बाकी बचा था तो नंबर 1 का हिंदसा दिया। दो बचे तो दो का हिंदसा दे दिया। इसी तरह 11 तक का हिंदसा हो सकता है। अगर बाकी सिफर हो तो 12 का हिंदसा देंगे। तख्त के मालिक ग्रह, राशि नंबर के बोलने वाले ग्रह और धोके के ग्रह का चक्कर वगैरह सब पहले ही असूल वाले बदस्तूर होंगे।

बालिग कुण्डली - जनम वकत का ग्रह शुरू नंबर पर रख कर वर्षफल (तख्त के मालिक ग्रहों की फ़ेहरिस्त) बना लेंगे। जिसके मुकम्मल करने के लिये सिर्फ 40 मिनट वाली यूनिट का हिसाब होगा। राशि नंबर के हिसाब से बोलने वाले ग्रह उसी तरतीब

से लेंगे जो 3-3 साल के फर्क पर (अरमान नंबर 113A) बोलते हैं मगर एक दिन में असर के लिये हर इक खाने के ग्रहों की म्याद फी खाना सिर्फ़ दो घंटे होगी। एक दिन के बाद एक महीना तक असर के लिये ग्रहों के 35 साला चक्कर के हर ग्रह के हिंदसों को दिनों में लेंगे। एक महीने के बाद एक साल तक इन्हीं हिंदसों की लाल किताब सफ़ा 123 खाना नंबर "मियाद दिन" की यूनिट लेंगे। धोके के ग्रह का दौरा भी "आम उम्र के सालों" वाला होगा। जिसका दौरा एक महीना तक 32 दिन वाला, एक साल की उम्र तक "12 महीने के चक्कर वाला" और 120 साल की उम्र तक "एक साल वाला चक्कर" होगा। लेकिन :-

i) अगर जनम वकत (पैदाइश का खास वकत) मालुम न हो मगर जनम दिन मालुम हो तो उम्र गुजरी हुई के कुल दिन लेंगे और सात बारह की तकसीम वाला ऊपर लिखा असूल इस्तेमाल करेंगे।

ii) अगर जनम वकत और जनम दिन दोनों ही मालूम न हों तों किसी खास वाक्या को लेकर बनाये हुए वर्षफल की मदद लेंगे।

iii) (अलफ) - नाबालिग हालत में अगर जनम वकत व जनमदिन मालूम न हों लेकिन साल महीना मालूम हो तो किसी खास वाक्या से लिया हुआ वर्षफल लेंगे और राशि नंबर के ग्रह अरमान नंबर 13 की तरतीब से होंगे। धोके का चक्कर आम उम्र का ही होगा।

(बे) - बालिग हालत में भी अगर जनम वकत व जनम दिन मालूम न हों लेकिन साल महीना मालूम हो तो वर्षफल किसी खास वाक्या से लेंगे। राशि नंबर के ग्रह 3-3 साल के फर्क वाले हिसाब के होंगे। धोके का चक्कर बदस्तूर आम उम्र के हिसाब का होगा।

वर्षफल व राशि नंबर के ग्रहों का बाहमी ताल्लुक

वर्षफल में उम्र के साल का ग्रह जो भी कोई मुकरर होवे वो किस्मत के मैदान में ग्रहफल का, कुण्डली के खाना में खाना नंबर 1 का दुनिया में तख्त का मालिक और हुकमरान राजा होगा। राशि नंबर के ग्रह उस साल के जिस साल का कि वर्षफल वाला ग्रह होवे। राशिफल के या उस राजा के साथी वजीर होंगे।

वर्षफल में तमाम ग्रहों की आम म्याद के एक चक्कर में 35 साल होते हैं।

और राशि नंबर के तमाम खानों की म्याद के एक चक्कर में 36 साल गिने हैं। क्रिस्मत का हाल देखने के लिये वर्षफल वाले ग्रह को राजा और राशि नंबर वजीर की जोड़ी 35 और 36 साला जुदी म्याद होने के सबब इकट्टी न चल सकी। इस एक साल के फर्क में चलने वाला "धोके का ग्रह" का जुदा चक्कर होता है। वर्षफल के दो चक्कर $35 \times 2 = 70$ साल और राशि नंबर के दो चक्कर $36 \times 2 = 72$ साल या इन्सान 70-72 का जब हो जावे तो बाप बेटे की क्रिस्मत एक जगह इकट्टी मानी है। यानि बाप काबिले इतबार (बलिहाजा क्रिस्मत खुद बाप की अपनी क्रिस्मत) न रहा। 70 और 72 के फर्क का सिर्फ एक 71 वां साल "धोके के ग्रह" का अरसा माना है। जिसमें महादशा के जमाने के अरसा के 40 साल के धोके वाले असर के लिये 40 दिन का आम उपाय या 40 रियायती दिन का अरसा माना है।

अरमान नंबर 114

ग्रह का उपाय

(अलफ) रह बुत के झगडे की तरह ग्रह को रह और राशि को बुत माने तो ग्रहफल के उपाय की इस इल्म में गुंजाइश नहीं मानी गयी। राशि या ग्रह या राशिफल व ग्रहफल के शक का इलाज और ग्रहों से "धोके के ग्रह" के धोके के धक्के से बच कर चलना इन्सानी ताकत में माना गया है। बुध के ग्रह का हीरा (सब्ज रंग पत्थर कीमती) सब को काटता और मारता है। मगर वो खुद उसी बुध की दूसरी निहायत नरम चीज कलई (टांके लगाने वाली धात) उस हीरे में सुराख डाल देती है। इसी तरह ही पापी ग्रह सब ग्रहों पर अपना धक्का लगाते हैं। मगर उन को (पापी ग्रहों को) मारने के लिये खुद अपना ही पाप (लफ़्ज़ पाप से मुराद राहु केतु हैं। पापी से मुराद सनीचर राहु केतु तीनों ही हैं। यानि राहु के मंदे असर को केतु का उपाय दुरस्त करेगा और केतु के मंदे असर को राहु का उपाय नेक करेगा) महाबली होगा और पाप की बेडी भर कर डूबेगी। मुख्तसर तौर पर पापी ग्रहों का उपाय तो उन ग्रहों की मुतलका चीजों की पालना करनी होगी या उन की मुतलका चीजों से उन की आशीर्वाद या मुआफी ले लेना कारामद होगा। मसलन शुक्र की मुतलका चीज गाय और

आम इन्साना खुराक या सब अनाज मिले मिलाये मुकरर हैं। शुक्र की मदद के लिये गाय को अपनी खुराक का हिस्सा देवें। काग रेखा और धन दौलत की हानी सनीचर की मंदा निशानी काँवे को रोटी का हिस्सा देवें या औलाद के लिये दुनिया के दरवेश कुत्ते को अपनी खुराक का टुकडा बख्शो।

(बे) हर ग्रह की मशनुई हालत में दो ग्रह होते हैं। जब कोई ग्रह मंदा हो जावे। तो उसकी मशनुई हालत मे दिये हुए दो ग्रहों में से उसी एक ग्रह को हटाने के लिये जिसके हट जाने से नतीजा नेक हो जावे। कोई और ग्रह कायम करे। जो बुरे फल के हिस्से के देने वाले ग्रह को गुम ही या नेक कर देवे। मसलन सनीचर मंदा होवे.....तो उस के मशनुई हालत के जुज "शुक्र - बृहस्पत" में से बृहस्पत के हटाने के लिये अगर बुध कायम करे तो शुक्र बाकी रह जाएगा। अब शुक्र के साथ बुध मिलने पर सनीचर नेक होगा।

ii) लाल किताब में लिखे हुए उपायों के इलावा हर इक पक्के ग्रह का उपाय तो लाल किताब के मुताबिक ही लेंगे।

iii) हर इक ग्रह की मशनुई हालत में दो ग्रह इकट्टे माने गये हैं। पक्के ग्रह का जिस चीज का असर या जो असर मंदा होवे उस असर के देने वाले ग्रह को उसकी मशनुई जुज से हटाने की कोशिश करे। मसलन शुक्र जब खराब करे या खराब होवे। तो शुक्र के मशनुई जुज राहु केतु में से राहु को हटावें तो बाकी केतु होगा। यानि शुक्र के नेक करने को राहु को नेक कर लेना मदद देगा।

ii) मंगल बुध = मंगल बद व सनीचर के सांप की जहर या मंगल बुध सनीचर मुश्तरका को मृगशाला (हिरण की खाल) पहाडी जुबान में मृग को चीता कहते हैं। चीते की खाल नहीं माना है। जिस पर जहरीला सांप न आयेगा। मंगल बद के बुरे असर से मृगशाला बचा देगी और बुध शुक्र सनीचर की मुश्तरका चीज गऊग्रास अपनी खुराक से तीन टुकडे रोटी के गां(गाय) कां(काँआ) और कुत्ते को देना मुबारिक फल देगा। वासते इज्जत मान धन दौलत और औलाद के नेक व उमदा होने के वगैरह वगैरह। मतलब ये कि मंदे फल वाले ग्रह के लिये मंदा करने वाली चीज को दूर करे।

iii) पितरी रिन या कुण्डली वाले के बजुरगों का पाप। बाप के बिलावजह कुत्ते को

मार देने के पाप में इसका लडका दुख भोगने का सबब होगा। यानि कुण्डली वाले पर इस के बाप के पाप का बोझ भी हो सकता है। जिस वकत तक केतु व बृहस्पत का उपाय न करें पितरी रिन का बोझ लडके की 16 ता 24 साला उम्र तक दूर न होगा। इसी तरह ही सब ग्रहों का हाल हो सकता है। ख्वाह एँसे शख्स के (कुण्डली वाले के) अपने ग्रह लाख राज योग ही क्यूं न हों। बुरा असर दो ग्रहों का होगा और उपाय भी दो ग्रहों का करना होगा।

पितृ ऋण- से मुराद खुफिया असर होता है और धोके के ग्रह या उसके धक्के से जाहिर हो जायेगा। गुनाह तो कोई करे मगर सजा इसकी कोई और भुगते। मगर भुगतेगा इस गुनाह करने वाले का असल करीबी ताल्लुकदार।

खाना नंबर 9 के ग्रहों से मुराद होती है। जब इस घर में या इस घर के मालिक ग्रह यानि बृहस्पत की किसी दूसरे घर में कोई और ग्रह (एक या एक से ज्यादा) जो या तो बाहम दुश्मनी पर हों या वो दोनों या हर इक बृहस्पत की ताकत को खराब करते या बृहस्पत के असर में जहर मिलते हों तो पितृ ऋण होगा।

राहू को बृहस्पत के चुप करवाने वाला गिना है। वो अगर बृहस्पत का मुंह बंद करके खुद मंदी हालत का असर बृहस्पत के ताल्लुक से (यानि या तो वो बृहस्पत के घरों में हो या बृहस्पत के पक्के घर में) देवे तो पितृ ऋण का बोझ होगा। इसी तरह ही और ग्रह भी चंद्र की खराबी में माता तरफ के मातृ ऋण हो सकते हैं।

फरजान कुण्डली वाले के बाप ने कुत्ते मारे तो कुण्डली वाले पर वो बृहस्पत व केतु का पितृ ऋण हुआ। जो कुण्डली वाले पर बालिग होने की (कुण्डली) उम्र से 16 ता 24 साल रह सकता है। कुण्डली वाले के रिश्ते के ताल्लुक और पाप की किसम से ऋण का नाम मुकरर होगा।

ऋणों की किसमें- जैसी करनी वैसी भरनी, नही कीती तो कर के वेख।

किस का पाप होवे	पिता का पाप	माता का पाप	अपनी ही पाप	कुटुबी पाप	हकीकी रिश्तेदारों का पाप	धी बहन का पाप	जानवरी का पाप	ससुराल का पाप	फकीर कुत्ता का पाप
तो ऋण होगा	पितृ ऋण	मातृ ऋण	जाती ऋण	स्त्री ऋण	भाई का ऋण	बहन ऋण	जालिमाना ऋण	अनजन्मे का ऋण	दरगाही ऋण
ग्रह मुतलका	बृहस्पत	चन्द्र	सूरज	शुक्र	मंगल	बुध	सनीचर	राहु	केतु
कैफियत	सराप	नियत बंद	आकबत खराब	पेट मार	मित्र मार	लुबानी धोका	जीव हत्या	दगा बेईमानी	बंद -चलनी
बालनी दिन से	16 साल	24 साल	22 साल	25 साल	28 साल	34 साल	36 साल	42 साल	48 साल

4) धोके के ग्रह का जो छुपा छुपाया होता है। इलाज भी देख लेना जरूरी होगा।

5) अगर लडका लडकी बाप के लिये दोनों ही मंदे फल वाले पैदा हो जावें तो सूरज लडका बुध लडकी या लडकी के गले में तांबे का टुकडा मुबारिक होगा। जो बुध को दबा लेगा।

6) पापी ग्रहों के साथ जब वह अकेले अकेले की बजाये कोई दो इकट्टे हों तो मंगल को कायम करना मुबारिक होगा। बशर्तेकि उस कुण्डली वाले का अपनी कुण्डली के हिसाब से मंगल राशि फल का हो। यानि अगर मंगल खाना नंबर 1 या 3 या 8 में होवे तो मंगल का उपाय न होगा। बुध काम देगा।

इसी तरह ही स्त्री ग्रहों (चंद्र शुक्र) में बुध की ताकत मदद देगी। बशर्तेकि बुध खाना नंबर 3-6-7 या 9 का न हो। ऐसी हालत में बृहस्पत काम देगा।

सूरज सनीचर के झगडे में बृहस्पत मददगार होगा। बशर्ते कि वो खाना नंबर 2 का न हो। ऐसी हालत में मंगल मददगार होगा।

खुलास्तन:- उपाय के वकत देख लें कि जिस ग्रह के जरिये मदद लेने को है वह खुद कहीं ग्रहफल का ही तो नहीं है।

म्याद उपाय:- हर इक उपाय की म्याद कम अज कम 40 दिन और ज्यादा से ज्यादा 43 दिन होगी। जो अपनी नसफ और चौथाई हिस्सा म्याद में भी अपना असर जाहिर कर देगा।

खानदानी उपाय पितृ ऋण मातृ ऋण वर्गैरह या कुल मुतलकीन की मदद के लिये उपाय की म्याद होगी तो वही 40 हद 43 मगर हर रोज लगातार की बजाये हफ्तेवार लगातार होगी यानि हर आठवें दिन जो 40-43 हफते होंगे। उपाय के वकत ख्वाह आखरी दिन 39 वें 40 वें ही भूल जावें या बंद कर बैठें तो सब किया कराया निष्फल होगा और नये सिरे से फिर दोबारा शुरु करके पूरी म्याद तक करने के बाद फल देगा।

अरमान नंबर 115

**खास खास मुश्तरका ग्रहों की म्यादे
(सालों के हिंदसों में)**

	बृहस्पत	सूरज	चंद्र	शुक्र	मंगल	बुध	सनीचर	राहु	केतु
बृहस्पत	उम्र 75 साल	मामू को तकलीफ 7 साल, दोनों का जुदा जुदा और उत्तम	तालिम 24, तीर्थ 20, दोनों मुश्तरका उत्तम, चंद्र 1/2	सुख 4, दौलत 2 आमदन 60, मुहब्बत 20	(बद) बीमारी 31, औलाद 8, नुकसान 5	दुश्मनी 40, सुख 4, वालिद दुखिया 29, दौलत रही 17	गम 14, दौलत 12, हानी 15	नुकसान 5, पिता रही 10 1/2, औलाद 21, उम्र 90	दुश्मन 40
सूरज	मामू को तकलीफ 7 साल	सनीचर बुरा 9 साल	मंगल बद 15, सफर फजूल 9	नुकसान 17, दौलत 5, शुक्र रही 25	सेहत उम्दा 6 साल	शुक्र रही 25 साल	दुश्मनाना खराब	औलाद रही 21	बृहस्पत के बामुकाबील तो दुश्मनाना वरना नेक
चंद्र	तालिम 24, तीर्थ 20	मंगल बद 15, सफर फजूल 9	औलाद 12, जब मारग स्थान में तकलीफ 6 साल	आराम 4 बीमारी 15 दौलत 12 वरना 27	सुख 3 औलाद का सुख 27 मुसीबत 2	लइकियां 6 बीमारी 15 दौलत 22	राज दरबार 12 दौलत अज सनीचर 42	पानी का खौफ नसफ उम्र 45	लइकियां 6 साल
शुक्र	आमदन 60 सुख 4 बचत 20 राज दरबार 27 दौलत 2	नुकसान 17 दौलत 5 शुक्र रही 25	बीमारी 15 दौलत 27 आराम 4	औरत का सुख 37	आग का खौफ 17 तीर्थ 20 सुख 7 बीमारी 9	सूरज 22 औरत 37 दौलत 36 दुश्मन 40	दौलत 12	दुश्मनाना व खराब शुक्र पर	दुश्मनी 4 साल
मंगल	औलाद 8 बीमारी 31	सेहत 6 साल	सुख औलाद 27 आम सुख 3 मुसीबत 2	बीमारी 9 सुख औलाद 7 तीर्थ 20 आग का डर 17	मुलाजमत 28 बीमारी 15 माँतें 22	आग का डर 17 फोकी इज्जत 11 वालिद 12 लइके 24	बीमारी 5 बीमारी 15 दौलत 24 तकलीफ 24	नुकसान 5 साल	फोका ऐश 3, लइके 24
बुध	वालिद दुखिया 29 नुकसान 17 दुश्मन 40 सुख 4	शुक्र रही 25	दौलत 22 लइकियां 6 बीमारी 15	औरत 37 दौलत 27 दुश्मन 40 सूरज 22	आग का डर 17 फोकी इज्जत 11 वालिद 12 लइके 24	औरत 37 माँत के खाना में 14	दौलत 45 तकलीफ 10 लइके 24 दुश्मन 42	दोनों का उत्तम	दुश्मन 37 दुश्मन 40
सनीचर	हानी 15 गम 14 दौलत 12 आमदन 60	दुश्मनाना खराब	दौलत अज सनीचर 42 राज दरबार 12	दौलत 12 साल	बीमारी 5 (बद) 15 दौलत 24 तकलीफ 10	तकलीफ 10 लइके 24 दुश्मन 42 दौलत 45	दौलत 24 हथियार का खौफ 27	हंमेशा शक्की हानी 15	लइके 24 सनीचर की नसफ मियाद पर फैसला होगा
राहु	उम्र 90 पिता चुप 10 1/2 औलाद रही 21 नुकसान 5	औलाद रही 21	नसफ उम्र पानी का खौफ 45	दुश्मनाना खराब	(बद) नुकसान 5	दोनों का उत्तम	हंमेशा शक्की हानी 15	माँत के खाने में 5	अपनी मुकर्ररा राशि और पक्के घर से बाहर दोनों रही
केतु	दुश्मन 40	सूरज मद्धम	लइकियां 6 साल	दुश्मनी 40	फोका ऐश 3 लइके 24	दुश्मनी 37 40	लइके 24 सनीचर की नसफ मियाद पर फैसला होगा	अपनी अपनी मुकर्ररा राशि व पक्के घर से बाहर	छलावा

अरमान नंबर 116-117

लाल किताब सफ़ा 123 - 124 में अस्तलाही बातें हैं जो हस्त रेखा और इल्म ज्योतिष को बाहम मिलाकर इल्म सामुद्रिक की बुनियाद हैं।

अरमान नंबर 118 (बारह 12 खानों की चीजें)

खाना नंबर 1- खुद जाती, अपना जिस्म, साथ लाया हुआ, वकत जवानी, दिमागी ताकत, खुद साखता मकान, रुह, गुस्सा, तमाम अजू, नमक सफ़ेद, अपना तख्त, चार दीवारी मय तैं जमीन के गोशे, दुनिया में नाम किस हैसीयत का होगा। मर्दों का ताल्लुक, हाथ पर खास निशाना। (1) इस घर में सूरज उन ग्रहों को जो सूरज के दोस्त/दुश्मन हों मदद दिया करता है। (2) राहु राशिफल का होगा। लाल किताब सफ़ा 126 जुज नंबर 1, 199/200 खाना नंबर (1) जुज नंबर (1-2) ।

खाना नंबर 2- खुद जाती किस्मत का, रिश्तेदारों से पायी हुई चीजें (मारफत स्त्री), इच्चत (शरीफाना), दौलत (शरीफाना) बुढापे तक, इश्क़ (जबानी हवाई), ससुराल खानदान व ससुराल के अपने घर का हाल। बचत अज जाती कमाई। स्त्री धन (दहेज वगैरह औरत का लाया हुआ धन), खट्टा मीठा, अर्क, मोह माया, ससुराल का मकान, सुभाव (नेकी), भूक, मकान का वासता (गुस्दवारा, मंदिर, जिबहखाना), स्त्रियों का ताल्लुक माता भुआ फूफी मासी वगैरह, तिलक की जगह (पेशानी पर), अंगुलियां (लंबाई छोटाई सीधी टेढी)। लाल किताब सफ़ा 128 जुज नंबर 2 लाल किताब (बृहस्पत का असर) सफ़ा 144 जुज नंबर (1), 171/172 फरमान नंबर 124 खाना नंबर 2 का जुज (1 ता 4) इस घर के ग्रह आखिरी उम्र में नेक फल देंगे।

खाना नंबर 3- हकीकी रिश्तेदार, नजर का असर (पत्थर फाड़े या तारे), भाई बहन, भाई बंद, चोरी, यारी, अय्यारी, नुकसान, जंग व जदल, भाई का घर, ताये चाचे का मकान, नेकी, इन्साफ, मुन्सफी व मुन्जबी, बजुरगाना ताल्लुक, बच्चा पैदा करने की ताकत, परिवार कबीला का बढना व बढाना, खांड, मीठा, उठती जवानी

का हाल, दूसरों की मदद से पैदा करदा हालतें, आकाश, जिगर, खून, मकान के साजो सामान वासते आरायश, आम खुशी गमी की औसत हालत, खुशी गमी की रेखा, ठग्गी। इस घर में i) चंद्र हंमेशा राशिफल का होगा। ii) सनीचर राशिफल का होगा। लालकिताब सफ़ा 128 जुज (3) सफ़ा 260/261 खाना नंबर 3।

खाना नंबर 4- माता का ताल्लुक, समुंदर पार सफर, समुंदर का सफर, खुशी, साथ लायी हुइ, चंद्र की चीजें, माता खानदान, मासी फूफी का मकान, मोती अनबिध बगैर सुराख दूध रंग सफेद, बृहस्पत का धन, बवकत जवानी, शुमाल मशरक, खाली तें जमीन, दिल, दूध, धन दौलत, कुदरती तौर पर तबीयत का झुकाव क्या होगा। चक्कर, शंख, सदफ, उंगलियों पर जों का निशान।

इस घर में 1) शुक्र राशिफल का होगा। 2) मंगल बद (मंगलीक) राशिफल का होगा। 3) केतू राशिफल का होगा। लाल किताब सफ़ा 128 जुज नंबर (4) सफ़ा 226 खाना नंबर 4 जुज (1-4)

खाना नंबर 5- औलाद का ताल्लुक, औलाद नरैना, शोहरत, औलाद का धन दौलत व किस्मत, औलाद को सुख, औलाद के जनम दिन से अपने बुढापे तक दूसरों की मदद से पैदा करदा, मशरिक, रोशनी-हवा, औलाद के बनाये हुए मकान। बचत अज तरफ औलाद, हवास खेमा, 5 इंद्रियां, हाजमा, औलाद व अपने खून का ताल्लुक, नेकी की मशहूरी, रफतार गुफतार, तहरीर, अंगुलियों के दरम्यान खाली जगह। लाल किताब सफ़ा 129 जुज (5)

खाना नंबर 6- माता पिता के या औलाद के ताल्लुक के जरिये बन जाने वाले रिश्तेदार। जिन का रिश्तेदारी का ताल्लुक खुद कुण्डली वाले के ताल्लुक के बगैर ही हावे। इन्सान खुद किस ग्रह का है। चेहरा व पेशानी की हालत। दूसरों से पायी हुइ चीजें (माता पिता के रिश्तेदारों)

बुध की चीजें हमदर्दी (फोकी), मामू, फूल की खुशबू बदबू, फोका पानी, नानका घर (नाने नानी का) आम बस्ताव, साहुकारा, मरने के बाद बाकी रहे हुओ की हालत, शुमाल, हमसाये, मकान के इर्द गिर्द की चीजें। पट्टे नाई, जायका, साग सब्जी, फूल पत्र ।

इस घर में 1) बृहस्पत राशिफल का होगा। 2) सूरज के खुद अपने बुरे असर के लिये बुध का उपाय मददगार होगा।

3) मंगल इस घर में राशिफल का होगा। 4) सनीचर राशिफल का होगा।

केतू की चीजें आँलाद का सुख, हमदर्दी (सच्ची) खालिस खटाई, सफर आम, मरने के बाद बाकी रहने वालों की हालत, पाताल, जाती खासीयतें (रुहानी, जिस्मानी, दिमागी), नाखून हाथ के, वालदैन की तरफ से रिश्तेदार नानके वगैरह, कद व कामत, हथेली व उंगलियों की तनासब का असर। लालकिताब सफ़ा 129 जुज 6 केतु खाना नंबर 6 अरमान नंबर 178

खाना नंबर 7- जनम अस्थान, कहां का बासी।

शुक्र की चीजें साथ लायी हुई - स्त्री घर, लडकियों के रिश्तेदारों के घर, मिट्टी के जरे, घी जर्द, शादी, मकानात वगैरह (जायदाद), वकत जबानी, जनूब मगरब, जाहिरदारी, बेस्नी तें जिस्म (जिल्द), पलस्तर सफेदी मकान, कबीला की पैदाइश और परवरिश, मकानात का बनना, पराई दौलत का मिलना (बजरिया बुध की नाली), जिस्म के बाल, हथेली की हर हालत का हाल। लाल किताब सफ़ा 244/245 खाना नंबर 7 जुज (1-5)

बुध की चीजें साथ लायी हुई - काँतबाह, अंदरूनी अकल, बहिन, पोते, चेहरा।

इस घर में 1) बृहस्पत राशिफल का होगा। 2) अगर सूरज इस घर में हो और सनीचर का टकराव आ जावे तो चंद्र नष्ट करने से सूरज की मदद होगी। यानि म्याद उपाय के दिनों तक जली हुई आग को पानी की बजाये दूध वगैरह से बुझाते जाना वगैरह। 3) चंद्र इस घर में हमेशा राशिफल का होगा। 4) राहू राशिफल का होगा। लालकिताब सफ़ा 129/130 जुज 7 व 278 फरमान 162-288 खाना नंबर 7 जुज 1-3

खाना नंबर 8- खुद करतूत (मंदी हालत) सनीचर की बुराई, ताये चाचे, मौत, अपने बजुरगों से मुतलका कब्रिस्तान श्मसान भूमि की जगह, कोयले, चीजों का जलना, मंदी हालतें, जनूब, छत मकान, पित्त, इस घर में चंद्र हमेशा राशिफल का होगा। (लालकिताब सफ़ा 130 जुज 8)

मंगल बद की बुराई, बीमारी, इन्सान का जलना, मंदी हालतें, बदहजमी। कडवाहट। (लाल किताब सफ़ा 261 खाना नंबर 8)

जगह जगह लफ़्ज़ खाना नंबर से मुराद हस्त रेखा की कुण्डली का पक्का खाना नंबर मुराद होगी। राशि नंबर न होगी।

खाना नंबर 9- जड़ी बजुरगाना, बचत अज बजुरगां, कर्म धर्म, जड़ी मकान बजुरगों के बनाये हुए। सांस, परोपकार, बजुरगों (बाप दादा) की उम्र, बजुरगों का नेक ताल्लुक (कुण्डली वाले से), कुण्डली किस्मत (खुद अपनी) की बुनियाद, बचपन का जमाना खुद जाती, बचपन का जमाना वालदैन की हालत, दूसरों की मदद से पैदा करदा हालतें, गँबी दुनिया, मूल जड, कच्चा पक्का मकान, हर हिस्से की अंदरूनी पैमाइश, आराम या हरामखोरी, उंगलियों पर सीधे या लेटे खत।

इस घर में 1) बुध सबसे मंदा ग्रह होगा। जिस के लिये अरमान नंबर 178 (लाल गोली) नाक छेदना (अरमान नंबर 62/94 - बुध नाकस का उपाय) 2) सनीचर राशिफल का होता है। (लाल किताब सफ़ा 130 जुज 9) इस घर के ग्रह शुरू उम्र में और हर इक ग्रह अपने शुरू होने के दिन से अपनी पूरी उम्र (ग्रह की) तक फल देंगे।

खाना नंबर 10- जाती सनीचर का (विरासत) साथ लायी हुई चीजें पिता का सुख, तीन साल लगातार रिहायश का मकान, मक्कारी होशियारी, मकान जायदाद (सनीचर की चीजें) मारफत बजुरगां, गमी जहमत, दुख अज ताल्लुक दीगरां गैर हकीकी, नमक स्याह, तेल, वकत शादी, सामान खुराक, बवक्त जवानी, मगरब, लोहा लकड़ी मकान ईंट पत्थर, बाल, कांटे, बाड, सेहत व आम बरताव, बडी तिकोन व बडी मुस्ततीला।

इस घर में 1) बुध राशिफल का होगा। 2) केतू राशिफल का होगा। लालकिताब सफ़ा 131 जुज 10, सफ़ा 294 जुज 1-2, सफ़ा 323 खाना नंबर 10 तमाम जुज।

खाना नंबर 11- मैदान किस्मत, वकत जनम, किस्मत का मैदान, वकत जनम पर वालदैन की हालत (बलिहाजा आमदन), लालच, आमदन जाती, खरीद करदा मकान जो खुद न बनाये हुए हो, औलाद की तादाद, औलाद की उम्र, जनम, शान व शौकत, पोस्त खाल, छिलका, आमदन, आयी चलायी का जरिया, हाथ की किसमें, हर अजू मय नाखून का हाल, रंग और वो किस किस तरह के हैं, पेशानी (सिवाये तिलक की खास जगह) का हाल। (लाल किताब सफ़ा 131 जुज 11)

खाना नंबर 12- अज स्त्री ताल्लुक, लक्ष्मी, दूसरों से पायी हुई चीजें, स्त्री सुख, लक्ष्मी सुख (बवक्त पैदाइश वालदैन का सुख)

ससुराल का सुख, हमसायों के मकान, खर्चा जाती, दिमागी हरकत, खुदगर्जी, कर्जा, ससुराल बजाते खुद, शुमाल मगरब(बृहस्पत), जनूब मशरक(राहु), आसमान (राहु बृहस्पत), हड्डी, आबाद या वीराना, खटाई, स्त्री ताल्लुक (जोडे का साथ), स्त्री ताल्लुक बेवाह औरतें माशुका वगैरह, हथेली, अंगुलियां मय अंगुठा का अंदर या बाहर को झुकाव, हथेली पर बृहस्पत के सीधे खत, अंगुलियों पर बृहस्पत के चक्कर शंख सदफ, नाखून पावों के, चालाकी या बदनामी की शोहरत की चमक, हथेली पर बृहस्पत के खत, अंगुलियों पर बृहस्पत के निशान खाना नंबर 4 पर लिखे हुए के इलावा, इस घर में बुध सबसे बुरा है। जो राशिफल का होगा बजरिया केतू का उपाय। (लालकिताब सफ़ा 131/132 जुज 12 राहु खाना नंबर 12 अरमान नंबर 176)

ii) बारह खाने अगर कुण्डली में हर इक खाने को एक घर मान लिया जावे तो इसकी द्रष्टि से ताल्लुक रखने वाला खाना उस मकान का सेहन होगा। घर वाले ग्रह का अपने मकान के सेहन पर अपना हक होगा। बेशक ग्रह का घर कुण्डली के बाद के नंबर का ही क्यों न हो। सेहन माने हुए खाने के ग्रहों के असर का आखरी फंसला करना मालिक मकान के अखतियार में होगा।

iii) **बारह खाने** - लाल किताब सफ़ा 127 पर 12 खानों की पक्की जगह दिखलायी गयी है। इन खाने जगहों के इलावा-

हर ग्रह की रेखा भी कुण्डली का खाना नंबर हुआ करती है।

मसलन चंद्र की दिल रेखा जब बृहस्पत के बुरज को जा निकले। मगर बृहस्पत के बुरज के अंदर तक पूरी न हो तो सनीचर और बृहस्पत की अंगुलियों की दरम्यानी जगह को खाना नंबर 11 लेंगे। सनीचर का हँड कवाटर खाना नंबर 8 होगा। अंगूठा खाना नंबर 2 होगा। दिल रेखा खाना नंबर 4 होगा। सिर रेखा खाना नंबर 7 होगा।

iv) रेखा का शुरू व आखिर व हर खाना नंबर की हदबंदी की खाने खाने जगह और ऊपर नीचे को उठाव या दबाव या किसी हद के ऐन ऊपर ही किसी ग्रह का निशान भी धोके का सबब हो जाता है। जिसके लिये हालात गुजस्ता पर नजरसानी करना मददगार हुआ करता है।

कुण्डली के खानों में मकान व सेहन का ताल्लुक

अगर घर होवे खाना नंबर	तो सेहन होगा खाना नंबर	कौन सेहन का मुन्सिफ ग्रह होगा	अगर घर होवे खाना नंबर	तो सेहन होगा खाना नंबर	कौन सेहन का मुन्सिफ ग्रह होगा
1	7	मंगल	7	1	शुक्र
2	8	चंद्र (उम्र)	8	2	मंगल बद
3	11	सूरज बृहस्पत	9	5	सूरज
4	10	चंद्र	10	4	सनीचर
5	9	बृहस्पत	11	3	बुध
6	12	केतू	12	6	राहु

अरमान नंबर 119 - राहु केतू के हाल में लिखा है।

अरमान नंबर 119 के जुज - रेखाओं के कई मुश्तरका ग्रहों से कुण्डली का बनाना जुदी जगह लिखा है।

अरमान नंबर 120 "बृहस्पत"

केतू व बृहस्पत दोनों दरवेश (बृहस्पत दरगाही - केतू दुन्यावी) और दोनों ही बाहम बराबर के ग्रह हैं। फर्क ये है कि बृहस्पत की हवा बेकेंद और खुली हुआ करती है। मगर केतू जो सांप के फरटि की हवा है। दुन्यावी धंधों से बंधी हुइ किसी मतलब या जहर को साथ लेकर चलती है। बृहस्पत किसी बुराई भलाई का ख्वाहिशमंद न होगा। केतू किसी के भले या बुरे के लिये अपना छलावापन दिखला देगा। बृहस्पत पूजा पाठ और केतू पूजापाठ करने की जगह या बृहस्पत के बैठने का तख्त है। सनीचर माँत का यम तो राहु उसकी सवारी का हाथी है।

खुद बृहस्पत - जब किरमत का ग्रह हो। लेकिन अपनी जड, मुकरर राशि, पक्के

घर की अदली बदली- बैठा होने की राशि या दृष्टि के ताल्लुक में कुण्डली के किसी भी खाने में (सिवाये खाना नंबर 10 के जहां की वो सनीचर की मदद का उम्मीदवार होता है) हर तरह से कुल अकेला ही होवे। कुण्डली वाले पर कभी बुरा असर न देगा। ऐसा शख्स बेशक किसी दूसरे की मदद न पायेगा और न ही वो खुद किसी दूसरे की मदद करने के ऐसा काबिल होगा। बल्कि वो अकेले डंडे की तरह के दरख्त की मानिद (बांस पहाडी इलाका-शनीचर की हकूमत, खजूर-चंद्र के वीरान खुले मैदान या सरु बाग बगीचे चंद्र की राजधानी) होता हुआ भी तमाम दुनिया के बरखिलाफ अपनी किस्मत को खुद जाती मेहनत और कोशिश से कामयाब बना लेगा।

अगर किसी पितृऋण (पितृऋण या फराइज जरूरी। बजुरगों के करजे यानि बजुरगों ने जनम दिया तो खुद औलाद बनानी, इन्होंने पाला पोषा तो बच्चों को हर तरह से काबिल बनाना, खैरात ली तो दान देना वगैरह वगैरह बच्चे पर बाप के करजे हैं।) या अपने बजुरगों के पापों के सबब ऐसा बृहस्पत अपने पहले दौरै या कुण्डली वाले की उम्र के पहले 35 साला चक्कर में नाकारा साबित होवे तो किसी खास उपाय की जरूरत न होगी। बृहस्पत अपने दूसरे दौरै या उम्र के दूसरे 35 साला चक्कर में अपनी पहली कमी भी पूरी कर देगा।

निशानी - खुद वो शख्स बृहस्पत के ग्रह का आदमी और उसका मकान जदी - खुद साखता बृहस्पत के ग्रह का होगा।

बृहस्पत व सनीचर का बाहमी ताल्लुक (अरमान नंबर 180 बृहस्पत सनीचर मुश्तरका देखें)

हिरसा अव्वल- जब दोनों ग्रह अपनी अपनी हालत में जड राशि व दृष्टि वगैरह के ताल्लुक में हर तरह से अकेले अकेले हों (न तो खुद बाहम साथी ग्रह हों और न ही उन दोनों में से कोई एक ग्रह किसी और ग्रह का साथी ग्रह बन रहा हो):-

वर्षफल के हिसाब से उम्र के जिस साल में सनीचर या बृहस्पत का दौरा हो और साथ ही दोनों में से कोई एक राशि नंबर के हिसाब से बोलने वाले ग्रहों में बोल रहा हो तो बृहस्पत सनीचर की धन रेखा (अरमान नंबर 100B) का असर पैदा होगा। बशर्तेकि दानों में से कोई भी नीचफल की राशि का न हो। (सनीचर खाना नंबर 1 में नीच और बृहस्पत

खाना नंबर 10 में नीच होता है)। फकीर के डंडे में दुश्मनों पर (इन्साननी दुश्मन या इन दो को छोड़कर बाकी सात ग्रहों से कोई ग्रह जो दुश्मन हो कर इस कुण्डली में वाक्या हों) जबरदस्त डंडे की तरह के सांप का असर देगा। हवाई ताकत और आंख की चालाकी की रहनुमाई के साथ से पत्थर पर आवाज ही से पक्की लकीर और फर्जी स्याह निशान (दिल चंद्रमा) से नाकारा स्याह पत्थर के पहाड को दमकते हुए जर्द सोने की हैसीयत का कर देगी। बशर्तेकि सनीचर और बृहस्पत दोनों का ही असर कायम हो। यानि ऐंसा शरूख शराबखोरी (शनीचर जायल) या खैरात का माल लेकर खाने वाला। दूसरों के मुफ्त माल पर नजर रखने वाला (बृहस्पत बरबाद) न हो। बल्कि वो सबके मालिक से सिर्फ अपनी किस्मत का हिस्सा मांगने वाला साबर व शाकर होवे तो सनीचर की माया दोनों जहानों के मालिक बृहस्पत गुरु के पावों की गुलाम होगी।

हिस्सा दोयम - बृहस्पत सनीचर दोनों ग्रह हर तरह से अकेले-

(अलफ) जब दोनों ही ग्रह ऐंसी हालत के और दोनों ही नीच घरों के (सनीचर नीच नंबर 1 में और बृहस्पत नीच नंबर 10 में) होते हुए वर्षफल के साल का ग्रह और राशि नंबर के ग्रह बोलने के हिसाब से उम्र के साल पर इकट्टे हो जावें तो रल मिल के बैठेंगे दीवाने दो। हमयारां दोजख हमयारां बहशत का जमाना पैदा होगा। जिस में अगर दोनों का ही फल रद्दी होवे तो अंधा बगैर टांगों के और टांगो से आरी और मगर आंखे कायम वाले एक दूसरे पर सवार होकर बाहम रास्ता बना कर अपने दौरा की मुसाफित का मंदा सफर बाआसानी तै कर लेंगे। गोया दोनो का मिलना "रब्ब बनाई जोडी एक अंधा एक कोहडी" होते हुए भी इत्तफाक की बरकत के उमदा नतीजे का फल देगा।

(बे) अगर सनीचर व बृहस्पत दोनों में से कोई एक भी रद्दी हालत का होवे तो रद्दी हालत वाले के मंदे फल को दूसरा उमदा बना देगा यानि i) अगर बृहस्पत रद्दी हालत का हो और सनीचर कायम तो लोहे की तलवार तमाम दुनिया की रद्दी हवा को काटती हुइ चलती जाएगी। लेकिन ii) अगर बृहस्पत उमदा और सनीचर रद्दी हालत का हो तो इस की किस्मत दूसरों को लोहे के लिये पारस का काम देगी।

मगर खुद उस के अपने लिए बीमारियां व ख्वाहिशात बढ़ की निशानियां होगी।
हिस्सा सोयम - जब सनीचर और बृहस्पत दोनो बाहम साथी ग्रह हो जावें और
सूरज का राज या तख्त की मालकीयत के जमाना का दौरा आ जावे- (अलफ)
जब सनीचर व बृहस्पत दोनों उमदा हालत के हों तो सूरज अपना पुरजोर असर
देगा। अब चूंकि बृहस्पत और सनीचर दोनों उमदा हालत के हैं इसलिये उत्तम
फल और नेक नतीजे होंगे।

(बे) बृहस्पत व सनीचर हों तो साथी ग्रह मगर दोनों ही नीच हालत या नीच घरों
के तो सूरज के राज के वक्त या तख्त की मालकीयत के जमाना में जब तक राज
दरबार के ताल्लुक से कमाया हुआ या पाया हुआ धन दौलत बरबाद और खुद उस
शख्स का कोई अंग (जिस्म का हिस्सा) खराब न हो जावे। सूरज और सनीचर
का दुश्मनाना और पुरजोर बुरा असर खत्म न होगा।

(जीम) अगर बृहस्पत व सनीचर के बाहम साथी ग्रह होने पर दोनों में से

(i) सनीचर तो उमदा हालत का मगर बृहस्पत होवे रददी हालत का तो सूरज के
राज या तख्त की मालकीयत के वक्त मुकदमा जहमत बीमारी के जरिये इस शख्स
के राजदरबार से कमाये हुए या पाये हुए धन दौलत का सोना खतम हो जाने तक
सूरज व सनीचर का दुश्मनाना और पुरजोर बुरा असर न जाएगा। ऐसी हालत
में इस शख्स के अंग (अजू - जिस्म का हिस्सा) खराब होने की शर्त न होगी ।

(ii) सनीचर रदी हालत का हो मगर बृहस्पत उमदा हो तो उसके अंग (अजू
-जिस्म का हिस्सा) खराब हो जाने पर सनीचर व सूरज का दुश्मनाना व पुरजोर
बुरा असर खतम होगा। धन दौलत के खतम होने की शर्त न होगी।

उपाय:- ऊपर लिखे हुए हिस्सा अब्बल, हिस्सा दोयम, हिस्सा सोयम तीनों में ही बुरे
असर से बचाव का ढंग और मदद:- चूंकि तख्त के मालिक ग्रह का दौरा ग्रहफल
का होता है और राशि नंबर के हिसाब से बोलने वाले ग्रह का असर राशिफल का
होता है इसलिये बुरे असर से बचाव और मदद के लिये राशिफल वाले ग्रह का
(जो भी ऊपर लिखी हालत में हो) उपाय करें। लालकिताब फरमान नंबर 120
सफ़ा नंबर 144 चर्बी से मंगल का बुरज खाना नंबर 3 नष्ट होने पर बृहस्पत या
शुक्र जिस तरफ

के बुरज का हिस्सा ज्यादा भारी मालूम होवे। वही तरफ प्रबल गिनी जाएगी। यानि अगर बृहस्पत की तरफ का हिस्सा भारी हो जावे। बहुत बडा बृहस्पत या नर्म हाथ का बृहस्पत होगा और दोनों ग्रह बृहस्पत और शुक्र खाना नंबर 2 में व मंगल नष्ट गिना जाएगा। शुक्र की तरफ का हिस्सा भारी हो जावे निहायत बडा शुक्र होगा। दोनों ग्रह बृहस्पत शुक्र खाना नंबर 7 में और मंगल नष्ट लेंगे।

अरमान नंबर 121

(में बृहस्पत का चंद्र या शुक्र या दोनों से ताल्लुक लिखा है)

अरमान नंबर 122

बृहस्पत दोनों जहानों या अंदर बाहर दोनों तरफों का मालिक गिना गया है। उसकी अंदरूनी ताकत खुदी (जिस्म इन्सान, खुद अपना वजूद या खुद अपने वजूद में या अपने लिये। अपने आप से मुतलका या बंद मुट्टी में साथ लायी हुई चीजें, खाना नंबर 4 ऊंच बृहस्पत), हवा - मुहब्बत, (हर दो हकीकी व गैर हकीकी) मोह या मेर (मेरा अपना आप) कहलाती है और बेरूनी चाल (दूसरों से मुतलका - दूसरे जहान में साथ ले जाने के लिये चीज दुनिया से बेरूनी बरताव वगैरह।) क्रिस्मत या करिश्मा कुदरत कहलाती है।

क्रिस्मत रेखा - अरमान नंबर 10 में मुफसिल लिखा है।

कोहसार और समंदर : (लाल किताब सफ़ा 157 जुज 2 फारसी लफज कोह पहाड का सिलसिला और समुंद्र) बृहस्पत के ताल्लुक में हाथ का खाका देखने से मालुम होगा कि कुण्डली के खाना नंबर 9 को ऐसी जगह माना है। जिस के एक तरफ शुक्र का बुर्ज खाना नंबर 7 और दूसरी तरफ चंद्र का बुर्ज खाना नंबर 4 वाक्या है। लाल किताब सफ़ा 40 पर तोते की 35 को देखने से मालूम होगा कि बृहस्पत को गंगा (हिंदोस्तान का एक बडा और मतबरक दरिया) और आम इसतलाह में दोनों जहानों की हवा भी माना है। गोया पानी और हवा का बाहमी ताल्लुक रखने वाली चीज गिनी गयी है। पानी की खासीयत है कि वो हमेशा नीचे की तरफ बहता है। ताकि इसकी सतह हमवार हो जावे और सब की कमी बेशी बराबर हो जावे। (सनीचर को पत्थर पहाड माना है और

पानी चंद्र हैं।) हवा की खासीयत है कि गर्मी से फैलती और ऊपर को उठती है। अब बृहस्पत के दोनों जहानों खाना नंबर 2 (राहु केतू की मुश्तरका बैठक) और खाना नंबर 9 बच्चे की पैदाइश की जगह का ताल्लुक साफ करने के लिये मालूम हुआ कि खाना नंबर 7 शुक्र की खुश्की का ब्रह्मांड और चंद्र के समुंद्र की गैबी दुनिया के दरम्यान में बैठने वाला बृहस्पत या खुश्की और पानी दोनों पर ही रहने वाली हवा जब खाना नंबर 9 से चलती है और जब बच्चा खाना नंबर 9 में आ जाने के बाद इस दुनिया में आगे चलता है तो पहला ही मकाम या पडाव सनीचर का हैडकवाटर या खाना नंबर 8 आ निकलता है। जो मौत का घर है और मंगल व सनीचर की मुश्तरका मालकीयत है। (लाल किताब सफ़ा 97) गोया खाना नंबर 9 से चले हुए बच्चे या बृहस्पत की हवा के साथ शुक्र चंद्र तो पहले ही थे। मंगल सनीचर और आ मिले। अगर मंगल नेक के बुर्ज खाना नंबर 3 की हद और सनीचर की उम्र रेखा एक तरफ हुए तो सूरज की सेहत या तरक्की रेखा खाना नंबर 5 और मंगल बंद खाना नंबर 8 की हदबंदी भी इस जगह सनीचर के हैडकवाटर के साथ आ लगी। सनीचर खुद पहाड है मगर पहाड बृहस्पत की हवा को रोक नहीं सकता। हां अगर पानी से लदी हुई हवा के रास्ते में ऐसे ढंग पर आ जावे कि हवा पहाड से टकरा जावे तो हवा से पानी उतार लेगा। बारिश होगी मगर हवा खाली होकर फिर आगे बढ़ेगी या हट कर वापिस आयेगी। मगर सनीचर के खाना नंबर 10 के मकाम को अगर बृहस्पत के खाना नंबर 9 से मिलाने के लिये खत खींचें या उम्र रेखा का रख देखें जो सनीचर के कोहसार की चीज है तो मालूम होगा कि खाना नंबर 8 सनीचर का पहाड का रख हवा को रोक नहीं सकता। देखता ही रह जाता है। (सांप आज तक टकटकी लगाये देखता चला आता है और बृहस्पत के इन्तजार में बैठा है।) ये हवा आगे बढ़ी तो खाना नंबर 11 आमदन बृहस्पत का घर मगर सनीचर की कुंभ राशि पानी से भरा हुआ घडा (वही पानी जो अभी ऊपर सनीचर ने बृहस्पत की हवा से निकाल लिया था) जिस के साथ ही खाना नंबर 12 खर्च सनीचर की दूसरी राशि "मीन" मछली तडप रही है। ये खाना नंबर 12 राहु के हाथी का भी है यानि बृहस्पत गुरू के लिये हाथी भी आ गया। ब्रह्म का खयाल छोडा हाथी की सवारी चुपचाप हो कर ली। बृहस्पत जर्द और राहु नीला मिले तो सब्ज रंग हुआ। बुध खुद आ निकला। गोया बृहस्पत के जर्द रंग का पता ही न चला कि कहां चला गया है। नीले रंग राहु से दोस्ती करके

बुध ने अपनी सिर रेखा खड़ी कर दी। अब बृहस्पत ने राहु के हाथी से बचना है या राहु का जाल काटना है। अपने दोस्त केतू को याद करता है। ये केतू चूहा भी बनता है कुत्ता भी होगा गधा भी है कान भी होगा और छलावा भी माना है। (लालकिताब सफ़ा 115) गऊ माता भी होता है। (लाल किताब सफ़ा 118 जुज 9) और गऊ माता शुक्र भी है। (लाल किताब सफ़ा 115) शुक्र में केतू जरूर माना है और बुध भी शुक्र का जुज है। इसलिये जब शुक्र बन गया तो बुध और केतू दोनों ही शुक्र के अंदर ही लपेटे गये। केतू तो बृहस्पत के बराबर का है। ये छलावा बना गुरू को हिम्मत दी। चूहे ने राहु का जाल काटा। गधे को अपने मतलब के लिये बाप कहा। बुध की सिर रेखा की दीवार की स्कावट से आगे बढ़ा तो केतू के घर खाना नंबर 6 में जा निकला। मगर वहा भी बुध मौजूद है। इसलिये वहा गऊमाता बना और भाग कर खाना नंबर 2 में जा पहुंचा। क्योंकि खाना नंबर 6 और खाना नंबर 2 के दरम्यान कोई स्कावट की दीवार नहीं और दृष्टि में भी खाना नंबर 2 देखता है खाना नंबर 6 को और ये खाना नंबर 2 तो है ही गाय का अस्थान या शुक्र की अपनी राशि बिस्व जो बृहस्पत का पक्का घर मुकर्र है। ये खाना नंबर 2 ही एक घर है। जहां गाये पक्के तौर पर खड़ी है गृहस्त है। राहु केतू की मुश्तरका बैठक है। जिस में खाना नंबर 8 के असर का सनीचर का वही ताल्लुक आ जाता है या मशनोई शुक्र खाली बृहस्पत हवाई ताकत का गुरू और दुनयावी गाय गुरूद्वारा सब बृहस्पत के पहलू है। गोया बृहस्पत की हवा अब सनीचर के पहाड के सिलसिले की दीवारों से टकराकर खाना नंबर 2 में वही समुन्दर ले जाती है। जो बृहस्पत के साथ खाना नंबर 9 से लगा हुआ चंद्र के समुद्र खाना नंबर 4 में मौजूद था। इस तरह पर खाना नंबर 9 व खाना नंबर 2 जब बाहम मिले तो खाना नंबर 2 कर्मि धर्मि कोहसार कहलाया। खाना नंबर 9 कर्म धर्म समुद्र या दरियाये गंगा हुआ। जिस में हवाई ताकत का साथ हुआ या खाना नंबर 2 में बृहस्पत की असल ताकत पायी गयी या खाना नंबर 9 को निधि सिद्धी का मालिक सुधामा (सुध साधू बृहस्पत गुरू, मां माता मान इज्जत) तो खाना नंबर 2 को धन्ना भगत (पत्थर से बृहस्पत दोनों जहानों का मालिक) मुराद होगी। जिसकी गाये राम चरावे यानि खाना नंबर 2 में।

सनीचर बृहस्पत शुक्र और राहु केतू 5 की पंचायत मानी गयी है या जिस वकत भी ये सब ग्रह यानि बृहस्पत मय शुक्र और पापी ग्रह बाहम मुशतरका हों या दृष्टि से बाहम मिल रहे हों। बृहस्पत की ऊत्तम हालत (मुतलका दुन्यावी गृहस्त) होगी। क्योंकि खाना नंबर 2 (हथेली पर) के गुरु के सामने:-

सनीचर का बुर्ज है - खाना नंबर 10 सांप कान बंद किये मगर टकटकी लगाये चुपचाप।

सूरज का बुर्ज है खाना नंबर 1 बंदर बना बैठा जो फूंक

नहीं मार सकता। बृहस्पत की ताकत हवा को डूँढता है।

केतू का बुर्ज है खाना नंबर 6 कुत्ता दरवेश गया।

} खाना नंबर 2 के बृहस्पत के सामने राहु हाथी खाना नंबर 12 में बंधा हुआ होगा।

राहु अपने कान लंबे कर के केतू के खाना नंबर 6 के साथ नंबर 12 को मिलाकर गुरु के खाना नंबर 2 की जड में उपदेश की खातिर खुद चुप होगा मगर बृहस्पत चुप न होगा।

बुध शुक्र का बुर्ज है खाना नंबर 7 शादी रेखा, बुध खुद - सिर रेखा बुध की।

मंगल का बुर्ज है खाना नंबर 3 और राशि नंबर 3 मिथुन, तर्जनी की जड बुध की राशि।

राहु केतू तो शुक्र में शामिल है। गोया सब ही ग्रह गुरु का उपदेश सुन रहे हैं या खाना नंबर 9 में उपदेश था सिर्फ ज्ञान तो खाना नंबर 2 में ज्ञान का दाता बृहस्पत खुद मौजूद हुआ।

अरमान नंबर 123

औलाद

पैदाइश का वक्त - मंगल या शुक्र या बुध में से किसी भी एक दो या तीनों ही मुशतरका से सनीचर की दोस्ती (वर्षफल और राशि नंबर के ग्रह बोलने के हिसाब से उम्र के किसी साल में सनीचर का भी आ शामिल होना) औलाद की पैदाइश का वक्त होगा।

ग्रहों का औलाद से ताल्लुक

बृहस्पत :- जिस्म में रह के आने जाने का ताल्लुक या पैदाइश औलाद। मगर औलाद की जिदगी कायम रहने या मौत हो जाने का कोई बंधन नहीं।

सूरज :- माता के पेट के अंधेरे में रौशनी दे देना या पैदा होने के बाद दुनिया में उनकी या उन से वालदैन की किस्मत को रौशन करना खास कर बजरिया नर औलाद। अंधेरे घरों में चिराग रौशन करने की ताकत।

चंद्र:- उम्र, धन, दौलत और वालदेनी नेक ताल्लुक (नर मादा हर दो औलाद का)
शुक्र :- जिस्म या बुत की मिट्टी। गृहस्ती सुख। औलाद की पैदाइश में मदद या खराबी।

मंगल :- जिस्म में खून कायम रहने तक जिंदगी का नाम और दुनिया में औलाद और उन के आगे औलाद दर औलाद कायम रख कर बेलों (पौंदे) की तरह बढ़ाना और उन का नाम या उन के नाम से सब का नाम बढ़ाना या दुनिया में नाम बाकी या पैदा कर देना। खुद कुण्डली वाले में काँतबाह से अलहैदा बच्चा पैदा करने की ताकत। जिस्म में जोर, रह बुत को इकट्टा पकडे रखने की हिम्मत।

बुध :- औलाद का रिश्तेदारों से ताल्लुक। (लडकियां-लडकियों की नसलों का बढ़ाना।) खुद कुण्डली वाले में काँतबाह खाली विषय की ताकत। कुण्डली वाले और औलाद के लिये दूसरों से मिलने मिलाने के लिये मैदान खुला करना या खाली आकाश की तरह इन सब के लिये हर तरफ जगह खाली करके मैदान बढा देना।

सनीचर :- औलाद की पैदाइश के शुरू होने का वकत। जायदादी ताल्लुक। माँत के बहाने।

राहु :- बृहस्पत के असर के बरखिलाफ होना या बृहस्पत को चुप कराना। रह का आना जाना बंद करना या माँतें या बहुत देर तक पैदाइश औलाद को रोक देना या दीगर गैबी और छिपी छिपाई खराबियां या पांव तले भूचाल पेदा करना मगर लडकियों की मदद करता है।

केतू :- औलाद की खुशहाली, फलना फूलना मगर औलाद की तादाद में कमी का हिंदसा रखना (माँतें करके औलाद घटाने से मुराद नहीं। वैसे ही औलाद गिनती की ही होगी या बहुत देर बाद होगी। लेकिन जो होगी या जब होगी उमदा और मुकमल होगी।)

खुद कुण्डली वाले में बुध की काँतबाह और मंगल के खून से बच्चा पैदा करने की ताकत और बृहस्पत की औलाद पैदाइश तीनों को इकट्टा करके रखने वाली ताकत नतफा या वीरज या नतफा की बुनियाद को नर मादा में मिलाने वाली तूफानी हवा या खाली नाली होगी। यही तीन ग्रह केतू की तीन टांगे हैं। जिसकी वजह से ये शुक्र का बीज कहलाता है।

कुण्डली वाले का जो ग्रह रद्दी हालत या उमदा हालत का होगा वही हालत रद्दी या उमदा हालत होगी।

साहबे औलाद (कौन बाल बच्चों व कबीला और परिवार वाला होगा)

कुण्डली वाले के लिये -

- 1) बृहस्पत सूरज शुक्र बुध सनीचर सब कायम या
- 2) सिर्फ बृहस्पत या सूरज कायम या दोनों ही कायम या
- 3) मंगल होवे शुक्र या बुध के पक्के घर या उन की राशियों में और दृष्टि के सब खाने खाली हों या
- 4) मंगल हर तरह से कायम और नेक होवे या
- 5) मंगल हो सनीचर के दोस्तों (लाल किताब सफ़ा 105 पर खाना दोस्त में लिखे) के साथ उनके पक्के घर या उन की राशियों में। (बुध शुक्र राहु) और सनीचर हों मंगल के दोस्तों (लाल किताब सफ़ा 105 पर खाना दोस्त में लिखे) के साथ उनके पक्के घर या उन की राशियों में (सूरज चंद्र बृहस्पत)

मंगल सनीचर मुश्तरका हों। खुद अपनी औलाद तो उमदा माकूल तादाद और नेक होवे। मगर पोते देर बाद या तादाद में कम हों। पोतीयां (लडको की लडकियों) की शर्त नहीं।

बृहस्पत कायम तो सब औलाद (नर मादा)..... कायम।

केतू कायम तो सब लडकेकायम।

राहु कायम तो सब लडकियां कायम

मंगल बुध साथी ग्रह - ख्वाह दोनों खुद बाहम साथी ग्रह हों या दोनों ही एक दूसरे के दोस्तों के घर या राशि में बैठ जावें या दोनों बाहम मुश्तरका ही हो जावें। मगर बामुकाबिल न हों तो लावल्द न होगा।

चंद्र नष्ट तो औलाद जरूर नष्ट होगी (नर मादा बच्चों की तमीज नहीं) मगर लावल्द होने की शर्त न होगी।

चंद्र हो खाना नंबर 1 में सनीचर नंबर 7 - सूरज नंबर 4 - शुक्र नंबर 5 तो नामर्द होगा।

शुक्र हो खाना नंबर 2-6 में दृष्टि या साथी वर्गैरह औरत बांझ या नाकाबिले हो जाने के सब ही घर खाली हों यानि खाना नंबर औलाद होगी।

2 या 6 का शुक्र हर तरह से अकेला हो

चंद्र कुण्डली का औलाद के बारे में कोई ताल्लुक न होगा।

साहिबे औलाद दर औलाद होगा

शुक्र केतू मुश्तरका खाना नंबर 1 में और बुध नष्ट हो (सामने के दांत खतम) } नावल्द
या चंद्र शुक्र बाहम बामुकाबिल हो और पापी ग्रह या दुश्मन घरों का साथ हो जावे। } गीग

(खाना नंबर 5 व 9 का खास फर्क सफा 120 अरमान नंबर 124 से पहले लिखा है)

खाना नंबर 5 या 9 में या नंबर 3 या 9 में पापी ग्रह हों या } औलाद के बिघ्न (मोते)
खाना नंबर 5 या 9 में या नंबर 3 या 9 में बृहस्पत या सूरज के दुश्मन ग्रह } बीमारियां होंगी।
हों या मंगल खाना नंबर 4 या पापी ग्रह नंबर 9 में या राहु बुध नंबर 1 या }
केतू शुक्र नंबर 1 या राहु अकेला खाना नंबर 9

शुक्र केतू खाना नंबर 1 में मंगल खाना नंबर 4 में.....औलाद के बिघ्न।

पापी ग्रह तीनों या कोई एक नंबर 5 या 9 में मंगल खाना नंबर 4 में.....औलाद के बिघ्न।

बुध व शुक्र का खाना नंबर 5 में औलाद पर कोई बुरा असर न होगा।

सूरज हो खाना नंबर 6 में } औरत पर औरत मरती जावे या मां बच्चों का
और सनीचर हो खाना नंबर 12 में तो } ताल्लुक ही न देखे या सुख से पहले चलती जावे।

बुध मारता होवे बृहस्पत को या बुध होवे बृहस्पत } बच्चें पिता पर भारी (दुख या
के घरों में या बृहस्पत के साथ ही } मौत का सबब) होंगे।

सूरज हो खाना नंबर 6 में और मंगल हो खाना नंबर 10 या 11 में तो लडके पर लडका मरता जावे।

मंगल शुक्र या बुध के दुश्मन ग्रह औलाद की उम्र कम या औलाद को नष्ट करते हैं।

i) शुक्र बुध मंगल तीनों खाना नंबर 3 दृष्टि खाली हो खाना नंबरया } शादी और औलाद
ii) शुक्र बुध मय राहु या केतू खाना नंबर 7 } में गडबड।

मंगल शुक्र या बुध के दोस्त ग्रह औलाद की उम्र लंबी या औलाद को आबाद वे कायम करते हैं।

शुक्र के दोस्त ग्रह (खुद शुक्र नहीं) लडके पैदा करते हैं।

बुध या बुध के दोस्त ग्रह लडकियां पैदा करते हैं।

खाना नंबर 3-5-11 में अगर बुध हो तो लडकियां पहले और जरूर कायम होगी नर औलाद की शर्त नहीं।

खाना नंबर 3-5-11 में शुक्र के दोस्त ग्रह
खुद शुक्र नहीं हों तो लडके जरूर कायम होंगे लडकियों की शर्त नहीं।

चंद्र खाना नंबर 6 में हो तो लडकियां ही लडकियां होंगी। } मगर आपस में साथी ग्रह न बन
केतू खाना नंबर 4में हो तो लडके ही लडके ही पैदा होंगे। } रहे हों (लालकिताब सफा 326
} सनीचर चंद्र का ताल्लुक।)

तादाद औलाद शुक्र बुध या दोनों मुश्तरका से जितने दूर बृहस्पत हो या जितने

दरम्यानी घर हों। कायम रहने वाली तादाद औलाद उतनी होगी। कम अज कम - जिसमें से नर मादा ऊपर जिकर किए ढंग पर देख लेंगें।

औलाद का वालदैन को सुख:- खाना नंबर 1-3-5 के ग्रहों की अच्छी या मंदी हालत से जाहिर हो जायेगा।

वालदैन व औलाद का बाहमी ताल्लुक एक दो तीन चार हद 12 की तरतीब से अगर कुण्डली में हों

पहले घरों में	दरम्यानी घरों में	आखरी या बाद के घरों में	तो असर क्या होगा।
बृहस्पत बुध		बुध बृहस्पत	पैदाइश औलाद जरूर होगी बुध के वक्त से वालिद दुखिया बरबाद या खत्म ही होगा। बुध बृहस्पत बाहम बामुकाबिल हो जावे तो लडकियां जरूर कायम होगी लडको की शर्त नहीं होगी।
मंगल	बृहस्पत	बुध	औलाद (नर) कायम
मंगल	बुध	बृहस्पत	औलाद (नर) कायम
बृहस्पत	मंगल	बुध	औलाद (नर) कायम
बृहस्पत	बुध	मंगल	औलाद (मादा) कायम
बुध	बृहस्पत	मंगल	औलाद (मादा) कायम
<u>बृहस्पत</u> मंगल		बुध	मुश्तरका औलाद (लडके लडकीया) कायम और सब सुखी होंगे।
<u>मंगल</u> बुध		बृहस्पत	लडकी कायम वालिद दुखी
बृहस्पत		मंगल बुध	लडकी कायम वालिद दुखी
बुध		मंगल बृहस्पत	औलाद व बाप दोनों ही दुखिया
मंगल		बुध बृहस्पत	औलाद कायम मगर बाप की हालत रद्दी

नोट :- इस तमाम अरमान में जहां कहीं भी मंदे ग्रहों का जिकर है। उनके मंदे फल सिर्फ इसी दिन से या दिन तक गिने जायेंगे। जिस दिन से कि वो मंदे ग्रह वर्षफल के हिसाब से शुरु या खत्म होंगें। सारी उम्र के लिये ही मंदे नहीं। ज्यादा से ज्यादा हर ग्रह अपने पहले दौरा (आम असर की मयाद या ग्रह की अपनी उम्र) या उम्र के पहले 35 साला चक्र तक असर कर सकता है। महादशा वाला ग्रह भी जो जनमदिन से ही शुरु हो जावे और ख्वाह दो दफा ही

एक के बाद दीगरे दौरा में मंदा हो जावे। 39 साल ज्यादा से ज्यादा मंदा रह सकता है।

खाना नंबर 5 में सूरज या बृहस्पत के दुश्मन ग्रह से औलाद बरबाद होगी। लेकिन खाना नंबर 9 में ऐसे दुश्मन ग्रह का दोस्त/दुश्मन ग्रह अपने दिन की औलाद को जरूर कायम रखेगा। फरजन खाना नंबर 5 में सनीचर और नंबर 9 में मंगल हो तो मंगलवार के दिन वाली औलाद जरूर कायम रहेगी।

अरमान नंबर 124

किस्मत का असर

खाना नंबर 9 के ग्रह किस्मत के बुनियादी ग्रह होते हैं। इस खाने में खाना नंबर 3 और खाना नंबर 5 के ग्रहों का असर भी आ मिलता है। औलाद की पैदाइश के दिन से खाना नंबर 5 का असर न सिर्फ खाना नंबर 9 में जाने लग जाता है। बल्कि बाप बेटे की मुश्तरका किस्मत 70-72 साला सवाल पैदा करने लग जाता है। खाना नंबर 3 का असर कुण्डली वाले के अपने जनम से ही खाना नंबर 9 में मिलता माना है। औलाद की पैदाइश के दिन से पहले खाना नंबर 5 का असर खाना नंबर 9 में गया वो बाप बेटे की मुश्तरका किस्मत पर असर नहीं करता। बल्कि खाना नंबर 9 की दूसरी चीजें यानि कर्म धर्म और कुण्डली वाले के अपने बुजुर्गों के ताल्लुक में असर रखता है। औलाद की पैदाइश के दिन से खाना नंबर 5 का असर कुण्डली वाले के बुजुर्गों की बचाये खुद कुण्डली वाले की अपनी किस्मत (जो बाप बनता है) पर असर करता है। इसी तरह ही खाना नंबर 3 का असर भाई की पैदाइश के दिन से खाना नंबर 9 में जब जायेगा तो कुण्डली वाले की अपनी जात पर असर करेगा और भाई की पैदाइश से पहले कुण्डली वाले के अपने बुजुर्गों के ताल्लुक में दखल देगा। लेकिन अगर इसका (कुण्डली वाले का) भाई पहले ही मौजूद हो तो बड़े भाई की किस्मत का असर कुण्डली वाले में आयेगा। खाना नंबर 3 की इस ताकत की वजह से मंगल की राशि नंबर 8 मंगल बंद माँत ने भी उल्टा देखा। क्योंकि मंगल नेक व बंद दोनों भाई ही हैं। उम्र के पहले 35 साला चक्कर आकर छोटा भाई भी हो और और औलाद भी शुरू हो जावे तो खाना नंबर 5 का असर खाना नंबर 3 के असर पर प्रबल होगा अगर खाना नंबर 3 व 5 दोनों ही खाली हों तो किस्मत की बुनियाद पर सिर्फ खाना नंबर 9 के ग्रह माने जायेंगे। अगर खाना नंबर 9 भी खाली हो तो ये शर्त ही उड़ गयी।

खाना नंबर 5 का असर कुण्डली वाले पर इसके बुढापे में होता है और खाना नंबर 3 का असर बचपन से या यूँ कहो कि खाना नंबर 3 का असर उम्र के पहले 35 साला चक्कर में होता है और खाना नंबर 5

का उम्र के दूसरे 35 साला चक्कर पर या क्रिस्मत की बुनियाद पर उम्र के पहले 35 साला चक्र में खाना नंबर 3 का असर होगा और दूसरे 35 साला चक्कर में खाना नंबर 5 का असर क्रिस्मत की बुनियाद पर होगा। खुलास्तन उम्र के दूसरे 35 साला चक्कर में खाना नंबर 5 का असर खाना नंबर 3 के असर पर प्रबल होता हुआ क्रिस्मत की बुनियाद पर होगा। हर हालत में खाना नंबर 5 प्रबल होता है और खाना नंबर 3 नीचे दब जाने वाला। खाना नंबर 9 का अपना असर हर वक्त साथ होगा।

पहले घरों के ग्रह बाद के घरों के ग्रहों को अपनी दृष्टि के वक्त जगा दिया करते हैं। अगर बाद के घरों में कोई ग्रह न हो तो वो खाना सोया हुआ गिना जाता है। फरजान खाना नंबर 11 में तो कोई न कोई ग्रह मौजूद हैं। मगर खाना नंबर 3 खाली है तो इस हालत में खाना नंबर 11 के ग्रह सोये हुए माने जाएंगे जिन को जगाने के लिये क्रिस्मत को जगाने वाले ग्रह की जरूरत होगी। (अरमान नंबर 10) बाद के घरों के ग्रह जागने के दिन से क्रिस्मत का जागना मुराद होगी। इस तरह पर (यानि खाना नंबर 3 या 5 के ग्रह का दौरा आया तो नंबर 9 के ग्रह जारी हो गये।) अगर खाना नंबर 9 के ग्रह मुंदरजा जैल खास खास सालों में जागें तो नीचे दिया हुआ असर पैदा होगा। जिस साल से (वर्षफल के हिसाब) पहले घरों के ग्रहों का पहला दौरा शुरू होवे। उस साल से बाद के घरों के ग्रह जाग पडे होंगे और उस साल से पहले वो सोये हुए माने जाएंगे।

बृहस्पत के खाना नंबर 9 में - मुंदरजा जैल खास खास वक्तों में जागे हुए ग्रहों का असर

बुध का इस घर से ताल्लुक जुदी जगह भी दर्ज है।

बृहस्पत:- जब उम्र के 16वें साल शुरू से जारी हो जावे। निहायत मुबारक फल देगा। शुक्र का साथ यानि ऐसी हालत में शुक्र बृहस्पत मुश्तरका खाना नंबर 9 में हों तो स्त्री भाग में काग रेखा (मगर तीर्थ यात्रा 20 साल उत्तम) का मंदा फल देगा। चंद्र के साथ से यानि चंद्र बृहस्पत मुश्तरका खाना नंबर 9 में। मातृ हिस्सा की मदद। तीर्थ यात्रा 20 साल और उत्तम। दोनों का साथ यानि चंद्र बृहस्पत शुक्र मुश्तरका नंबर 9 में। कभी अमीरी के समंदर

की ठाठें। कभी गरीबी में रेत के ज़र्रे की भी चमक न होगी।

सूरज:- जब 22 वें साल उम्र के शुरू हो जावे मुबारिक फल देगा। राजदरबार मुबारिक फल। वालदैन के लिये मुबारक। अपनी उम्र लंबी बाप की उम्र लंबी बाबे की उम्र लंबी होगी। शुक्र का साथ यानि शुक्र सूरज मुश्तरका खाना नंबर 9 में। स्त्री भाग में काग रेखा। मगर तीर्थ यात्रा उत्तम 20 साल उत्तम फल देवे। चंद्र का साथ यानि चंद्र सूरज मुश्तरका नंबर 9 में। मातृ हिस्सा की मदद। 20 साल तीर्थ यात्रा उत्तम। दोनों का साथ यानि चंद्र शुक्र सूरज मुश्तरका नंबर 9 में। कभी अमीरी का समुद्र ठाठें देवे। कभी गरीबी में रेत के ज़र्रे की भी चमक न होवे। सूरज जब खाना नंबर 9 में हो तो खाना नंबर 5 भी रोशन और नेक असर देगा।

चंद्र:- जब 24 साला शुरू उम्र में जारी हो तो जो ऊपर चंद्र बृहस्पत, चंद्र सूरज, चंद्र बृहस्पत शुक्र, चंद्र सूरज शुक्र का ऊपर लिखा है।

चंद्र जब खाना नंबर 9 में हो तो खाना नंबर 5 भी चंद्र का अंदरूनी तौर पर नेक असर देगा। क्योंकि ये घर सूरज का माना है। जिसके सामने चंद्र जुदा और जाहिरा फल न देगा।

शुक्र:- जब उम्र के 25 वें साल शुरू होवे तो मंगल बंद का नीचे लिखा असर देगा।

मंगल (नेक):- जब उम्र के 13 वे साल शुरू होवे तो तबदीली उस की पैदाइश पर उसके वालदैन के पास दौलत का भंडारा कायम होगा। हकूमत का साथ होगा। फिर मंगल के वकत से वही उमदा हालत जो बवकत पैदाइश वालदैन की थी होगी।

मंगल (बंद):- जब उम्र के 15 वें साल शुरू होवे तो तबदीली मजहब, पैदाइश में राज। वालदैन की माली हालत उसके जनम से खराब होकर मंगल बंद के जमाना के खतम पर दुरस्त होगी।

बुध:- जब उम्र के 34 वें साल शुरू होवे तो ऊपर लिखा मंगल बंद का असर देगा। पापी ग्रह जब ऐसे ढंग पर शुरू होवें कि उन के असर का दूसरा दौरा उम्र के मुंदरजा

की ठाठें। कभी गरीबी में रेत के ज़र्रे की भी चमक न होगी।

सूरज:- जब 22 वें साल उम्र के शुरू हो जावे मुबारिक फल देगा। राजदरबार मुबारिक फल। वालदैन के लिये मुबारक। अपनी उम्र लंबी बाप की उम्र लंबी बाबे की उम्र लंबी होगी। शुक्र का साथ यानि शुक्र सूरज मुश्तरका खाना नंबर 9 में। स्त्री भाग में काग रेखा। मगर तीर्थ यात्रा उत्तम 20 साल उत्तम फल देवे। चंद्र का साथ यानि चंद्र सूरज मुश्तरका नंबर 9 में। मातृ हिस्सा की मदद। 20 साल तीर्थ यात्रा उत्तम। दोनों का साथ यानि चंद्र शुक्र सूरज मुश्तरका नंबर 9 में। कभी अमीरी का समुद्र ठाठें देवे। कभी गरीबी में रेत के ज़र्रे की भी चमक न होवे। सूरज जब खाना नंबर 9 में हो तो खाना नंबर 5 भी रोशन और नेक असर देगा।

चंद्र:- जब 24 साला शुरू उम्र में जारी हो तो जो ऊपर चंद्र बृहस्पत, चंद्र सूरज, चंद्र बृहस्पत शुक्र, चंद्र सूरज शुक्र का ऊपर लिखा है।

चंद्र जब खाना नंबर 9 में हो तो खाना नंबर 5 भी चंद्र का अंदरूनी तौर पर नेक असर देगा। क्योंकि ये घर सूरज का माना है। जिसके सामने चंद्र जुदा और जाहिरा फल न देगा।

शुक्र:- जब उम्र के 25 वें साल शुरू होवे तो मंगल बद का नीचे लिखा असर देगा।

मंगल (नेक):- जब उम्र के 13 वे साल शुरू होवे तो तबदीली उस की पैदाइश पर उसके वालदैन के पास दौलत का भंडारा कायम होगा। हकूमत का साथ होगा। फिर मंगल के वकत से वही उमदा हालत जो बवकत पैदाइश वालदैन की थी होगी।

मंगल (बद):- जब उम्र के 15 वें साल शुरू होवे तो तबदीली मजहब, पैदाइश में राज। वालदैन की माली हालत उसके जनम से खराब होकर मंगल बद के जमाना के खतम पर दुरस्त होगी।

बुध:- जब उम्र के 34 वें साल शुरू होवे तो ऊपर लिखा मंगल बद का असर देगा। पापी ग्रह जब ऐसे ढंग पर शुरू होवें कि उन के असर का दूसरा दौरा उम्र के मुंदरजा

जैल सालों से शुरू होवे तो :-

सनीचर:- 60वें साल मुबारिक अगर शुक्र का साथ हो यानि शुक्र सनीचर मुश्तरका खाना नंबर 9 में हों या शुक्र बृहस्पत दोनों का साथ यानि शुक्र सनीचर बृहस्पत नंबर 9 में हों तो हर दो हालत में उत्तम फल देगा।

चंद्र का साथ या चंद्र सनीचर खाना नंबर 9 में :- खराब असर। चंद्र का फल मंदा मिला होगा।

बृहस्पत चंद्र दोनों का साथ यानि चंद्र सनीचर बृहस्पत खाना नंबर 9 में खराब असर। चंद्र का फल मंदा मिला होगा। सनीचर के साथ राहु या केतु नंबर 9 में निहायत मुबारक। भारी कबीला और धन दौलत शाहाना होगा।

राहु:- जब उम्र के 42वें साल भी शुरू होता होवे मुबारक। खर्चा बहुत बडा मगर कबीले की बेहतरी में होगा। औलाद के लिये गैर मुबारक होगा। भाई बहनों से इतफाक रखने से बरकत होगी। औलाद 21 साल फर्क वाली कायम और मददगार होगी।

केतू:- 48 साल उम्र के शुरू से जारी। खुद अपने लिये मुबारिक। सफर दर्पेश रहे। शुक्र का साथ यानि शुक्र केतू नंबर 9 में मुश्तरका हों तो मुबारिक। दौलत पर दौलत आवे। चंद्र का ताल्लुक यानि चंद्र केतू मुश्तरका नंबर 9 में माता व माता खानदान पर बुरा असर देवे। खास कर उस वकत जब केतू के दुश्मन ग्रह (मंगल) का दौरा होवे।

खाना नंबर 9 के ग्रह

ऊपर लिखें सालों में वर्षफल के हिसाब से शुरू हों या न हों तो भी ऊपर का फल देंगे। शुरू उम्र की तरफ से अपनी अपनी उम्र पर शुरू होकर (यानि बृहस्पत 16 साल उम्र से, सूरज 22 साला उम्र से, चंद्र 24 साला उम्र से, शुक्र 25 साला उम्र से, मंगल नेक 13 साला उम्र से, मंगल बढ़ 15 साला उम्र से दोनों मुश्तरका 28 साला उम्र से, बुध 34 साला उम्र से, सनीचर 60 साला उम्र से, राहु 42 साला उम्र से केतू 48 साला उम्र से) अपनी अपनी उम्र के अरसा तक ही यानि बृहस्पत 16 साल से शुरू होकर 16 साल ही यानि 32 साल उम्र तक। सूरज 22 से 22 साल तक कुल 44 साल

उम्र तक। सनीचर 60 से 60 साल कुल 120 साल तक वर्गैरह वर्गैरह ऊपर का फल देंगे। वर्षफल के हिसाब से खाना नंबर 9 वाले का असर इसके अपनी आम तौर पर शुरू होने की म्याद की बजाये जनम दिन से ही शुरू होता हो तो वो ग्रह जनम दिन से अपनी उम्र के अरसा तक ही ऊपर का फल देगा यानि बुध 34 साल मंगल 28 साल सनीचर 60 साल वर्गैरह।

खलासतन खाना नंबर 9 के तमाम ग्रह जब कभी भी शुरू होंगे वो अपनी अपनी आम उम्र की म्याद तक फल देंगे। सिवाये सनीचर के जो 60 साल फल देगा और उमदा। इस तरह खाना नंबर 9 में शुक्र या बुध और मंगल बंद सबसे मंदे और सनीचर नंबर 9 में सबसे उत्तम और सबसे लंबा अरसा 60 साल का होगा।

खाना नंबर 2 में :- सब ग्रह ऊपर खाना नंबर 9 के लिए लिखा हुआ तमाम फल उम्र के आखिरी हिस्सा में देंगे। यानि खाना नंबर 9 में अगर सनीचर का फल 60 साल लिखा है तो वो उम्र के शुरू की तरफ से 60 साल बुढापे की तरफ को होगा और यही सनीचर खाना नंबर 2 में 60 साल होगा मगर मौत के दिन की तरफ से पीछे जनमदिन की तरफ को गिन करा। इसी तरह ही सब ग्रह देंगे।

अरमान नंबर 125 से 129

बृहस्पत पापी ग्रहों (सनीचर राहु केतू) मय बुध के साथ पिघले हुए सोने की तरह राशि फल का होता है। जिसमें हर तरह की शक का फायदा उठाया जा सकता है।

- i) बृहस्पत के सीधे खडे खत:- बृहस्पत का राहु के साथ ताल्लुक।
- ii) चक्कर के सीधे खडे खत:- बृहस्पत का बुध के साथ होने का ताल्लुक
- iii) शंख के सीधे खडे खत:- बृहस्पत का केतू के साथ होने का ताल्लुक
- iv) सदफ के सीधे खडे खत:- बृहस्पत का सनीचर के साथ होने का ताल्लुक

बृहस्पत के निशान

अरमान नंबर 130

राशिफल का बृहस्पत या उंगलियों की पोरीयों पर बृहस्पत के निशानों से लिया हुआ बृहस्पत हो तो चंद्र का काम देगा।

सूरज शुक्र मुश्तरका हों = हवाई ताकतों का मालिक बृहस्पत होगा। सोना वर्गैरह ठोस हालत की चीजों का ताल्लुकदार न होगा।

i) कुण्डली में जब शुक्र नीच हो (शुक्र नंबर 6 में) तो सूरज मंगल बृहस्पत का फल मंदा होगा और

ii) जब पापी ग्रहों या केतू का फल मंदा होवे तो बृहस्पत का फल भी मंदा होगा।

ii) जब सूरज या चंद्र उमदा न हों (अरमान नंबर 108 फैंरिस्त ग्रहण) बृहस्पत की हवा निहायत सर्द बर्फानी तूफान की हवा की तरह किस्मत के असर को सुला देगी या किस्मत का आम दुनयावी असर मंदा ही होगा या हल्की किस्मत होगी।

iv) जब मंगल नष्ट हो (मंगल बढ़ हो) तो बृहस्पत भी नष्ट होगा। यानि आकाश बेल होगी। जो जिस दरख्त पर चढ़ जावे उसे तबाह कर देगी।

v) जब बुध का साथ हो तो बुध फौरन बृहस्पत को अपने दायरा में बांध लेगा और बृहस्पत या सनीचर का सांप बनकर या सूरज की किरनों होकर बाहर निकलेगा। यानि:-

1) यानि बृहस्पत अकेला या/अपने दोस्त चंद्र के साथ ही हो बुध की राशि 3-6 या/बुध के पक्के घर 7 में और बुध को देखे बृहस्पत या देखे चंद्र बृहस्पत।

2) ख्वाह बुध देखे बृहस्पत को/या बृहस्पत चंद्र मुश्तरका को बुध की राशि 3-6 में या पक्का घर 7 में या में से।

यानि 3 में बुध देख सकता है 11-9 को या 11-9 में से 3 को

यानि 6 में बुध देख सकता है 12 को या 2-12 में से 6 को

यानि 1 में बुध देख सकता है 7 को या 7 में से नंबर 1 को

3) ख्वाह किसी और तरह भी बस्ये दृष्टि वर्गैरह बुध की राख - रेत बृहस्पत की गैबी हवा या गृहस्ती ताकत सोने वर्गैरह में मिल जावे।

लाखों पति होता हुआ भी मुसीबत पर मुसीबत देखता चला जावे मगर अकल की कोई पेश ना जायेगी।

ऐसी हालत में अगर सूरज चंद्र वर्गैरह उमदा हों (बमूजब अरमान नंबर 108) और सनीचर उमदा (बमूजब अरमान नंबर 168) तो किस्मत उमदा होगी। फैंसला हक में होवे।

4) लेकिन अगर बृहस्पत अकेला या बृहस्पत चंद्र इकट्ठे या दोनों चंद्र या बृहस्पत में से कोई एक अपने ऊंच घर खाना नंबर 2 या 4 में (या खुद बुध नंबर 2-4 में या दोनों मुश्तरका के साथ

ही मिल बैठें खाह किसी भी घर) हो जावें तो बुध दुश्मनी की बजाये मदद देगा।
चंद्र का पूरा नेक असर होगा।

5) अकेले अकेले चंद्र या बृहस्पत को बुध मार लेगा। दूध में रेत या सोने में राख
स्वाह कलई का टांका या कोढ पैदा कर देगा।

6) नेच अरमान नंबर 180 (बृहस्पत बुध मुशतरका वगैरह) देखें।

बृहस्पत जब दो या दो से ज्यादा ग्रहों के साथ हो जावे या उन को देखता
हो जो ग्रह कि आपस में दुश्मन हों (बुध या मंगल की वो ताकत जो मंगल या
बुध नर ग्रहों या स्त्री ग्रहों या मखनस ग्रहों के दरम्यान होने पर रखते हैं की शर्त
न होगी और न ही उन ग्रहों की बृहस्पत से दुश्मनी की शर्त होगी) तो वो उनकी
बाहम वाली दुश्मनी हटा देगा। ये मतलब नहीं है कि दोस्ती ही पैदा करवा देगा।
दोस्ती पैदा करवाने वाला चंद्र है।

बृहस्पत व सनीचर का बाहमी ताल्लुक

1) बृहस्पत के घरों में सनीचर बुरा फल न देगा। मगर सनीचर के घर खाना नंबर
10 में बृहस्पत नीच फल का होगा।

2) (बृहस्पत सनीचर मुशतरका) जुदी जगह लिखा है। बृहस्पत दोनों जहानों की
हवा का मालिक है और सिर्फ नेक हिस्सा का यानि जब तक हवा में सर्दी(चंद्र)
गर्मी(सूरज) और नेकी की हालत(मंगल नेक) मौजूद हो। बृहस्पत दोनों जहानों के
मायनों का होगा। लेकिन जब कोई भी और हालत इस में मिली तो बृहस्पत सिर्फ
एक हालत का मालिक होगा।

बृहस्पत का राहु से ताल्लुक

1) राहु के ताल्लुक से बृहस्पत चुप हो जाता है। मगर कायम जरूर होता है। सोना
(बृहस्पत) राहु के ताल्लुक में पीतल होगा। बृहस्पत को अगर चंद्र की मदद मिल
जावे तो दुश्मनों को मार लेता है। पीतल पर पानी लगे तो नीला रंग राहु अलैहदा
होने लगेगा। यही राहु जब सनीचर के लोहे पर लगे (लोहा व नीला थोथा) तो
तांबा (सूरज) होगा।

2) राहु हाथी के सिर की लहर तो बृहस्पत इसकी पेशानी होगी। दोनों मुशतरका
होने की वजह से हाथी का सिर दों तरबूजों की शकल में बंट गया। हू ब हू दोनों
ग्रहों के मुशतरका होने पर आमदन की नाली दोरंगी होगी।

अरमान नंबर 131

ग्रह	खाना नंबर	असर	ग्रह	खाना नंबर	असर
बृहस्पत			बृहस्पत	2	मुतलका गृहस्ती इसकी
सूर्य	कायम	राज योग	मंगल	2	आवाज पर सिर कटा दें और
बुध					
या		इसके पसीने की जगह खून	बृहस्पत		
बाह्य		बहा दें।			
सूर्य	कायम	इकबालमंद	दृष्टि	3-11	
चंद्र			सिवाये		
बृहस्पत	1	राग रंग का खूब शानदार	बृहस्पत	2	पिता की उम्र के खतम करने
		तंबा बचने लगा। स्कूलों का	बुध	8	के इलावा खुद अपनी (16
		आम इल्म पूरा दर्जा।			से 19 में) उसका तोशा भी
बृहस्पत	1	इसका मामूली तांबा भी सोने			खराब
		करे। बहन बेवाह मामू तबाह।			
या दोस्त	या	की किस्मत (बृहस्पत) देवे।	बृहस्पत	2	हुक्मरान आसूदा हाल
ग्रहों की मदद	2 या 4	ला.की. 156/2	केतू	2	
बृहस्पत	2	मिट्टी के कामों से सोना।	बृहस्पत	2	नर औलाद के बिघ्न या
		मगर सोने के कामों से	शुक्र	2	औलाद की पैदाइश के
		खाक नसीब होवे। दिमागी			झगडे होंगे।
खाना	2	शुक्र से मुश्तरका इश्क	बृहस्पत	2	बहुत बडा बृहस्पत या नर्म
नंबर		के बाद का गलबा। गुरू	शुक्र	2	हाथ का बृहस्पत। खाली
		घण्टाल होवे। सौं चूहे खाकर	मंगल		शुक्र (राहु केतू मुश्तरका)
		बिल्ली हज को चली। ब्रह्मा	नष्ट		या शुक्र खाना नंबर 2
		जी और लक्ष्मी जी अपने			का काम देगा। अगर चंद्र
		सिहांसन पर की हालत का			भी खाना नंबर 2 में साथ
		साथ होगा ला.की. 144/1,			हो जावे तो जिन मुरीदी
		148/11, 157/2			जनाहकारी। एँयाश, दूसरों के
बृहस्पत	2	बड के दरखत की तरह			लिये बेडी डोब मल्लाह मगर
या		छतरधारी।			अपने इश्क में कामयाब
चंद्र	2	उसकी चांदी सोने का काम	बृहस्पत	3	होगा। दिमागी खाना नंबर
		देवे।			17 मंगल से मुश्तरका।
					अदल या मुसिफ़ मिजाजी
					दुर्गा जी

ग्रह	खाना नंबर	असर	ग्रह	खाना नंबर	असर
बृहस्पत जारी	3	शेर की सवारी का साथ होगा। ला.की.135/3	जारी		उम्र के आखिर तक खुद
बृहस्पत	3	खुशहाला भागवान।	बृहस्पत	4	अपने लिये उमदा क्रिस्मत
चंद्र	3	इकबालमंदा धन रेखा।	सनीचर	2	वाला होवे।
बृहस्पत	3	ऐसा धन भाइयों को तारे।	बृहस्पत	4	दुन्यावी बुलंदी में अगर
शुक्कर	3		चंद्र	2	वालदैन से बढ कर न हो तो
बृहस्पत	3	उर्ध रेखा जिसका दोस्त			कमअजकम उनके बराबर
सनीचर	4	उसी को लूट कर अमीर हो जावे। ला.की. 296/4			का तो जरूर होगा। मानिद
बृहस्पत	3	उर्ध रेखा दौलत के	बृहस्पत	4	"मां पर धी पिता पर घोडा
सनीचर	9	ताल्लुक में। ला.की.296/4	सूरज	1	होगा"। ला.की. 150/14
बृहस्पत	9	सनीचर की उर्ध रेखा का	बृहस्पत	4	दोनों ग्रहों का जुदा जुदा और
सनीचर	9	पूरा नेक असर होवे।	सनीचर	9	दोनों का उत्तम फल होगा ।
बृहस्पत	4	लाटरी, वजीफा पावे।	सनीचर	9	उर्ध रेखा मगर सबसे उत्तम
साथ ही देखें लाल किताब सफा 144/1 व 213/3		लावारिस जायदाद मिले या जुडा जुदाया धन पावें। दुन्यावी बृहस्पत के फल की निस्बत चंद्र गौबी का फल और भी उमदा होवे। दिमागी खाना नंबर 21 चंद्र से मुश्तरका रहम हमददीं	बृहस्पत	4	और सबको तारने वाली हालत
			सूरज	10	का असर देवे। ला. की.296/4
			चंद्र	कायम	राजदरबार से मुतलका
			बृहस्पत	4	जरूरी सफरों के नेक नतीजे
			बुध	10	सीप में मोती होंगे।
			बृहस्पत	4	34 साल उम्र के बाद अपना
			सनीचर	10	ही बेडी डोब मल्लाह होगा।
			चंद्र	1	हर किसम की सवारी का
			बृहस्पत	5	सुख हो।
बृहस्पत	4	मुहं की हवा से ही बात को			सूरज से मुश्तरका (दिमागी
सनीचर	2	पहचान लेने वाला। अपनी खुदमुख्तियारी और नंबरदारी के वक्त अपनी			खाना नंबर 20) इज्जत बुलुगीं। (दिमागी खाना नंबर 22) अकल महादशा के वक्त जब केतू कहीं और हो मामू को केतू की महादशा

ग्रह	खाना नंबर	असर	ग्रह	खाना नंबर	असर
		का अरसा 7 साल तकलीफ हो। (सूरज के ताल्लुक से खाना नंबर 5 का असर केतू पर होगा।) लीद में मानिक पत्थर में मोती की ताकत होगी।			इसका तोशा भी बरबाद करे। ला.की. 284/4
बृहस्पत	5	इल्म से खूब दौलत कमावे।	बृहस्पत	6	12 पिता की उम्र के इलावा
शुक्र	5	औलाद की मारफत बढे।	बुध	12	इसका बाकी छोडा। तोशा तक भी खराब कर देवे।
बृहस्पत	5	किस्मत का निहायत असर	बृहस्पत	7	सफर से जरूर जिंदा घर वापिस आवे। भाइयों से तंग दुखिया। अपने पेट के अनाज की मेहनत की जरूरी शर्त।
चंद्र	9	नेका इसकी पानी की मामुली सी नाव बडे भारी जहाज का काम देवे।			स्त्री धन से/में बरकत। खुद अपनी कमाई मिट्टी में जावे। तराजू की डंडी की बोदी की तरह सब का बोझ सहारे।
बृहस्पत	5	बृहस्पत के वकत से किस्मत			मिट्टी का माधो। चने की रोटी तवे पर का हाल। दौलत के लिये तराजू की बोदी पर सब घर का बोझ होगा। लाकी 45/4-5
सनीचर	9	का असर होवे। मुफसिल सनीचर बृहस्पत मुशतरका में लिखा है। अब औलाद का मंदा फल न होगा।			ला.की. 146/6
बृहस्पत	6	इज्जत रेखा। (नीचे दी हुई हर दो हालतों में) दिमागी	बृहस्पत	2	ला.की. 146/6
बृहस्पत	7	लाखोंपति होता हुआ भी मुशतरका भरोसा मामा मूसे गणेश जी चूहे की सवारी। (ii) बुध से मुशतरका फोकी उम्मीद गणेश जी गरुड (परिद) की सवारी। ला.की. 165/26, 168 , 167/39, व 219/3	शुक्र	2	खाना नंबर 18 (i) केतू से
			बुध	7	मुसीबत पर मुसीबत देखता चला जावे। अकल की कोई पेश न जायेगी।
			बृहस्पत	7	आरोध रेखा। डाकू- चोरा।
			सनीचर	9	
			बृहस्पत	7	बहुत बडा शुक्रर होगा या
			शुक्र	7	बृहस्पत मंदा होगा। खस्सी
बृहस्पत	6	16 से 19 साला उम्र के	मंगल	नष्ट	सांड की तरह
बुध	2	दरम्यान न सिर्फ पिता की उम्र खराब बल्कि			

ग्रह	खाना नंबर	असर	ग्रह	खाना नंबर	असर
		<p>औलाद से महसूम होगा। अपनी औलाद का सुख न पावे। मतबन्ने वर्गैह होवे। और वो (मतबन्ना) तो आराम पावे मगर कुण्डली वाला उस मुतबन्ने से भी कोई फायदा ना पावे।" जोड भाई जोड खायेगे होर" का हिसाब होगा। अगर चंद्र भी खाना नंबर 7 में साथ हो जावे तो शमा के परवाने की तरह इश्क की लहर में चलने वाला होगा और अगर सूरज भी नष्ट हो जावे। नाकामयाब आसिक और तबाह होगा।</p>			<p>और हर तरह से जागृत (जागती क्रिस्मत का जमाना होगा।)</p>
			बृहस्पत	9	ला. की. सफ़ा 16। जुज 12 और अरमान नंबर 124 में लिखे हुए के इलावा बजुरगाओ की मारफत बडेगा। दरियाये गंगा को हवा में चलने की ताकत की तरह की क्रिस्मत होगी और सब की क्रिस्मत इसके दरिया का पत्तन होगी। दिमागी खाना नंबर 19
बृहस्पत	7	बचपन में तकलीफ हो।	बृहस्पत	9	बृहस्पत का जाती असर मजहब रूहानी। 161/11, 12 व 157/2 ला.की.
चंद्र	7		चंद्र	5	मंदा फल होगा।
बृहस्पत	8	खुद अपनी क्रिस्मत में हार न होगी। बाबा बेशक उससे पहले मर चुका हो। मगर बाप की और खुद अपनी उम्र लंबी होगी। अब ये खाना नंबर 8 मारगअस्थान न होगा बल्कि बृहस्पत की दौलत सोना और हरदम बडे परिवार तरक्की पर होगा।	चंद्र	3	ला.की. 159/5
			बृहस्पत	9	उमदा फल होगा।
			चंद्र	3	
			बुध	5	ला.की. 159/5
			बृहस्पत	9	मंदा भी और शाहाना भी।
			शुक्र	3-5	
			चंद्र	5-3	ला.की.161/2
			बृहस्पत	9	ससुराल दौलतमंद और
			मंगल	3	दौलत देंगे।

ग्रह	खाना नंबर	असर	ग्रह	खाना नंबर	असर
बृहस्पत	9	किस्मत का नेक और उमदा	बृहस्पत	10	चिऊंटी के मुंह से आटे का
सनीचर	5	असर सनीचर के वकत से शुरु। धन दौलत उमदा। मगर औलाद के लिये मंदा ही लेंगे। मुफसिल बृहस्पत सनीचर मुश्तरका में लिखा है।	सनीचर	9	जरी तक भी छीन लेने वाला (उर्ध रेखा) होगा। ला.की. 160/9
बृहस्पत	9	तीनों घरों और तीनों ग्रहों से	बृहस्पत	10	आग के वाकयात हों।
मंगल	3	बृहस्पत का ही असर होगा।	सनीचर	9	बृहस्पत चंद्र (बृहस्पत की
सूरज	5	और उमदा और उत्तम।	सूरज	देखता	चीजें सोना, हवाई, जर्द रंग, हो
बृहस्पत	10	आकबत अंदेश। मगर माया की कल्पना। नीच बृहस्पत। पिता धन दौलत न ही जिंदा होते देवे न ही मरने पर बाकी छोड कर मरे। (पिता इस के लिये) सनीचर की मदद जो बृहस्पत का साथ 36 का 3/4, 27 साल के बाद 36 तक बहुत मंदा और 28 के बाद लाल किताब सफ़ा 328 खाना नंबर 10 गनेश जी होगा। ला.की. 144/11	बृहस्पत	10	चंद्र की चीजें चांदी, बजाजी के कामों से नफे। मगर सनीचर की मुतलका आशिया सामान व काम मंदा फल देंवें।
			चंद्र	4	लाल किताब सफ़ा 158/2
			बृहस्पत	10	मंदा हाल। मर मर बुढिया
			बुध	4	राग गावे। लोग कहें ब्याहा।
			बृहस्पत	10	
			चंद्र	कायम	
			या		
			बृहस्पत	10	राज दरबार के मुतलका
			सूरज	4	सफ़रों के नेक नतीजे।
			बृहस्पत	10	शादियां एक से द्वादा होवे।
बृहस्पत	10	फकीर को रोटी देकर	सूरज	5	
चंद्र	4	आशीर्वाद की जगह जहर दे देने का इल्जाम लेगा। नेकी करे तो सजा पावे। हसद से बरी। दिमागी खाना नंबर 35	बृहस्पत	11	पूरा निरपक्षा। दिमागी खाना नंबर 15 सनीचर से मुश्तरका। खुदारी मगर

ग्रह	खाना नंबर	असर	ग्रह	खाना नंबर	असर
		चंद्र से मुश्तरका पेशानी वाक्यात गुजरते हुए की याद।	बृहस्पत	12	दिमागी खाना नंबर 12 राहु से मुश्तरका। राजदारी। पूरा त्यागी। माया पर पेशाब की धार मारने वाला। राज छोड़ फकीर होवे।
बृहस्पत	11	न सिर्फ पिता के सुख से			
बुध	3	खाली या मुंतजर होगा बल्कि गृहस्त रेखा सीधी			
		खडी माकूल आमदन फिर भी कर्जाई ही होगा। लाभ ज्यादा मगर लालच से बरबाद होवे।	बृहस्पत	12	माया की मुहब्बत से दूर गो
			सनीचर	9	माया ज्यादा। उर्ध रेखा की या माया पर पेशाब की धार मारने वाला। ला.की.
बृहस्पत	11	बजाते खुद और अपने			160/8
मंगल	3	ससुराल को मुबारिक (वासते धन दौलत) मगर अपने खुशियों (अपने ही खानदान के) की माँतों से दुखिया।	बृहस्पत	12	में मर्दों का सुख हल्का।
			सनीचर	12	बृहस्पत चुप होगा।
			राहु	12	
बृहस्पत	11	ला.की. 167/40	बृहस्पत	12	में स्त्रीयों (माता व औरत
दोस्त	3		चंद्र	12	वगैरह) का सुख हल्का। चंद्र
ग्रह			राहु	12	चुप होगा।

अरमान नंबर 132-132 A

बृहस्पत की दृष्टी व आम ग्रहों से ताल्लुक

बृहस्पत राहु मुश्तरका- बुध होगा। टुनिया तोता सब्ज रंग। खाली बुध।

बृहस्पत मंगल- सब का मुन्सिफ। एक को दूसरे पर ज्यादाती करते न देखेगा।

बृहस्पत सूरज- सब को उपदेश देवे। मगर खुद अपने लिये (जब खुद ही मुसीबत में हो) माडी ढार चमालडी, गरीब ही की सब कुर्बानी देवें का असूल बरतेगा। अपनी जगह कुत्ते (केतू) को मरवा देगा। सूरज की अपनी चीजें औलाद को छोड़ केतू के खाना नंबर 6

मामू को अपनी बजाये केतू की महादशा का अरसा 7 साल तकलीफ होगी। केतू को कुत्ता भी माना है और गऊ माता भी। इसलिये गाय को (जब बृहस्पत नीच होवे) कुत्ते की गंदगी की खुराक का आदी बना देगा। (लाल किताब सफ़ा 118 खाना नंबर 3 का हिंदसा नंबर 9)।

बृहस्पत बुध/शुककर:- बृहस्पत बुध ला.की. 166/30 बृहस्पत शुक्कर ला.की. 167/33-34 खुद बृहस्पत तो न बोलेगा मगर उसकी मिट्टी बोले सोना न होवे। बेइज्जती और तकलीफ जर व माल की हद से ज्यादाती के सबब चोट की जगह बेहिस हो कर सो जावे। फोकी उम्मीद। शेखचिल्ली की कहानियां सुन सुना कर दिन गुजारे। नंगो के घर भूखे मेहमान आये। हंस हंसा कर भूखे सो गये का हाल होवे। (बृहस्पत बुध की बाहम द्रुष्टी 158/3, 159/4)

बृहस्पत चंद्र:- चावल जिस कदर बूढा या बाप दादे के वकत का होता जावे। किस्मत बढ़ती जावे। अकल जावे धन और आवे का हाल रहे। लाल किताब 167/35-37

बृहस्पत शनीचर:- श्री गणेशाय नमः सब के पूजने की जगह होगी। लाल किताब 160/10

बृहस्पत केतू:- मामू मरें तो बेशक हमसाये मारे जायें तो दुरसत। मगर बृहस्पत का खुद जाती बुरा फल न होगा।

अरमान नंबर 133

सूरज की लाली :- निकलते सूरज की लाली से मुराद मंगल सूरज मुश्तरका। यानि शुरु उम्र या जनम से अच्छा व उमदा हाल और छुपते या ढलते सूरज की लाली से मुराद बुढापे की तरफ या पिछली अवस्था में मंगल सनीचर की मुश्तरका उत्तम फल की हालत होगी।

सूरज निकलने का वकत

बच्चे के माता के पेट में आने के वकत या दिन से ही शुरु गिन सकते हैं। लेकिन आम दुनियां में सूरज का इस दुनिया में जाहिर होने का वक्त और बच्चे के पैदा होने या इस दुनिया की हवा में जाहिर होने से लेते हैं। (लाल किताब सफ़ा नंबर 379 फरमान नंबर 113-115 के दरम्यान में)। इस तरह बाज आँकात 9 महीने का ही फर्क पड जाया करता है। जिस की वजह से तमाम ही ग्रह अपने अपने मुकर्रर म्याद पर असर करने में धोका दे जाया करते हैं। असर तो जरूर करते हैं। लेकिन मुकर्रर वकत या दिन का फर्क हो जाता है। इस बात की

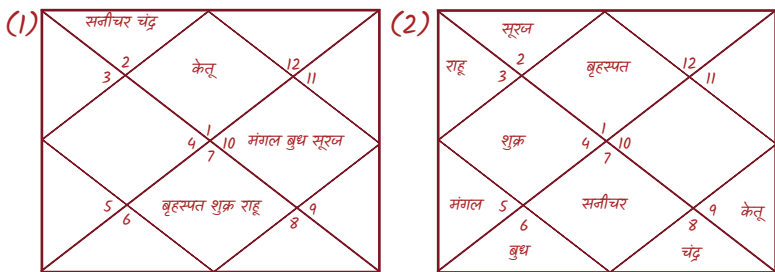
दुरस्ती इसलिये भी जरूरी है कि तमाम ग्रह कब बालिग हुए देखना जरूरी होता है। (अरमान नंबर 13)

खाना नंबर 9 सूरज की रोशनी जाहिर होने का असल मुकाम गिना है। इसलिये कुण्डली में जहां सूरज वाकया हो। वहां से खाना नंबर 9 तक जितने घर सूरज पीछे हो या सूरज वाकया होने के घर और खाना नंबर 9 के दरम्यान जितने घर हों देखें कि इन में कौन कौन से ग्रह वाकया हैं। उन घरों के ग्रहों की आम म्याद का मजमूआ सूरज निकलने की म्याद में फर्क का हिंदसा होगा। (आगे पीछे होने के लफ्ज की शक दूर करने के लिये एक दो तीन हद बारह तक की तरतीब से कुण्डली के खाने गिने जाएंगे। खाना नंबर 9 से पहले घरों में यानि 1 से 8 सूरज हो तो कहेंगे कि सूरज खाना नंबर 9 से पीछे है। अगर 10 से 12 में हो तो बोलेगें कि सूरज खाना नंबर 9 के बाद है।)

ग्रहों की म्याद बृहस्पत 6, सूरज 2, चंद्र 1 वगैरह का 35 तक होगी। अगर सूरज खाना नंबर 9 से पीछे ही हो तो दरम्यानी घरों के ग्रहों की म्याद जमा करेंगे। यानि सूरज का असर इतना (जमा किया जाने वाला हिस्सा) अरसा और लेकर अपनी आम म्याद से देरी पर असर करेगा।

अगर सूरज खाना नंबर 9 के बाद के घरों में हो तो 9 और 12 के दरम्यान के घरों में जहां भी सूरज हो उस घर और खाना नंबर 9 के दरम्यानी घरों के ग्रहों की म्याद तफरीक करेंगे। यानि सूरज का असर इस के आम असर (जनम दिन) के वकत से इतना अरसा पहले ही शुरू हो जायेगा।

मिसाल-जनम लगन को खाना नंबर 1 मानकर



मिसाल नंबर 1 में खाना नंबर 9 के बाद सूरज है खाना नंबर 10 में। जिसमें मंगल बुध और सूरज वाकया हैं। बुध के 2 मंगल 6 कुल 8 का फर्क है। यानि सूरज आठ दिन या/महीने

ज्यादा से ज्यादा असर देने लग जायेगा जनम दिन से पहले ही।

मिसाल नंबर 2 में सूरज है खाना नंबर 2 में यानि नंबर 9 और खाना नंबर 2 के दरम्यान राहु 6, शुक्र 3, मंगल 6, बुध 2, सनीचर 6, चंद्र 1 और केतू 3 यानि कुल 27 दिन या/महीने ज्यादा से ज्यादा जनम दिन के बाद सूरज का असर जाहिर होगा। म्याद गिनते वकत सूरज की खुद अपनी म्याद 2 का हिंदसा नहीं गिनते मगर खाना नंबर 9 में जो ग्रह हैं। उसकी म्याद शामिल कर लेते हैं। जितना अरसा सूरज फर्क देगा। इतना ही अरसा बाकी सब ग्रह फर्क दे कर जनम दिन से पहले या बाद में असर देना शुरू करेंगे।

अरमान नंबर 134

सूरज

सूरज अपने जनम से दूसरों की मदद करने की ताकत का मालिक हैं और इसे रोशनी माना है। सर्दी (चंद्र) गर्मी (बजाते खुद अपनी सूरज की ताकत) लाली (मंगल) और खाली जगह में हर वकत मौजूद होना (बुध का आकाश) इसके जरूरी पहलू हैं। इसलिये सूरज के बगैर किस्मत एक अंधेरी चीज है और हवा (बृहस्पत) के बगैर सूरज की गर्मी से भरी हुई किस्मत खुद कुण्डली वाले और इसके दीगर साथियों का दम घोटने वाली होगी।

सूरज के साथ बृहस्पत के साथ से किस्मत का ताल्लुक गैरों के साथ और रहानी होगा।

सूरज के साथ चंद्र के साथ से किस्मत का ताल्लुक जायदाद जद्दी और शांति से होगा। (लाल किताब 220 जुज 5 व 192 जुज 1)

सूरज के साथ बुध के साथ से खुद अपना और दिमागी ताल्लुक का साथ होगा। स्त्री पर पूरा नेक असर होगा। ला.की. 195/9, 192/2, 194/6

सूरज के साथ मंगल के साथ अपनी औलाद और खून के ताल्लुकदारों हकीकी रिश्तेदारों से होगा और बचपन की उम्र से होगा। ला.की. 194/5

सूरज के साथ सनीचर से मुराद बुढापे से मुतलका होगा। ला.की. 194/8

सूरज के साथ अपने दोस्त ग्रहों का ताल्लुक:- सूरज का खुद अपना उमदा फल देगा।

सूरज के साथ अपने दुश्मन ग्रहों का साथ और ताल्लुक खुद दुश्मनों के मंदे हाल (ला.की. 198/20) का असर का फल कुण्डली वाले की औलाद पर किस्मत में शामिल होगा।

सूरज के साथ राहु के ताल्लुक से इस के असर के सामने दीवारें खड़ी गिनी जाएंगी।

सूरज के साथ शुक्कर का साथ और ताल्लुक खुद शुक्कर के फल में मंदे फल की जमीन पर बेहद गर्मी का असर होगा यानि रूह जबरदस्त मगर बुत हल्का सूरज बुध इकट्टे सेहत उमदा। **सूरज-शुक्कर मुश्तरका=बृहस्पत, शुक्र-बुध मुश्तरका=मशनोई सूरज, सूरज-सनीचर=मंगल बद या बुध खाली।** सूरज प्रबल और सनीचर कमजोर हो तो जिस्मानी सेहत कमजोर होगी।

सनीचर का तालुक:- (सूरज बंदर सनीचर सांप। दोनों की लडाई का हाल दुश्मनी का सबूत जहेनशीन करायेगा।) कुण्डली में एक दो तीन की तरतीब से जब सूरज हो सनीचर से पहले घरों में तो सनीचर जो सूरज का लडका गिना गया है। सूरज के फल में कोई बुरा और दुश्मनाना असर न देगा और सूरज का फल उमदा होगा। लेकिन अगर सनीचर पहले घरों में हो और सूरज बाद के घरों में तो सनीचर अपना रयाह असर सूरज की रोशनी में मिलाता और क्रिस्मत में धब्बे लगाता रहेगा। चंद्र सदी, मंगल लाली, बृहस्पत हवा और बुध खाली जगह का रोशनी पर या सूरज की पैदा करदा क्रिस्मत पर कोई बुरा असर न होगा।

2) अलिफ:- अगर सूरज सनीचर दोनों ही इकट्टे एक घर में मुश्तरका होवें तो बुध का खाली असर पैदा होगा मंगल बद होगा जिस के मंदे नतीजे होते हैं।

(बे):- अगर सूरज को बाप (कुण्डली वाला शख्स) मानें तो कुण्डली वाले का हाल जबकि सूरज के साथ खुद सूरज के दोस्त ग्रह हों अपने बाप से उमदा होगा। लेकिन अगर सूरज के साथ दुश्मन ग्रह हों तो ऐसे शख्स (कुण्डली वाले) की औलाद का मंदा हाल और बाप (कुण्डली वाले) के लिये औलाद की क्रिस्मत कोई अच्छे असर की न होगी।

3) मंगल की लाली निकलते और छिपते सूरज के साथ होती है। जिस कदर सूरज की उम्र बढ़ती जावे। मंगल की लाली सूरज की रोशनी में ही छिपती जाया करती है और जुदी नजर नहीं आती। मगर होती है जरूर अंदर ही छिपी हुई। जिस कदर लाली और रोशनी का मिलाव ज्यादा होगा। उसी कदर सूरज की उमदा क्रिस्मत का असर ज्यादा होगा। या लाली के बगैर सूरज की वो शान न होगी। जो लाली का सूरज के अंदर ज्यादा शामिल होने पर। रोशनी के बगैर लाली किसी को नजर न आयेगी या इसमें रयाही का ही असर होगा या

सूरज के बगैर मंगल नेक की जगह मंगल का असर बुरा या मंगल बढ़ (मंगल में सनीचर की बढ़ी का असर) होगा।

4) दुश्मन ग्रहों के इलावा सूरज का खुद अपना मंदा असर निहायत पोशीदा और छिपे ढंग पर या रात में सोये हुए की तरह खवाब में पैदा होने की तरह जाहिर होगा। मगर सनीचर का असर दिन दहाड़े बरसरे बाजार तमाम दुनिया के सामने खडा करके कत्ल करने की तरह पर जाहिर होगा।

5) सूरज का शुक्कर से दुश्मनाना है या सूरज के पास मिट्टी होती ही नहीं। चंद्र में सूरज की आधी रोशनी होती है। क्योंकि वो सूरज के दरवाजे का भिखारी है। सूरज किसी सवाली को मिट्टी की खैरात न देगा और अगर देगा तो चांदी और मोती देगा। खैरात न देवे तो बेशक न देवे और अगर देगा तो जिंदगी देगा सनीचर की तरह मौत न देगा। अगर बखशीस न देवे तो सनीचर की तरह फकीर की झोली से उल्टा माल निकाल ही लेने का बरताव न करेगा। किसी का सवाली न होगा। बल्कि अगर हो सके तो किसी के सवाल को पूरा कर देगा। खुद चोटे खायेगा और बढ़ेगा। मगर दूसरों पर चोट मारना जायज न रखेगा।

अरमान नंबर 135-136

सूरज का दूसरे ग्रहों से बाहमी ताल्लुक

1) लालकिताब सफ़ा नंबर 201 पर "जिस्म व ग्रह का ताल्लुक" दो पार्टियों में लिखा है। हरएक ग्रह के बाद लफज "का" लिखें तो मतलब साफ हो जाएगा।

2) सूरज केतू का बाहमी साथ- केतू शुक्कर का असर है और शुक्कर या केतू दोनों ही सूरज के दुश्मन हैं। अब केतू की औरत या कुण्डली वाले के लडके की औरत खूब मोटी ताजी मिर्जा हल्का सारंगी भारी होगी। मुंह फाड कुत्ते की तरह भौंकने वाली लडके का गृहस्त बरबाद करने वाली होगी और खुद लडका कुण्डली वाले को इस की (बाप की) राजदरबार की कमाई में धक्का लगाने वाला या बरबाद करने वाला साबत होगा। कुत्ता सूरज की तरफ मुंह करके रोयेगा। कुत्ते को मौत

सूरज के बगैर मंगल नेक की जगह मंगल का असर बुरा या मंगल बढ़ (मंगल में सनीचर की बढ़ी का असर) होगा।

4) दुश्मन ग्रहों के इलावा सूरज का खुद अपना मंदा असर निहायत पोशीदा और छिपे ढंग पर या रात में सोये हुए की तरह खवाब में पैदा होने की तरह जाहिर होगा। मगर सनीचर का असर दिन दहाड़े बरसरे बाजार तमाम दुनिया के सामने खडा करके कत्ल करने की तरह पर जाहिर होगा।

5) सूरज का शुक्कर से दुश्मनाना है या सूरज के पास मिट्टी होती ही नहीं। चंद्र में सूरज की आधी रोशनी होती है। क्योंकि वो सूरज के दरवाजे का भिखारी है। सूरज किसी सवाली को मिट्टी की खैरात न देगा और अगर देगा तो चांदी और मोती देगा। खैरात न देवे तो बेशक न देवे और अगर देगा तो जिंदगी देगा सनीचर की तरह मौत न देगा। अगर बखशीस न देवे तो सनीचर की तरह फकीर की झोली से उल्टा माल निकाल ही लेने का बरताव न करेगा। किसी का सवाली न होगा। बल्कि अगर हो सके तो किसी के सवाल को पूरा कर देगा। खुद चोटे खायेगा और बढेगा। मगर दूसरों पर चोट मारना जायज न रखेगा।

अरमान नंबर 135-136

सूरज का दूसरे ग्रहों से बाहमी ताल्लुक

1) लालकिताब सफ़ा नंबर 201 पर "जिस्म व ग्रह का ताल्लुक" दो पार्टियों में लिखा है। हरएक ग्रह के बाद लफज "का" लिखें तो मतलब साफ हो जाएगा।

2) सूरज केतू का बाहमी साथ:- केतू शुक्कर का असर है और शुक्कर या केतू दोनों ही सूरज के दुश्मन हैं। अब केतू की औरत या कुण्डली वाले के लडके की औरत खूब मोटी ताजी मिर्जा हल्का सारंगी भारी होगी। मुंह फाड कुत्ते की तरह भौंकने वाली लडके का गृहस्त बरबाद करने वाली होगी और खुद लडका कुण्डली वाले को इस की (बाप की) राजदरबार की कमाई में धक्का लगाने वाला या बरबाद करने वाला साबत होगा। कुत्ता सूरज की तरफ मुंह करके रोयेगा। कुत्ते को मौत

के यम नजर आयेंगे। या बुरे वकत की निशानी का सबूत देगा।

सूरज से दुश्मन ग्रहों का ताल्लुक

1) अपने घर की राशि खाना नंबर 5 में दुश्मन ग्रहों को भी कुण्डली वाले की जान की मदद करने की ताकत पैदा कर देगा। मगर कुण्डली वाले की आँलाद को दुश्मन ग्रह के बुरे असर से नहीं बचा सकता।

2) खुद सूरज जब दुश्मन ग्रहों की राशि या उनके पक्के घर हुआ तो जिस खाना नंबर में हुआ उस खाना की मुतलका चीजों पर वही असर बुरा कर दिया जो सूरज पर खुद हो जाना था। लेकिन जब दुश्मन ग्रहों के साथ ही किसी घर में हो बैठा तो दुश्मन ग्रह का फल उस खाने की मुतलका चीजों पर बुरा कर दिया जिस खाने में कि सूरज और वो दुश्मन ग्रह बैठे थे। लेकिन अगर इतफाकिया सूरज के साथ सूरज का मददगार और दुश्मन ग्रह भी बैठा होवे तो दुश्मन ग्रह का बुरा असर बजाये इसके कि कुण्डली वाले पर बुरा होवे। इस ग्रह की मुतलका चीजों पर बुरा कर दिया जो चीजें कि उस ग्रह की मुतलका हों जो ग्रह कि सूरज के मददगार की हैं। यानि अपनी बला सूरज ने इस मददगार पर टाल दी।

3) जब दुश्मन ग्रह सूरज से पहले घरों में हों तो सूरज दुश्मन ग्रह के बुरे असर से नहीं बच सकता। यानि दुश्मन ग्रह का असर कुण्डली वाले पर बुरा होगा।

4) जब दुश्मन ग्रह बाद के घरों में हों और सूरज पहले घरों में तो दुश्मन ग्रह का असर बाद के घर की चीजों पर जिस में कि दुश्मन ग्रह है बुरा होगा। मगर कुण्डली वाले पर न होगा।

5) जब खाना नंबर 1-5-11 में (जनम कुण्डली) सूरज होने से (अरमान नंबर 12) तमाम ग्रह बालिग गिने जावें तो सूरज की म्याद के बाद सूरज के तमाम दुश्मन ग्रह अपने अपने वकत में टकराव (दुश्मनाना असर) पैदा करेंगे और न सिर्फ सूरज के अपने असर में खराबी देंगे बल्कि वो तमाम दुश्मन ग्रह अपनी अपनी और अपने अपने खाना की नंबर की चीजों का बहिसाब (जिस जिस खाना में कि वो) कुण्डली में बैठे हों बुरा असर देंगे। इसलिये वकत से पहले ही बुरे ग्रह का उपाय कर लेना जरूरी होगा। सूरज का ऐसा टकराव कुल 45 साला उम्र तक हो सकता है। इस जगह सूरज के दुश्मन शुक्कर सनीचर राहु केतू लाल किताब सफ़ा 105 फरमान नंबर 109 से ही मुराद होगी।

अरमान नंबर 137

ग्रह	खाना नंबर	असर	ग्रह	खाना नंबर	असर
सूरज	कायम				मामु वगैरह को सूरज की तरह चमकीली क्रिस्मत का मालिक बना दे। खुद चमके सबको चमकावे।
बृहस्पत	कायम और	राज योग			
खाना	नंबर 9				
बुध	4				
सूरज	1 या	लक्ष्मी खुद पैदा करे, पैदा			मगर दोनों तरफ की
सूरज	मम देस्त	की कराई मिलने की परवाह			स्त्रीयों (शुक्कर) पर
ग्रह मंगल	या चंद्र	न होगी। दुन्यावी कामयाबी			मेहरबान न होगा।
	या बृहस्पत	व बरकत का मालिक	सूरज	2	दिलिद्री-आलसी-निर्धन हो।
		ला.की. 175/10	मंगल	1	
सूरज	1	वालिद बचपन में ही मर	चंद्र	12	
शुक्कर	7	जावे।	सूरज	4	जरूरी सफरों के नेक
सूरज	1	माली मरतबा ओर			नतीजे। ला.की. 213/3
चंद्र	2	जायदाद वाला होवे।	सूरज	4	आग के वाकयात हों। जब
सनीचर	11		बृहस्पत	10	दोनों ग्रहों का मुश्तरका
सूरज	2	ससुराल खानदान व			दौरा हो बृहस्पत (सोना
		अपने गृहस्ती (अपनी			वगैरह), चंद्र (चांदी कपडा
		औरत के ताल्लुक से बाल			वगैरह) के काम या सामान
		बच्चे वगैरह) साथियों के			मुबारक फल देंगे। मगर
		लिये अगर पानी में सीधा			सनीचर (लोहा लकड़ी
		अपना अकस देने वाला			वगैरह) के काम या सामान
		अपनी तरह सब की			मंदा फल देंगे।
		क्रिस्मत व इज्जत को	सूरज	4	राजदरबार से मुतलका
		बढाने वाला हो। तो अपने	बृहस्पत	10	सफरों के नेक नतीजे।
		माता पिता की तरफ के	चन्द्र	कायम	सीप में मोती हों।
		रिश्तेदारों			

ग्रह	खाना नंबर	असर	ग्रह	खाना नंबर	असर
सूरज	4	मौत दिन के वकत दरिया	सूरज	5	राहु के वकत तक निर्धन
चंद्र	4	नदी या चलते पानी से	राहु	5	या कम दौलत होवे। सिर्फ
सनीचर	10	होगी।	चंद्र	4	खाली खर्चा ही चलाता
सूरज	4	मुतम्मल मिजाज ।			जावे।
मंगल	कायम		सूरज	5	कायम पूरा इकबाल मंद।
सूरज	4		चंद्र	4	
मंगल	10	आंख से काना होवे।	बृहस्पत	9 या	कायम
सूरज	4	नामर्द वर्ना बुजदिला।	सूरज	5	राजयोग।
चंद्र	1		बुध	4	
शुककर	7		बृहस्पत	9 या	कायम
सनीचर			सूरज	5	बृहस्पत का पूरा उत्तम फल
सूरज	4	दुनिया का पूरा आराम	मंगल	3	होगा।
चंद्र	4	होगा। सीप में मोती होंगे	बृहस्पत	9/12	
खाली	10		या तीनों	कायम	
सूरज	5	दिमागी खाना नंबर 20	सूरज	5	शादियां एक से जयादा हों।
		सूरज का जाती अकल	बृहस्पत	10	
		खाना नंबर 22	सूरज	5	धुआंधार (आतिश खेज)
		(बृहस्पत से मुश्तरका)	सनीचर	3	दुख का रद्दी पहाड।औलाद
		इच्चत बजुरगी का			पर खराबी का सबब हो
		मालिक होगा। ला.की.	सूरज	6	(माली)।
		196/13, 213/11			दिमागी खाना नंबर 23
सूरज	5				केतू से मुश्तरका
सनीचर	9/11	दूसरों से हमदर्दी			पसंदीदगी वाला हो।
		वालदैन की बाहमी नेक			ला.की. 219/3
		मुआफकत। अब सूरज	सूरज	6	राजदरबार की आमदन के
		और सनीचर का कोई	बुध	12	इलावा राजदरबार का
		झगडा न होगा।			बाकी ताल्लुक भी खराबी
		(अरमान नंबर 6 जुज			का सबब हो।
		सूरज iii			
सूरज	5				
चंद्र	4		सूरज	6	औरत पर औरत मरती
दोनों	कायम	मिसल राजा	सनीचर	12	जावे।
		इकबाल मंद होवे।			

ग्रह	खाना नंबर	असर	ग्रह	खाना नंबर	असर
सूरज	6	लडके पर लडका मरता			बडा भाई जरूर होवे। वनी
मंगल	10	जावे।			अल्प आयू होगा। गाय की
सूरज	7	औरत का सुख रद्दी करे। सफर में मौत न हो या सफर से जिंदा वापसी जरूर होगी। दिमागी खाना नंबर 24 (हसद) का मालिक होगा। बेहद तबाहकुन गुस्सा। बदमिजाजी। खुदगर्जी, खुशामद, शोहरत, (दिखलावा) व मशहूरी पसंद। मगर क्रिस्मत में अंधेरे की तरह की जिंदगी होगी। दिमागी खाना नंबर 24 बुध से मुशतरका हौसला। ला.की. 142/116	सूरज	9	बडा भाई जरूर होवे। वनी अल्प आयू होगा। गाय की सेवा और शरण हमेशा नेक फल दिलावे। दिमागी खाना नंबर 25 (पापी ग्रहों से मुशतरका) नकल करने की ताकत बहस्पियापन की तरह के सूरज का मालिक होगा। ला.की. सफा 161 जुज 3 और अरमान नंबर 124 में लिखे के इलावा अपनी उम्र लंबी, अपने बाप की उम्र लंबी, अपने बाबे की उम्र लंबी, खानदानी नसल लंबी। (लडका, पोता, पडपोता) भी लंबी उम्र के। दिमागी खाना नंबर 26 भोलापन बृहस्पत से मुशतरका। मसखरगी (हद से ज्यादा हो तो बेवकूफी) बुधा। ला.की.सफा 128/110, 164/23
सूरज	7	औरत की सेहत खराब।			जवानी से (34 साल उम्र के बाद) क्रिस्मत जागेगी।
शुक्कर	1	दिमागी कमजोरी। दीवानगी।			दोनों ग्रहों का फल रद्दी।
सूरज	7	ऐजन			बुध दोनों को ही बेवकूफ बना देवे। बुरी जिंदगी।
शुक्कर	7				राजदरबार के मुतलका
सूरज	7	क्रिस्मत की हार और हर	सूरज	9/3	जरूरी सफरों के नेक
शुक्कर	1	तरह से मार। आग में	बुध	5	नतीजे।
मय		जिस्म या मकान जलते	सूरज	9	
सनीचर		हुए की तरह के दुख की	बुध	3	
या		जलना। तपेदिक वगैरह।	सनीचर	11	
राहु		गर्जेकि मिट्टी खराब या	सूरज	10	
		जल जावे। दुखों का पुतला।	चन्द्र	कायम	
सूरज	8	अब ये खाना मारग अस्थान न होगा। उम्र लंबी क्रिस्मत नेक।			

ग्रह	खाना नंबर	असर	ग्रह	खाना नंबर	असर
सूर्य	10	वालदैन बचपन में ही	सूर्य	11	उम्र 12 साल होवे।
शुक्र	4	मर जावे।			
सूर्य	10	उम्र 12 दिन हो।	चंद्र	5	
चंद्र	5				
सूर्य	11	उम्र 22 साल होवे।			
राहू	11				
सूर्य	10	दूसरों की मौत			
सनीचर	10				
या					
सूर्य	सूर्य मशनोई	में तोहमत या बदनामी	सूर्य	12	मुतमइल मिजाज।
या	शुक्र बुध		मंगल	कायम	हर तरह से शांति वाला होवे।
सनीचर	मशनोई सनीचर	से खुद नाहक आ मरे			
या हर दो	शुक्र बृहस्पत	या मारा जावे।			

अरमान नंबर 138 से 145

चंद्र:- लालकिताब सफ़ा नंबर 208 घोड़े की तसवीर। घोडा सिर्फ 3 दफा जागता है। चंद्र हमेशा राशिफल का होता है और खास कर तीन घरों का तो जरूर ही मालिक की मदद पर होता है।

खाना नंबर 3 में चंद्र:- मैदाने जंग व जदल के सामानों की कभी कमी न होगी। मंगल बंद को भी मंगल नेक करता है। दुनिया के हर एक जंग व जदल में मददगार होता है। (भाई बंद धन दौलत की मदद व चोरी नुकसान से बचाता है।

खाना नंबर 8:- मालिक की मौत न होन देगा। माता का बेशक मददगार न होगा। कुण्डली वाले की अपनी उम्र जरूर लंबी होगी। बेशक खुद चंद्र की बाकी सब चीजें चंद्र के नीच फल की होगी। उम्र बखशा देगा और खानदानी नसल बंद न होने देगा।

खाना नंबर 7:- खुराक में कंकर। रोडा पथर या गृहस्त में मशनोई शुक्र (राहु केतू) के हमले अचानक और जिनकी कभी उम्मीद तक न की जा सकती हो। बलाये बंद (राहु दुनियादारों बालिगों से मुतलका) हवाये बंद (केतू बच्चों मासूमों पर

दुख मुसीबत गँबी हमले जिन्न भूत तमाम फर्जी और वहम की बुरी हवायें)

चंद्र व चंद्र का घर खाना नंबर 4:- नेकी की खास सिफत (अरमान नंबर 38 देखें। चंद्र (माता) से बढ कर बच्चे का तमाम दुनिया में और कौन मददगार ग्रह होगा। जो सांप की मादा सांपनी से भी उस के बच्चों को छुडा लाता है और सांप की नसल बाकी है।

चंद्र:- सूरज जमा बृहस्पत :- रोशनी व हवा का मालिक या हर इक या हर इक के दिल का मालिक चंद्र है। बुध (अकल) कायम हो तो चंद्र का बुरा फल न होगा। चंद्र अगर शांति का मालिक है तो सनीचर के साथ से यानि चंद्र सनीचर मुश्तरका होने पर चंद्र की माया (धन दौलत) सनीचर के रयाह रंग की तरह रयाह मुंह माया होगी। यानि उसका चांदी का रुपिया भी हर तरह से रयाह या खोटा सा मालूम होगा। गो खालिस चांदी का ही (ऊंच चंद्र खाना नंबर 2) क्यूं न होवे। सनीचर का बजाते खुद भी असर जहर भरा या खूनी कुआं या दूध में जहर या ठण्डे मीठे पानी के कुएं में रयाह काली जहर मिली हुई होगी। सनीचर के मकान आराम देने की बजाये दुख का सबब होंगे। ला.की. 220/4

सनीचर की उदासी वैराग दिल को शांति की जगह दिल की कल्पना में जलाता रहेगा। चंद्र अगर धन दौलत है तो सनीचर खजानची। गोया इसका धन अगर उमदा भी होवे तो इसका खजांची या रूपये रखने का बक्सा ऐसा होगा जो खुद मालिक को खुद इसके अपने आराम के लिये इस बक्से में से रूपया निकालना ऐसा होगा जैसा कि एक जहर मिले सांप के सिर से मनी का छीनने के लिये सांप के पास जाना। सनीचर अगर बृहस्पत का मददगार था तो चंद्र का दुश्मन हुआ। हालांकि चंद्र (जब चंद्र का असर दुष्टी के हिसाब से उन ग्रहों में जिन का कि चंद्र लाल किताब सफ़ा 105 पर दुश्मन दिखलाया गया है। (शुक्कर बुध मय तीनों पापी ग्रह) मिल जावे। नेक नतीजा होगा। लेकिन अगर वो ग्रह जिनका कि चंद्र दुश्मन ठहराया गया है। अपना असर चंद्र में मिला दें तो चंद्र खुद अपना नेक फल देना बंद कर लेगा और नतीजा मंदा होगा।) बजाते खुद ऐसी ताकत का मालिक है कि अगर वो (चंद्र) जब बाहम दुश्मनी वाले ग्रहों के दरम्यान हो तो उनकी बाहम वाली दुश्मनी हटा कर उनकी आपस में दोस्ती पैदा करवा देता है। बृहस्पत ने तो सिर्फ दुश्मनी हटायी थी। मगर दोस्ती नहीं पैदा की। बेशक चंद्र अकेला एक तरफ हो और सारी दुनिया (बाकी सब ग्रह) दूसरी तरफ (माता एक तरफ बाकी सब इसके

साथी बाल बच्चे वगैरह दूसरी तरफ) चंद्र मदद ही देगा।

अगर सनीचर बजाते खुद अकेला चंद्र के साथ होने पर जहर पैदा करने वाला हुआ तो इसके ऐंजंट राहु व केतू की बुराई चंद्र के साथ ही (खुद चंद्र के घर खाना नंबर 4 में या ऐसे घर जहां कि चंद्र (बैठा हो) न चल सकी। राहु हाथी बन कर चला। लेकिन जब दरिया में पहुंचा (दरिया चंद्र) तो खुद राहु का अपना साया इसके पावों में जाल (राहु-तेंदूआ) की तरह हो बैठा। फिर राहु भूचाल बना तो जिस जगह दरिया नदी या कोई और पानी आया (लालकिताब फरमान नंबर 7 सफ़ा 6) तो लहर आगे न जा सकी। गोया राहु उन घरों पर ही असर के लिये चलता रहा जहां कि चंद्र का पानी न आया। बरअकस इसके यही राहु जब सूरज के घर या सूरज के साथ आया तो और भी गर्मी से पिघल कर सूरज वाकया होने के घर और उस के (सूरज के वाकया होने के) बाद के घरों पर और भी गर्म होकर चलने लगा।

केतू छलावा बन कर बृहस्पत (हवा) को साथ लेकर सनीचर (मकान) की ऐंजंसी में होता हुआ चंद्र के सफर के रास्ते आया यानी शरा-ए-आम की हवा मकान में सीधी ही आने लगी। (लालकिताब सफ़ा 82 जुज 20) माता के दिल के टुकड़े या इसके बच्चे हवा-ए-बद का शिकार होने लगे। माता को दुख हुआ। मगर खुद माता पर हमला न हुआ। इस दुख के पैदा करने का सबब भी चंद्र के लिये सिर्फ सनीचर ही हुआ। अगर मकान न होता तो ये मौत का बहाना न होता। यही हवा तूफान बनी। चंद्र के समुंद्र के पानी को ऊंचा नीचा किया। मगर चंद्र को समुंद्र से यानि समुंद्र के पानी को समुंद्र की जगह से उठा कर किसी और जगह न ले जा सकी। मिट्टी फैकी जो चंद्र लेकर शांति से अपनी तैं में डालता गया। केतू के कुत्ते ने दरिया अबूर करना चाहा। जब इस के कानों में पानी पडा या कुत्ते को इसकी टांगो ने हार दी कुत्ता आगे न जा सका।

केतू के ये कान और द्रुम क्या हैं? कुण्डली का खाना नंबर 8 केतू के कान हैं। जब चंद्र जो उम्र का मालिक है। खाना नंबर 8 में होवे। वहां राहु न होगा। (जिस जगह राहु हो बृहस्पत चुप होता है। फकीर की कुटिया में हाथी (राहु) फकीर को तंग करता है। मगर कुटिया में कुत्ता आराम देता है। इसलिये बृहस्पत ने राहु को संभालने से इन्कार किया। चुप हो गया। जिस फकीर के पास हाथी होगा। वो गद्दी नशीन साधु हो या इस एक दुनिया का बृहस्पत होगा। दोनों जहानों का मालिक न होगा। राहु (हाथी) का जिस्म खाना नंबर 12 में माना है तो खाना नंबर 6 राहु के लिये सूंड की जगह होगी।)

या जहां राहु न हो बृहस्पत बोल पडता है)। जहां पानी हो वहां अकस भी हो सकता है। (साया) या सूरज की रोशनी भी हो सकती है।

राहु गुम हुआ। चंद्र केतू का दुश्मन है और हर इक की नसल बढाना (गो खुद अपनी नहीं) यानि माता की उम्र लंबी नहीं होती जबकि चंद्र खाना नंबर 8 में हो) चंद्र की बक्षिश है। चंद्र की दुश्मनी की वजह से कुत्ते के कान इतने लंबे हुए कि वो लटकने लगे। (चंद्र खुद के घोडे के कान लटकते नहीं। चंद्र के दुश्मन के लटके। अगर बुध की बकरी हुई तो वा भी कान लंबे करवा गईं। सनीचर के सांप के कान तो इतने गुम हुए कि सिर्फ निशान ही रह गया)। कान लंबे उम्र लंबी। (लालकिताब सफा 68 फरमान नंबर 75) पागल होकर कुत्ता इतना भागा कि वो दस दिन तक (कुण्डली का खाना नंबर 10) इस का पसीना चंद्र का पानी भी मुंह के रास्ते जबान से कतरा कतरा होकर टपकने लगा। (बुध जबान केतु कुत्ता दोनों ही बुध केतु इकट्ठे होने पर चंद्र का पानी या चंद्रमा का असल असर कतरा कतरा होकर बाहर चला जायेगा)। लेकिन जब तक वो चंद्र के पानी से दूर रहा। इस की मौत न हुई या पानी से पागल कुत्ता मर जाता है। इसी तरह जब तक केतू चंद्र से दूर रहा लोगों को आराम या पागल होकर (नीच केतु) दुख देता रहा। लेकिन जब चंद्र के साथ ही या चंद्र के घर आ बैठा (खाना नंबर 4) कुत्ता कुएं में गिर गया तो दम तोडने लगा। खुद मर गया चंद्र के पानी में अपनी बदबू डाली और चंद्र के उम्र के बढा देने के असूल को बदनाम किया। मतलब ये कि केतू चंद्र के घर के अंदर या चंद्र के साथ खुद मरा मगर चंद्र को(चंद्र माता कुण्डली वाले की माता को मार लेता है। मगर कुण्डली वाले की खुद अपनी उम्र पर हमला नहीं कर सकता। केतू खुद मर जाता है से मुराद है कि लडके मर जावें तो सही) ये खाना नंबर 8 केतू के कान है। जहां कि इसका सिर (बुध) मंदा है। (कुत्ता न मरेगा जब तक इसका सिर अच्छा है या कुत्ते की जान इस के सिर में होती है)।

अब दुम क्या है ये खाना नंबर 6 है। जिसमें केतू व बुध दोनों को माना है। कुत्ते का सिर व इसके दुम की जगह। अब खाना नव 6 के केतू (कुत्ते) के जिस्म व इसके दुम के हिस्सों (बुध को दुम भी माना है और आवाज भी) में अगर पागलपन हो जावे यानि बुध वहां से निकल कर खाना नंबर 12 में चला जावे। बुध खाना नंबर 6 से सीधा 12वें गया।

दुम सीधी हुई (12 साल तक कुत्ते की दुम सीधी न हुई बुध का गोल दायरा ही रही। पागल कुत्ते की दुम सीधी हो गयी।) तो पागल कुत्ते का सिर दुम आवाज दांत (सब बुध के हिस्से हैं) दुनिया के सब गृहस्तीयों पर बुरा असर करेंगे यानि खाना नंबर 12 का बुध खाना नंबर 6 के सब ग्रहों का फल रद्दी कर देगा। लेकिन अगर केतू के हिस्से जो बुध के माने हैं। इस से अलहदा खाना नंबर 12 में (खाना नंबर 6 पाताल है और खाना नंबर 12 आसमान यानी कुत्ता इतना बड़ा पागल हो जावे कि पाताल से लेकर आसमान तक हो जावे। टांगे पाताल में हों खाना नंबर 6 और सिर दांत दुम आवाज आसमान में खाना नंबर 12 में) न हो तो केतू का बुरा असर न होगा। ख़ाह ये कुत्ता खाना नंबर 6 में बैठकर खाना नंबर 12 को देखे या खाना नंबर 8 का असर बरास्ता खाना नंबर 12 ही खाना नंबर 6 में मिल जावे।

खुलास्तन :- (1) त्रिलोकी का भेद खाना नंबर 3 से खाना नंबर 9 में नौ ही ग्रहों से जाहिर हुआ। जहां की गैबी और जाहिरा दोनों जहानों का मालिक बृहस्पत था। जिसने दुनिया को ये खबर देने के लिये गृहस्तीयों का घर शुक्कर खाना नंबर 2 को पक्का घर बनाया। जिसमें आने के बाद चले जाने का पैगाम या मौत का हुक्म भी (खाना नंबर 8 से) आने लगा। इस गुरु फकीर या बृहस्पत ने ये भेद कुत्ते के जरिये खाना नंबर 6 में भेजा। कुत्ता बोला तो इसकी आवाज फिर वापिस खाना नंबर 12 में जा पहुंची। इस भेद को जो चीज खाना नंबर 3 से 9 में और खाना नंबर 8 से खाना नंबर 2 में ले गयी वो दुष्टी "देखना" या मंगल सनीचर की नजर का होना कहलाया। इस नजर को बृहस्पत ने पहचाना और अपने साथी दुनयावी दरवेश कुत्ते की आवाज बुध से जाहिर कर दिया। बृहस्पत ने गैबी बात पहचानी। केतू ने बुध के रास्ते धन दौलत के सुख के खाने में खबर दे दी। दोनों दरवेशों की इस ताकत को बुध ने जाहिर किया। इस लिये बुध का आकाश या आवाज नक्काराए खलक को आवाजे खुदा समझा गया या बुध सबका भेद खोल देगा। अगर बुध अच्छा तो चंद्र का बुरा फल न होगा। जब चंद्र अच्छा तो शुक्कर का बुरा फल न होगा। इसलिये बुध अपना फल शुक्कर में पहुंचा देता है यानि बुध के बगैर शुक्कर पागल होगा और शुक्कर के बगैर बुध दीवाना पागल कुत्ता होगा। जो अपने मालिक को छोडकर (दीवाना कुत्ता मालिक को छोड जाता है) और अगर वो अपने ही घर जहां वो पागल हुआ बंधा होवे (यानि खाना नंबर 12 में) तो मालिक को भी काट देगा। गोया बुध ही

सब ग्रहों का भेदी है और बृहस्पत सबको जानने वाला है। दोनों ही ग्रह राहु केतू के सिर और पांव को पहचान सकते हैं।

(2) राहु केतू दीवारें बन कर सिर्फ रास्ता रोक सकते हैं और ये दीवारें हमेशा चलने वाली हैं। इसलिये इनके दूर होते ही उन ग्रहों का असर वही उमदा होगा। जो हो सकता है। लेकिन जब ये हाथी व कुत्ता घोड़े के साथ ही एक मकान में बंधे हों (खाना नंबर 6 में जब केतू था तो अपने से सातवें या खाना नंबर 12 में राहु था) तो तवेला मवेशियां होगा (लालकिताब सफ़ा 81 जुज 12)। जो बाकी सात या राहु केतू (मुश्तरका मशनोई शुक्कर) का नतीजा शुक्कर गृहस्त का खाना नंबर 7 है (कुण्डली का)। जिसमें शुक्कर के साथ ही बुध को भी माना है। ताकि कुत्ते के टुकड़े ना हो जावें और केतू इस इल्म में लडका भी माना है। इसलिये ही खाना नंबर 7 शुक्कर बुध मुश्तरका होने पर मुबारिक और शुक्कर बुध मुश्तरका से मशनोई सूरज होगा।

खाना नंबर 6 में जब केतू को माना था तो इस का दूसरा साथी राहु खाना नंबर 12 में और बृहस्पत दोनों (राहु केतू) को चलाने वाला खाना नंबर 2 में बैठा है। खाना नंबर 2 में बृहस्पत है और गुरद्वारा इसमें खाना नंबर 8 का असर आया। खाना नंबर 8 पापी ग्रहों की (तीनों ही राहु केतू सनीचर की) बैठक है और खाना नंबर 2 सिर्फ राहु केतू की बैठक है यानि जब खाना नंबर 8 का असर 2 में जावे तो सनीचर का बुरा असर साथ लेगे। लेकिन जब खाना नंबर 2 का असर खाना नंबर 6 में जावे तो सिर्फ राहु केतू का असर (इसी वजह से खाना नंबर 2 को शुक्कर की राशि माना है। क्योंकि राहु केतू मुश्तरका सिर्फ हवाई शुक्कर के घर को ही हवा का मालिक बृहस्पत संभाल सकता है) चला। खाना नंबर 6 से जब खाना नंबर 12 में असर गया तो खाना नंबर 6 से बुध का असर भी मिला हुआ पाया। जो आकाश व गोल दायरा का मालिक है। इस तरह खाना नंबर 2-6-8-12 में हर तरह का झगडा हुआ। पाताल और आसमान में हर तरफ बुध व बृहस्पत की चारों तरफ घुम जाने वाली गांठे सनीचर की चारों तरफ मार कर लेने की ताकत खडी हो गयी। बुध और बृहस्पत ने भी सूरज और सनीचर दोनों का ही साथ दिया। गो वो दोनों बुध और बृहस्पत बाहम दुश्मन हैं। इन चारों तरफ की ताकत वाला खाना नंबर 4 चंद्र को मिला। (अरमान नंबर 38) जिसमें नेकी की सिफत होगी। मंगल बढ़

ने खाना नंबर 4 में और सनीचर ने चंद्र से जो खाना नंबर 4 का मालिक है से अपनी दुश्मनी के स्वभाव का सबूत दिया। इस चक्र के बुरे और भले हो जाने के सबब से चंद्र ने सबकी उम्र की ताकत अपने काबू कर ली और सब की उम्र का मालिक हुआ और तमाम ही के सफर में अपना असर डालने की ताकत पकड़ी। ये राहु केतू का कुत्ता हल्क में कौआ बन बैठा। इसी गां (गाय) कां (कच्चा) और कुत्ते की सेवा के लिये (या सनीचर से बचाव के लिये) अपनी रोटी के तीन टुकड़े त्रिलोकी में आराम के वासते गऊ ग्रास के नाम पर अलैहदा रखे। यानि बुध के खाली ढांचे में राहु केतू पकड़े गये। खाना नंबर 9 और 12 के बुध ने सब ग्रहों को मारा तो खाना नंबर 2 के बुध ने सब को तारा भी है। सिर्फ खाना नंबर 4 है जहां कि बुध में राहु केतू का ताल्लुक नहीं वो राजयोग है।

चंद्र का दुश्मन ग्रहों से ताल्लुक

- (1) जब चंद्र पहले घरों में हो और दुश्मन ग्रह बाद के घरों में तो - चंद्र खुद अपना नेक फल उस दुश्मन ग्रह को देना बंद कर देगा।
- (2) जब दुश्मन ग्रह और चंद्र इकट्ठे हों तो - चंद्र और दुश्मन ग्रह दोनों का ही फल रद्दी होगा।
- (3) जब चंद्र बाद के घरों में हो और दुश्मन ग्रह पहले घरों में तो चंद्र का असर बुरा होगा। दुश्मन ग्रह पर कोई असर न होगा।
- (4) बृहस्पत के साथ बृहस्पत के घरों में राहु हाथी का तेंदूया होगा या बृहस्पत के साथ या बृहस्पत के घरों में राहु बुरा फल देगा। और नीच होगा। बुध के साथ या घरों में केतू कुत्ते का सिर पागल या दीवाना नीच फल का होगा। क्योंकि राहु केतू मुश्तरका घर खाना नंबर 6 और 12 भी बुध बृहस्पत के ही हैं। जहां कि उन्हें जगह मिली।

चंद्र का खास ताल्लुक

- 1) दुश्मन व पापी ग्रहों को अपनी मदद देना बंद कर देता है।
- 2) सूरज के दरवाजे से (जब चंद्र के घर खाना नंबर 4 या चंद्र के साथ किसी भी नेक घर (यानि चंद्र व सूरज के दुश्मन का घर न हो) सूरज हो मोती दान लेगा। ला.की. 203/ खाना नंबर 4 और जब सूरज या बृहस्पत देखते हों चंद्र को तो चंद्र खुदबखुद अपना नेक असर पैदा कर देगा। (ला.की. 220/5 खुश्क कुये में खुदबखुद पानी आ जावे। बच्चे की आवाज से ही माता के पिसतान में दूध आ जायेगा। ख्वाह वो अंधी ही हो। (चंद्र खुद दुश्मन ग्रहों से मारा हुआ)।

अरमान नंबर 146

ग्रह	खाना नंबर	असर	ग्रह	खाना नंबर	असर
चंद्र		कायम जायदाद गैर माकूला जस्स पैदा हो। या मिले। पराई अमानत पास रह जावे। और लेने वाला वापिस न आवे। दिल की पूरी शांति हो।	चंद्र	1	नाँह सास का ताल्लुक मां
			शुक्कर	7	बेटी की तरह नेक और उमदा होगा। मगर शादी औलाद में गडबड होवे।
			चंद्र	1	हर किसम की सवारी का
			बृहस्पत	4	सुख और नफा होवे।
चंद्र	कायम	जस्री सफर मुतलका	सनीचर	10	
सूरज	4/10	राजदरबार के नेक नतीजे।	चंद्र	2	लाल किताब सफा 151/1
बृहस्पत	10/4	नफे और हर तरह से फायदा होवे।	चंद्र	2	दोनों ग्रहों का अलहँदा
			बृहस्पत	4	अलहँदा और उत्तम फल होगा। वालदैन से कम नेक न होगा। बल्कि बढेगा।
चंद्र	कायम	घर की हालत सोने की			
सूरज	6	जगह मिट्टी के तवे हों। मंदा			
सनीचर	6	हाला अगर इसका कोई लडका सेहत का रही आंख खराब सी वाला हो तो वो लडका अपनी 19 साला उम्र में गया हुआ सोना वापिस दिलावे।	चंद्र	2	मातृ रेखा - मातृ भाव नेक
			बुध	6	असर मगर नजर कमजोर होवे।
चंद्र	1/5	अकल कम धन ज्यादा।	चंद्र	2	आली मरतबा। साहबे
बुध	7/11	बजरिया/मुतलका राजदरबार समुद्र पार लंबे सफरों के नेक नतीजे होंगे।	सूरज	1	जायदाद होवे।
			सनीचर	11	
			चंद्र	2	पितृ रेखा - पितृ भाव नेक।
चंद्र	1		सनीचर	4	असर मुतलका जायदाद जही। ला.की. 225 जुज 4
सूरज	4				
शुक्कर	7	नामर्द वर्ना बुजदिल होवे।			अलफ
सनीचर					

ग्रह	खाना नंबर	असर	ग्रह	खाना नंबर	असर
चंद्र	3				(बुरी भली) दोनों तरफ की
बृहस्पत	9				ज्यादा। शरात का माकूल
बुध	5	उमदा नतीजा होगा।			जवाब देने की ताकत व
चंद्र	3				आदत हो।
दुष्टी			चंद्र	4	दिमागी खाना नंबर 28
11/9	खाली	कुण्डली में मंगल बढ हरगिज न होगा। मंगल ख्वाह किसी घर हो नेक होगा। दिमागी खाना नंबर 27 गौर व खोज की ताकत। ला.की. 152/2 मंगल से मुश्तरका । गंदी मुहब्बत से दूर। दुनयावी ताल्लुक में दिल का बहुत छोटा होगा। अगर मंगल बढ किसी और तरह से हो रहा हो। तो बुरा नतीजा होवे।			शुक्कर से मुश्तरका। पुरानी याद दासत की ताकत। ला.की. 218/1, 220/3 शुक्कर का बुरा फल न होगा। सनीचर का 1/3 अरसा (12 साल) आँलाद पैदा होने का वकत होगा।
			चंद्र	4	फकीर को रोटी देकर
			बृहस्पत	10	आशीर्वाद की जगह जहर दिया जाने का इल्जाम वाला असर मिले। नेकी की तो सजा पायी वाला असर हो।
चंद्र	3	चंद्र के दौरा के वकत			
बुध	11	बाकी 3 बचने वाले मकान की तरह जिदगी। शुरू की बैठक सा हाल रहे। (ला.की. सफा 80 जुज 8)	चंद्र	4	माल और औरत दोनों
			शुक्कर	10	बाहम नेक और उमदा असर।
			चंद्र	4	मां बाप दोनों की तरफ से
चंद्र	3	ला. की. सफा 216/14	सनीचर	9/11	हर तरह से उमदा किस्मत
मंगल	10		चंद्र	4	
चंद्र	3	दोनों ग्रह बाहम साथी ग्रह।	सूरज	5	मिसल राजा होवे।
मंगल	4	मंगल पूरा नेक। हाँसला इन्जत ज्यादा दिल की ताकत	व दोनों	कायम	

ग्रह	खाना नंबर	असर	ग्रह	खाना नंबर	असर
चंद्र	4		चंद्र	5	बजरिया/मुतलका राज-
और	कायम		बुध	11	दरबार समुंद्र पार लंबे लंबे सफरों के नेक नतीजे हों।
सूरज	5	इकबाल मंद होवे।			
बृहस्पत	2/9		चंद्र	6	दिमागी खाना नंबर 30 दबाव बोझ मसावीपन की ताकत। केतू से मुश्तरका।
और	कायम				जैसा मुंह वैसी चपेट। अच्छे से अच्छा बुरे से बुरा। अगर उजाडे तो चंद्र पिता खानदान को तारे।
चंद्र	4	समुंद्र पार लंबे लंबे सफरों के बजरिया/मुतलका तिवारत (बुध के काम) नेक नतीजें होंगे।	चंद्र	6	माता भाग रही। बाकी 6
बुध	10		बुध	12	बचने वाले मकान की तरह की हालत। तकिया मुसाफिर का सा हाल। (ला. की. सफा 8। जुज 11) बुध के दौरा के वकत होवे। खुदकशी बवजह गरीबी कभी न होगी।
चंद्र	4	राहु का मंदा असर बुध पर होगा। यानि सिर फट जावे।	चंद्र	6	मिसल राजा हो।
राहु	10		बुध	6	कुंडली वाले की माता उससे पहले मर जावे। (उसके बचपन में ही।)
चंद्र	4	बारौब मगर गुस्से वाला होगा। अहले सरकार से फायदा उठाने वाला। मंगल नेक का असर बढे। (मुतलका धन दौलत)	चन्द्र	6	ऐसा शख्स माता से पहले गुजर जावे।(बचपन में ही)
मंगल	10		मंगल	8	ऊपर की हर दो हालतों में अगर दोनों जिंदा हों तो दोनों ही एक दूसरे के मंदे बत्कि दोनों ही दुखिया हो।
चंद्र	5	दिमागी खाना नंबर 29 कद व कामत व औसत तनासब की लियाकत। सूरज से मुश्तरका। चिडीयों से बाज लडाने की ताकत।	मंगल	8	
सूरज	10		बुध	6	
चंद्र	5	उम्र 12 दिन होवे।	या	8	
सूरज	11		बुध	8	
चंद्र	5	मंदा फल होवे।	मंगल	6/12	
बृहस्पत	9		चंद्र न	और नही	
बुध	3		तो साथ	देखता	
			हो।	हो	

ग्रह	खाना नंबर	असर	ग्रह	खाना नंबर	असर
चंद्र दृष्टी	7 खाली	अकल की बारीकी या खुदाई पहुंच दर्जा कमाल। अगर फकीरी भी तो सबसे अक्ल ऊंच दर्जा की और नेक असर की। दिमागी खाना नंबर 3। शुक्कर से मुश्तरका रंग रूप में फर्क बगैरह की ताकत। दुध से दही और दोनों की शकल और रंग में फर्क का मालिक। ला.की. 2।8/1।	चंद्र	9	सनीचर से मुश्तरका दीलापना जाहिरा मानसरोवर मगर अंदर से कपट की खाना ला.की. 2।5/17
चंद्र	7	बचपन में तकलीफ हो।	चंद्र	9	अरमान नंबर 124 खाना नंबर 9 के इलावा। ला.की. 16।1/12 दिमागी खाना नंबर 33 इल्म रियाजी के
बृहस्पत	7		चंद्र	9	किस्मत का निहायत नेक
चंद्र	7	हथियार से मौत होवे।	बृहस्पत	5	असर। पानी की मामुली सी किश्ती उसे बड़े भारी बहरी जहाजों का काम देवे।
सनीचर	7		चंद्र	10	पूरा धोकेबाज। मंगल बंद से मुश्तरका। तैरते को डुबा लेने वाला। दिमागी खाना नंबर 34 जगह मुकाम की याद
चंद्र	7	नौह सास का झगडा। हर	चंद्र	10	धन दौलत सनीचर के ढंग का उर्ध रेखा मंदी हालत। चोर राहजन फिर भी मंदा हाला पानी से मौत होवे। अपने ही कुयें से।
शुक्कर	1	दम कलेश का घर हो जावे।	सनीचर	3	पितृ रेखा। वालदैन का उत्तम असर मगर खुद उसे औरतें (ख्वाह बेवगान हों जो उसके सहारे
चंद्र	7		चंद्र	10	
बुध	1	नशेबाजों का सरदार होवे।	सनीचर	4	
चंद्र	8	सिर्फ कुण्डली वाले की मौत के यम को मार कर इस की उम्र लंबी करे। बाकी तमाम चंद्र के मुतलका असर चंद्र नीच के होंगे। दिमागी खाना नंबर 32 सफाई शास्तगी। असूलों की ताकत। बुध से मुश्तरका।	चंद्र	10	

ग्रह	खाना नंबर	असर	ग्रह	खाना नंबर	असर
		चलने वाली हो ख्वाह धोका देने वाली बाजारी औरत या माशूका) बरबाद करें। (नाजायज खर्चा धन दौलत की बरबादी करेगी) ला.की. 220/4	चंद्र बुध	11 3	न सिर्फ कुण्डली के खाना नंबर 3 भाई बंद का मंदा फल होगा। बल्कि बाकी बचने वाले मकान (ला.की.80/8) का भी नेक असर भी (अगर कोई ऐसा जद्दी हो भी) हर तरह से जायल और खराब होगा।
चंद्र	10	खुशक कुएं खुदबखुद	चंद्र	11	दोनों ग्रहों का अपना अपना
सूरज	4	पानी देवें। ला.की.	बुध	5	असर होगा। और नेक।
बृहस्पत	4	220/5	चंद्र	12	जायदाद का फल मध्यम।
चंद्र	11	दीमागी खाना नंबर 35 पेशानी वाकयात गुजरे हुए की याद। बृहस्पत से मुश्तरका ला.की. 214/14			दिमागी खाना नंबर 36 राहु से मुश्तरका। वक्त गुजरे मर्द पछताये। "आता है याद मुझको गुजरा हुआ जमाना" कभी हम भी बाइकबाल थे। "पदम सुलतान बोद"।
चंद्र	11	ला.की.सफा 212/7	चंद्र	12	दलिद्री। आलसी। निर्धन
दोस्त	ग्रह 3		सूरज	2	होवे।
दुश्मन	ग्रह 3		मंगल	1	
चंद्र को	देखें		चंद्र		स्त्रीयों (माता औरत वगैरह) का
			राहु	12	सुख हल्का। चंद्र चुप होगा।
			सनीचर		

अरमान नंबर 147-148

शुक्कर:- शुक्कर हर इक और हर इक के सुख का मालिक ग्रह है। जो राहु केतू के मुश्तरका असर का नतीजा है। और जिस में बुध का असर हमेंच्या मिला हुआ गिना जाता है। और खुद इस ग्रह का नतीजा केतू है। न इस ग्रह ने किसी को नीच किया (लालकिताब सफा 231 तसवीर औरत व गऊमाता) और न केतू ने किसी को जान से मारा। (लालकिताब सफा 266

नोट के नीचे जुजु नंबर १) इस ग्रह की आम म्याद (तीन साला दौरा) के वकत में पहले साल में मंगल का फल शामिल और मंगल प्रबल होगा। दरम्यानी हिस्सा या साल में इस ग्रह का खुद अपना फल (राहु केतू का मुश्तरका असर) और आखरी साल में खाली बुध का असर होगा।

बुध लडकी (कौतबाह) शुक्कर जिस्म की मिट्टी (बुत) और मंगल खून (मैदाने जंग)। बच्चा पैदा करने की ताकत गिने गये हैं यानि लडकी के जिस्म में जिस दिन से कौतबाह (माहवारी आयाम का खून) बच्चा पैदा करने की ताकत पैदा होवे। उस दिन से ये ग्रह राहु केतू के मुश्तरका असर का मैदाने जंग शुक्कर के नाम से गिना जायेगा और शुक्कर के नतीजे केतू (लडके बच्चे) की छलावे की तरह के रंग ढंग पैदा कर देंगे। बुध कुण्डली के किसी भी घर में हो जब शुक्कर से अलैहदा हो और अपना फल वहां से..... जहां की बुध बैठा हो। उठा कर शुक्कर में मिला देगा। (बुध के हाल में मुफसिल लिखा है।) यानि शुक्कर और बुध जब अलैहदा अलैहदा होकर कुण्डली में दृष्टी के हिसाब से आमने सामने के घरों में वाक्या हो जावें। तो चकवे चकवी के चंद्र की रात में अकेले अकेले होने का असर (लालकिताब सफ़ा 20१ नीचे से सातवीं सतर) मुंदरजा जैल होगा :-

1) अगर कुण्डली में बुध एक दो तीन हद 12 की तरतीब में शुक्कर से पहले घरों में हो (ख्वाह वो घर अरमान नंबर 108- 25फीसदी, 50 फीसदी या 100 फीसदी के असर के हों) या शुक्कर बुध से बाद के घरों में हो तो शुक्कर और बुध के इस तरह से मिले हुए असर में केतू की नीयत (कुत्ते की नेक नीयत जो अपने मालिक की वफादारी और खैरखवाही की मशहूर हैं) होगी। और अगर

2) शुक्कर कुण्डली के पहले घरों में हो और बुध इसके बाद के घरों में तो शुक्कर और बुध के इस मिले हुए असर में राहु (जाहिरा मसकीन बिल्ली मगर अंदर से 100 चूहे खाकर हज्ज को जाने वाली गरबां) की नीयत भरी होगी। लेकिन अगर

3) शुक्कर व बुध अकेले अकेले अपने से सातवें हों तो जहां एक का अच्छा है। वहां दूसरे का असर उल्ट होगा का असूल आम ग्रहों की निसबत शुक्कर व बुध के लिये थोडा सा फर्क पर होगा :-

(सनीचर जब कभी भी शुक्कर के दोस्त / दुश्मन ग्रहों की दृष्टी में या साथ हो तो ऐसे मिलाप में सनीचर का असर अच्छा / बुरा औरत पर होगा।)

शुक्कर होवे खाना नंबर 3 में और बुध होवे खाना नंबर 9 में
शुक्कर होवे खाना नंबर 9 में और बुध होवे खाना नंबर 3 में

शुक्कर होवे खाना नंबर 6 में और बुध होवे खाना नंबर 12 में

शुक्कर होवे खाना नंबर 12 में और बुध हो खाना नंबर 6 में

शुक्कर होवे खाना नंबर 8 में और बुध हो खाना नंबर 2 में

शुक्कर होवे खाना नंबर 2 में और बुध हो खाना नंबर 8 में

दोनों का फल रद्दी होगा। हालांकि
दोनों दोस्त हैं। वजह ये कि

बुध खाना नंबर 9 के तमाम
ग्रहों और खाना नंबर 9 के
तमाम ताल्लुकदार घरों के
ग्रहों के असर की बुनियाद
खोखली कर देगा।

दोनों का फल रद्दी क्योंकि
खाना नंबर 12 का बुध
खाना नंबर 6 के तमाम ग्रहों
का फल खराब कर देगा।

दोनों का ऊंच फल क्योंकि
खाना नंबर 6 का केतू सब
को ऊंच करता है।

दोनों का फल रद्दी। माँत का
खाना पीछे को देखता है।
और मारग अस्थान है।

बुध बृहस्पत के घर में
बृहस्पत की दुश्मनी पर
शुक्कर को भी नहीं छोड़ता
और मुर्दा शुक्कर नंबर 8 का
असर खाना नंबर 2 में जाता
है।

4) अगर शुक्कर व बुध दोनों ही मुश्तरका हों तो मशनोई सूरज का असर होगा।
नेक मायनों में। (लालकिताब सफ़ा 291 ऊपर से छटी सतर)

शुक्कर का बृहस्पत से ताल्लुक

बृहस्पत के खाना नंबर 9 में शुक्कर हो-औलाद के लिये मंदा-तीर्थयात्रा उमदा।
बृहस्पत के खाना नंबर 12 में शुक्कर हो-धनदौलत ऊंच शुक्कर की मगर औरत
की सेहत (कदरे) मंदी।

बृहस्पत के घर खाना नंबर 2 में शुक्कर का उत्तम 60 साल ये 60 साल सनीचर
की आमदन होगी। जब सनीचर खाना नंबर 9 में होवे।

शुक्कर के खाना नंबर 7 में बृहस्पत हो बृहस्पत के लिये सोने की जगह मिट्टी
होगी। ला.की. 146/6-7

इन दोनों ग्रहों के इकट्ठे होने के वकत शुक्कर का फल पोशीदा (जिस
तरह सूरज के लिये बुध का हाल है।) और बृहस्पत का जाहिरा होगा।

शुक्कर का सनीचर से ताल्लुक

अगर शुक्कर से सूरज ने दुश्मनी की और ऊपर से जाहिरा अपनी गर्मी
को भेज कर अपनी तपिश से जलाया तो

सनीचर ने नीचे से खुफिया ही आकर शुक्कर को पूरी ही मदद दी। यही सनीचर के सांप को मिट्टी की मदद होगी। सूरज और सनीचर के दरमयान ये शुक्कर क्या है? सिर्फ राहु केतू (जो इस के मशनोई हालत के जुज हैं या इसी ऊपर को उभारने (सनीचर से) और नीचे को दबाने (सूरज से) की वजह से शुक्कर जो टूट फूट में होगा रेत बनेगा और रेत होगी बुध की चीज या बुध खुदबखुद पैदा हो गया।) जो सनीचर के ऐंजंट हैं। मतलब ये कि जब शुक्कर को सनीचर की मदद मिली या शुक्कर को सनीचर ने मदद दी तो राहु केतू भी शुक्कर के मददगार हो गये। दूसरी हालत में जब सूरज बरखिलाफ होवे शुक्कर के तो मदद देगा शुक्कर को सनीचर। यानि जब औरत की नेकी उसे मदद न देवे। औरत की शैतानी की ताकत ही सब दुश्मनों को मातहत करवा देगी।

शुक्कर का राहु से ताल्लुक:- शुक्कर और राहु मुश्तरका होने पर सिर्फ बुध ही रह जायेगा। यानि राहु जब शुक्कर के साथ हों बुध का फूल तो होगा (बुध राहु दोस्त) मगर शुक्कर का फल (केतू) न होगा। (बुध केतू बाहम दुश्मन हैं)। राहु न सिर्फ औरत की सेहत और औलाद को बिगाडता है। बल्कि शुक्कर की लक्ष्मी भी मंदा फल देगी। मगर बुध की फोकी इच्चत और शोहरत खुद कुण्डली वाले की जरूर बरकरार रहेगी।

शुक्कर का चंद्र से फर्क:- बारीक उडने वाली जर्रा जर्रा हुइ हुइ मिट्टी को शुक्कर और तमाम जमकर एक ही तै बनी हुइ मिट्टी को चंद्र की धरती माता कहते हैं। इन दो ग्रहों का मेल दही और दुध का मेल है। गो शुक्कर ने किसी को नीच नहीं किया। मगर मंगल बंद ने स्त्री (शुक्कर) को भी नहीं छोडा और हर तरह से बल्कि इसकी माँत तक का भी असर दिया है।

अरमान नंबर 149

शादी

दो गृहस्तीयों को अलैहद अलैहदा रखते हुए एक कडी से जोडने वाली चीज आम दुनियादारों की नजर में शादी और ग्रह चाल में मंगल की ताकत का नाम रखा गया है। यही मंगल के खून की कडी लडकी और औरत में फर्क की कडी है और इसी वजह से शादी में मंगल गाये जाते हैं। अगर मंगल नेक

हो (मंगल को सूरज या चंद्र की मदद मिली हुई) तो शादी खाना आबादी करने वाला मंगल होगा। लेकिन अगर मंगल बंद (मुफसिल मंगल बंद में जिकर है।) तो बंदर किला (सूरज को सनीचर से बंधा हुआ करना या सूरज इस काबल न हो कि मंगल को मदद दे सके। खुच्चक और सीधे मायनों की तरह ऊपर को खड़ी की हुई लकड़ी को सनीचर माना है। इसी असूल पर थम्मा सतून मकान की चारदीवारी छत के बगैर खड़ी दीवारें सनीचर की चीज मानी हैं।) होगा। जिस से शादी की खुशी की बजाये शुक्कर स्त्री लक्ष्मी का सुख सागर एक गंदा दुख का भंवर होगा। मंगल बंद का वीराना होगा। जिसमें सूरज की रौशनी की चमक तक न होगी। दिन की बजाये सनीचर की रयाह रात का साथ होगा। बुध के खाली आकाश में मशनोई शुक्कर के बानी राहु केतू की बैठक खाना नंबर 8 सनीचर का हैडक्वाटर होगा।

शादी की दोनों लकीरें- (लालकिताब सफ़ा 238 जुज 6)

शादी की दो लकीरें शुक्कर और बुध माने गये हैं। बुध से ऊपर की लकीर मर्द से मुतलका और शुक्कर से नीचे की लकीर औरत से मुतलका (मिली हुई) मानी गयी है। शुक्कर और बुध में से अगर एक ही ग्रह कायम हो तो हाथ पर सिर्फ एक ही शादी की लकीर होने का मतलब और असर लिया जायेगा।

ऊपर की लकीर- बुध कायम से ऊपर की लकीर (मर्द) से मुतलका।

नीचे की लकीर- शुक्कर कायम से नीचे की लकीर (औरत से वाबस्ता) होगी।

अगर बुध शुक्कर दोनों कायम तो दोनों की लकीरें उमदा और अगर दोनों ही (बुध शुक्कर) रद्दी तो दोनों लकीरें मंदी वाली शादी रेखा से मुराद होगी। एक ही लकीर वाली शादी रेखा = शुक्कर कायम मगर बुध खराब हालत का। छोटी लकीर ऊपर और बड़ी लकीर नीचे वाली शादी रेखा= बुध कायम मगर शुक्कर खराब हालत का।

बुध शुक्कर दोनों ही नेक हालत के और मंगल नेक का साथ (साथी ग्रह) हो :- शादी औलाद का फल नेक व उमदा होगा।

बुध शुक्कर दोनों के साथ या दो में से किसी एक के साथ मंगल बंद का साथ (साथी ग्रह) हो जावे- दो शाखी रेखा वाली शादी रेखा से मुराद होगी।(लाल किताब सफ़ा 237/5)

बुध शुक्कर अगर कुण्डली के पहले घरों में हों और मंगल बद् बाद के घरों में वाक्या हो :- दो शाखी का मुंह हथेली के बाहर को रहने वाली शादी की दो शाखी रेखा होगी।

बुध शुक्कर हों बाद के घरों में और मंगल बद् होवे पहले घरों में:- दो शाखी का हथेली के अंदर की तरफ मुंह होने वाली शादी रेखा होगी।

मंगल बद् ऐसी हर दो हालत में अगर शुक्कर पर बुरा असर दे रहा हो तो औरत बायस खराबी और अगर बुध बुरा असर दे रहा हो तो मर्द बायस खराबी होगा।

और अगर बुध शुक्कर जुद जुदा ही हों और मंगल बद् का कुण्डली में ताल्लुक हो जावे। तो कुदरती सबब खराबी का सबब होंगे।

नोट:- स्त्री ग्रह (चंद्र शुक्कर) जब नर ग्रहों (सूरज बृहस्पत मंगल) के साथ मुश्तरका या साथी ग्रह हो जावें तो भी शादी रेखा से मुराद होगी। बशर्तीकि ऐसी हालत में सनीचर का ताल्लुक भी (जड राशि पक्का घर द्रुष्टी या साथी ग्रह की हालत का हो जाना) हो जावे। ऐसी हालत में ऊपर जिकर की हुइ तमाम शर्तों के लिये स्त्री ग्रहों को शुक्कर या नर ग्रहों को बुध की शादी रेखा गिन कर फँसला होगा। स्त्री व नर ग्रहों का ये बाहमी ताल्लुक सिर्फ शादी रेखा के लिये होगा और ये शर्त भी सिर्फ इस वकत होगी। जब शुक्कर और बुध दोनों नष्ट हो गये हों। (निशानी :- ऐसे शख्स के जनमदिन से ही उस की ताल्लुकदार स्त्रीयां बहिन, भुआ, फूफी वगैरह ही मरती गयी हों)।

वकत शादी :- सनीचर की दोस्ती व आम दौरा का वकत शादी होने का वकत होगा।

तादाद औलाद :- मंगल का वकत और साथ और खाना नंबर 2 की हालत से औलाद का हाल जाहिर होगा। मुफसिल बृहस्पत के हाल में औलाद के जिकर में लिखा है।

मर्द औरत के जोड़े की उम्र

शुक्कर को देखता हो उस का दोस्त ग्रह तो औरत की उम्र लंबी होगी।

शुक्कर को देखता हो उस का दुश्मन ग्रह तो औरत की उम्र छोटी होगी।

बुध को को देखता हो उस का दोस्त ग्रह तो मर्द की उम्र लंबी होगी।

बुध को देखता हो उस का दुश्मन ग्रह तो मर्द की उम्र छोटी होगी।

शुक्कर बुध मुश्तरका को देखता हो दोनों का मुश्तरका दोस्त ग्रह दोनों की उम्र लंबी होगी।

शुक्कर बुध मुश्तरका को देखता हो दोनों का मुश्तरका दुश्मन ग्रह दोनों की उम्र छोटी होगी।

शुक्कर को देखता होवे उसका दोस्त ग्रह (शनीचर) और बुध को देखता हो उसका दुश्मन ग्रह चंद्र तो औरत की उम्र लंबी और मर्द पहले चल जावे।

बुध को देखता हो उसका दोस्त ग्रह (सूरज राहु) और शुक्कर को देखता हो उसका दुश्मन ग्रह (सूरज चंद्र राहु) तो मर्द की उम्र लंबी और औरत पहले चल जावे।

शुक्कर को देखता हो उसका दुश्मन ग्रह (सूरज चंद्र राहु) और बुध को देखता हो उसका दोस्त ग्रह तो मर्द कायम ख्वाह इसकी औरत कई दफा मरती या हटती जावे।

बुध को देखता हो उसका दुश्मन ग्रह (चंद्र) और शुक्र को देखता हो उसका दुश्मन ग्रह (सूरज चंद्र राहु) तो औरत कायम रहे। ख्वाह उसके मर्द मरते या हटते जायें।

शुक्कर कायम से सिर्फ एक औरत और आखिर मर्द के दम तक कायम रहे।

सूरज हो खाना नंबर 6 में और सनीचर खाना नंबर 12 में तो औरत पर औरत मरती जावे।

शुक्कर बुध मंगल तीनों ही खाना नंबर 3में दुष्टी का खाना नंबर 11खाली:- शादी और औलाद में गडबड होवे।

मंगल बढ़ और शुक्कर वाक्या होने के दरम्यान जितने घर खाली होवें उतनी हद तक शादी की औरतें हो सकती हैं = बुध और शुक्कर अलैहदा अलैहदा होने की हालत में बुध की नाली और बुध शुक्कर के पहले या बाद के घरों का खयाल भी साथ ही देखा जावे।

अकेला शुक्कर हो स्त्री ग्रहों के घरों में यानि खाना नंबर 2-4-7 में तो :- शादी वाला मर्द एक होगा और औरतें अनेक (कई) हो सकती हैं और वो सब जिंदा ख्वाह सब शादी का असल मतलब औलाद वगैरह देवें या न देवें।

अकेला बुध हो नर ग्रहों के घर में (खाना नंबर 1-5-9-12) स्त्री एक ही होगी। मर्द अनेक (कई) होंगे। शादी से ख्वाह औलाद का मतलब हो या शादी औलाद का

कोई मतलब न देवे।

अगर ऊपर की दोनों हालतों में शुक्र या बुध उल्टे खानों में बैठे हों तो नतीजा उल्टा हो सकता है।

स्त्री या नर ग्रहों के घरों से मुराद स्त्री या नर ग्रहों का शुक्र या बुध के साथ ही मुशतरका घर में हो जाने से मुराद न ली जायेगी। बल्कि मुराद ये है कि ऊपर की शर्त (मर्द एक औरत अनेक या उल्टा उल्टे वर्गैरह) सिर्फ इस वकत होगी जबकि स्त्री ग्रह या नरग्रह अपनी अपनी राशि से बाहर बल्कि वो अपनी अपनी राशि को देखते तक भी न हों या वो शुक्र या बुध से किसी तरह भी साथी ग्रह न बन रहे हों।

रंग व स्वभाव:-

सूरज बुध का ताल्लुक औरत का रंग व स्वभाव जाहिर करेगा। कुण्डली में अगर सूरज पहले घरों में हो और बुध बाद के घरों में तो औरत का रंग व स्वभाव उमदा होगा। और नेक असर का। बशर्ते कि सनीचर दखल न देवे। अगर बुध पहले घरों में हो और सूरज बाद के घरों में तो औरत के रंग और स्वभाव में मंदा असर शामिल होगा।

जब सूरज बुध इकट्ठे ही हों और सूरज के नेक घरों में यानि इकट्ठे ही हों और सनीचर या दुश्मन ग्रहों का असर शामिल न होवेतो सूरज बुध का बाहमी ताल्लुक का असर यानि उमदा हालत होगी। लेकिन जब सनीचर का ताल्लुक या दुश्मन ग्रहों का ताल्लुक हो जावे तो औरत के स्वभाव में कल्पना और सनीचर की तरह द्रौतानी और चंचल होने का साथ होगा।

दीगर बाहमी ताल्लुक -

शुक्र व बुध का ताल्लुक शादी के दिन से मर्द औरत की किस्मत पर भी ताल्लुक होगा।

बृहस्पत का साथ (शुक्र बुध का बृहस्पत से ताल्लुक) इज्जत किस्मत की चमक।

सूरज का साथ (शुक्र बुध का सूरज से ताल्लुक) आम बरताव गुजर गुजराना।

चंद्र का साथ (शुक्र बुध का चंद्र से ताल्लुक) धन उन्न और शांति।

मंगल का साथ (शुक्र बुध का मंगल से ताल्लुक) औलाद का कायम रखना।

सनीचर का साथ (शुक्र बुध का सनीचर से ताल्लुक) जायदाद मकान वर्गैरह।

राहू का साथ (शुक्र बुध का राहु से ताल्लुक) दुख दलिट्र दुश्मन माँते गमी।
केतू का साथ (शुक्र बुध का केतू से ताल्लुक) एँश फलना फूलना खुशी वगैरह।

अरमान नंबर 150 ता 153

ग्रह	खाना नंबर	असर	ग्रह	खाना नंबर	असर
शुक्र	कायम	सिर की श्रेष्ठ रेखा का	शुक्र	1	औरत की सेहत खराब ।
बुध	3/6	ऊत्तम फल होगा। चंद्र का राहु बुरा फल न होगा। झगडों का फैसला हक में होवे।	शुक्र	7	दिमागी कमजोरी। दीवानगी वगैरह।
		अगर शुक्र रही तो चंद्र का बुरा फल (जबकि चंद्र भी रही हो) सिर्फ माता की	शुक्र	1	औरत की सेहत खराब ।
		जान पर हो सकेगा।	सूरज	7	दिमागी कमजोरी। दीवानगी वगैरह।
शुक्र	1	फटे तरबूज (फूट) की तरह तबीयत का स्वभाव और गृहस्ती सुख का हाल	शुक्र	1	नौहें सास का हरदम
ला.की.		होगा। औरत की सेहत	चंद्र	7	झगडा। कल्पना ।
सफह		कदरे हल्की मगर खुद	शुक्र	7	किस्मत की हर तरह से
234/4		अपनी सेहत बुरी न होगी। दिमागी खाना नंबर ।	मय	1	हार व हानि मंदा हाल।
		इश्क मजाजी (ला.की.35)	सनीचर		जिस्म या मकान आग में
		सनीचर से मुश्तरका 16	राहू		जलते हुए की तरह के दुख
		से 36 साल उम्र यानि वो	सूरज	7	की जलन । तपेदिक वगैरह। गर्जेकि इसकी मिट्टी खराब हो या जल जावे। दुखों का पुतला होवे।
		मुहब्बत जिसमें इश्क का जुज भी होवे मगर सिर्फ जबानी।	शुक्र	1	औलाद दर औलाद बढे
शुक्र	1	औरत की सेहत खराब ।	मंगल	7	परिवार। दौलत का भण्डार और पुरा सुख हो
राहु	1	दिमागी कमजोरी। दीवानगी वगैरह।	शुक्र	1	औलाद के विघ्न
			केतू	1	
			शुक्र	1	औलाद के विघ्न
			केतू	1	खराबियां।
			मंगल	4	माँते वगैरह।

ग्रह	खाना नंबर	असर	ग्रह	खाना नंबर	असर
शुक्र		अपने लिये मशनोई खाली शुक्र (राहु केतू मुशतरका) का नेक मतलब मुहब्बत रेखा का पूरा असर (ला.की. सफ़ा 15। जुज नंबर 1) दिमागी खाना नंबर 2 शादी की ख्वाहिश इश्क के बाद का गलबा। जिसमें अब इश्क का असर न हो। बृहस्पत से मुशतरका मगर मुहब्बत हकीकी का हिस्सा बेशक शामिल हो। 37 से 70-72 का। औरत का शुक्र खाना नंबर 2 में बाँझ औरत हो। जिसमें मुहब्बत तो हो मगर हवाई बृहस्पत की तरह की।	शुक्र		शादी और आँलाद में गडबड।
शुक्र			मंगल	3	
शुक्र			बुध		
शुक्र			शुक्र	3	ला. की. 295/1
शुक्र			सनीचर	9	
शुक्र			शुक्र	3	औरत खानदान या औरत के
शुक्र			बुध	11	मुतलका खाऊ मर्द मुराद होंगे। या इस की औरत खुद अपने (औरत के) लिहाज वालों को फँच पहुंचाती जायेगी। और अपने मर्द का धन दौलत खिलाती जायेगी। या अपने लडको की निसबत अपनी देती जायेगी।
शुक्र			शुक्र	4	खाना नंबर 4 का शुक्र
शुक्र			दृष्टि	खाली	स्त्रीयों पर असर देगा। यानि
शुक्र				10	शुक्र के इलावा चंद्र माता पर भी। या खाना नंबर 4 का शुक्र औरत भी होगा और माता भी। या माता का ताल्लुक मासी, फुफ़ी, भुआ वगैरह भी होगा दिमागी खाना नंबर 4 दोस्ती या मुलाकात की ताकत एब पर पर्दा डालना खूबी पर नजर डालना। चन्द्र से मुशतरका उलफ़त (पहला हिस्सा मुहब्बत का) इश्क (दरमियाना हिस्सा कामदेव की मुहब्बत) और गलबा इश्क (तीसरा हिस्सा मुहब्बत का जिसमें अब इश्क का असर न हो) तीनों ही हालातो के मजमुआ का असर होगा। जो दरअसल चंद्र ही की मुहब्बत लिखा है।
शुक्र	2				
बृहस्पत	2	बृहस्पत में लिखा देखें।			
मंगल	नष्ट				
शुक्र	3	दिमागी खाना नंबर 3 प्यार या वालदनी मुहब्बत। उल्फ़त। मंगल से मुशतरका। 1 से 15 साला उम्र। सिर पर पगडी बांधे हुए भाईबंद की तरह की मददगार औरत होगी। इस जगह शुक्र का असर नरों और अपने (मर्द खानदान के) आदमियों पर नेक होगा।			

ग्रह	खाना नंबर	असर	ग्रह	खाना नंबर	असर
शुक्र	4	न सिर्फ राहु या बुध की	शुक्र	4	स्त्री व औलाद का फल
दृष्टि	खाली	आखरी उम्र (बुध 34 राहु	बुध	6	बहुत देर बाद नेक होगा।
जारी	10	42) शुक्र का औलाद का फल रद्दी होगा। बल्कि भुआ, फूफी, आम गृहस्ती व औलाद के दुख बल्कि दरअसल पानी में कुण्डली वाले की शादी या भूआ वगैरह की शादी से पहले डूब जावें। कुण्डली वाले के घर का कुवा इसके मामू खानदान पर भी उनको खाक रयाह कर देने का बुरा असर करे। शादी के बाद यही कुवा कुण्डली वाले को तारे और नेक फल देवे। खुश्की का सफर अमूमन बल्कि हरदम हो और मुबारिक असर का। औरते दो हों। एक जनानी दूसरी मां की तरह बूढी। जो दोनों जिंदा बशर्तेकि खाना नंबर 4 का शुक्र किसी और ग्रह का साथी ग्रह न बन रहा हो। औलाद का नेक ताल्लुक सनीचर केतू या मंगल के दूसरे दौरा में ही होगा। नेच शादी रेखा व औलाद रेखा भी देखें। अरमान नंबर 149 व अरमान नंबर 123 देखें।	शुक्र	5	औलाद की मारफत बढे
			बृहस्पत	5	और बरकत पावे। इल्म से खूब दौलत कमावे।
			शुक्र	6	दिमागी खाना नंबर 6
			दृष्टी	खाली	दिलचस्पी पक्की मुहब्बत। काम किये बगैर न छोडना। औलाद के लिये शुक्र नीच फल का बाकी खाली शुक्र का वही असर जो शुक्र नंबर 2 में लिखा है। फोकी मुहब्बत केतू से मुशतरका या खाली मुहब्बत। औरत बांझ होगी। बृहस्पत सूरज चंद्र तीनों ही का फल मंदा। या तीनों ही ग्रह सोये हुए होंगे। अकल के खिलाफ काम करे। या जो करे मंदा नतीजा हो। ला.की. 233/2
			शुक्र	6	रेत मिट्टी को सीमेंट बनावे।
			बुंध	6	गो लडके न होंगे मगर लडकियां ही मशनोई सूरज की तरह उत्तम फल देंगी।

ग्रह	खाना नंबर	असर	ग्रह	खाना नंबर	असर
शुक्र	6	कुत्ते को घी हलम न होगा	शुक्र	8	अव्वल तो शादी बहुत देर
केतू	6	वाला हाल। औरत बांझ होगी।	दुष्टी	खाली	बाद वर्ना औरते मरती जावें। मामू खानदान और
शुक्र	7	दिमागी खाना नंबर 7 बुध			ससुराल घर दोनों
दुष्टि	खाली	से मुशतरका। जिंदगी बढ़ने की ताकत (अरुज से मुराद है लंबी उम्र से नहीं।) खरबूजे को देख कर खरबूजा रंग बदले। ला.की. 234/5, 244/8			खानदानों को तबाह करने वाला हो। आतशक सोजाक खरीदने वाला हो। गोबर-दही की मिलावट से बिच्छू पैदा होने की तरह दूसरों के लिये सब्ब कदमा साबित होवे। बाहर खैचू कुर्ये में गिरने वाले गधे की तबीयत का होवे। ला.की. सफा 162 जुज 15 अरमान नंबर 124 में लिखे के इलावा। गऊ दान मुबारक होगा।
शुक्र	7	नामर्द वर्ना बुजदिल होवे।			इसके बचुरगों का हाल अच्छा मगर इसकी औलाद का हाल मंदा होवे। कर्म धर्म (बृहस्पत का हाल) उमदा। गृहस्त मंदा वासते औलाद। यानि धन होवे आदमी न होवे। लाखों पति होता हुआ भी जब तक अपने पेट के अनाज की क्रिस्मत के बराबर मेहनत न करे रोटी नसीब न हो। या खुद मेहनती होगा। ला.की. 161/12 व 234/6
चंद्र	1				
सूरज	4				
सनीचर	7				
शुक्र	7	नौह सास का मां बेटे की तरह नेक और उमदा ताल्लुक होगा। मगर शादी और औलाद में गडबड हो।	शुक्र	9	
चंद्र	1				
शुक्र	7	शादी और औलाद में गडबड।			
बुध मय	7				
राहु	या				
केतू	7				
शुक्र	7	बृहस्पत के असर में लिखा देखें।			
बृहस्पत	7				
मंगल	7 नष्ट				

ग्रह	खाना नंबर	असर	ग्रह	खाना नंबर	असर
शुक्र	10	सेहत उमदा वाला हो।			सिवाये औलाद के मंदे फल के शुक्र हर तरह से ऊंच फल देगा। तमाम तरफ की माया उसकी औरत के साथ होगी। जहां कोई मददगार न हो उस की औरत की किस्मत मदद देगी। मगर औरत की सेहत हल्की होवे।
दुष्टी	खाली	ला.की. 233/3			3) बृहस्पत ,सूरज, चंद्र तीनों ग्रहों का नेक फल साथ होगा। अगर नेक न हो मंदा तो हरगिज न होगा।
शुक्र	11	मर्द खानदान या मर्द के			
बुध	3	मुतलका खाऊ यार मुराद होंगे। औरत अपने मर्द के खिलाफ न ही अपनी मर्जी वालों को और न ही अपनी लडकियों को धन दौलत दे सके। बल्कि अपनी लडकियों वगैरह का धन भी अपने मर्द के (आदमियों) खानदान को खिला देगी। या झगडे फसादों में बरबाद करवा देगी। जाहिरा वही घर की भागवान मालूम होगी। मगर अपने मर्द के घर को बरबाद करेगी।	शुक्र	12	दोनों ग्रह ऊंच फल देंगे।
			बुध	6	लडके लडकियां सब ही मुबारिक और सुखी व सुखी करने वाले होंगे।
शुक्र	11	अपना हर काम खुफिया	शुक्र	12	औरत जात व औलाद
बुध	11	रख कर करने का आदी	केतू	12	बहादुरी में सूअरनी होगी।
चंद्र	11	और मौका पर फौरन			की तरह मोटे और बहादुर।
दोनों	कायम	खयालात लट्टु की तरह घुमा लेने वाला होगा मगर दुखिया या धन से खाली न होगा।	शुक्र	12	गो दोनों गह दोस्त हैं
			बुध	12	मगर खाना नंबर 12 में बकरी औरत का पेट फाड देगी। गृहस्त रद्दी होगा। खांड में रेत मिली वाली हालत होगी।
शुक्र	12	1) दूसरों की मदद। दूसरों की पालना। और उनके लिये भण्डारे। 2) वही फल जो शुक्र का खाना नंबर 2 का है।			

अरमान नंबर 154 ता 158 मंगल नेक

ये ग्रह बुलंद होने। नेकी करने की जागती हुई उमंग, रशक, नेक ख्वाहिश और अपने जिस्म के लिये दूसरों से मदद लेने की ताकत का मालिक है। मंगल का बुध से ताल्लुक दो चीजों को इकट्ठा करके काम का नतीजा नेक कर लेने की खसलत होती है। वो दो चीजें गो जुदा जुदा होंगी मगर बाहम मिल कर काम का नतीजा नेक होगा। बुध (जमाने की अकल) गो इसका दुश्मन है। मगर इसके साथ वो बुरा फल न देगा। मंगल बुध का बाहम मिलाप कोई ऐसा बुरा न होगा। मगर होगा कदरे बुरा ही। मसलन मंगल ने जब चंद्र की मदद पायी तो सब उमदा मंगल नेक होने पर वो चंद्र का दूध और खुद अपना जुज खांड मीठा ले आया। दूध जुदा है। खांड जुदी। बुध शामिल हुआ अकल ने मिलावट की दुध में खांड डाल दी। दूध को खांड में घोल कर ऐसा मिलाया कि वो जुदी मालूम न हुई। ये मिलावट बुध की ताकत या अकल से हुई। दूध मीठा होने पर और भी उमदा हुआ। मगर बुध की अकल से वो सिर्फ पीने के काम का ही रह गया। अब अगर चाहें कि दूध को अलैहदा करके खांड से कोई और काम लें तो न हो सका। बुध (कौतबाह) ने उकसाया तो मंगल ने अपने बच्चा पैदा करने की ताकत से खानदानी नसल (बेल बूटा) कायम कर दी। जिसे बहन कह सकता था औरत कहना पडा। यानि बुध ने जब मंगल में मिल कर काम किया तो मंगल फिर पीछे ने हट सका। बुध तो खुद अपने गोल दायरे में ही इधर से उधर घूम गया। खाली जगह खाली खलाव या आकाश का नाम बुध है जो मौका के मुताबक (अकल व सुराख) बढता चला जायेगा। मंगल है खाली जगह में चीजों को इधर उधर करके मैदान को खाली व सफा रखने की ताकत या निरपक्ष चीजों की मौजूदगी। मसलन फूल में शहद। खुलासतन अगर बुध (सिर रेखा) दुरसत हो तो मंगल का असर मदा न होगा।

मंगल का चंद्र से ताल्लुक

असल मंगल नेक तब ही है जब मंगल को चंद्र की मदद मिल जावे या चंद्र खाना नंबर 3 में हो और मंगल खुद इस वकत बेशक खाना नंबर 4 में हो। मंगल का शुक्कर व बृहस्पत से ताल्लुक

(1) मंगल नेक के मुकर्र हिस्से की चरबी

(हाथ पर खाना नंबर 3 की जगह की चरबी) बहुत बढ़ कर अंगूठे की चरबी को और बृहस्पत के खाना नंबर 2 को एक ही कर देवे। तो शुक्कर बहुत बड़ा हुआ। कुण्डली वाला आँलाद से महस्म हुआ और बृहस्पत ने अपना काम छोड़कर खाली शुक्कर का काम करना शुरू किया। कुण्डली में यही हालत उस वकत होगी जब शुक्कर और बृहस्पत दोनों तो हों आपस में दृष्टी पर और मंगल दोनों में से किसी एक तरफ का साथ ले लेवे। यानि इन दोनों में से किसी एक के साथ ही हो बैठे। शुक्कर से मिला तो बहुत बड़ा शुक्कर और अगर बृहस्पत से मिला तो नर्म हाथ का बृहस्पत या शुक्कर की तासीर वाला बृहस्पत होगा।

(2) इसी तरह मंगल बढ़ खाना नंबर 8 वाले हिस्सा की चरबी अगर बुध व चंद्र के बुरजों को ऐसा यकसां कर के मिला देवे तो मंगल बढ़ का बुध व चंद्र दोनों पर बुरा असर होगा। जिसका जिकर अरमान नंबर 160-161 में हुआ है।

मंगल नेक को बुरे असर की तरफ से रोकने वाला बुध (सिर रेखा) है जो दुरस्त हो।

मंगल बढ़ को बुरे असर की तरफ से रोकने वाला चंद्र (दिल रेखा) है जो दुरस्त हो।

अकेला ही मंगल (हर तरफ से अकेला) शेर तो होगा मगर जंगल (बुध) के बगैर शेर होगा। या बकरी (बुध) की जगह खांड (मंगल खुद मंगल की चीज) खाने वाला पालतु शेर होगा जिसमें शेर की शेरी या बकरी के खून से पैदा हुई हुई खूंखारी न होगी। ऐसे अकेले मंगल की शेरी या बकरी की तासीर का फैसला खाना नंबर 4 के ग्रह करेंगे।

मंगल का सनीचर से ताल्लुक

(1) मंगल सनीचर मुशतरका का खास असर इसी अरमान में आगे दर्ज है।

(2) राहु केतू दोनों ग्रह सनीचर का स्वभाव रखते हैं। या सनीचर में नेक व बढ़ दोनों ही तरफ चल जाने की ताकत होती है। लेकिन मंगल ऐसा नेक और ऐसा साफ है कि इसमें अगर जरा भी बुराई की तरफ चलाने की उकसाहट हो जावे तो फिर पीछे न हटेगा और अगर कोई जरा सी शरारत या बुरा असर करने वाला मंगल का साथी हो जावे। तो मंगल अपना सारा ही जोर उसे दे देगा। यानि अगर मंगल के साथ सनीचर आ मिले तो मंगल खुद तो बुध की तरह खाली ही हो जाएगा। लेकिन सनीचर की ताकत दोगुना कर देगा। सनीचर बीनाई का मालिक है। मगर इस नजर से पहाड फट जावे की ताकत का मालिक मंगल है। नजर खराब हो गयी सनीचर का असर होगा। नजर लग गयी मंगलबढ़ का असर होगा।

सामने आये हुए को पहचान लेना। लिखे को देख कर पढ लेना ये सनीचर की ताकत हैं। मगर दिमाग के हाथी राहु की सवारी करके एक जगह बैठे ही सैकड़ों मीलौं की खबर को देख.....आना मंगल की ताकत हैं

मंगल का केतू से ताल्लुक

दो केतू (एक असल केतू दूसरा ऊंच मशनोई केतू यानि शुक्कर सनीचर मुश्तरका अरमान नंबर 113A मशनोई ग्रह) इकट्टे ही मुश्तरका या बाहम दृष्टी पर हों तो मंगल दो गुना नेक होगा।

मंगल का राहु से ताल्लुक

राहु तो मंगल का अपना ही हाथी हैं। जिस का मंगल खुद महावत हैं। लेकिन अगर राहु (हाथी) मंगल (शाही महावत) से दूर हो जावे तो ये हाथी अपने महावत को उसके बाजू (मंगल) से पकड़ेगा। यानि मंगल और राहु की दुश्मनी का सबूत इन्सान के बाजुयों की तकलीफ या नाभी के दुख पेट की खराबियां पहला सबूत होंगी। मंगल राहु मुश्तरका मुकम्मल हाथी की सवारी (लालकिताब सफ़ा 76 जुज 4) होंगी राजा होगा। मगर उल्ट हो जाने पर यही राजा या हाथी अपनी ही फौज को मार देता हैं। गंदा हाथी होगा। जबकि इसमें मंगल राहु मुश्तरका तो हों मगर हों उन घरों में जहां कि मंगल या राहु नीच हों।

मंगल सनीचर

(दोनों ग्रहों की मुश्तरका औसत आमदन 18 रुपये माहवार होगी। जब मंगल सनीचर इकट्टे हों या एक दूसरे को देख रहे हों तो दो जुदे जुदे ग्रहों की बजाये सिर्फ एक ही सनीचर का ग्रह गिना जाएगा। मंगल खुद बुध की तरह अपनी तमाम ताकत सनीचर को देकर खुद सिफर हो जायेगा या ऐसे शख्स का बडा भाई (मंगल) बुध की तरह खाली हो जायेगा या मंगल सनीचर मुश्तरका कुण्डली वाले का भाई इस से हर हालत में कम होगा। कुण्डली वाले के मंगल के दूसरे दौरा में मंगल सनीचर दोनों ग्रह दो डाकू और एक ही असूल के गिने जायेंगे। या ऐसे शख्स का घर डाका मारने के काबिल (दौलतमंदी में) होगा या हो सकता हैं कि ऐसे शख्स के घर पर डाके के वाक्यात हो जावें। डाका जाहिरा के इलावा (सनीचर की पोशीदा ताकत का नतीजा) ऐसे शख्स को हो सकता हैं कि साहूकारा या मुतलका दुनिया में सिर्फ एतबारी चाल पर लेन देन में बरबाद करें और वो शख्स अचानक मोटे मोटे नुकसान देखे।

ये दोनों मुशतरका ग्रह मुंदरजा जैल वाकयात के दिन से ऊपर का दिया हुआ असर देना शुरू करेंगे। यानि इनका असर उस खाने का जिसमें कि वो बैठे हुए हों जाहिर होने से पहले अपनी निशानी जरूर देगा। निशानी उस दिन होगी जब मंगल या सनीचर दोनों ही तखत की मालकीयत के हिसाब या राशि नंबर के ग्रह बोलने के वकत इकट्टे आ हों। यानि जब वो इस ढंग पर आकर मिलें तो जिस खाने में वो कुण्डली में लिखे हैं। उस खाना के नीचे दी हुई चीज का वाक्या होगा। जो उनके असल मिलाव का सबूत देगा।

जनम कुंडली में हों खाना नंबर	कौन से वाक्या से निशानी देंगे	
1	जिस दिन ऐसा शख्स राजदरबार में कारोबार शुरू करे दोनों ग्रह मिले हुए असर देंगे।	मंगल
5	जिस दिन ऐसे शख्स के यहां औलाद पैदा हो तो असर शुरू हो जायेगा।	सूरज
2	जिस दिन ऐसे शख्स का ससुराल का ताल्लुक बन जावे या शादी होवे बृहस्पत से मुशतरका	शुक्कर
7	स्त्री से स्त्री ताल्लुक (भोग) होवे।	शुक्कर
9	जिस दिन ऐसे शख्स के गृहस्त में यज्ञ लंबा चौड़ा आडंबर मानिद मेला हो मगर बर्हसीयत दान यज्ञ बजुरगों से मुतलका हो।	बृहस्पत
12	जिस दिन ऐसे शख्स के गृहस्त में यज्ञ लंबा चौड़ा आडंबर मानिद मेला हो मगर बर्हसीयत दान यज्ञ खुद जाती मुतलका हो।	बृहस्पत
3	जिस दिन उसकी लडकी की शादी (राहु ससुराल) (ऊंच खाना नंबर 3) या वो लडकी रक्तवान होवे। (माहवारी)	बुध
6	जिस दिन उसकी लडकी की शादी (बुध लडकी) (ऊंच खाना नंबर 6) (खून में) जवान होवे।	बुध
4	जिस दिन खेती की जमीन आवे या घोड़ी बच्चा (बछेरी मादा बच्चा) देवे। चंद्र मंगल खाना नंबर 10	चंद्र
6	जिस दिन छिपकली जिस्म पर पांव की तरफ से (ऊपर सिर की तरफ को चढ जावे) या कुत्ती (कुत्ते की मादा कुतिया) बच्चे देवे। उसके घर में या उसके घर के सामने में।	केतू
10	जिस दिन मकान में दिन के वकत (रात का नहीं) सांप का वाक्या होवे। मगर सांप मार कर मुर्दा न किया जावे। सिर्फ निशानी का होगा डंग नहीं मारा करता।	सनीचर
11	जिस दिन अपने बाप बाबा की तमाम चीजों के ऐंज में खुद साखता हर इक चीज पैदा कर लेवे। इस खाना में दोनो ग्रहों का होना मंदा फल देगा। साधु के घर चोर होंगे। माकूल आमदन फिर भी करवाई। अगर जरद रंग का उपाय करेंगे। केतू का उपाय मुबारिक और राहु का सबसे उत्तम होगा। नीलम/राहु उत्तम फल देगा। हीरा (बुध जो मंगल का दुश्मन) जहमत कर्जा पैदा करेगा। अर्गवानी (सूरज) सब कुछ की तबाही करेगा। सूरज सनीचर का दुश्मन है जायदाद घटावे।	सनीचर

मंगल का सूरज से ताल्लुक

सूरज के बगैर मंगल सिवाये मंगल बंद के और कुछ न होगा। जहां सूरज होगा मंगल का असर हमेशा मंगल नेक का होगा। जब मंगल को सूरज की मदद न मिली। मंगल वही मौत का फरिच्छता खाना नंबर 8 का मालिक होगा। सूरज भी जब मंगल से मिले तो ऊंच फल का होगा। मंगल तमाम मुतलका दुनिया में चमक और रौशनी हैं। चमक और रौशनी है ही उस वकत जब सूरज निकला हुआ होवे।

मशानोई मंगल नेक = सूरज बुध मुशतरका मंगल सनीचर-सनीचर के घर खाना नंबर 10 में मंगल राजा होगा। जब तक कि कोई और ग्रह मंगल के साथ न हो। या मंगल को न देखता होवे। और न ही किसी दुश्मन ग्रह का ऐसा मंगल साथी ग्रह बन रहा हो। मगर मंगल के घर खाना नंबर 3 में सनीचर निर्धन कंगाल (माल दौलत नकद न होगा मगर जायदाद जरूर होगी या उमदा हो सकती है) होगा।

अरमान नंबर 159

ग्रह	खाना नंबर	असर	ग्रह	खाना नंबर	असर
मंगल	1	दिमागी खाना नंबर 8	मंगल	1/7	आ बैल मुझे मार के कामों के बुरे नतीजे। मगर
दृष्टी	खाली	सूरज से मुशतरका।	बृहस्पत		
		हमला रोकने की ताकत। मतमझल मिजाज होगा।	सूरज	7/1	कुण्डली वाले के अपने
			चंद्र	1/1	खानदान को मदद मिलती
			बुध	1 या	रहे या वो उनको देता
मंगल	1	मंगल व बुध दोनों ही खाली	सनीचर	1 या	रहेगा।
बुध	3	होंगे। यानि दो भाई और दोनों ही	दोनों	ख्वाह 7	
दोनों की दृष्टि		कभी शाह कभी तंग हालत के	मंगल	2	गृहस्त में दूसरों की परवरिश के लिए (मगर खुद अपने लिए की शर्त नहीं) धन
	खाली	मगर उनकी बहन (बुध) लाखोपति होगी।			दौलत का जरूर साथ रहे।
मंगल	1	दलिट्री, आलसी, निर्धन			स्त्री धन (औरत का अपने
सूरज	2				मां बाप से लाया हुआ)
चंद्र	12				

ग्रह	खाना नंबर	असर	ग्रह	खाना नंबर	असर
मंगल	2	धन दहेज साजो सामान वर्गैरहा ला.की. 150/15 व 163/20 व 43/10 व 164/25 तरक्की पकडे या तरक्की देवे। किस्सा कोताह दूसरों की मदद करे तो आमदन बढे वर्ना घटे। मंगल बढ खाना नंबर 2 269-3	मंगल बृहस्पत सूरज या चंद्र बुध या सनीचर दोनों मंगल बुध	3 या 7 3 या 7 3 9/11	आ बैल मुझे मार के कामों के बुरे नतीजे। मगर कुण्डली वाले के औरत के मदद होती रहे। या वो उनको देता रहेगा। आ बैल मुझे मार के कामों के बुरे नतीजे। औरत खानदान को मदद गिलती रहे।
मंगल	3	दिमागी खाना नंबर 17 अदल या मुनसिफ मिजाजी। बृहस्पत से मुशतरका। किसी पर ज्यादती होती न देख सके। मंगल बढ खाना नंबर 3 ला.की. 268/2 व 280/8	मंगल शुक्कर बुध मंगल बुध	3 3 3 3 3	शादी और औलाद में गडबड हो। दौलत के रंज व गम बहुत देखे।
मंगल बृहस्पत या सूरज या चंद्र और बुध या सनीचर दोनों मंगल बृहस्पत	3 9/11 या सूरज या चंद्र और बुध या सनीचर दोनों 3 11	आ बैल मुझे मार के कामों के बुरे नतीजे। मगर कुण्डली वाले के अपने खानदान को मदद मिलती रहे। या वो देता रहेगा उनको। खुद अपने लिये उत्तमा मगर रिश्तेदारों की माँतों से तंग और दुखिया होवे।	मंगल बृहस्पत मंगल सनीचर मंगल बुध	3 9/11 3 9/11 4 6	ससुराल खुद दौलतमंद हों और दौलत देवें। कुदरत की तरफ से सनीचर का बुरा असर माँतें वर्गैरह हरगिज न हों। मंगल बढ नंबर 4 मंगलीक। मां, नानी, सास, जनानी की उम्रों पर हमला करेगा। औलाद में गडबड ला.की. 215/17 माता बचपन में गुजर जावे। वर्ना दोनों दुखिया

ग्रह	खाना नंबर	असर	ग्रह	खाना नंबर	असर
मंगल	4	आँलाद के विघ्न जरूर	मंगल	7	आँलाद दर आँलाद गृहस्थ
पापी ग्रह	9	होगे। मामु व ससुराल को खा पी कर तबाह करे। माँतों का पलेगी चूहा होगा।	शुक्र	1	बड़े परिवार। दौलत का भण्डार और हर तरह से सुख हो।
मंगल	4	हाँसला व इज्जत बाकमाल	मंगल	1/7	आ बैल तू मुझे मार के
चंद्र	3	हो। शरारत का माकूल जवाब देने वाला होवे।	बृहस्पत		कामों के बुरे नतीजे। मगर
मंगल	4	दोनों ग्रहों का पूरा मंदा	सूरज या	1/7	कुण्डली वाले के अपने
बुध	12	फला। माँतों और गरीबी का मारा हुआ। बेवकूफ सा होवे।	चंद्र और	बुध या	खानदान को मदद होती
मंगल	4		सनीचर या	खाह	रहे। या वो देता रहेगा
बद मय	चंद्र	ला. की. 270/8	दोनों	7	उनको।
मंगल	4	माता बचपन में गुजर जावे।	मंगल	8	सबसे छोटा भाई जब 8 वर्ष
चंद्र	6	वर्ना दोनों दुखिया। मंगल बद नंबर 5 ला.की. 268/1, 269/3, 281/7			में हो तो फिर कोई और भाई ना हो या ना रहे। तदूर
मंगल	5	कायम तो मुतमइल मिजाज। पूरी शांति वाला होगा। मंगल बद तो नजर से ही तबाह करे।	मंगल	8	बरबादी की निशानी हो। दिमागी खाना नंबर 8 सनीचर से मुशतरका।
मंगल	6	बहिन भाई माँत के यम।	बुध	6	लाख मुसीबत मगर काम को न छोड़े कामयाबी हो न हो।
बुध	12	मंगल का फल रद्दी होवे।	मंगल	8	माता बचपन में ही गुजर जावे। वर्ना दोनों दुखिया। ला.की. 281/8
मंगल	बद 7	ला.की. 270/7	मंगल	9	अगर कायम तो देखें बृहस्पत में अरमान नंबर
मंगल	6	माता से पहले ही बचपन में गुजर जावे। वर्ना दोनों			ला.की. 124 और 162/14
लेकिन	सूरज	दुखिया।			निहायत मुबारक फल।
चंद्र का न हो।	ताल्लुक				मंगल बद तो पैदाइश में भेद। शुतर बेमुहार के भेद।

ग्रह नंबर	खाना	असर	ग्रह	खाना नंबर	असर
मंगल	10	किरसा वाला तुखम बंद कहलाया जा सकता है। ला.की. 162/15-16 व 258/14 सनीचर के घर मंगल राजा होगा। जब से और जब तक मंगल को कोई और ग्रह न देखता हो। वालदनें भी मानिद राजा है। बशर्ते की मंगल अकेला हो। वरना दुश्मन ग्रहों के साथ उनके वकत से और वकत तक सब कुछ उलट होवे। खुद नर औलाद के लिये बडी उम्र तक तरसे या औलाद देर बाद होवे।	मंगल	10	अहल सरकार से फायदा
			चंद्र	4	उठावे। बारंब गुस्से वाला होवे।
			मंगल	10	आंख से काना होवे।
			चंद्र	5	
			मंगल	10	पोते पडोते वाला(उम्र लंबी
			सनीचर	3	खुद अपनी सांप काँवे की उम्र) जायदाद कायम मगर नकद दौलत में निर्धन।
			मंगल	10	पोते पडोते। खुद अपनी
			सनीचर	3	उम्र बहुत लंबी जायदादी
			चंद्र	4	फल बहुत मंदा मगर धन कम होने की शर्त न होगी।
			मंगल	10	आंख से काना हो।
सूरज	4		सनीचर	10	ला.की. 270/8
मंगल	10		मंगल	12	अपनी माता से पहले ही
सूरज	6	जावे।	बुध	8	बचपन में गुजर जावे।
			मगर	चंद्र या	
			सूरज	का	
			तालुक	न होवे।	

अरमान नंबर 160-161

मंगल बंद

ये ग्रह हर इक बंदी का मालिक, तुखम बंद, शतर बेमुहार हर काम टेढा (तुखम की नाली या पेशाब गाह तक भी न सीधी) चंद्र के समुन्द्र को जला देने वाला (मंगल बंद है ही तब जबकि मंगल हो चंद्र के खाना नंबर 4 में) लेकिन मंगल के घर खाना नंबर 3 में चंद्र न हो या मंगल का चंद्र या सूरज की मदद न मिली होवे) बुराई के लिये हसद व किना से पेट भरे हुए (ऊंट की पानी से या चंद्र से मुहब्बत

नहीं रेत का दोस्त है या बुध का ताल्लुकदार है।) हर इक के पांवों में सनीचर के सांप की रस्सी का फंदा डालने वाला और लकड़ियों की बजाये (सनीचर खुशक लकड़ी माना है और इन्सान को मार कर लकड़ी की तरह सुखा लेने वाला मंगल बंद है।) आदमियों के जिंदा जिसमों को आग में झोकने वाला और एक दो तीन की बोली पर बात खतम करने वाला तीन आंख का फरिच्छता अजल माना है। सनीचर के मारे हुए तो बचते देखे गये हैं। मगर मंगल बंद का मारा हुआ फिर जिंदा होता न देख न सुना गया।

मंगल नेक से फर्क

मंगल नेक जब कुण्डली में हो तो वो ग्रह सबसे पहले इन्सानी किस्मत में उस ग्रह की चीजों से नेकी शुरू करेगा (यानि अपने असर के वकत उसकी निशानी होगी) जो ग्रह कि सबसे ऊंच और नेक होवे। मगर मंगल बंद सबसे पहले निहायत मंदे ग्रह से मिल कर उसके मंदे असर की मुतलका चीजों से अपने आने की निशानी देगा।

सनीचर से फर्क

जान से मार देने वाली जहर या तेज हथियार से फौरन मर जाना बड़े भारी बोझ (मानिद पहाड) के नीचे दब कर अचानक दम के दम मर जाना या ऐसी मौत मर जाना कि खुद मरे मगर बाद वालों की मौत का बहाना न होवे वगैरह सनीचर के काम हैं। कुंद हथियार (पंजाबी खुण्डा) से मर जाना या मारना। लंबी बीमारी से गल गल सड सड कर मरना । मौत दर मौत देख कर और आखिर पर खुद भी दुखिया होकर मरना या टटोल टटोल कर और दुख दुख कर मर गया है। या अभी जिंदा पहचान कर फिर मारना। खुद मरना और बाद वालों के लिये भी मौत का बहाना खडा कर जाना वगैरह मंगल बंद के ही काम हैं।

बनावट या बुनियाद

क) काग रेखा रेखा मंगल बंद की पूरी निशानी होगी।

ख) सूरज के बगैर मंगल को मंगल बंद ही गिनते हैं। सूरज सनीचर इकट्टे (सांप बंदर की लडाई) खाली दुनिया बुध आकाश का तमाशा न सिर्फ दूसरों का बल्कि खुद अपना घर फूंक तमाच्चा देखे मंगल बंद का असर होता है। अगर बुध कायम या दुरसत हो तो उस वकत ख्वाह मंगल खाना नंबर 4 में ही क्यूं न हो। पूरा नेक मंगल होगा।

2) मंगल के साथ - मंगल की राशि (खाना नंबर 1-8) में सूरज न हो या सूरज किसी दूसरे घर में (खाना नंबर 6-7-10 या 12) में हो या सूरज अपने किसी दुश्मन ग्रह के ताल्लुक से (शुक्र खाना नंबर 7, राहु 5-9, केतू 3-6 यानि उन तीनों ग्रहों में से किसी के साथ इस जगह दिये हुए घरों में सूरज भी हो जावे) खराब असर का हो रहा हो या सूरज की तरह मंगल को चंद्र की मदद भी न मिल रही हो तो मंगल को मंगल बद् ही गिनेंगे।

3) मंगलीक खाना नंबर 4 का मंगल बद् होता है। जिसका बुरा असर चारों औरतों (कुण्डली वाले की मां, नानी, सास जनानी) पर मौत तक होगा। लेकिन अगर खाना नंबर 8 में या खाना नंबर 4 में चंद्र या सूरज या बृहस्पत हो तो खाना नंबर 8 मौत का घर न होगा यानि कुण्डली वाले की उम्र जरूर लंबी होगी। बाकी बातों में बेशक मंगल बद् का धुंया आता रहे। जो बाद में कोई गिनने गिनाने वाला न होगा। फर्जी बेमायनी सा अंधेरा जमाना होगा।

4) मंगल को सूरज बृहस्पत चंद्र की मदद भी मिल गई होवे। लेकिन अगर सनीचर या मंगल के दुश्मन ग्रहों (बुध केतू लालकिताब सफ़ा 105) का साथ हो जावे तो सब कुछ मिला मिलाया मंगल बद् हो जायेगा।

5) दो पापी (सनीचर केतू, सनीचर राहु) या दो दुश्मन ग्रहों (बुध केतू मुशतरका) के साथ मंगल नेक असर का होगा और दोनों दूसरों से उनका नेक काम लेगा।

6) मंगलबद् का बुरा असर लोगों पर ताल्लुकदारों पर भाई बंदो या मुतलका दुनियादारों पर होता है। मगर खुद कुण्डली वाले पर कभी बुरा असर नहीं मानते। यानि वो लोगों के लिये बुरा असर देगा। मगर खुद अपने लिये बुरे असर वाला न होगा।

7) मंगल बद् और मंगल नेक (हर इक की बनावट जुदी जुदी जगह लिखी गयी है।) बामुकाबिल हों तो मौतें न होंगी। कारोबार रुप्या पैसा वगैरह बरबाद होगा।

8) मंगल बद् नरग्रहों के घरों में वाक्या हो या मंगल बद् और नर ग्रह (सूरज बृहस्पत मंगल नेक) बामुकाबल हों तो अपने हकीकी रिश्तेदारों अपने खून जाती के ताल्लुकदारों और खुद अपनी जान पर भी मंगल बद् का बुरा असर होगा।

9) मंगल बद् हो मखनस मंय पापी ग्रहों (बुध सनीचर) के बामुकाबल या मखनस ग्रहों के

घरों में तो दुनियादारों के बेस्नी रिश्तेदारों (हकीकी नहीं वैसे आम करीबी हो सकते हैं) बुध सनीचर की मुतलका खुद जाती चीजों के माल व असबाब पर मंगल बद का असर माना है। इच्चत दौलत (बीमारी वगैरह) या नीच सनीचर होगा। मंदे हाल।

मंगल बद का इलाज

1) शुतर बेमुहार के कीना के नुकस इसके दिल की बात इसके नाखूनों से जाहिर कर देंगे। क्योंकि इसका दिल या चंद्र नहीं होता। या ऊंट को इसके पांवों के नाखून केतू (कीना) सजा दिलाते हैं या वो केतू के बुरे असर को बरबाद करने के इलाज से काबू होगा या चंद्र की उपासना (पूजा) मदद देगी। यानि चंद्र जिस घर का कुण्डली के मुताबिक हो वही इलाज होगा।

2) चंद्र को शिवजी माना है (लाल किताब सफ़ा 118 ग्रह नंबर 3) मंगल बद को भी शिवजी माना है। (लालकिताब सफ़ा 281 नीचे की दो सतरें 272 ऊपर की दो सतरें) यानि चंद्र व मंगल बद दोनों ही शिवजी माने गये हैं। चंद्र उम्र का मालिक है और हर इक पर मेहरबान होगा। मंगल बद सब के लिये मौत का भण्डारा लिये फिरता है या जहां चंद्र होगा वहां मंगल बद न होगा। जहां मंगल बद होगा चंद्र न होगा। इसी असूल पर मंगल बद का इलाज चंद्र की पूजना या मदद दूढना मुबारिक होगा।

अरमान नंबर 162

बुध

(लालकिताब सफ़ा 277 बुध के ग्रह से मुतलका चीजों की तसवीर) पीले (बृहस्पत) नीले (शुह) मुशतरका सब्ज (बुध) रंग के चौड़े पत्तों के

हरे (जानदार सूखा हुआ नहीं) दखतों पर गले में लाल कंठी वाला तोता (लाल कंठी वाला तोता बृहस्पत की नकल करेगा यानि मंगल बुध से बेशक सोना ना होगा जो बृहस्पत की मलकीयत है। मगर बृहस्पत की नकल या मलम्मा जरूर होगा। खाली टैं टैं करने वाला तोता न होगा।) जो बृहस्पत दोनों जहानों के मालिक (हर दो हवा) गुरु की आवाज की नकल अपनी 35 के हरफों से रंग बिरंग के परोस वाली मैना को सुना रहा है। और जिसके नीचे दूध देने वाली मगर मंगने डाल कर मुंह पर दाढी लटकाये हुए पहाडी व मैदानी बकरा मगर बकरी (दुनिया में दूध देने वाला बकरा मौजूद होता देखा गया है। यानि इसमें बकरे के नर होने के चीजें भी मौजूद और दूध भी देवे।) भेड़ों की तरफ देख रहा है। परिंदों में चमगादड़ के नाम से भी ये बुध जाहर होता है। ग्रह चाल में तोते की 35 में कुण्डली के खाना नंबर 9 को उडाकर अपना भेद खोल गया है। (अरमान नंबर 60 लालकिताब सफ़ा 40) ।

ये बुध का भेद इन्सान और हँवान में अकल का दायरा है। अगर नर्म हुआ तो इतना कि कलई का नाम पाया। अगर ताकत और क्रिस्मत पकडी तो हीरा सब्ज रंग जबान पर रखते ही दम बाहर कर देने वाला हुआ। गोल अण्डा बना तो लेटा हुआ तो नर्म था मगर खडा अण्डा सखत इतना कि मामूली जोर से तोडा न गया। मंगल खून (तमाम मुतलका दुनिया) ने बुध की लडकी को औरत का नाम भी दिया। कि मां पहले थी या धी(लडकी) की दंत कथा हुई। सूरज के आकार के बुध के दायरा की हदबंदी (लडके को तडागी केतू को बुध को खाना नंबर 6 में बांध कर बच्चे के नर हिस्सा की मजबूती) को मालूम करने के लिये सारे आकाश में हवा घूमने लगी। मगर बुध के अकल के दायरा के महत्त इर्द गिर्द की गोलाई की जांच भाल का चक्कर चलने लगा। आसमान व पाताल के दरम्यान आकाश में न मालूम उस मालिक की बनायी हुई कौन कौन सी चीजें जाहरा व बातन में छुपी छुपायी रखी हैं। एक तरफ दिल को मायूस करने वाला खयाल कि :-

"पडे भटकते हैं लाखों दाना, करोड़ों पंडित हजारों सयाने।

जो खूब देखा तो यार आखिर, खुदा की बातें खुदा ही जाने।"

मवज्जन है तो दूसरी तरफ इशारा है। कि-

जिधर देखता हू उधर तू ही तू है।

कि हर द्रौं में जलवा तेरा हू बहू है।

गो तू (वो मालिक) खुद नहीं हैं। मगर तू का जलवा या करिश्मा या अकस जरूर हैं। यानि किस्मत को अपनी मर्जी के मुताबक लिख तो नहीं सकते मगर लिखे को पढने के लिये कोशिश जरूर है। अकल व सुराख बरतने और कुरेदने से घटता नहीं। इल्लत मलौल का नतीजा रह बुत का झगडा गो होता नहीं (रह बुत इकट्टे चलते हुए को हजरते इन्सान माना कहते हैं।) मगर होता भी जरूर है। (वकत रहलत चल जाने के वकत) ये होते हुए भी न होना या बुध का होना कहलाता है।
मां पहले कि धी

लडकी को बुध और माता को चंद्र माना है। माहवारी अय्याम का खून लडकी को माता बनाता है। नर बच्चे में बच्चा पैदा करने के मादे के दिन से लडके (केतू) से बाप (बृहस्पत) कहलाया। केतू व बृहस्पत दोनों दरवेश एक ही हैं। केतू पाताल का मालिक था (खाना नंबर 6) तो राहू आसमान का मालिक (खाना नंबर 12) हुआ। दोनों की दरम्यानी खाली जगह बुध ने संभाल ली पहले आकाश हुआ या बुध लडकी बना तो बाद में पानी आया (चंद्र हुआ) या माता बनी। मतलब ये कि अगर बुध नेक हुआ तो माता धर्मात्मा और नेक हुई। अगर बुध बिगडा तो अकल मारी गयी तो चंद्र रद्दी हुआ और माता गंदी बनी और सनीचर की सांपनी अपने ही बच्चों को खाने लगी।

बुध का दूसरे ग्रहों से ताल्लुक

दृष्टी में साथी - कुण्डली के खानों में अगर बुध पहले घरों में हो तो बुध का असर प्रबल होगा चंद्र पर।

कुण्डली के खानों में अगर चंद्र पहले घरों में हो तो चंद्र का असर प्रबल होगा बुध पर

एक ही घर में मुशतरका बुध व कोई और ग्रह बुध का फल रद्दी होकर दूसरे को बढा देगा।

हर तरह से खाली व अकेला बुध दुश्मन ग्रह के घर की पूरी नेक हालत पैदा कर देगा।

ii) बृहस्पत के साथ राहु हो तो बृहस्पत चुप होगा। मगर बृहस्पत के साथ या बृहस्पत की दृष्टि में बुध हो तो बृहस्पत का नाश होगा। राहु के साथ बुध हो तो दोनों बुध राहु ऊंच और केतू के साथ हो बुध तो बुध घर का मगर केतू नीच होगा। यानि केतू ऊंच होगा बृहस्पत के साथ।

iii) आम तौर पर जिस कुण्डली में केतू कायम या ऊंच हो इस कुण्डली में बुध/राहु नीच या नरग्रहों/स्त्री ग्रहों से घिरा हुआ होगा। (केतू प्रबल)

2) जिस कुण्डली में बुध कायम या ऊंच हो उस में केतू उस में केतू नीच दुर्बल (कमजोर) होगा। लेकिन अगर-

3) दोनों ही एक ही हालत या ताकत के हों तो लडका लडकी (बुध केतू) दोनों ही एक ही ताकत और हालत के होंगे। या जब लडका

और लडकी एक ही बटन से इकट्ठे पैदा हों तो लडका केतू बरबाद या खतम होगा।

4) अगर केतू के घर खाना नंबर 6 में या केतू के साथ बुध होवे तो केतू नीच होगा। बुध नीच न होगा। बल्कि ऊंच होगा।

5) अगर राहु खाना नंबर 12 में बुध के साथ हो तो बुध नीच। लेकिन राहु ऊंच होगा।

6) खत AB बुध की रेखा है। जो शुक्कर के बुर्ज में जा निकलती है। हाथ में यही खत सूरज की तरक्की रेखा कहलाता है।

7) खत DC बृहस्पत की रेखा है जो चंद्र से बृहस्पत में जा निकलती है। और पितृ रेखा कहलाती है।

8) खत BA के नीचे की तरफ की मशलस के ABC के खानों में सूरज या बुध ख्वाह किसी भी घर (3 से 8) में इकट्ठे हों या

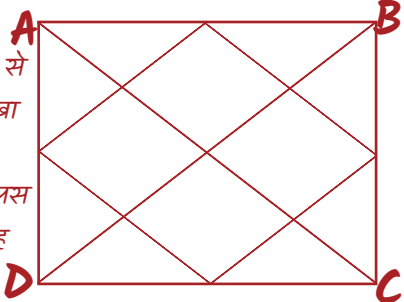
अकेले अकेले हों। बुध मदद देगा सूरज को ऊंच होने में। यानि सूरज नेक होगा।

9) खत BA के ऊपर की तरफ की मशलश ADB के खानों में सनीचर या बुध ख्वाह इकट्ठे ख्वाह जुदा जुदा किसी भी घर में हों (1-2 व 9 से 12) बुध मदद देगा सनीचर को ऊंच फल देने के लिये। या सनीचर नेक होगा।

10) ऊपर की मशलशो में अगर सूरज हो जावे सनीचर वाली मशलशो में और सनीचर हो जावे सूरज वाली मशलशो में तो ऊपर के हिसाब से बुध का ताल्लुक न लेंगें और न ही इस हालत में जब सनीचर मुशतरका हों।

11) मशलश CAD खाना नंबर 1 से 5 और 12 वें खुद बृहस्पत ऊंच होगा और सूरज को मदद देगा। ख्वाह सूरज किसी भी घर में वाक्या हो।

12) मशलश CAD में (खाना नंबर 6 से 1) बृहस्पत ऊंच होगा और मदद देगा सनीचर को ख्वाह



सनीचर कुण्डली में 1 से 5 व 12 किसी भी घर में होवे।

13) बुध जिस राशि में बैठा होवे। अगर उस राशि के घर का मालिक ग्रह धन राशि नंबर 9 में जा बैठे तो शादी और गृहस्थ में इस ग्रह के फल के मंदे नतीजे होंगे जो ग्रह ऐसी हालत का नंबर 9 में बैठा हो (खाह वो बुध का दोस्त हो खाह दुश्मन)। इस मुसीबत के वकत राहु केतू का उपाय इनके अपने अपने दोस्त ग्रहों का मंदा फल हटा कर नेक कर देगा यानि बुध या सनीचर या केतू के लिये राहु का उपाय, शुक्कर या राहु के लिये केतू का उपाय, चंद्र व सूरज बृहस्पत के लिये मंगल नेक का उपाय, मंगल के लिये बृहस्पत का उपाय मगर बुध के लिये अपने फल पर ये शर्त न होगी। (अरमान नंबर 6 बुध नंबर 9 देखें)

बुध का अण्डा

अकल का बीज नहीं मगर अकल की नकल ही बुध का अण्डा है। जो कुण्डली के खाना नंबर 9 में पैदा होता है। ग्रह कुण्डली में।

खडा अण्डा (मैना-आम बकरी) बुध कुण्डली के खाना नंबर 2,4,6 में होगा

लेटा हुआ अण्डा (भेड़) बुध कुण्डली के खाना नंबर 8-10 में होगा

गंदा अण्डा बुध कुण्डली के खाना नंबर 12 में होगा

आम हालत (मां धी) बुध कुण्डली के खाना नंबर 1-7 में होगा

चमगादड़ (किसी चीज का साया या अकस मगर बुध कुण्डली के खाना नंबर 3-9 में होगा

असल चीज जिसका साया या अकस है पता न लगे कि वा कहां है)

दुध वाला बकरा मगर बकरी दाढी वाली बुध कुण्डली के खाना नंबर 5 में होगा

चौड़े पत्तों वाला दरखत। मैना को उपदेश व लाल कण्ठी वाला तोता। बृहस्पत की नकल बुध कुण्डली के खाना नंबर 11 में होगा

बुध की खाली नाली

हर तीसरे घर के ग्रह यानि 1-3 कभी बाहम नहीं मिल सकते। इसलिये बाहम असर भी नहीं मिल सकते। लेकिन अगर बुध की नाली से कभी मिल जावें तो वो बाहम बुरा असर न देंगे। अगर नेक हो जावें तो बेशक हो जावें।

2) शुक्कर बुध दोनों इकट्ठे ही मुबारिक हैं और खाना नंबर 7 दोनों का पक्का घर है। लेकिन जब जुदा जुदा हों और अपने से सातवें पर हों तो दोनों का फल रद्दी। लेकिन जब तक

इस सातवें की शर्त से दूर हों मगर हों दोनों जुदा जुदा तो बुध जिस घर में बैठा हो। वो (बुध) उस घर के तमाम ग्रहों का और उस घर में उनके बैठे हुए होने का अपना अपना असर शुक्कर के बैठे होने वाले घर में नाली लगा कर मिला देगा। यानि दोनों घरों का असर मिला मिलाया हुआ इकट्ठा ही गिना जायेगा। फर्क सिर्फ़ ये हुआ कि शुक्कर अपने घर का असर बुध बैठा होने वाले घर में नहीं ले जाता। मगर बुध अपने बैठा होने वाले घर का असर उठा कर शुक्कर बैठा होने वाले घर में जा मिलाता है। किस्सा कौताह जब कभी शुक्कर के घर का राज हो या राशि नंबर के ग्रह बोलने का वक़्त आ जावे। तो शुक्कर बैठा होने वाले घर में बुध बैठा होने वाले घर का असर साथ मिला हुआ गिना जायेगा। मगर बुध बैठा होने वाले घर के तख़्त की मालकीयत या राशि नंबर के घर के ग्रहों के बोलने के वक़्त अकेले ही उन ग्रहों का होगा। जिन में कि बुध बैठा हो। शुक्कर बैठा होने वाले घर के ग्रहों का असर बुध वाले घर में मिला हुआ न गिना जायेगा।

बुध शुक्कर के इस तरह असर मिलाने के वक़्त अगर बुध कुण्डली में शुक्कर से बाद के घरों में बैठा हो तो बुध का अपना जाती असर बुरा असर होगा और अगर बुध कुण्डली में शुक्कर से पहले घरों में बैठा हो और उठा कर अपने बैठा होने वाले घर का असर ले जावे शुक्कर बैठा होने वाले घर में तो अब बुध का लाया हुआ असर में जाती अपना असर बुरा न होगा। बल्कि भला ही गिना जायेगा। इस मिलावट के वक़्त अगर बुध वाले घर में शुक्कर के दुश्मन ग्रह भी शामिल हों तो शुक्कर इजाजत न देगा कि बुध अपना बैठे होने वाले घर का असर शुक्कर बैठा होने वाले घर में मिला देवे। यानि ऐसी हालत में बुध की नाली बंद होगी और शुक्कर को जब बुध की मदद न मिली तो शुक्कर अब बुध के बग़ैर पागल होगा। लेकिन अगर बुध के साथ वहां शुक्कर के दोस्त ग्रह हों तो शुक्कर कोई स्कावट न देगा। बल्कि बुध को जरूर अपना असर शुक्कर बैठा होने वाले घर में ले जाना पड़ेगा हो सकता है कि ऐसी मिलावट में राहु केतू दोनों ही शामिल हों। (ये हालत सिर्फ़ उस वक़्त होगी जब राहु केतू अपने से सातवें घर होने की वजह से बुध और शुक्कर भी आपस में सातवें घर पर होंगे।) तो मंदा नतीजा होगा। खास कर उस वक़्त जब बुध होवे शुक्कर से बाद के घरों में और साथ ही राहु या केतू का दौरा भी आ जावे और उधर राशि नंबर के घर बोलने वाले हिसाब से दूसरा भी बोल पड़े तो ये वक़्त (जबकि इस मिलावट में राहु केतू शुक्कर बुध

के साथ मिल रहे हैं और राहु केतू का अपना उधर राज या राशि नंबर पर इकट्ठे होने का भी वकत है) कुण्डली वाले के लिये मारग अस्थान का भयानक जमाना होगा। लेकिन अगर ये शर्तें पूरी न हों या बुध होवे शुक्कर से पहले घरों में तो ये मंदा जमाना न होगा। मंदा जमाना सिर्फ राहु केतू के दौरा के वकत का होगा। शुक्कर या बुध के दौरा के वकत ये लानत न होगी।

इस बुध की नाली का खास फायदा मंगल से मुतलका है। बाज वकत मंगल को सूरज की मदद मिलती हुई मालूम नहीं होती या चंद्र का साथ होता हुआ मालूम नहीं होता। इस नाली की वजह से मंगल को मदद मिल जाती है। और मंगल जो सूरज चंद्र के बगैर मंगल बंद होता है। मंगल नेक बन जाता है। इसी तरह ही मंगल बुध बाहम दुश्मन है।

मंगल के बगैर शुक्कर की औलाद कायम नहीं रहती। बुध जब मंगल के साथ होवे। तो वो लाल कण्ठी वाला तोता होगा और खुद उठकर और मंगल को साथ उठाकर शुक्कर से मिला देगा या शुक्कर की औलाद बचा देगा। जिससे कुण्डली वाला ला औलाद न होगा। ऐसी हालत में बुध या शुक्कर के बाहम पहले या बाद के घरों में होने पर बुध के जाती असर की बुराई की शर्त न होगी। भलाई का असर जरूर होगा। क्योंकि मंगल ने शुक्कर के दौरा के पहले साल में अपना असर जरूर मिलाना है। गोया बुध की नाली 100 फीसदी, 50 फीसदी, 25 फीसदी और अपने से सातवें होने की दृष्टी से बाहर एक और ही शुक्कर और बुध की बाहम दृष्टी है और ये है इसलिये कि शुक्कर में बुध का फल मिला हुआ माना जाता है। मिलावट में राहु के साथ होने के वकत जब शुक्कर ने बुध का बाहर ही रोक दिया तो शुक्कर में बुध का फल न मिला तो बुध के बगैर शुक्कर पागल होगा या शुक्कर खाना नंबर 8 के असर वाला होगा। इसी तरह पर शुक्कर के बगैर बुध का असर सिर्फ फूल होगा फल न होगा यानि कौतबाह होगी तो मंगल की बच्चा पैदा करने की ताकत का शुक्कर को फायदा ना मिलेगा।

बुध के दांत

दांत कायम हों तो आवाज अपनी मर्जी पर काबु में होगी। गोया बृहस्पत की हवाई ताकत पर (पैदाइश औलाद) काबू होगा। मंगल भी साथ देगा। यानि जब तक दांत (बुध) न हों चंद्र मदद देगा। "जब दांत न थे तो दूध दिया जब दांत (बुध) दिये तो क्या अन्न(शुक्कर) न देगा।" यानि बुध होवे तो शुक्कर की खुदबखुद आने की उम्मीद होगी। लेकिन जब दांत आकर चले गये।

(और मुहं के ऊपर के जबाडे के) तो अब मंगल बुध का साथ न होगा न ही बृहस्पत पर काबू होगा या उस शरूस या औरत के अब औलाद का जमाना खतम हो चुका होगा। जबकि ये दांत आकर चले गये या खतम हो गये। दांत गये दंत कथा गयी। बृहस्पत खतम तो लाऔलाद हुआ।

अरमान नंबर 163 से 165

सनीचर सूरज के बाहमी झगडे की तरह बुध बृहस्पत की खास दुश्मनी का मुफसिल जिकर अरमान नंबर 125 से 129 में लिखा है।

बृहस्पत राहु (जर्द * नीला) = बुध (सबज रंग) बुध कायम तो शुक्कर चंद्र और मंगल बद का बुरा असर न होगा

मंगल बद व बुध मुशतरका त्र सनीचर नीच फल का होगा। मंगल बुध मुशतरका = कण्ठी वाला तोता बृहस्पत की नकल कर लेगा। बुध अपनी नसफ म्याद तक जुदा असर जाहिर न कर सकेगा। मंगल को बुध मंगल बद बनायेगा। जब मंगल पहले ही बद हो। यानि सूरज की मदद मंगल को न हो। वर्ना बुध चुप होगा। खुफिया दुश्मनी करेगा।

बुध शुक्कर = मशनोई सूरज बुध सूरज मुशतरका का पूरा नेक असर औरत पर होगा।

बुध राहु बाहम दोस्त हैं। शुक्कर बुध की तरह जब इकट्टे हों तो मुबारिक। अगर जुदा जुदा होकर द्रुष्टी में आ मिलें तो दोनों का ही फल रद्दी होगा। कुण्डली में जब बुध बाद के घरों में हो और बृहस्पत होवे बुध से पहले घरों में तो उम्र के पहले 34 साल तक बृहस्पत का असर नेक होगा। जिस दिन 34 साल के बाद बुध शुरू होगा बृहस्पत का असर मंदा हो जायेगा। अगर उल्ट हालत में हों तो नतीजा उल्ट होगा।

बुध शुक्कर का दोस्त है। लेकिन मंगल के साथ हो जावे तो शुक्कर को शेर के दांत दिखा देगा या शेर गाय पर हमला कर देगा। हालां कि मंगल शुक्कर दोस्त है। अकेला बुध हर तरफ से खाली। बगैर धूप जंगल होगा। देस परदेस की जिदगी और लालच का सबब होगा। ऐसा बुध अपनी नसफ म्याद या 17 साल तक कोई भी बुरा या भला असर न देगा। मगर तजारत में फायदा ही रहे। राहु केतू जब अकेले ही हों और बुध किसी एक के साथ हो जावे तो माँत की निशानी होगी। खासकर जब बुध या राहु या केतु का दौरा और वकत होवे।

बुध का तमाम ग्रहों से ताल्लुक

ग्रह	सूरज	चंद्र - शुक्र	बृहस्पत	मंगल	राहु	केतू	सनीचर
ताल्लुक होगा बुध का मानिद	पारा	दही में पानी A*	राख	शेर के दांत	हाथी का सूंड	कुत्ते की दुम	कलई

A* दही से पानी निकालना हो तो दही पर (शुक्र पर) कपडा (चंद्र) रख दें और ऊपर (कपडे के) राख (बुध) बिछा दें। दही खराब न होगा। बल्कि पानी सब राख पी जायेगी। यानि बुध चंद्र को खा लेगा। मगर शुक्र को जरा भी खराब न होने देगा।

सूरज को अगर बंदर मानें तो बुध इसकी दुम होगा। लंगूर की दुम के काम मशहूर हैं। केतू कुत्ते की दुम ने कुत्ते को पागल किया। जिस कुण्डली में बुध नीच हो केतू का फल भी पागल कुत्ते की तरह मंदा होगा।

बुध का भेद

(अलफ) अरमान नंबर 181 के मुताबिक जब कुण्डली हर तरह से मुकम्मल हो और खाना नंबर 1 का हिंदसा देकर हर तरह से बात खतम हो चुकी हो तो बुध का खास भेद या बुध की तबीयत देखने के लिये मुदरजा जैल असूल होगा।

9 ग्रह कुण्डली के किसी न किसी घर में ख़ाह अकेले अकेले या अकेले अकेले घरों में ख़ाह एक ही घर में कई एक या आइ इकट्ठे ही हों (राहु या केतू अपने से सातवें के असूल पर होने की वजह से दो में से एक जरूर बाहर रह जायेगा) तो हरएक की अपनी ताकत बामुजब अरमान नंबर 27 की मिकदार को ख़ाना नंबर के हिंदसा जिस में कि वो ग्रह बैठा होवे। जरब दे दे कर नाँ ही ग्रहों के जवाब का मजमूया (जोड) कर 9 पर तकसीम करें। अगर :-

1) बाकी कुछ न बचे तो बुध का स्वभाव उस कुण्डली के ख़ाना नंबर 5 में बैठे हुए ग्रह का होगा। अगर ख़ाना नंबर 5 ख़ाली ही होवे तो जिस घर में सूरज हो और जैसा उस घर में वो (सूरज) हो वैसा ही बुध होगा।

2) अगर कोई न कोई कसरों का हिंदसा बच रहे तो उस कसर की मिकदार के लिये अरमान नंबर 27 में जो ग्रह मुकर्रर हैं। वह ग्रह कुण्डली में जहां बैठा हो। उस ग्रह की ताकत व स्वभाव का बुध होगा। ये स्वभाव बुध का जाती स्वभाव होगा। जैसा कि सनीचर का जाती स्वभाव। (अरमान नंबर 168 राहु केतू के सनीचर के पहले या बाद के घरों में होने पर) मुकर्रर हैं।

नाम ग्रह	बृहस्पत	सूरज	चंद्र	शुक्र	मंगल	बुध	सनीचर	राहु	केतू	मिजान
कुंडली में घर का है	4	3	6	5	5	3	12	2	8	
ग्रह की ताकत	6/9	9/9	8/9	7/9	5/9	4/9	3/9	2/9	1/9	45/9 = 5
खाना नंबर के हिंदुओं को ग्रह की ताकत से जरब	24/9	27/9	48/9	35/9	25/9	12/9	36/9	4/9	8/9	219/9 =

कुल मिजान 24 $\frac{3}{9}$ में से पूरे पूरे हिंदसे छोड़ दें तो 3/9 बाकी रहा। जो सनीचर की ताकत है। जो खाना नंबर 12 में बैठा है। ये हुआ बुध का स्वभाव यानि बुध खाना नंबर 3 में अकेला बैठा है। वो खाना नंबर 12 में बैठे हुए सनीचर के स्वभाव का है और अरमान नंबर 168 के मुताबक ऊपर दी हुई कुण्डली में (पहले घरों में राहु बाद में केतू और आखर पर सनीचर) सनीचर का जाती स्वभाव "खराब" फल का है। इसलिये जब बुध का वकत होगा सनीचर दोगुना मंदा फल देगा। क्योंकि बुध व सनीचर दोनों ही खराब स्वभाव के हैं।

(बे) बुध का स्वभाव जिस ग्रह से मिलता हो उपाय उस ग्रह व बुध दोनों को मिला कर करना होगा।

2) खाना नंबर 3 या 9 के बुध के लिये अरमान नंबर 178 में लाल गोली की मदद लेवें। मगर खयाल रहे कि अगर बुध नेक स्वभाव साबित होवे तो लोहे की बजाये शीच्चे की गोली लेवें। जिस पर या जिस में वो रंग करें या शामिल होवे जो रंग कि उस ग्रह का है। जिस ग्रह के स्वभाव का कि बुध ऊपर के ढंग का साबित हुआ होवे।

खाना नंबर 12 के बुध के लिये नष्ट ग्रह वाले की मदद (अरमान नंबर 62/94 बजज 92) का इलाज या केतू (कुत्ता रंग बिरंग रयाह सफेद मगर सुर्ख न हो) का कायम करना मुबारिक होगा।

"असल बुध"

असल बुध खाली खलाव, सफेद कागज, शीच्चा और फटकडी होगा। जब इस पर जरा सी मैल या किसी भी और ग्रह का ताल्लुक हुआ तो इस की गोलाई का मरकज मालूम करना एँसा ही मुशकिल होगा जैसा कि जमीन का महर मान लेना। इसलिये इसकी जांच मुकम्मल कर लेना जरूरी होगी।

अरमान नंबर 166-167

ग्रह	खाना नंबर	असर	ग्रह	खाना नंबर	असर
बुध	सनीचर	वही असर जो बुध खाना	बुध	2	16 से 19 साला उम्र के
बामुका	नीच	नंबर 2 व बृहस्पत खाना	बृहस्पत	6/7	दरम्यान न सिर्फ पिता की उम्र खराब करे। बल्कि उस का तोशा भी बरबाद करे।
बिल					ला.की. 150/16
बुध	बृहस्पत	नंबर 6 का है।			
बामुका			बुध	3	ऊंच फल और धूप के बगैर
बल			दुष्टी	खाली	जंगल होगा। पहली बहन होगी और मुबारक असर की। दिमागी खाना नंबर 39 मंगल से मुशतरका।
बुध	1	दिमागी खाना नंबर 37			वजह सबब की ताकत का मालिक हो।
दुष्टी	खाली	सनीचर से मुशतरका राग का मालिक। सूरज का असर नेक होगा। मगर खुद बुध का अपना असर तजारत हिकमत सब्ज रंग वगैरह सब मंदे फल देवें। लालची देस परदेस में घूमने वाला तोता चश्म होगा। खाली सिर के ढांचा का ही मालिक होगा।	दुष्टी	खाना	नंबर 9 के सब असर को बेबुनियाद करे और वहां कोई भी ग्रह हों। वो भी बेबुनियाद होंगे।
बुध	1	नशेबाजों का सरदार।	बुध	3	मंदा फल होगा।
चंद्र	7	जबान के चसके का मारा	चंद्र	5	
बुध	3	दोनों घरों का दुश्मनाना	बृहस्पत	9	हुआ।
बुध	1	औलाद के बिघ्न।	मंगल	बंद 5/11	और मंदा फल हो।
राहु	1		बुध	3	न सिर्फ कुण्डली के खाना
बुध	2	दिमागी खाना नंबर 38	चंद्र	11	नंबर 3 (आई बंद) का मंदा फल होगा बल्कि बाकी 3
दुष्टी	खाली	बृहस्पत से मुशतरका जबानदानी। इच्छत मान का सरोवर। नेक असर।			बचने वाले मकान का

ग्रह	खाना नंबर	असर	ग्रह	खाना नंबर	असर
बुध	3	उमदा असर (ला.की. सफा			असर। दिली ताकत
चन्द्र	11	80 जुज 8) भी (अगर कोई			निकम्मा खुदकशी।
जारी		ऐसी जदी हो भी) हर तरह			राजयोग 280/6
		से जायल और खराब	बुध	4	ला.की. 285/12
		होगा।	सूरज	5	राजयोग
बुध	3	सिर की श्रेष्ठ रेखा होगी।	बृहस्पत	9	
शुक्र	कायम	चंद्र नीच का बुरा फल न	कायम		
दृष्टी	खाली	होगा।	बुध	5	दिमागी खाना नंबर 4।
बुध	3	सिर की श्रेष्ठ रेखा का	दृष्टि	खाली	सूरज से मुश्तरका। इंसानी
शुक्र	रही	उमदा असर तो होगा।			खसलत उमदा। आँलाद का
दृष्टी	खाली	लेकिन अगर चंद्र नीच			बुरा असर न होगा। न ही
		होवे तो रही चंद्र का बुरा			मकान का जदी असर जो
		फल होने से न रुकेगा।			बाकी 5 बचने वाले मकान
		सिवाय साँतेली माता			का होता है (ला.की. सफा
		कायम होने के।			8। जुज 10) खराब होगा।
बुध	3	औरत व आँलाद का फल	बुध	5	जवानी (34 साल उम्र के
शुक्र	4	बहुत देर बाद (34 साल	सूरज	9/3	बाद) में किस्मत जागेगी।
		बाद) उमदा होवे।	बुध	5	उमदा फल होगा।
बुध	3	बुध दोनों ग्रहों का फल रही	चंद्र	3	
सूरज	9	करे निहायत बुरी जिदगी	बृहस्पत	9	
सनीचर	11	होगी।	बुध	5	दोनों ग्रहों का अपना
बुध	3	ला.की. 295-296/2 बी	चंद्र	11	अपना असर होगा।
सनीचर	7		बुध	6	पाँदे लगा हुआ उमदा फूल।
बुध	4	दिमागी खाना नंबर 40	दृष्टी	खाली	बुध का जाती असर।
दृष्टी	खाली	चंद्र से मुश्तरका। मुहब्बत			दिमागी खाना नंबर 42
		के तीनों हिस्से। मुकाबला			रजामंदी का मालिक होगा।
		एक चीज का दूसरी से।			खरबूजा को देख खरबूजा
		कुंभ पानी का खाली कोरा			रंग बदलने की ताकत
		घडा उमदा शगुन की तरह			होगी। पहली आँलाद
		माली नेक			लडकी होगी। मुबारिक

ग्रह	खाना नंबर	असर	ग्रह	खाना नंबर	असर
बुध दृष्टि जारी	6 खाली	असर की। ऊंच फल या घर का बुधा। खाना नंबर 2 के ग्रहों के दृष्टी के ताल्लुक से फैंसल होगा। ऊंच फल का साबित होने पर उत्तम फल। यानि ला.की. 216/19अलफ, 283/1 व 280/6	बुध सनीचर	6 9/11	झगडों का फैंसला हक में होवे। ला.की. 283/1 औरत अमीर खानदान से और खुशनसीब होवे।
बुध जब और	6 उंच हो	राजयोग बजरिया कागजी कारोबारा। छापाखाना वर्गैह अज पबलिक। मगर नेक और ईमानदारी	बुध मंगल	6 4/8	माता बचपन में ही गुजर जावे। वर्ना दोनों दुखिया ला.की. 281/7
बृहस्पत या सनीचर	कायम कायम	का धन साथ देवे। जायदादी फल उमदा। सनीचर के फल नतीजे।	बुध दृष्टि	6 खाली	मिसल राजा। स्त्री व औलाद दोनों का फल बहुत देर बाद नेक होगा। खासकर बुध की उम्र 34 साल के बाद अच्छा होगा। वीरान जंगल चरिदों से खाली। रूखी हालत की
या सूरज	कायम	अज कलम खुदा। राज दरबार सूरज का पूरा नेक असर। मगर नेक व ईमानदारी का धन साथ देवे।	बुध चंद्र	7 1	गृहस्थ या कल्लर जमीन होगी। रेगिस्तान हो सकता है। जिसमें चिकनी मिट्टी का निशान न हो। समुंद्र पार लंबे लंबे सफरों के नेक नतीजे होंगे।
बुध शुक्कर	6 6	रेत को सीमेंट बनादे। लडके न होंगे। मगर लडकीयां ही मशनोई सूरज की तरह उत्तम फल देगी।	बुध सनीचर	7 10	औरत अमीर खानदान से और खुशनसीब होगी।
बुध शुक्कर दृष्टि	6 कायम खाली	सिर की श्रेष्ठ रेखा का उत्तम असर। चंद्र का बुरा फल न हो सकेगा। अगर शुक्कर रही तो चंद्र का बुरा असर (जबकि चंद्र भी रही हो रहा हो) सिर्फ माता की जान पर हो सकेगा।	बुध दृष्टि	8 खाली	मामू खानदान सफाचट होगा। बहिनों पर भी मंदा हाल होगा। मगर भाइयों पर कोई ताल्लुक नहीं गिनते। पौंदे से टूटा हुआ फूल होगा। ला.की. 269/4

ग्रह	ख़ाना नंबर	असर	ग्रह	ख़ाना नंबर	असर
बुध	8/12	माता से पहले ही बचपन में गुजर जावे। वर्ना दोनों दुखिया होंगे।	बुध	10	समुंद्र पार लंबे सफ़रों के
मंगल	6	ला. की. सफ़ा 281/8-9	चंद्र	4	बजरिया/मुतलका नेक नतीजे होंगे।
लेकिन	चंद्र या		बुध	11	एँजना।
सूरज	का		चंद्र	5	
ताल्लुक	न होवे		बुध	11	चंद्र के वक़्त बाकी 3
बुध	8	पिता की उम्र ख़तम करने के इलावा (ख़ुद अपनी 16 से 19 साला उम्र तक) इस का तोशा भी ख़राब करे।	चंद्र	3	बचने वाले मकान की हालत की तरह (ला.की. सफ़ा 80 जुज 8) का किस्मत का हाल होगा।
बृहस्पत	2	बहिन, भुआ, मामू तबाह। तमाम ही ग्रहों व ख़ाना नंबर 9 का असर जायल। सब की जड में पारा डाले। ख़्वाह वो बुध के दोस्त हों ख़्वाह दुश्मन। मगर सूरज मंगल दोनों ही बुध के साथ ख़ाना नंबर 9 में हों तो बुध दोनों के मुकाबला पर चुप होगा और उनको भी सोये हुए बना लेगा। मगर जड ख़ाली न करेगा न बोलेगा और न ही उनको बोलने देगा। लसूडे की गिटक सा जमाना होगा। (नेज अरमान नंबर 6 देखें) ला.की. 145/4-5 व 163/17	बुध	12	ख़ाना नंबर 6 का कुल असर और ख़ाना नंबर 6 के तमाम ग्रहों का असर (ख़्वाह बुध के दोस्त हों ख़्वाह दुश्मन) बुरा कर देवे। कुत्ते की दुम की तरह टेढा रहे और हाथी की सूंड की तरह कीचड फँके। दीवाना या हडकाया कुत्ता या वो कुत्ता जिसकी दुम बाहर की तरफ और मुहं काटने के लिये अपने ही मकान की तरफ हो। दुम अलहँदा काट देने के बाद सांप की सिर्फ सिरी या सिर जिसको मारना ही मुश्किल हो जावे। मतलब ये कि कुण्डली वाले के लिये ख़ाना नंबर 6 का (ख़्वाह कोई भी ग्रह हो)
बुध	9				
	10	सनीचर की जायदाद उमदा। जवान का चसका ख़राबी का सबब होगा अपनी जात			

ग्रह	खाना नंबर	असर	ग्रह	खाना नंबर	असर
बुध	12	के लिये बुरा असर होगा।	बुध	12	बेएँतबारी। मंदे काम।
जारी	या	अपनी जान पर खाना नंबर 6 का बुरा असर पैदा करने के लिये खाना नंबर 6 वालों को बरबाद करेगा। लेकिन अगर वो ग्रह खाना नंबर 6 में बुरे असर कर देने वाले हों तो उनके मुतलकीन का मदद देगा। मगर गरीबी का साथ न देगा। और अमीरी का भी उसे अपनी जान के लिये कोई भी फायदा न होगा।	सनीचर	6	जायदाद उडा देवे।
बुध	12	राहु का फल रही होगा।	बुध	12	राजदरबार की आमदन के
राहु	6		सूरज	6	इलावा राज दरबार का ताल्लुक खराब कर देवे।
बुध	12	केतू का फल रही होगा।	बुध	12	पिता की उम्र बरबाद और
केतू	6		बृहस्पत	6	खत्म के इलावा पिता का तोशा तक भी खराब करे।
बुध	12	शुक्कर खुद नीच होता है।	बुध	12	माता भाग रही। खुदकशी
शुक्कर	6	बुध व शुक्कर दोनों का दोनों घरों का फल रही होगा।	चंद्र	6	तक नौबत मगर बवजह गरीबी न होगी।
			बुध	12	मंगल का बुरा फल और
			मंगल	6	रही हालत कर देगा। बहन भाई मौत के यम होंगे।
			बुध	12	माता बचपन में गुजर जावे।
			मंगल	4	वर्ना दोनों दुखिया।

अरमान नंबर 168 ता 170

सनीचर

ये ग्रह पापीयों के टोले का मालिक और अपनी ताकत में अकेला सानी है। अगर ये गर्क करने में बदनाम हुआ तो एक ही लम्हा में तारने वाला भी जरूर है। शुक्कर को गाये और सनीचर को भैंस माना गया है। शुक्कर केतू का दोस्त है और केतू सनीचर का एँजंट है। सनीचर व केतू = सनीचर को भैंसों (लालकिताब सफ़ा 118 ग्रह नंबर 7) केतू को कुत्ता माना है भैंसों का कुत्ता। केतू को गाय (लालकिताब सफ़ा 118 ग्रह नंबर 9) शुक्कर को मिट्टी और गोबरा।

गाय का गोबर। काम देव की नाली केतू को माना गया है। गाय को सब गऊ माता कहते हैं और सनीचर को किसी ने अच्छा नहीं कहा। गाय बैल की सिफत से हमें कोई मतलब नहीं। इल्म सामुद्रक के ग्रह केतू के ताल्लुक में हमें देखना है कि कामदेव का कौन कीडा है। गाय का बच्चा जवान हुआ कामदेव की ताकत पैदा हो जाने पर वो अपनी माता को पहचान नहीं सकता या शुक्कर कामदेव (केतू) की दोस्ती में सब कुछ भूल जाता है। मगर सनीचर की भैंस के बच्चे ने जवानी में काम देव के वकत अपनी मां को पहचान लिया।

मतलब ये कि सनीचर गो बदनाम है। मगर कामदेव का कीडा नहीं है। केतू को लडका भी माना है। हर इक अपने बच्चे को बचाता और पालता है। मां बच्चे की मुहब्बत सब को मालूम है। मगर सांपनी (सनीचर को सांप भी माना है। सांप की मादा को सांपनी कहते हैं) अपने बच्चों को खा जाती है। केतू को सूअर माना है। जो गोली लगने के वकत गोली चलने की जगह आकर दम देगा। मगर सनीचर मार पडने या मार करने के वकत चारों तरफ चल जाता है। मंगल का शेर भी पानी में तैरते वकत सीधा तैरता है और खुंखारी के वकत राहू के हाथी को चुप करा लेता है। मगर सनीचर के सामने अपना फल सनीचर को ही दे देगा। बुध तो सनीचर के लिये है ही अपना साथी। सांप के जहर के मालिक सांप के दांत ही तो सनीचर की जहर का काम करते हैं। सनीचर इतना रहम दिल भी है कि अक्वल तो इसने शुक्कर को जिस ने किसी को नीच नहीं किया। मदद देने के लिये अपना दोस्त बनाया है। जिसमें केतू कामदेव भरा हुआ है। मगर सनीचर ने मंगल के घर खाना नंबर 3 में जहां कि सब ग्रह धन दौलत के मालिक होते हैं। अपने लिये दौलत रखने का श्राप ले लिया है और एँवज में खुद मंगल को अपने घर खाना नंबर 10 में राजा की दौलत बखशी है। बृहस्पत दोनों जहानों का मालिक होते हुए सनीचर के घर खाना नंबर 10 में नीचताई के काम करता है। नीच कहलाता है और मंदा फल देता है। मगर सनीचर बृहस्पत के घरों में कभी बुरा फल न देगा। सूरज इतना बलवान है कि कोई उसका रास्ता नहीं बदला सका। मगर सनीचर जो सूरज का लडका माना है। जब अकेले सूरज के साथ आ बैठे तो बुध की तरह खाली मैदान कर देगा। मगर अपनी बुराई की पूरी ताकत बरतेगा। लेकिन अगर सूरज अपने साथ बृहस्पत को ले बैठे और सनीचर को भी वहां आना पडे तो सनीचर अपनी ताकत से दोनों ही सूरज बृहस्पत के बल को बरबाद कर देगा और एँसा मारेगा

कि दोनों का निशान न मिले। हालांकि बृहस्पत के सामने ये बुराई नहीं करता। जिस कदर सनीचर के मुकाबला पर इसके दुश्मन ग्रह तादाद में बढ़ते जावें। सनीचर अपने रास्तों को बढ़ाता जायेगा। ये खुद बुराई नहीं करता। बल्कि उसके ऐंजंट राहू केतू बुराई वालों के काम इस के पास फँसले के लिये लाते हैं। बुरे कामों का नतीजा बुरा ही होता है। बुरा ही फँसला करना हो इसीलिये ही बदनाम है।

मकान

(सनीचर जब राहू केतू के ताल्लुक से नेक असर का साबित हो और राहु या केतू के साथ ही बैठा हो तो मकानात बनेंगे। जब राहु केतू के साथ ही मगर बुरे असर का हो तो बने बनाये मकानात भी सब बरबाद और बिकवा देगा।)

सनीचर का सांप सब को डंग मारता है। मगर इकलौते लडके (सूरज) और हामला औरत के सामने खुद अंधा हो जाता है। हालां कि बीनाई का ये खुद मालिक है। सनीचर मकानों का मालिक है मगर सनीचर का सांप त्यागी होने का सबूत देता है। सांप कभी अपना बिल बना कर नहीं रहता। सूरज का बंदर भी अपना घाँसला नहीं बनाता। मगर जरूरत के वकत सांप को सनीचर की जमीन खुदबखुद ही फट कर पनाह दे देती है। सनीचर के काले कीड़े लाख उपाय करें अपने भौन की जगह नहीं बदलते। लेकिन जरा सा दूध डालने लगो वो कीड़े खुदबखुद चले जायेंगे। दूध चंद्र का है चंद्र माता है। सनीचर माता को पहचान लेता है। मगर माता इसके पास नहीं रहती। वो इसके घर में नीच फल देगी। चंद्र खाना नंबर ४ में जहां की सनीचर का हैडकवाटर है मंदा फल देता है। मगर उम्र लंबी होती है। जो चंद्र की आशीर्वाद है। जो वो माता सनीचर को भी बखश देती है। इसीलिये उम्र के मालिक चंद्र ने सनीचर के सांप और कौवे की उम्र लंबी की है। मौत के वकत का हाल तरसा तरसा कर मारना मंगल बद ने संभाला है। सनीचर अगर मारेगा तो तरसायेगा नहीं। फौरन फँसला कर देगा। मार देगा या बरी कर देगा। सनीचर पाताल का मालिक है। बृहस्पत तो डर के मारे जर्द रंग होकर साधू ही बन गया है और सूरज जो सनीचर का बाप माना गया है। सनीचर के दोस्त शुक्कर की मिट्टी या अपने दोस्त चंद्र की धरती माता पर कभी भूले से भी नहीं आता। किस्सा कौताह सनीचर का डर जरूर है और इसके फँसला का ऐंठबार नहीं कि सजा क्या देगा। राहु केतू पोल खोल देंगे। सनीचर का फल अच्छा होगा या मंदा। राहु केतू के ताल्लुक से जाहर हो जायेगा।

ग्रहों की कुरबानी के बकरे

सनीचर :- दुश्मन ग्रहों से बचाव के लिये सनीचर ने अपने पास राहु केतू दो ऐसे ग्रह ऐंजंट बनाये हुए हैं कि वो सनीचर की जगह फॉरन दूसरे की कुरबानी दिला देते हैं। राहु केतू मुशतरका को मशनोई शुक्कर माना है। इसलिये जब सनीचर को सूरज का टकराव तंग करे तो वो अपनी जगह शुक्कर औरत को मरवा देता है या सूरज सनीचर के झगडे में औरत मारी जावेगी या ऐसे कुण्डली वाले की औरत पर उन दोनों ग्रहों की दुश्मनी का असर जा पहुंचेगा। न सूरज खुद बरबाद होगा न सनीचर क्योंकि वो बाहम बाप बेटा है।

सूरज खाना नंबर 6 सनीचर खाना नंबर 12 = औरत पर औनत मरती जावे।

चंद्र सनीचर राहु = औरत को सुख हलका या औरत बरबाद हो।

बुध :- बुध ने भी अपने बचाव के लिये शुक्कर से दोस्ती रखी है। वो भी अपने दोस्त शुक्कर को ही अपनी बला में डाला करता है या डाल देगा। चंद्र बुध मुशतरका - बकरी दूध देगी मैंगने डाल कर। दरिया में रेत दूध में मिट्टी। चंद्र बुध इकट्टे हों तो मरेंगे मामु।

मंगल :- मंगलबद (भाई) अपनी बला केतू (लडके) पर डालता है। शेर कुत्ते को मरवा देगा।

सूरज खाना नंबर 6 मंगल खाना नंबर 10 - लडके पर लडका मरता जावे। (भाई भतीजे को मरवाये)

शुक्कर :- शुक्कर (औरत) शैतान स्वभाव। खुद अपनी बला कुण्डली वाले की माता पर जा धकेले।

चंद्र शुक्कर बामुकाबल - माता अंधी होवे।

बृहस्पत :- बृहस्पत ने अपना साथी केतू ही कुरबानी के लिये रखा है। बृहस्पत हो खाना नंबर 5 में और केतू किसी और घर में अब अगर बृहस्पत की महादशा आ जावे तो केतू के खाना नंबर 6 का फल रद्दी होगा। औलाद का नहीं जो खाना नंबर 5 की चीज है। मामु को केतू की महादशा 7 साल तकलीफ होगी।

राहु - केतू :- खुद अपना आप निभायेंगे ।

सूरज और चंद्र के लिये उनके अपने अपने हाल में दर्ज है।

नोट:- मंगल और बृहस्पत इन्साफ के मालिक होते हुए दूसरे की तो मदद करेंगे और नाजायज तौर पर एक को दूसरे पर ज्यादाती करते नहीं देख सकते। मगर जब खुद ही मुसीबत में हों तो गरीब केतू को मरवाते हैं।

सनीचर का अपने ऐंजंट के साथ होने पर अपना जाती असर यानि सनीचर का अपना स्वभाव इस कुण्डली वाले के लिये और खुद सनीचर के खाना नंबर 10 की चीजों पर क्या असर देगा।

पहले घरों में हो	दरम्यान में हो	आखरी घरों में हो	सनीचर का असर होगा	कैफियत
राहु	सनीचर	केतू	खराब	पहले दरम्यानी और बाद के घरों से
केतू	सनीचर	राहु	नेक	कुण्डली के एक दो तीन से हद 12
राहु	केतू	सनीचर	खराब	तक की गिनती के हिसाब से
केतू	राहु	सनीचर	नेक	पहला दरम्याना आखरी घर होगा।
सनीचर	राहु	केतू	खराब	यानि 3-5-7 नंबर के घरों में 3 पहला
सनीचर	केतू	राहु	नेक	घर, 5 दरम्यान और 7 आखरी खाना
राहु केतू		सनीचर	सनीचर का	होगा। सनीचर केतू मुशतरका और
			अपना खराब	राहु मुकाबला पर हो तो सनीचर केतू
सनीचर		राहु केतू	सनीचर का	का फल उमदा और नेक होगा। लेकिन
			अपना नेक	अगर कोई भी तीसरा ग्रह सनीचर केतू
राहु		सनीचर केतू	खराब	मुशतरका होने वाले घर में शामिल हो
सनीचर केतू		राहु	सनीचर का	जावे तो सनीचर केतू दोनों का ही मंदा
			अपना नेक	असर होगा।
सनीचर राहु		केतू	खराब	
केतू		सनीचर राहु	नेक	

नर ग्रहों में से किसी अकेले अकेले के साथ बैठा हुआ सनीचर कभी जाहिरा बुरा फल न देगा। लेकिन जब सनीचर के साथ या मुकाबला पर दो (कोई दो) नर ग्रह शामिल हो जावें। तो सनीचर बुरा फल देगा। जब दो से ज्यादा जितने ग्रह बढते जावें ख़ाह वो सनीचर के दोस्त हों या दुश्मन। सनीचर बुरा ही फल देगा। अकेला सनीचर अकेले सूरज के साथ या सूरज के पक्के घर में खाली बुध का असर देगा। यानि न सूरज का असर होगा न सनीचर का। अंधेरा और रौशनी मिली हुई खाली हवा होगी।

बृहस्पत के साथ या बृहस्पत के घरों खाना नंबर 9-12-2 में सनीचर कभी बुरा फल न देगा। बल्कि उमदा फल देगा। सनीचर के पहले घरों में सूरज होवे तो दोनों का असर अपना अपना मौका के मुताबिक बढसतूर होगा। लेकिन अगर सनीचर पहले घरों में और सूरज बाद के घरों में तो सूरज का असर जरूर खराब होगा। सूरज की रौशनी तो होगी मगर

स्याही से भरी हुई। इन दोनों की दुश्मनी से शुक्र का फल रद्दी होगा। खाना नंबर और 12 में उल्ट होगा। खाना नंबर 6 में सूरज और 12 में सनीचर तो औरत पर औरत मरती जावेगी।

सनीचर का दूसरे ग्रहों से ताल्लुक

खाना नंबर 3 या 7 में (लालकिताब सफ़ा 194/14 और 194/17-20 में मुफसिल लिखा है)

सनीचर देखता हो सूरज को - जिस्मानी कमजोरी।

25 फीसदी पर - स्कूलों के इल्म के इलावा इल्म रियाजी भी होगा।

50 फीसदी पर - इल्म मकानात सनीचर की मुतलका चीजें।

दोनों बाहम मुशतरका हों तो बुध के बराबर मगर दोनों बामुकाबल तो मंगल बढ़ के बराबर होंगे।

अरमान नंबर 171 ता 174

उम्र कितने साल होगी- (मुद्रवा जैल के इलावा लालकिताब में लिखी हुईं शर्तें और होंगी)

उम्र साल होगी	ग्रहों का ताल्लुक	उम्र साल होगी	ग्रहों का ताल्लुक
12 दिन	जब चंद्र खाना नंबर 5 में सूरज खाना नंबर 10		शुक्र केतू दोनों बरबाद या नष्ट।
12 महीने	सूरज सनीचर मुशतरका बृहस्पत के घरों में।	30 साल	बुध बृहस्पत नंबर 2 या राहु बृहस्पत नंबर 3
9 साल	सूरज चंद्र खाना नंबर 11 में।	35 साल	चंद्र बुध राहु मुशतरका।
10 साल	चंद्र केतू खाना नंबर 1 में।	40 साल	राहु हो बृहस्पत के साथ खाना नंबर 9 या 12 में।
12 साल	चंद्र नं 5 और सूरज नंबर 11		
15 साल	चंद्र राहु खाना नंबर 1 में।	45 साल	बुध केतू 12 या राहु बृहस्पत नंबर 6
20 साल	बृहस्पत राहु नंबर 2 या बुध बृहस्पत नंबर 6	50 साल	चंद्र राहु नंबर 5
22 साल	सूरज राहु नंबर 10 या नंबर या 5 में।	56 साल	चंद्र राहु बुध खाना नंबर 2 11 में।
25 साल	चंद्र राहु नंबर 6 में या मंगल बढ़ और साथी।	60 साल	चंद्र बुध नंबर 2

उम्र साल होगी	ग्रहों का ताल्लुक	उम्र साल होगी	ग्रहों का ताल्लुक
70 साल	केतू बृहस्पत नंबर 9 या सनीचर केतू नंबर 6 में या सनीचर चंद्र न 7 में।	100 साल 120 साल	5) चंद्र सूरज बृहस्पत कायमा। चंद्र बृहस्पत खाना नं 12 में। अल्प आयू 8X8 कुल 64 व्यादा से जयादा 8 दिन महीने साल हर आठवां साल मंदा जहमत व खतरा जान। जानवरों से खतरा मौत होगा।
75 साल	चंद्र राहु मुशतरका नं 9में।		1) बृहस्पत बहुत से दुश्मन ग्रहों से घिरा हो।
80 साल	चंद्र बृहस्पत नंबर 4 में।		2) खाना नंबर 9 में बुध बृहस्पत शुक्कर।
90 साल	चंद्र कायम नं 10 या नंबर 11 में		3) खाना नंबर 9 में बुध बृहस्पत के बहुत से दुश्मन।
100 साल	केतू बृहस्पत खाना नंबर 12 में और चंद्र कायमा या 2) चंद्र बृहस्पत खाना नं 5 में। 3) मंगल नंबर 1-2-7 सूरज नंबर 4 4)जर ग्रह कायम या चंद्र को मदद दे रहे हों।		4) चंद्र राहु नंबर या नंबर 8 में।

बामूजब चंद्र लालकिताब सफा 320 जुज नंबर 9 अगर चंद्र राहु मुशतरका होकर किसी भी राशि में हों तो जुज नंबर 9 में दी हुई उम्र के सालों की तादाद नसफ हो जायेगी। हर राशि के लिये - बशर्तेकि ये दोनों मुशतरका हर तरह से अकेले। दृष्टी से खाली और कुण्डली के पहले घरों में हों। मौत न होवे तो करीब अलमर्गी जरूर होगा।

मौत का बहाना

लालकिताब सफा 316 से मिलाकर पढने से बृहस्पत रेखा का ताल्लुक भी जाहिर हो जायेगा इल्म ज्योतिष से

ग्रहो का ताल्लुक	मौत का बहाना क्या होगा	ग्रहो का ताल्लुक	मौत का बहाना क्या होगा
1) चंद्र मंगल सनीचर खाना नंबर 5/8 साधारण मौत	लडाई झगडे	सूरज कायम और ऊंच खाना नंबर 1 में अकेला और पर कुण्डली में	वाजिब वकत
2) मंगलबद व शुक्कर खाना नंबर 5/8 मगर सूरज चंद्र का साथ न हो। सनीचर शुक्कर मुशतरका खाना नंबर 10 और सूरज खाना नंबर 4	जंग व जदला पुरदर्द मौत	किसी ग्रह का साथी ग्रह न बन रहा हो 1) चंद्र बुध मुशतरका खाना नंबर 3/6 2) चंद्र सनीचर मुशतरका खाना नंबर 7 3) चंद्र मंगल बद मुशतरका खाना नंबर 7/10	मगर अचानक होगी सदमा से मौत हो

ग्रहों का ताल्लुक	माँत का बहाना क्या होगा	ग्रहों का ताल्लुक	माँत का बहाना क्या होगा
अल्प आयु होगा	जानवरों से खतरा माँत।	बुध बृहस्पत बाहम बामुकाबिल	अधरंग से मरे
सनीचर नंबर 6 बुध नंबर 3-10-11	एजन्	बुध बृहस्पत मुशतरका नंबर 3 में।	सन्नपात से मरे
सनीचर नंबर 6 शुक्र नंबर 7		चंद्र सनीचर नंबर 4 रात के वकत	
1) बुध हो खाना नंबर 12		चंद्र नंबर 10 सनीचर नंबर 4 दिन	पानी से माँत होवे
सनीचर नंबर 7		चंद्र सूरज नंबर 7 न रात न के	
2) चंद्र बुध मुशतरका और सूरज बरबाद।		दिन साफ हो वकत	
3) चंद्र बुध खाना नंबर 4 में।	खुदकशी करे।	राहू या केतू से मुशतरका जब भी किसी का दौरा आवे।	माँत गूजने की निशानी होगी।
1) बुध सनीचर खाना नंबर 4		चंद्र सनीचर नंबर 4	परदेस में मरे।
2) बुध चंद्र सनीचर मुशतरका या दुष्टी में और सूरज कायम होवे।	खूनी होगा।	बाकी सब हालतों में या चंद्र सनीचर नंबर 7	मातृ भूमी या अपने गृहस्थ में।
सनीचर हो खाना नंबर 3 में बुध नंबर 11	कंद में मरे।	राहू केतू से बुध मुशतरका और	
शुक्र नंबर 1-सूरज नंबर 7 मय दुश्मन या पापी ग्रह	तपेदिक से मरे।	सनीचर भी जड राशि या दुष्टी से देखता या साथी ग्रह हो जावे।	बिजली या सांप से माँत होवे।
सूरज बुध चंद्र मुशतरका खाना नंबर 4 में	घोड़े से गिर कर मरे		
बुध सूरज सनीचर मुशतरका नंबर 7 या सूरज सनीचर नंबर 7	सिर कटने से माँत होवे।		

तखत की मालकीयत या राशि नंबर के हिसाब से जब बुध और राहू केतू इकट्ठे हो जावें माँत की निशानी होगी।

बीमारी का वकत

सेहत रेखा का मालिक सूरज है। जिसका मुकरर घर (राशि) नंबर 5 है। इसलिये अगर खाना नंबर 5 में -

1) बृहस्पत या सूरज हों (खाना नंबर 5 में बृहस्पत भी शामिल है) तो जब बृहस्पत या सूरज के दुश्मन ग्रहों का तखत की मालकीयत का जमाना होगा। बीमारी खड़ी होगी।

2) लेकिन अगर खाना नंबर 5 में सूरज बृहस्पत खुद तो न हों। मगर उन दोनों के दुश्मन ग्रह बैठे हों तो जब बृहस्पत या सूरज का दौरा (तखत की मालकीयत का जमाना) होगा। बीमारी आ दबायेगी। (अगर खाना नंबर 8 खाली ही हो। तो सेहत उमदा होगी।)

ऊपर की दोनों हालतों में बृहस्पत की दुश्मनी या बृहस्पत से इस के दुश्मन के टकराव से बीमारी की निशानी आँलाद की होगी। यानि उस के हां आँलाद पैदा होने वाली होगी। क्योंकि बृहस्पत आँलाद की पैदाइश का मालिक है। (मुफसिल आँलाद में देखें)

और दूसरा फर्क ये होगा। कि जब बृहस्पत खुद तखत का मालिक हो कर चले और अपने घरों में दुश्मन बैठा देखे । तो ऐसे शरूस की आँलाद (वो बच्चा अभी औरत के पेट में है) पैदा होकर खतम हो जायेगा। तो बीमारी खतम होगी। (ये आँलाद गालिबन (लडकी) बुध जो बृहस्पत का दुश्मन है होगी। इस तरह बृहस्पत को एक तो अपने घर के दुश्मन का झगडा और दूसरा औरत के पेट में बुध का झगडा तंग करेगा)।

लेकिन जब बृहस्पत खुद खाना नंबर 5 में हो या उसका दोस्त सूरज हो। तो तखत के मालिक ग्रह के वकत जो सूरज या बृहस्पत का दुश्मन हो झगडे का सबब औरत के पेट का बच्चा फिर वही लडकी होगी। जो बुध गिना है। इसलिये जब तक वो लडकर पैदा न हो लेवे। बीमारी कायम होगी। मगर पैदा हो कर वो लडकी मरेगी नहीं । लेकिन अगर उसकी औरत के पेट में नर बच्चा या सूरज का सबूत हो। तो तखत का मालिक दुश्मन ग्रह उसे सूरज समझ कर जो सूरज से बरताव कर सकता है। करेगा। यानि लडके का जिंदा रहना या मर जाना सूरज व दूसरे दुश्मन के बाहमी टकराव का जैसा भी नतीजा होगा।

सनीचर की सवारी - 1) अकेला राहु (जिस्म पर तिल या खाल का निशान) सनीचर का हाथी। 2) राहु सनीचर मुशतरका (पदम लालकिताब सफा 78) इच्छाधारी सांप। (लालकिताब सफा 76 जुज 3)

3) राहु मंगल (लसन लालकिताब सफा 78) राजा का हाथी या हाथी मय महावता मुंदरजाबाला ग्रह मुशतरका निशान मुतलका जिस्म के दायें हिस्सा पर मुबारिक होगा। जो कुण्डली के खानों में हसब जैल होगा-

कुण्डली में:-

दायां होगा खाना नंबर	1	2	3	4	5	6
बायां होगा खाना नंबर	7	8	9	10	11	12

अरमान नंबर 175

ग्रह	खाना नंबर	असर	ग्रह	खाना नंबर	असर
सनीचर	1	दिमागी खाना नंबर 1 शुक्कर से मुशतरका। इश्क जबानी। ईंधन, सूखी लकड़ी। आग का कीडा। काग रेखा वे मच्छ रेख का मुशतरका। ईमानदारी में बददयानती का बीजा। मगर शुक्कर का पतंगा।	सनीचर चंद्र सनीचर	3 10 4	कंगाल मगर जायदाद होगी। भाई बंदो से खराबी 153/4,198/17 पानी से मौत हो। अपने ही कुए से। उर्थ रेखा। चोर डाकू फिर भी मंदा हाल। पितृ रेखा। चंद्र की जायदाद उमदा फल।
सनीचर	2	दिमागी खाना नंबर 7 (शुक्कर से मुशतरका) जिदगी बढने की ख्वाहिश। (दुनयावी तरक्की से मुराद हैं। लंबी उम्र का मतलब न लेंगे।)			दिमागी खाना नंबर 4 मुहब्बत के तमाम हिस्से। चंद्र से मुशतरका। खूनी और पानी के किनारा और कुए पर का सांप होगा। या जायदाद जही मंदा फल
सनीचर	2	बात को मुंह की हवा से			देगी। ला.की. 213/9
बृहस्पत	4	ताड लेगा। अपनी खुद मुखतयारी और नंबरदारी के वक्त अपनी उम्र के आखिर तक अपने लिये उमदा क्रिस्मत का मालिक।	सनीचर चंद्र	4 10	औरतें ख्वाह बेवाह बतौर फर्ज दुनयावी या माशूका वगैरह धन दौलत बरबाद करें या करा दें। चंद्र का असर मंदा और प्रबला
सनीचर	3	दिमागी खाना नंबर 10 - जायका बुध से मुशतरका। मजबूत जिस्म। दौलत के लिये निर्धन			सनीचर का मध्यम। सांप को दूध पिलाना मुबारिक फल देगा।

ग्रह	खाना नंबर	असर	ग्रह	खाना नंबर	असर
सनीचर	4	पितृ रेखा। चंद्र की	सनीचर	6	सनीचर के तमाम फल को
चंद्र	3	जायदाद का उमदा और नेक असर होवे।	बुध	12	बुध बरबाद करे। बेइतबारी मंदे कामा। बुध के हाल में मुफसिल लिखा है।
सनीचर	4	उर्ध रेखा जिस का दोस्त			
बृहस्पत	3	हो उसे ही बरबाद कर के खुद अमीर हो जावे। ला.की. 296/4	सनीचर	7	दिमागी खाना नंबर 17 शुक्कर से मुशतरका। ऊंच सनीचर का फला जिदगी बढने की ख्वाहिश
सनीचर	4	ला.की.14-13, 225/4-5			
चंद्र	2	(अरुज तरक्की से मुराद			
सनीचर	5	दिमागी खाना नंबर 15 बृहस्पत से मुशतरका। खुदारी। मुकदमा, जहमत, बीमारी का आम झगडा खास कर औलाद पर ज्यादा मंदा हाल हो। दमकते सोने का लोहा कर देवे।	सनीचर	7	हैं लंबी उम्र से मतलब नहीं है।) सनीचर खाना नंबर 7 या 3 का ताल्लुक बाकी ग्रहों से ला.की. सफा 198/17-20 में देखें।
सनीचर	5	मुफसिल बृहस्पत में लिखा	दुश्मन	7	बीमारियां (शुक्कर मिट्टी की - जिस्मानी, बदनी, मंगल खून से मुतलका और चंद्र दिल से मुतलका)
बृहस्पत	9	हैं। क्रिस्मत का असर और वकत खाना नंबर 5 के ग्रह (सनीचर) के दौरा से शुरू होवे। नेक और उमदा असर होगा धन दौलत के	ग्रह	7	ला.की. 198/17-19-20
असर		लिये। मगर औलाद के लिये मंदा ही लेंगे।	मय दीगर	ग्रह 7	
सनीचर	6	दिमागी खाना नंबर 16 केत् से मुशतरका ईसतकलाल। ला.की. 287/19	सनीचर	7	नामर्द वर्ना बुजदिल होगा। सूरज अपना असर चंद्र में और चंद्र आगे अपना
			शुक्कर	1	
			चंद्र		
			सूरज	4	शुक्कर और सनीचर के मुशतरका असर में मिला देगा।

ग्रह	खाना नंबर	असर	ग्रह	खाना नंबर	असर
सनीचर	7	हथियार से मौत हो।	सनीचर	9	औलाद के बिट्टा मामु,
चंद्र	7		मंगल	4	ससुराल सब को खा-पी कर बरबाद कर जावे।
सनीचर	8	जहमत बीमारी मौत का सबबा बुढापे में नजर की तकलीफ या धोका होवे। दिमागी खाना नंबर 14 तकबबर खुदपसंदी।			मगर खुद अपनी जद्दी हालत उमदा रहे। मौतों का तो प्लेगी चूहा होगा।
सनीचर	9	दिमागी खाना नंबर 9 बदला लेने की ताकत। अगर खुद बदला न ले सके तो औलाद को बदला लेने की नसीहत कर जावे। स्त्री भाग में निहायत उत्तम (सिवाये औलाद) चंद्र भाग में मंदा असर होवे। ला.की. सफ़ा 163/18, 165/27	सनीचर	9	गो माया ज्यादा होगी मगर
			बृहस्पत	12	माया पर पेशाब की धार मारने वाला होगा। ला.की. 300/5 जीम
			सनीचर	9	आग के वाकयात हो।
			बृहस्पत	10	बृहस्पत की चीजों (सोना हवाई जरद रंग और चंद्र चीजें चांदी बजाजी) और बृहस्पत के कामों से नफा मगर सनीचर की चीजें
सनीचर	9	बृहस्पत के वकत क्रिस्मत			दूसरों से हमदर्दी वालदेन
बृहस्पत	5	असर देवे। सनीचर बृहस्पत मुशतरका में मुफसिल लिखा है। अब औलाद का हाल मंदा न होगा। दिमागी खाना नंबर 9 सनीचर का जाती असर बदला लेने की पूरी ताकत। और सनीचर के मुतलका काम मंदा फल देवे।	सनीचर	9	की बाहमी नेक मुआफकत। अब सूरज और सनीचर का बाहम झगडा न होगा। (अस्मान नंबर 6 जुज़ सूरज (iii))
			सूरज	5	
			सनीचर	9/11	औरत अमीर खानदान से
			बुध	6	और खुश क्रिस्मत होवे।

ग्रह	खाना नंबर	असर	ग्रह	खाना नंबर	असर
सनीचर	१/११	कुदरत की तरफ से कोई			का ताल्लुक यानि सनीचर
मंगल	३	बुरा वाकया मौत वर्गैरह दुख देने वाला न होगा। मंगल सनीचर का नेक असर होगा।	सनीचर	११	११ के साथ ऊपर भी जिकर है। भागवान होवे।
सनीचर	१/११	रफाये आम के फायदे और	सूरज	१०	
शुक्र	७	आराम की पूरी ताकत और नेक असर। खुद भी आराम पावे।	मंगल	१०	
सनीचर	१	ला.की. १५/१	सनीचर	११	आली मर्तबा। साहबे
शुक्र	३		चंद्र	२	जायदाद होवे।
सनीचर	१/११	मां बाप दोनो की तरफ से	सूरज	१	सनीचर व सूरज दोनों का
चंद्र	४	हर तरह से उमदा किस्मत और भला लोग होगा।	सनीचर	११	फल रही। बुरी जिदगी। बुध
सनीचर	१०	दिमागी खाना नंबर १३ सनीचर का जाती असर दूरअदेश होशयारी का मालिक होगा। कुण्डली वाले का बाप कुण्डली वाले की उम्र तक जिंदा रहेगा।	सूरज	९	दोनों ग्रहों को बेवकूफ बना देवे।
सनीचर	१०	औरत अमीर खानदान से	सनीचर	१२	दिमागी खाना नंबर १२ राहु से मुशतरका।
बुध	७	और खुशकिस्मत होगी।	सूरज	६	राजदारी। अपना भेद छुपाये रखने और फरेब पोशीदा करने का आदी और कामिल होगा।
सनीचर	१०	हर किसम की सवारी का	राहु	६	औरत पर औरत मस्ती जावे।
बृहस्पत	४	सुख नसीब होगा।	सनीचर	१२	स्त्रीयों (माता औरत वर्गैरह का सुख हल्का। चंद्र चुप होगा।)
चंद्र	१		चंद्र	१	
सनीचर	११	दिमागी खाना नंबर ११ सनीचर का जाती असर। जखीरा जमा करने की पूरी ताकत और आदत।	सनीचर	११	मर्दों का सुख हलका। बृहस्पत चुप होगा।
			राहु	१२	
			बृहस्पत	१२	
			सनीचर	१२	मच्छ रेखा। ला.की. ४६/१
			राहु	६/३	
			केतू	१/१२	

अरमान नंबर 176

राहु

राहु - बाकी ग्रहों की तरह राहु केतू की ऊंच हालत व नीच हालत का अलौहदा विक्र नहीं किया गया।

असतलाह में जिस चीज का कोई रंग न हो। नीला रंग दिया जाता है। नक्षत्रों में समुंद्र का रंग जिसकी गहराई लाइन्ताह है। नीला माना है और आसमान भी हर तरह से साफ हो नीला नजर आता है। दही (शुक्कर) और दूध (चंद्र) की रंगत में भी यही फर्क है कि दूध रंग सफेद होगा। मगर दही की सफेदी में नीलगो शामिल होगी। चोट लगने पर खून जम जावे नीला निशान होगा। ये रंग हर रंग पर चढ जाता है और सिर्फ सनीचर का रंग ही इसको छुपा सकता है। सनीचर लोहे के रंग और राहु पूरे रंग (घना रंग) में माना है। जिस्म के हिस्सों में दिमाग में नकल व हरकत की ताकत माना है। जो हसद व कीना के नाम से भी याद होता है। चलती गाडी में रोड अटकाना। मासूम बेगुनाह को गुनहगार ठहरा कर सजा के मातम से कच्चा धुआं पैदा करना इस का काम है। बैठे बैठे किसी के खून करने का खयाल पैदा कर देना या दिल में अचानक किसी बात का फिरना (भासरना) खुदबखुद बगैर सोच या किसी के बताये आ जाना इस का करिश्मा है। सनीचर के साथ बैठा सांप को मनी का काम देता है। सांप की जहर चूसने का मनका। खुदबखुद उडकर जहर के पास जाकर जहर को चूस कर अपने आप में मिला लेता है और जहर आलूदा को बरी कर देता है। ऐसा सांप इच्छाधारी और हर जगह मदद करने वाला सांप होता है। सांप के लिये ये मनी अंधेरे में रोशनी का काम देती है। सनीचर के लोहे के साथ ये चमक पत्थर का काम करता है। खुद तो अपनी जगह से नहीं हिलता लोहे को अपनी तरफ खींचता है। धातूओं के अंदर ये जंग या जंगार बन जाता है। जब सूरज से मिला तो सूरजग्रहण या पाप का अंधेरा इसकी रोशनी के सामने कर देता है। बृहस्पत को पीतल किया तो नीले रंग के जंग में देखा गया। चंद्र के दूध में नीला रंग होने पर वो शुक्कर का दही हुआ। बुध के हीरे में सबको काट देने की हिम्मत दी। मगर खुद बुध के हीरे को इसी की मामूली नर्म सी चीज कलई से कटवा दिया। मंगल के शेर को नींद से सुलाये रखा। केतू के कुत्ते को कुत्ते के दांतों के रास्ते

इसके पागलपन के मादे से दूसरों को भी पागल किया। इन्सान को हसद ने जला दिया। जहां सांप को मनी की हालत में मिला उसके जहर चूसने का दोस्त बना। तो उसे दूसरी तरफ डर भय देकर दुनिया को बचाया। किरसा कोताह ये अपने घर में आम साधारण हालत या घर का भी है। और नीच भी है। बुध के साथ या अकल से ऊंच होता है। या आकाश के खुल मैदान होने की वजह सेराहु का आसमान जमीन में भूचाल भी है। हाथी का सूंड तो दरिया में इसी हाथी के अकस से तेंदूये का जाल भी है। बुध का दोस्त तो जबान 'बुध' का तंदूया भी है। मामूली दिमागों में नकल व हरकत की लहर लाता तो शेरों "बहादुरों" को सुलाता भी है। राशियों में सबसे आखरी राशि नंबर 12 संभाल कर बात का आखिर भी हो जाता है। अगर सिर उल्टी खोपडी (दिमाग का खाना नव 3 केतू से मुश्तरका प्यार या वालदनी मुहब्बत जिसका मुफसिल जिकर शुक्कर के खानों अरमान नंबर 59 में है) इस की ऊंच हालत है तो टट्टी या पाखाना के रास्ते का मुंह । गुदा इसका रास्ता केतू से मुश्तरका और केतू के बराबर का होने की हालत है।

ऊंच हालत

हाथी का सवार या सवारी। शेरों के शिकारी हाथी की ताकत का मालिक। जमीन व आसमान के हाथी की ताकत वालों को नीले समुद्र के तेंदूये की तरह आसमान की नील चोटी से पकडकर दिमाग में खवाब की तरहसे फिरा देगा। जहां एक राहू दोस्त हो वहां आसमान व जमीन दोनों के दरम्यानी दुश्मनों का नाश होगा। बहुत ज्यादा गहराई वाली हथेली के असर का मालिक होगा। (लाल किताब फरमान नंबर 69 सफ़ा 49 से 52 ब्यान हथेली)

नीच हालत

बाहर को उभरी हुई ऊंची हथेली के असर का मालिक। हसद से मारा हुआ या मारने वाला, खयालात की परागंदगी, बिल्ली की तरह पिछले मकान का दोस्त मगर अपने मालिक की खरखवाही के लिये इसके साथ की परवाह नहीं के असूल पर। मालिक से मुहब्बत न होगी। मकान से मुहब्बत होगी और मकान के ताल्लुक से भी चारदीवारी से मुहब्बत नहीं। छत से मुहब्बत करेगा। सिर पर भूत सवार की तरह मारा मारा फिरने वाला और नाहक बदनामी दिलाने की हालत का जमाना

पैदा करने वाला। दुश्मन ग्रहों के वकत। मुकदमात फौजदारी का पैदा होना। चोरी धोखादेही गबन की इल्लत का ताल्लुक आम होगा।

बनावट

सूरज सनीचर मुशतरका = बुध होगा। जिसमें राहु की शरारत का स्वभाव होगा।

मंगल बट और सनीचर मुशतरका = राहु बुरी नीयत का होगा।

दो मंगल मुशतरका (मंगल खुद अकेला मय मंगल मशनोई के जुजवी ग्रह) = राहु होगा नेक नीयत का।

राहु बृहस्पत मुशतरका = बृहस्पत चुप होगा मगर बृहस्पत खतम ही न होगा।

बृहस्पत चंद्र मुशतरका मय राहु = बृहस्पत और चंद्र में से किसी का भी फल खराब न होगा।

राहु चंद्र मुशतरका या बामुकाबिल = चंद्र का असर मध्यम। दिल कर फर्जी वहम दीवाना बना देवे।

बृहस्पत चंद्र-सनीचर शुक्कर मय राहु = 5 की पंचायत बहुत उत्तम फल। किस्मत का धनी होगा।

राहु चंद्र सनीचर/या राहु चंद्र बृहस्पत मुशतरका = औरत का सुख लक्ष्मी का सुख हलका होगा। खासकर मीन राशि में।

राहु को सनीचर देखता हो :- हसद से तबाह होगा।

राहु शुक्कर बुध मुशतरका त्र शादी कई बार फिर भी गृहस्ती सुख का मंदा ही हाल होवे।

राहु बुध दोस्त हैं उनकी मुशतरका हालत में कौन प्रबल होगा :- गुफतार फैसला करेगी। (लालकिताब सफ़ा 73 फरमान नंबर 86)।

राहु सनीचर मुशतरका:- इच्छाधारी या मददगार सांप। (लाल किताब सफ़ा 73 जुज 3) दिमागी खाना नंबर 14 तकब्बर या खुदपसंदी का मालिक होगा।

मंगल मय राहु या सनीचर या राहु सनीचर दोनों के बामुकाबल हों सूरज चंद्र मुशतरका:- रात दिन हर वकत मुसीबत पर मुसीबत देखे।

राहु या केतू बामुकाबिल पर बुध किसी तरह भी साथ हो:- मौत गूजे खासकर इन ग्रहों की तखत की मालकीयत के जमाना में।

शुक्कर राहु मुशतरका = बगैर बुध के शुक या पागल शुक्कर होगा।

रंग का फर्क

आम तौर पर राहु का रंग नीला होता है और केतु का दोरंगा स्याह और सफेद मुशतरका। मगर जब दोनों ऊंच हों तो राहु की चीजों का रंग दही सफेद होगा। स्याही का निशान न होगा। बाकी सिफतें

वही होंगी जो राहु की हैं। केतू का रंग बिरंग होगा। मगर लाल रंग का साथ जरूर होगा। जो बुध होगा। मगर असर केतू का ही होगा।

राहु की दो अमली

राहु का निशान जाल या पदम है। हाथी भी कहलाता है। दरिया में इसी हाथी के लिये दरयायी जाल तेंदुया भी हो जाता है। जब राहु चंद्र के ताल्लुक में हो जावे। राहु बुध का दोस्त है। और जबान बुध की चीच है। मगर ये जबान का तेंदुया भी बन जाता है। और जबान को थुथलाने की बीमारी भी कर देता है। जब राहु बृहस्पत की राशि में हो। और उस राशि में बैठा हुआ बुध के टकराव या दुष्टी में आ जाये।

2) राहु का भूचाल चंद्र से रूक जाता है। (मुफसिल चंद्र में लिखा है।) और चंद्र बैठा होने वाले घर से आगे नहीं जा सकता। लेकिन सूरज के ताल्लुक से आतशी मादे की लहर और भी गर्म होकर आगे बढेगी। सूरज अपने घर में बैठे ग्रह को कुण्डली वाले की मदद पर खडा करता है और सूरज जब अपने दोस्त ग्रह और दुश्मन ग्रह के साथ ही हो तो दुश्मन ग्रह का असर अपने दोस्त पर डाल देता है। लेकिन अगर इतफाकिया सूरज चंद्र नंबर 5 में मय राहु या केतू वाकया हों तो राहु या केतू का असर खाना नंबर 5 की चीजों औलाद वगैरह और चंद्र पर बुरा ही होगा। मगर सूरज पर बुरा न होगा।

राहु केतू का बाहमी ताल्लुक

1) दोनों ग्रहो का बाहमी ताल्लुक अरमान नंबर 108 में एक खानावार फेरिशत की शकल में लिखा है कि कौन कौन से घर ये दोनों ग्रह बाहम दोस्त, बाहम दुश्मन या बराबर के हैं। उस फेहरिस्त के असर के लिये सफा की (आगे दी हुई) फेहरिस्त देखें।

2) राहु सिर में लहर का मालिक तो केतू पावों तले होगा या अगर " सिर बडे सरदारों (राहु ऊंच) - पैर बडे गवारों केतू नीच) "मगर केतू जब राहु के मुकाबला पर खडा होवे तो केतू के कुत्ते ने राहु के हाथी को ऐसी मार मारी कि आज तक हाथी सीधे पांव न चल सका। कजरू कहलाया और कभी निचला न बैठ सका और हिलता ही रहा और इसके पांव ऐस उडे कि टांगें सिर्फ मोटे थम ही नजर आने लगे।

राहु हो	केतू होगा	असर होगा
खाना	खाना	
नंबर में	नंबर में	
1	7	पैदाइश के वक्त सख्त आंधी, बारिश, नाना-नानी वकत पैदाइश मौजूद-40 साला उम्र तक दोनों का फल खराब वास्ते खुद मुतलका खाना नंबर 1
2	8	25 साल उम्र तक केतू का फल उमदा 26 शुरू से दोनों का मंदा फल होगा।
3	9	दोनों का उत्तम और ऊंच राशि का।
4	10	24/48 साला उम्र तक चंद्र का फल मद्धमा बाद अजा 45 सो दोनों का उत्तम फल होगा।
5	11	दोनों का दुश्मनाना और खराब।
6	12	दोनों का उत्तम और ऊंच राशि का।
7	1	पैदाइश नानके घर। दोनों ग्रहों का फल रही वास्ते खुद मुतलका खाना नंबर 7
8	2	केतू का उत्तम राहु का खराब फल होगा।
9	3	दोनो का खराब बाप और ससुराल के लिये। भाई बंद दुखिया करें।
10	4	बाप के लिये उमदा माता के लिये खराब। खुद अपनी सेहत भी मंदी।
11	5	अपने लिये उत्तम औलाद पर मदा असर।
12	6	दोनो का खराब और नीच हालत का।

मुंदरजा बाला असर उस वकत होगा। जब राहु या केतू राशि नंबर के घरों के ग्रह बोलने के हिसाब से जारी हो जावें। तखत की मालकीयत के जमाना में राहु या केतू का उन ग्रहों से टकराव या दोस्ती होगी। जो उन के तखत की मलकीयत के जमाना मे राशि नंबर के हिसाब से बोलेंगे। राहु का असर पोशीदा और केतू का असर जाहिरा हुआ करता है।

2) मन मंदर दरवेश कलंदर - मन (चंद्र) मंदर (बृहस्पत) या चंद्र बृहस्पत मुशतरका मन का मंदर आलीशान होगा। दरवेश(बृहस्पत या केतू)कलंदर (तमाशा के जानवरों का मालिक बुध) बुध बृहस्पत, बुध केतू, राहु केतू मय बुध इकट्ठे हों तो मन के मंदिर में कलंदर के तमाशे देंगे।

अरमान नंबर 177

ग्रह	खाना नंबर	असर	ग्रह	खाना नंबर	असर
राहु	1	औंलाद के विद्या			खुदपसंदी का मालिक होगा।
बुध	1				
राहु	1	औरत की सेहत खराबा	राहु	6	राहु का फल रद्दी होगा।
शुक्र	1	दिमागी कमजोरी।	बुध	12	
		दीवानगी।	राहु	7	लालकिताब सफ़ा 24/17
राहु	5	कुडली वाले की औंलाद (लडका) के 21 साला उम तक बाबे पोते का झगडा होगा। यानि बाबा होगा तो पोता न होगा। कुण्डली वाले की खुद अपनी उम्र 42 साला या इस वकत पाँते की उम्र 21 साला में अगर दूसरी औंलाद हो तो वो जरूर नष्ट होगी अगर बाबा भी जिंदा हो वर्ना बाबा खत्म होगा। गर्जोके 42 और 21 साला उम्र के टकराव में बाबा होगा पोता न होगा।	राहु	7	औरत की सेहत रद्दी (दिमागी खराबियां।)
			शुक्र	1	
			राहु	7	शादी और औंलाद में गडबड होवे।
			शुक्र	7	
			बुध	7	लालकिताब सफ़ा 239/9
			राहु	9	औंलाद 21 साल फर्क वाली कायम होगी। यानि अगर कुण्डली वाले की 21 साला उम में औंलाद होवे। तो जब तक बों 42 साल उम्र पूरी न कर लेवे। दूसरी औंलाद (लडका) न होगी। या उत्तम फल की न हो सकेगी। बाप की 42 साल उम्र तक ये मनफी का लफव कायम होगा। सलाह मशवरा उत्तम फल देगा। ला.की. 163/19
राहु	6	दिमागी खाना नंबर 14 सनीचर से मुश्तरका तकब्बर			
राहु	10	सिर फट जावे।	चंद्र	4	

ग्रह	खाना नंबर	असर	ग्रह	खाना नंबर	असर
राहु	10	उम्र 22 साल तक होगी।			हैं। फिर भी राहु औरत की
सूरज	11				सेहत मंदा कर देगा।
राहु	12	दिमागी खाना नंबर 12 राजदारी। खर्चा हाथी का। राहु की शरारत फिजूल खुफिया ही कामों में खर्चों।	राहु चंद्र सनीचर राहु	12	स्त्रीयों (औरत व माता) का सुख हल्का। मर्दों का सुख हल्का। चंद्र
राहु	12	गो शुक्कर नंबर 12 में	चंद्र	12	चुप ही होगा। बृहस्पत
शुक्कर	12	ऊंच	बृहस्पत		खामोश होगा।

अरमान नंबर 178

केतू

तू कौन, मैं ख्वाहमखाह बिन बुलाया मेहमान। जब दो रंगी हुई इन्सान दोचिता हुआ। जमाने की मिट्टी उडने लगी आग लगी शौले बुलंद हुए और तूफानी हवा आ मौजूद हुई। ये मिला मिलाया जमाना केतु का अहद हुआ। छलावा बना। मगर जान से न मारेगा।

ऊंच हालत:- सूअर की तरह बहादरी में गोली चलने की जगह आकर मरने वाला। या कुत्ते की तरह मालिक की वफादारी में ही मर मिटने वाला। गुजरे हुए जमाने की बुराई को भुला देने और मुस्तकबिल के लिये हाँसला दिलाने वाला खुदबखुद ही सलाहकार होगा। सनीचर शुक्कर मुश्तरका= ऊंच केतू।

नीच हालत:- कानों का कच्चा पांव चक्कर लगा हुआ। दरवेश की तरह बिला मतलब दौरा लगा लेने वाला। बाओबगूले के चक्कर का मालिक। रस्सी से बंधे हुए पतंग की तरह उडने वाला। मगर उलझन में जकडा हुआ। मुकदमात दीवानी की लंबी लंबी चालें करने वाला। सहर व समुद्र का सैलानी और जंगल में मंगल की हवाये बंद और नींद (राहु) में जहर मिली हवा का ताल्लुकदार होगा। मकान से मुहब्बत नहीं मालिक से मुहब्बत होगी। और मालिक के ताल्लुक में भी

इसकी नेकी और खूबी को याद रखता और बदी को भूल जाता है।

भेद :- बृहस्पत के ताल्लुक से केतू उंच होगा और जहां केतू उंच होगा वहाँ सब का गोल दायरा और बे-बुनियाद भी कर देने वाला बुध बुरा फल न देने पायेगा। अगर बाप को किस्मत ने मदद न दी तो उसका केतू (लड़का या लड़के की कुंडली के हिसाब से केतू के दौरा शुरू होने का जमाना) तबदीली हालत जरूर देगा। इस की गैर हाजरी में बुध का आकाश बृहस्पत की खाली और ठहरी हुई हवा से भरपूर होगा। मगर हवा को चला कर सब जगह की कमी बेशी केपी पूरा करने वाला बृहस्पत दो जहानों का मालिक की तरह दो रंगी का बलवान बिन बुलाया हुआ महमान आ हाजिर होगा। तेज़ी से आया तो तूफान कहलाया अगर बंद खड़ा हो गया तो दम घोटने का जमाना होगा। मगर मौत न होगी सुस्ती और बेहोशी (मुरदापन सा जमाना) जरूर होगी। हाथी के सिर और लंबे सूंड वाले राहू का मुकाबला करना इसी दरवेश का काम है। बृहस्पत केतु (बृहस्पत) हवा केतु (तूफान) ने हर चंद्र कोशिश की कि मुसाफिर के कपड़े उतरवा दें। मगर ये काम सिर्फ सूरज कि गर्मी ने ही करवाया यानी केतु ने बृहस्पत को चलाया बृहस्पत ने बुध के बुरे असर पर गलबा पाया। मगर दोनों का असल मतलब सूरज कि गर्मी से ही हासिल हुआ। यानी जब सूरज में लाली न हों या मंगल का साथ न हो (लाल सूरज सुबह या शाम का होगा जिसमें गर्मी पूरी नहीं होती। गर्मी बढ़ती है तो लाली घटती है। मंगल सूरज मुश्तरका चमकीला और उंच सूरज जरूर होगा। मगर ठंडा जमाना जो अमूमन सुबह या शाम के वक़्त का होता है। लाली मंगल कि है और मंगल में चंद्र कि ठंडक जरूर होती है। सूरज नमक है तो मंगल मीठा दोनों का मुश्तरका मेल नमक में मीठा मिला हुआ होगा। केतु तुर्श खटाई है जो नमक या सूरज के नमक को मद्धम और हल्का करती है या केतु के ज़ोर पर होने से सूरज कि गर्मी का असर मालूम होता है और मंगल कि मिठास भी जायका बदल लेती है। जायका खुद सूरज का ही सुभाओ (खाना नंबर 5 बमुजब अरमान नंबर 5 मकान व इंसान के जुजों का ताल्लुक) है। केतु के इस चक्र और बुध कि गोलाई और सूरज व मंगल कि मीठी गर्मी को तेज़ करने या केतु को नेक बना कर बुध को दुरस्त कर के सब ग्रहों कि चाल और बुनियाद को दूरस्थ करना सनीचर कि हौशियारी कि ताकत से होगा। यानी ऐसा कम होवे कि सनीचर भी आ जावे केतु खुद ब खुद इसकी ताबेदारी में जा बैठे। सनीचर कि दुरस्ती से मंगल सूरज

से अलहँदा हो जायेगा और लाली के घटते ही गर्मी पैदा होगी या केतू को कायम करने के लिए सनीचर मंगल बुध का उपाओ करें। ये सिफ़्त बेर (गोल लाल बेर) में भी मौजूद है। मगर हो सकता है की इसमें कोई बुध का पोल भी हो। इसलिए लोहे की गोल गोली पर मंगल का रंग जमकर मतलब हल करें। ये लाल मगर लोहे की गोली सब ग्रहों को अपनी अपनी जगह कर देगी। ग्रहों के असर में तबदीली नहीं कर सकते सिर्फ़ उनको दूरस्त चाल (उनकी अपनी अपनी जैसी भी हो पर लगा सकते हैं)

केतू का घर ख़ाना नंबर 6:- केतू कुत्ता माना तो बुध को कुत्ते की दुम। दुम वाले कुत्ते का घर ख़ाना नंबर 6 मुकर्रर है। जिस में बुध और केतू इकट्ठे माने हैं। (लाल किताब सफ़ा 100 अरमान नंबर 106) दोनों ग्रहों की पक्की बात या पक्का घर होने की हालत में ये ख़ाना नंबर 6 बमूजब ला.की. सफ़ा 97 फरमान नंबर 103 सिर्फ़ केतू का ही माना है और बुध शुक्र के साथ ख़ाना नंबर 7 में जा मिला है जो नेक है। कुत्ते की दुम, शुक्र की दुम, गाय की दुम स्त्री की गुत बन गई। ये दुम जब शुक्र से हटी या औरत ने सिर के बाल कटवाये। गाये से हटी- बैल गाये लंडवा हुए। केतु कुत्ते से हटी कुत्ता आधा रहा। सांप सनीचर से हटी सिर्फ़ सांप का सिर ही बाकी रहा। हाथी का सूंड कटा वो महंत बाबा बच्चों का हव्वा हुआ। गर्जोंके जब बुध अपनी जगह छोड़कर यानि ख़ाना नंबर 6 से 12 राशियों के आखिर पर नंबर 12 में ही जा पहुंचा तो कुत्ते की दुम सीधी हुई। कुत्ता पागल हुआ। सांप की अकेली सिरी सांप से और भी ज्यादा नुकसान करने लगी। सूरज का बंदर दुम कटाये आदमी हुआ तो पागलपन का तालूक हुआ। शुक्र की स्त्री ने सिर मुंडवाया मातम की निशानी या दीवाना शुक्र जनाहकार औरत हुई। बाप बेटे के मिलाप में फर्क उडा बैठी। चंद्र के घोड़े धन दौलत जायदाद की आमदन की नाली उल्टने लगी। दोनों जहानों के मालिक बृहस्पत ख़ाना नंबर 12 बृहस्पत का घर है। गुरु ने सिर पर राख (बुध) डाली। किस्सा कोताह बुध नंबर 12 ने बृहस्पत गुरु (ख़ाना नंबर 12 का बृहस्पत) को दुनयावी बुध अकल दी। इसका आत्म ग्यान बंद हुआ। गुरु ख़ाना नंबर 12 से हटा ख़ाना नंबर 2 में जा बैठा। जो गुरु की असल जगह है। जिसमें राहु केतू की बैठक है और जिसे पापी ग्रहों की बैठक ख़ाना नंबर 8 देख रहा है और जिसके सामने की नजर पर बृहस्पत के दोस्त

केतु का घर नंबर 6 है। गुरु खाना नंबर 2 में बैठा है तो इस का दूसरा साथी दरवेश कुत्ता इसके चरणों में खाना नंबर 6 (पाताल) का निवासी है। गुरु में हिम्मत है कि वो खाना नंबर 2 गुरुद्वारा से पाताल के खाना नंबर 6 में देखता है और पाताल के खाना नंबर 6 से वो गुरु बृहस्पत आसमान खाना नंबर 12 में जा निकलता है।

बृहस्पत खाना नंबर 2 और 12 का मालिक है। खाना नंबर 2 गुरु का गुरुद्वारा राहु केतु की बैठक दुनिया का मशजोई शुक्र सब गोरख धंधा और खाना नंबर 12 गुरु की समाधि की जगह या गृहस्तियों के सुख की जगह या “शुक्र उंच का स्थान है। खाना नंबर 6 दोनो के दरम्यान में है। सिर्फ बृहस्पत ही खाना नंबर 6 के रास्ते अपने खाना नंबर 12 में जा सकता है। क्योंकि नंबर 6 के दोनों रास्तों के आखिर पर बृहस्पत के ही दोनों घर हैं। ये बृहस्पत की कुटिया केतु का खाना नंबर 6 कुत्ते की असल मलकीयत के मुकाम में सिफत है कि वो अपने घर आये ग्रह को ख्वाह वो केतु के दोस्त हो या दुश्मन कभी बरबाद न होने देगा। मुकाबलतन बृहस्पत खुद बुध से तंग होता है और दुनिया का बृहस्पत साधु अपने सामने से बुध की राख को उठा उठा कर लोगों में बांटता है। (बुध को राख माना है अरमान नंबर 163 ता 165) जो उंच फल की होती है। लेकिन जब यही राख (बुध) बृहस्पत के अपने घर खाना नंबर 2 मे पड़ गयी । तो दुनियादारों के लिये या कुण्डली वाले का बाप राख हुआ। मगर कुण्डली वाला खुद बरबाद न होगा। बाप का सोना दौलत कुत्तों ने ही खा लिया और जब बृहस्पत के खाना नंबर 12 में पड़ गयी तो न सिर्फ खाना नंबर 6 बरबाद हुआ बल्कि बुध खाना नंबर 12 के मुकाबला के खाना नंबर 6 में बैठे हुए सब ही ग्रह कुण्डली वाले के लिये जहर के असर के हो जायेंगे।

अगर केतु भी खाना नंबर 6 में आ बैठा हो तो भी बाहर से और आने वाले ग्रहों को खराब न करेगा। अगर खराब करे तो खुद केतु नंबर 6 वाले को तो बुध ही करेगा नंबर 12 का। केतु बजाते खुद गरीब कुत्ते की तरह मालिक की वफादारी और बेवकुफ गधे (केतु ही का नाम है) की तरह सब का बोझ उठा कर मदद देगा। केतु खुद अपना खाना नंबर 6 का फल मामु की तरफ बेशक बरबाद ही करवा लेवे। खाना नंबर 6 सब का भला करे और नंबर 6 का मालिक केतु खाना नंबर 6 ही में सब की सेवा करेगा और एँवज में अपनी खिदमत का एँवज न चाहेगा। ख्वाह दुश्मन ग्रहों के वकत केतु के अपने लिये कहरे खवेश बरजाने दरवेश

ही का हाल क्या न हो। केतू की माता “शुक्र भी खाना नंबर 6 में नीच फल का होगा।

पापी ग्रहों की खसलत का भेद - जहां कहीं भी लफ्ज पापी ग्रह होगा “शनीचर राहु केतु तीनों ही ग्रहों से मुराद होगी। राहु केतु मुश्तरका को पाप कहते हैं और “शनीचर उनका मुनसिफ हैं।

राहु केतू भी शनीचर का ही स्वभाव रखते हैं।

पापी ग्रहों का स्वभाव ये हैं कि:-

(1) जब कभी भी कोई दुश्मन ग्रह अकेला ही उनके मुकाबला पर हो तो वो उस दुश्मन ग्रह ही की ताकत को जायल करते हैं।

(2) जब दो दुश्मन ग्रह उनके मुकाबला पर हो जावें या ज्यादा तो मुकाबला पर के दुश्मन ग्रहों की ताकत खत्म करने के लिये पापी ग्रहों की ताकत भी दुगनी या और ज्यादा हो जावेगी। ज्युं ज्युं दुश्मन ग्रह तादाद में ज्यादा होते जावें पापी ग्रहों की पाप करवाने या करने की हिम्मत और भी बढ़ती जावेगी। और:-

(3) जब किसी पापी ग्रह अकेले के मुकाबला पर का दुश्मन ग्रह किसी ऐसे ग्रह को साथ लाकर मुकाबला पर हो जावे जो ग्रह कि पापी ग्रहों का दोस्त हो तो ऐसी हालत में पापी ग्रह अपने बुरे काम की हिम्मत को आम हालात की बजाये न सिर्फ दुगना कर देंगे बल्कि आम हालत की निसबत निहायत ही बुरा फल पैदा कर देंगे। कुण्डली वाले का खूब जोर से नाश करेंगे और अपने दोस्त ग्रह को तो बुरी तरह से मारेंगे। फरजान:-

केतू मंगल बृहस्पत मुश्तरका हों तो कुण्डली वाले का भाई लंगड़ा निर्धन और 45 साला उम्र तक किसमत के मैदान में हर तरह से मंदा होगा।

केतू सूरज बृहस्पत- सूरज का फल निहायत ही मंदा होगा।

केतू सूरज चंद्र- लाखौपति होता हुआ भी मुसीबत पर मुसीबत देखता चला जावे। अकल की कोई पेश न जायेगी। न रात चैन ना दिन सुख हर वकत दुगना मंदा हाल होगा।

केतू सूरज बुध मुश्तरका:- भतीजे भांजे खा पी कर डकार मारने वाले होंगे।

दो केतू मुश्तरका (असल केतू व मशनोई केतू ख्वाह उंच मशनोई ख्वाह नीच मशनोई) दो गुना मंगल नेक की ताकत को भी बरबाद कर देंगे।

(4) पापी ग्रह जब अपने बराबर के या दोस्त ग्रहों से मुश्तरका हो जावें तो भी अनर्थ या पाप ही करेंगे। मसलन केतू “शनीचर बृहस्पत मुश्तरका हों तो औलाद पर हवाये बद् के अचानक हमलों से औलाद की माँते होंगी।

(5) पापी ग्रहों से कोई एक जब अपने दोस्त पापी ग्रह ही से मिले (लाल किताब सफ़ा 105 पर मुकरिर किये हुए से) तो निहायत नेक फल देगा। मसलन “शनीचर राहु” शेष नाग इच्छाधारी मददगार सांप होगा। राहु केतु मुश्तरका में से जो कुण्डली के पहले घरों में होगा। वो अपना फल दूसरे में मिला देगा। यानि दृष्टि के वकत में बाद के घरों में होने वाले का असर नेक होगा। पहले घर वाले के नेक असर होने की “शर्त ख़ाना नंबर के हिसाब से होगी। अगर दृष्टि का तालूक न हो यानि ख़ाना नंबर 5-11-2 में तो मंदा फल होगा। अरमान नंबर 176 -

(6) शनीचर का खुद जाती स्वभाव अरमान नंबर 168 (राहु केतु “शनीचर से पहले या बाद के घरों में वाली फैरिस्त) से जाहिर होगा।

(7) राहु व केतु का बाहमी स्वभाव और उनका सूरज व चंद्र से तालूक अरमान नंबर 108 (ग्रहण की फहरिस्त) में दर्ज हैं।

(8) पापी ग्रहों का फल जब मंदा हो बृहस्पत भी मंदी हैसीयत का गुरु होगा।

(9) लाल किताब सफ़ा 118 फरमान नंबर 114 जुज :- केतू दरअसल शुक्र का असर हैं। जिसे गऊ माता जो शुक्र का नाम हैं भी माना हैं और कुत्ता या सुअर भी। यानि इसके दोनों नाम ही हो गये या जब केतु तकलीफ मे हो उसके बुनयादी ग्रह शुक्र को भी आराम न होगा। केतू ने घुटना जब जमीन पर रखा धरती माता को बृहस्पत याद आया। केतू नीच हुआ बृहस्पत नीच हुआ तो शुक्र बन गया। मगर दोनों जहानों का मालिक न रहा या इन्सान ने मालिक के आगे हार मानी और आजिज़ बन गया। मंगल बद् ने घुटना टेका ऊंट बैठा तो दुनिया का बोझ उस पर आ गया। बुध भी तो शुक्र का ही जुज हैं और केतु भी शुक्र का ही असर हैं। दोनों का फर्क ये हैं कि बुध तो अपनी नाली लगा कर शुक्र में मिल जाता हैं और शुक्र के पीछे पीछे जाता हैं। मगर केतू के लिये शुक्र खुद बेताब होकर केतू के दूढ़ने को जाता हैं। मतलब ये कि जब कभी शुक्र को बुध की मदद न मिले या शुक्र को मंगल बद् सतावे तो केतू की मदद से वो शुक्र आराम पायेगा। दुन्यावी कहानी में औरत

को (बुध) की कौतबाह ने तलाश करबाया। मगर केतू को शुक्र ने खुद दूँदा और फलना फलना पाया। केतू खुद बृहस्पत के बराबर का है और बृहस्पत हरएक पर मेहरबान है। इसलिये जब शुक्र की मदद करने वाला केतू अगर किसी वजह से खुद ही रद्दी हो जावे तो बृहस्पत के उपाय से केतू को मदद मिलेगी और केतू आगे शुक्र को मंगल से छुड़ा कर ठीक कर देगा। बुध में नुकस है कि शुक्र के साथ बैठा हुआ भी मंगल के साथ मिल कर मंगल बढ़ बन कर शुक्र को बरबाद करता है। मगर केतू अपने बुन्यादी ग्रह शुक्र की जरूर मदद ही करेगा। ख्वाह वो खुद कितना ही दूसरे दुश्मनों से बरबाद हो जावे। शुक्र और केतू दोनों ही एक हुए या जब दोनों ही नीच हुए। गाय और कुत्ता दोनों ही गंद (गुंह) खाने लगे। ये कलयुग की निशानी हुई।

(10) केतू की तीन पाया शकल का मुंह जिस बुर्ज की तरफ हो तो समझेंगे कि केतू अपना असर मिला रहा है या डाल रहा है। उस बुर्ज में जिस की तरफ कि इसके डंडो का मुंह है। डंडों के मुंह का रख कुत्ते के मुंह का रख होगा।

(11) केतू की तीन टांगे बृहस्पत बुध मंगल हैं। इसीलिये “शुक्र की जान माना गया है।

राहु केतू की दूसरे ग्रहों से नाखून बाजी

दिल का भेद शनीचर की आंख की बीनाई ने बाहर जाहिर कर दिया। अभी इन्सान ने आंख दिख्लायी भी न थी कि राहु केतू का पुन पाप इन्सान के नाखुनों से जाहिर होने लगा। नौ ग्रहों ने बारह राशियों के चक्कर को तो बच्चे पर नौ महीने में असर किया तो इन्सानी नाखून भी 9 महीने में ही मुकम्मल हुआ।

नाखुन- खराब हो जावें। कट जावें या उड़ जाने पर :-

राहु का असर....हाथ के नाखुन पर दायें हाथ पर.....राहु का आम अरसा
म्याद 6 साल होगा।

बायें हाथ पर..... राहु की महाद'शा 18

साल बुरा हालत

या राहु की उम्र कुल 42 का अरसा (नेक
असर) होगा।

केतू का असर...पांव के नाखुन पर दायें पांव पर - केतू का अरसा आम यानि 3
साल होगा।

बाये पांव पर...केतू की महादशा 7 साल

बुरी हालत या केतू की कुल उम्र 48

साल का अरसा (नेक असर) होगा

को (बुध) की कौतबाह ने तलाश करबाया। मगर केतू को शुक्र ने खुद ढूंढा और फलना फुलना पाया। केतू खुद बृहस्पत के बराबर का है और बृहस्पत हरएक पर मेहरबान है। इसलिये जब शुक्र की मदद करने वाला केतू अगर किसी वजह से खुद ही रद्दी हो जावे तो बृहस्पत के उपाय से केतू को मदद मिलेगी और केतू आगे शुक्र को मंगल से छुड़ा कर ठीक कर देगा। बुध में नुकस है कि शुक्र के साथ बैठा हुआ भी मंगल के साथ मिल कर मंगल बंद बन कर शुक्र को बरबाद करता है। मगर केतू अपने बुन्यादी ग्रह शुक्र की जरूर मदद ही करेगा। ख्वाह वो खुद कितना ही दूसरे दुश्मनों से बरबाद हो जावे। शुक्र और केतू दोनों ही एक हुए या जब दोनों ही नीच हुए। गाय और कुत्ता दोनों ही गंद (गुंह) खाने लगे। ये कलयुग की निशानी हुई।

(10) केतू की तीन पाया शकल का मुंह जिस बुर्ज की तरफ हो तो समझेंगे कि केतू अपना असर मिला रहा है या डाल रहा है। उस बुर्ज में जिस की तरफ कि इसके डंडो का मुंह है। डंडों के मुंह का स्ख कुत्ते के मुंह का स्ख होगा।

(11) केतू की तीन टांगे बृहस्पत बुध मंगल हैं। इसीलिये “शुक्र की जान माना गया है।

राहु केतू की दूसरे ग्रहों से नाखून बाजी

दिल का भेद शनीचर की आंख की बीनाई ने बाहर जाहिर कर दिया। अभी इन्सान ने आंख दिख्लायी भी न थी कि राहु केतू का पुन पाप इन्सान के नाखुनों से जाहिर होने लगा। नाँ ग्रहों ने बारह राशियों के चक्कर को तो बच्चे पर नाँ महीने में असर किया तो इन्सानी नाखून भी 9 महीने में ही मुकम्मल हुआ।

नाखुन - खराब हो जावें। कट जावें या उड़ जाने पर :-

तबदीली हालात की निशानी

राहु का असर....हाथ के नाखुन पर दायें हाथ पर.....राहु का आम अरसा

म्याद 6 साल होगा।

बायें हाथ पर..... राहु की महादशा 18

साल बुरा हालत

या राहु की उम्र कुल 42 का अरसा (नेक असर) होगा।

केतू का असर...पांव के नाखुन पर

दायें पांव पर - केतू का अरसा आम यानि 3 साल होगा।

बाये पांव पर...केतू की महादशा 7 साल

बुरी हालत या केतू की कुल उम्र 48

साल का अरसा (नेक असर) होगा

चूँकि राहु केतू एक दूसरे के सातवें होते हैं। बाहम दोस्त भी हैं। एक दूसरे की बनी बनायी बिगाड़ भी देते हैं। (खाह एक की नेक हो या बद् दूसरा नेक को बद् और बदी को नेक कर देगा।) जिस जगह घर के ग्रह बनते हैं वहाँ ही उंच भी हो जाते हैं। इस असूल पर अगर राहु हाथ के दायें हिस्सा पर असर दे रहा हो तो केतु पांव के बायें हिस्से पर असर दे रहा होगा और हरइक अंगुली मय अंगूठे के नाखुन से उनका बाकी ग्रहों से तालुक जाहिर कर देगा। यानि राहु केतु का असर बाकी ग्रहों से जाहिर होगा।

अंगूठे से शुक्र का :- (खाह अंगूठा हाथ का खाह पांव का। राहु केतू मुशतरका या मशनोई शुक्र कुण्डली में खाना नंबर 2 राहु केतू की मुशतरका बैठक है और तमाम तरफ से बिगड़ी हुई बात की बिगड़ी को बनाने वाली चीज ढला ढुलाया शुक्र होता है। यानि अंगूठा इन दोनों ही ग्रहों का मैदान है। जिसमें राहु केतू का दोस्ताना या दुश्मनाना अपनी मर्जी का होता है। 5) ये जगह राहु

तर्जनी से-बृहस्पत का-कुण्डली का खाना नंबर 9-12

मध्यमा से-शनीचर का-कुण्डली का खाना नंबर 10

अनामिका-सूरज का-कुण्डली का खाना नंबर 1-5

कनिष्का-बुध का-कुण्डली का खाना नंबर 6-7

अंगुलियां मय अंगूठे और हथेली } चंद्र कूण्डली का
के अंदरूनी तरफ का हिस्सा } खाना नंबर 4

अंगूठा मय अंगूठे के जोड़ या } मंगल का (हर दो मंगल)

गांठ या नाखुन के खून का रंग } कुण्डली का खाना नंबर 3-8

खाना नंबर ॥ राहु केतू का एक अकेला दो मगर
का है। यानि जब ३-९ एक ही का असर
खाना नंबर ॥ में आवे तो अकेले की ताकत।
यानि जब दोनों बैठे हैं तो सिर्फ एक का
नंबर ॥ में असर होगा। जब शनीचर भी साथ होकर
खाना नंबर ॥ में असर होवे तो ॥ गुना असर होगा।
(अच्छा या बुरा)

(1) जो नाखुन बरबाद या खराब हो जावे। समझ लेंगे कि इस नाखुन के मुतलका ग्रह पर राहु केतू का असर होने की तबदीली आ गयी। जो कुण्डली के मुताबिक अच्छी या बुरी गिनी जावेगी। मगर तबदीली हालात जरूर होगी।

(2) खाना नंबर 2- अंगूठा शुक्र तो बना मगर सिर्फ राहु केतू मुशतरका का मशनोई शुक्र का छलावा होगा। या अगर $\frac{\text{राहु}}{\text{केतू}}$ खाना नंबर $\frac{2-8}{8-2}$ में हों तो किस्मत का मैदान एक न शुद दो शुद के रंग बिरंग की झलक देगा।

अरमान नंबर 179

ग्रह	खाना नंबर	असर	ग्रह	खाना नंबर	असर
केतू	1	औलाद के विद्ध हों।	केतू	6	दिमागी खाना नंबर 14 शनीचर से मुशतरका तकब्बर
शुक्र	1				खुदपसंदी।
केतू	2	ला.की. 163/20, 164/25	केतू	6	केतू का फल रही होगा।
केतू	3	न सिर्फ कुण्डली वाले को अपने भाई बंदो से दिक्कत होगी। बल्कि लइकी जात (लइकी की ससुराल) का फल मंदा होगा।	बुध	12	
		ला.की. 315/7	केतू	6	कुत्ते को घी हजम न होने का हाल होगा। औरत बांझ होगी।
		दिमागी खाना नंबर 16 ईस्तकलाल काम में लगा रहना। ख्वाह भला काम हो ख्वाह बुरा काम हो।	शुक्र	6	
केतू	4		केतू	7	शादी औलाद में गड़बड़ होवे।
		लइके ज्यादा से ज्यादा 2 और बसा। मगर वो मुकमल और हर तरह के उमदा होवे। अगर बृहस्पत मंदा तो घर में लइके की आवाज की जगह कुत्ते रो देंगे। यानि 45 साल उम्र तक औलाद का असर के। बशर्ते कि बृहस्पत उमदा फल मुबारिक न होगा।	शुक्र	7	
			बुध	7	
केतू	5		केतू	8	केतू का असर सोया हुआ। कुत्ते की नींद कम होती है। मगर खाना नंबर 8 में शेर की नींद वाला कुत्ता होगा और सोया हुआ। यानि औलाद की पैदाइश या औलाद जिंदा रहने का वक्त बहुत देरी से आयेगा।
			केतू	9	औलाद गिनती ही की होगी। बड़ा लइका फिर भी किसमत का हल्का। मगर कुण्डली वाला खुद हर तरह से उत्तम फल का।
			केतू	12	
			शुक्र	12	औरत जात औलाद और बहादुरी में सूअरनी होगी। (12-12 बच्चे और वो सब मोटे और सूअर की तरह बहादुर)।

बाकी खानों के लिये लालकिताब में दिया हुआ केतु का हर खाने का हाल देखें।

अरमान नंबर 180

दो इकट्टे ग्रह एक ही घर में बुरा फल(माँत) न देंगे।

खासकर (1) नंबर 1-2-7-10 में (2) खाना नंबर 11 में अपन अपना फल होगा।

खाना नंबर	बृहस्पत सूर्य मुशतरका (शेर दमकता सोना)	खाना नंबर	बृहस्पत सूर्य मुशतरका (शेर दमकता सोना)
दोनो मुशतरका होवे।	दिमागी खाना नंबर 20 आराम	दोनो खाना	दुनिया का पूरा आराम हो।
दोनो बा - मुकाबिल	इज्जत बजुरगी का मालिक। अंदर और बाहर से नेक हो। राजदरबार से नेक तालुक व तरक्की मगर किसमत अख्त्यार किसी दूसरे के हाथ में होगा। यानि जिस जिस राशी नंबर में हों उस उस राशी के घर के मालिक के तालुक का असर होगा। ला.की. 194/3, 193/4 ला.की. 194/7	नंबर 1 में	बृहस्पत चंद्र मुशतरका (छतर)
दोनो नंबर 1	जस्री सफर मुतलका राजदरबार	दोनो मुशतरका या बा-मुकाबिल दोनो मुशतरका	
बाहम देख रहे और चंद्र कायम	के नेक नतीजे हों।	दोनो मुशतरका के बा-मुकाबिल	जस्र देंगे। दिमागी खाना नंबर 21 हमदरदी या रहम मिजाजी का मालिक होगा।
दोनो मुशतरका को केतू देखे।	दोनो मुशतरका को फैंसला हक में होने की कोई तसल्ली न होगी। शनीचर अगर बजाते खुद नेक तो कदरे उमदा वर्ना सख्त खराबी होवे। दोनो देखे	दोनो मुशतरका के बा-मुकाबिल	शुक्र मंगल शनिचर मंगल शनीचर
दोनो मुशतरका को शनीचर देखे	दोनो मुशतरका को शनीचर देखे	दोनो मुशतरका के बा-मुकाबिल	नेक फल देंगे। सबसे उत्तम लक्ष्मी। मुशतरका

खाना नंबर	बृहस्पत चंद्र मुशतरका (छतर)	खाना नंबर	बृहस्पत चंद्र मुशतरका (छतर)
दोनों मुशतरका को देखे या साथ हो	मंगल :- सबसे उतम लक्ष्मी होगी। सूरज :- ताजिर। अहले कलम दूसरों को भी फायदा पहुंचे बजरिया ठोस हाजिर माल। बुध:-तजारत (दलाली) फायदा अजीम होवे। शुक्र:-शादी के दिन से धन दौलत आगे बढ़ना बंद होवे बल्कि घटना शुरू हो जावे। शनीचर बृहस्पत का धन शादी के दिन से आगे और बढ़ना शुरू होता है। शनीचर:- इसकी दोस्ती से दूसरों का फायदा ही फायदा मिले।	दोनों को बुध का साथ दोनों को दोनों	दिमागी खाना नंबर 39-वजह सबब की ताकत दिमागी खाना नंबर 40 - मुकाबला एक चीज का दूसरी से दिमागी खाना नंबर 41-इन्सानी खसलत दिमागी खाना नंबर 42 रजामंदी का मालिक होगा। बुध का साथ नंबर 2-4 का और नंबर 2-4 के इलावा दूसरे घरों का बृहस्पत के हाल में अरमान नंबर 125 ता 129 मुफसिल लिखा है। मंदाफल होगा। खाह लाखोंपति फिर भी मुसीबत पर मुसीबत अकल मदद न देवे। दोनों का उतम फल।
अकेले चंद्र के बा- मुकाबिल दोनों को	बुध बृहस्पत या:- समुंद्र पार सफर सूरज बुध:- का बुरा नतीजा होवे। बुध का साथ उत्तम फल। बुध की दुश्मनी न होगी। बल्कि मदद होगी। दिमागी खाना नंबर 18 भरोसा, अगर शनीचर उमदा तो नेक असर वर्ना फोकी उम्मीद। नासतिक होगा। दिमागी खाना नंबर 37 - राग दिमागी खाना नंबर 38 - जबानदानी	नंबर 1 दोनों नंबर 2 दोनों नंबर 3 दोनों नंबर 4	दोनों का उतम और बृहस्पत का अच्छा होगा। बृहस्पत का जो नंबर 4 में उंच होता है। बड़ के दरखत काला.की. 219/1 धन रेखा। दौलत का मालिक होगा मगर इसका धन भाइयों को तारे। जो इकबालमंद हो जावे। ला.की. 302/8 दोनों ग्रहों का उतम मगर बढेगा। चंद्र का नेक फल। बड़के दरखत की तरह बड़के तने ही से जड़े निकलकर इसके स्तून मददगार

खाना नंबर	बृहस्पत चंद्र मुश्तरका (छतर)	खाना नंबर	बृहस्पत शुक्र (कल्लर जमीन)
नंबर 10 जारी	की दुम लंबी तो सवारी को क्या मदद बाप की दाढी उमदा तो बेटे को क्या सहारा। सिर्फ दिखलावे की शान (वो भी वालदैन की अपनी) मगर लड़का दूसरों का निगरान होगा।	दोनों मुश्तरका या बा- मुकाबिल	दोनों का फल खराब। सोने में मिट्टी मिली हुई। मगर औरतकी मदद मिलती रहे। ला.की. 167/33
नंबर 11	रफाये आम के काम। दूसरो का तारो। मगर अपनी किसमत (अपने पेट का तालुक) के मालक खाना नंबर 3 के ग्रह होंगे। अगर खाना नंबर 3 खाली ही हो तो खाना नंबर 11 के ग्रह सोये हुए ही गिने जायेंगे। खाना नंबर 5 का खाना नंबर 11 पर कोई असर न होगा।	दोनों नंबर 2	नर औलाद के बिघ्न। सोने की जगह मिट्टी तो होगी। मगर वो मिट्टी आम मिट्टी से कीमती असर की हालत की होगी। या मिट्टी के कामों से सोना और सोने के कामों से राख हासिल होगी। ला.की. 144/11
नंबर 12	मिसल राजा मगर धन दौलत से पूरा त्यागी होगा। शादी के दिन (शुक्र का वकत) और लड़की की पैदाइश (बुध शुरू) से धन बरबाद और जायदाद का फल मद्धम होगा। चांदी (चंद्र) की जगह कलई की सफेदी (बुध का असर) होगी। सोने चांदी के थालों में अब पायेदार उमदा गवा की जगह गंदी बदबो के फूल होंगे। जायदाद के मकान अंधेरे। और उनमें मकड़ी के जाले बहुतेरे पैदा होंगे।	दोनों नं3 दोनों नंबर 7	खुशहाल भागवान होगा। मिट्टी भरी तेज आंधी की तरह की किसमत। बृहस्पत का असर मंदा होगा। शूककर का असर भी सिर्फ जाहिरदारी का और बिन मतलब होगा। जो बृहस्पत के असर में जहरीला - पन (वासते पैदाइश नर औलाद - खासकर) देगा। जमाने की तरफ से बृहस्पत की हवा का सहारा फर्जी। बल्कि जहरीला होगा या वो खुद ही यज्ञ के लिये अपनी ही औलाद की कुर्बानी देकर सोने की जगह मिट्टी बटा लायेगा या बट कर आ जायेगी।

खाना नंबर	बृहस्पत शुक्र	खाना नंबर	बृहस्पत मंगल
दोनों को बुध का साथ नं 7	अगर बुध का भी साथ हो जावे। (बुध नंबर 7) तो आंधी की मिट्टी भरी हवा से बुध का शीशा अगर और नही तो शुक्र बुध मशानोई सूरज का असर (धन दौलत न सही खुराक अन्न-पानी) तो जरूर पैदा रखेगा। जर्द गैस होगी। ख्वाह दोनों जहरीली ही हो। ला.की. 144/11	दोनों नं 2 बुध नंबर 6 दोनों नं 6 बुध नंबर 2	ला.की. 282/12 ला.की. 282/14
दोनों नं 9	दुनिया का पुरा आराम।	दोनों मुश्तरका	बृहस्पत बुध (औखली-फकीर की गूदड़ी) आवाज की हालत (ला.की. फरमान नंबर 87 सफा 73) फैसला करेगी कि दोनों मुश्तरका में प्रबल कौन हैं। दोनों ग्रह मुश्तरका होने का फल अरमान नंबर 130 जूज (अ) में जिकर है। बुध बृहस्पत एक ही घर में होने पर आकाश में हवा बंद वाली हालत होगी। अगर ऐसी हालत में कुण्डली में शनीचर उमदा होवे तो कुछ भरोसा व मतलब होगा।(वासते धन दौलत) वर्ना फोकी तबाह करने वाली उमीद होगी।
	बृहस्पत मंगल (कुजवी सोना-नेक-अंकुश, बंद ढाल)		
दोनों मुश्तरका	हरदम मदद मर्दा मददे खुदा। निहायत उतम असर। हौसला अंदरूनी व गैबी ताकत की मदद होगी। ला.की.166/31-32		
दोनो को शनीचर देखे	मुखालफत मर्दा न होगी। बल्कि धन दोलत के लिये महावन उम्र (ला.की.सफा 322) का नेक असर होगा।	दोनों ग्रह बा मुकाबिल	अपना ही बेड़ी डोब मल्लाह होगा। पिता की उम्र और उसके धन दौलत पर तबाही कर देगा। मगर कबीला का भारी बाँझ उस के जुम्मे होगा। दोनों ग्रहों के बामुकाबिल या आमने सामने होने की दृष्टि अगर :- 100 फीसदी हो.....निहायत खराबी का असर होगा।
मंगल बंद का तालूक	मुखालफत मर्दा, रिश्तेदारो की माँतें, मातम, रंज व गम आम होंगे।		50 फीसदी हो..खराब असर होगा 25 फीसदी हो..मामूली असर होगा।
दोनों नंबर 2 नंबर 7	दोनों ग्रहों का निहायत ही उतम फल होगा। ला. की. सफा 255 जूज 2		

खाना नंबर	बृहस्पत बुध	खाना नंबर	बृहस्पत बुध
दोनों ग्रह बा मुकाबिल जारी	अगर बृहस्पत कुण्डली के पहले घरों में हो तो बृहस्पत का 34 साल उम्र तक अच्छा फल होगा। 35 से बुध का बुरा असर शुरू होगा। लेकिन अगर बुध पहले घरों का हो। तो बुध का 34 साल उम्र तक अच्छा असर और 34 तक बृहस्पत का मंदा फल होगा। 35 से बुध का असर निकम्मा और बृहस्पत का उमदा शुरू होगा। बृहस्पत कायम दोनों का और बुध उंच घरों में मुशतरका असर राजयोग होगा। कागजी कारोबार छापाखाना वगैरह अज पब्लिक नेक असर देवे। ईमानदारी का धन साथ देवे।	दोनों मुशतरका और चंद्र बा मुकाबल	की खुद अपनी औलाद न होवे। मतबन्ने रखे। फालतू और बेमायनी खर्चा। सफर का बुरा नतीजा होवे।
बृहस्पत बुध नं 2 दोनों नं 3 दोनों नं 6 दोनों नंबर 7	ला.की. सफ़ा 153/3 साबर व शाकर होवे। इबादतगार होवे। ला.की. 286/13 कभी शाह कभी मलंग कभी खुशहाल कभी तंग ऐसे मर्दा औरत	दोनों मुशतरका दोनों ग्रह बाहम बा- मुकाबिल	बृहस्पत शनीचर (फकीर की झोली) दोनों की मुशतरका धन रेखा होगी। जो धन कि शादीके दिनसे बढने लगे। (कुंडली वाले की शादी)। ऐसे शख्स में कौत खयाल। सोच विचार की ताकत दर्जा कमाल होगी। जिंदगी (अरुज) बढने की ताकत खुदारी मगर हसद से बरी होगा। ऐसे शख्स की किसमत का फैसला खाना नंबर 11 के ग्रह करेंगे। बिलकुल अलहैदा अलहैदा और दृष्टि से भी न मिलते हों का हाल अरमान नंबर 120 में जिकर हों जब दोनों 100 फीसदी के

खाना नंबर	बृहस्पत सनीचर	खाना नंबर	बृहस्पत सनीचर
दोनों ग्रह बा मुकाबल जारी दोनों दृष्टि में	खानों में बाहम देख रहे हों। तो मुशतरका ही होने का असर देंगे। बृहस्पत देखता हो शनीचर को 50फीसदी पर-इलम तिलसमात जादुगरी। 25 फीसदी योग अभ्यास का मालिक हो। शनीचर देखता हो बृहस्पत को तो:- कुदरती तौर पर विसमानी कमजोरी और धनदौलत हलका होगा।	दोनों नंबर 3	इशक न होगा। चंद्र उंच का नेक फल साथ होगा। इस जगह अगर चंद्र साथ भी होवे। तो चंद्र नष्ट या रही न होगा। दुन्यावी तोहफा होगा। ला.की. 158/2 औसत दर्जा जिदगी वाला। (क्योंकि शनीचर खाना नं 3 में निर्धन हो जाता है। आखरी उम्र में आराम पावे।
दोनों को देखता हो	शुक्र :-ऐसे शख्स का धन मानिद मिट्टी का पहाड़होगा। दिखलावा बहुत किसमत कमा। ऐसा धन उसके अपने खानदान और औरत के काम लगे। (अपने खानदान बाबे की तरफ का हिस्सा) और शादी के दिन से ऐसा धन बढे। केतू :- औलाद पर बुरी हवा के हमले। (जिन भूत की मार) मकान में शारेआम से सीधी आने वाली बुरी हवा का बुरा असर लेंगे।	दोनों नंबर 4-5-6 में दोनों नंबर 7	साधारण हालत जैसी कि बाकी ग्रहों के हिसाब से होवे। धन बरबाद मगर जायदाद उमदा। लड़की (बुध का दौरा) की पैदाइश से धन दौलत (बृहस्पत का) खासकर बुरा फल होगा। शनीचर के वाकयात नया मकान दीगर मुतलका चीजें मुबारिक फल देंगी। जिन पर धन खरचने पर भी और बढेगा। और बरकत देगा। मगर खुद नेक किरदार भला लोग भले काम करे। मगर बचपन में तकलीफ रहे।
दोनों नंबर 1	मंदा हाल। साधू या गुरू मगर काग रेखा वाला होगा।		
दोनों नंबर 2	सेहत अफजा। खुशगंवार। सर- सबज पहाड़की तरह चंद्र का उतम फल होगा। इशक में दर्जा अव्वल होगा। मगर गलबा		

खाना नंबर	बृहस्पत सनीचर	खाना नंबर	बृहस्पत सनीचर
दोनों नंबर 7 और	चंद्र या बरकत बढनेवाली शुक्र या मगरमच्छ रेखा मंगल का असर होगा। कायम ला.की. 307/ बे (i) (ii)	दोनों नं 1 या दोनों बजरिया	आसूरी माया होगी जो दूसरों को तबाहकरे। इश्क में दर्जा मअतदल का होगा। दूसरों के लिये मददगार इच्छाधारी (ला.की. 153/4 व 213/10)
दोनों नंबर 7 और 12	चंद्र या नीचे को मुंह किये या शुक्र या या कुछ अरसा के मंगल बढ (यानि जब से नष्ट या नष्ट या नीच ग्रहका नीच होवे। दौरा शुरू होवे) बरकत घटने वाली मगरमच्छ रेखा होगी।	दृष्टिना। में इकट्टेहों दोनों नंबर 12 में	हरदम साया करने वाला सांप होगा। बल्कि लोहे को पारस का काम देगा। ऐसा शख्स माया पर पेशाब की धार मारने वाला होगा। इस का धन ऐसा होगा जो खुद खरचे और खाये मगर दूसरों को कोई फायदा या नुकसान न होगा। शादी के दिन से धन औरभी बढेगा।
दोनों नंबर 8	दरम्याना असर (धन का)ये घर अब मार्गअस्थान न होगा। उम्र जरूर लंबी होगी।	दोनों नंबर 12	शुक्र मंगल -या मगरमच्छ रेखा होगी। अगर चंद्र नष्ट तो आरजी
दोनों नंबर 9	मच्छ रेखा और उर्ध रेखा की पूरी बलवान ताकत का। खुद अपने लिये नेक असर होगा। (दुन्यावी तोशा ला.की.सफा।58/2,164/21, 168/27)ऐसा धन जो अपने हाथों खर्च बरते दूसरों का बुरा न होगा। और नही नफा देगा।ला.की. 309	चंद्र 7 या शुक्र या मंगल कायम	वक्त की मगरमच्छ रेखा होगी। शुक्र या चंद्र या मंगल में से जो ग्रह कायम होवे मगरमच्छ रेखा उस ग्रह का उमदा असर देगी। जो रही हो जावे उसका मुतलका असर मंदा देगी। मंदा असर होने का दिन रही ग्रह के दौरा के
दोनों नंबर 10	खुद अपने लिये श्री गनेशजी के असर वाला यानि निहायत उत्तम असर का मालिक होगा। मगर इसका धन न		

खाना नंबर	बृहस्पत सनीचर	खाना नंबर	सूरज चन्द्र
दोनों 12/7 चन्द्र या शुक्र या मंगल कायम जारी	शुरू होने का दिन होगा। इसी तरह और बढ़ने का अरसा और देखे दिन अच्छे और कायम (सिर्फ शुक्र या चंद्र या मंगल में से कोई एक या तीनों ही बाकी ग्रहों का मगरमच्छ रेखा से कोई तालूक न होगा।) ग्रह के दौरा और शुरू होने का दिन होगा।	चंद्र को सूरज मगर सूरज नं 1 न हो	खुशक कुएं खुदबखुद पानी देने लग जायें। चंद्र का फल चंद्र की नसफ म्याद यानि 12 साल तक सूरज के नीचे दबा रहने के बाद अलैहदा और सूरज की तरह उतम होगा।
दोनों मुशतरका	सूरज चंद्र (रथ) खालिस/बड़ का दूध सूरज का पूरा उतम फल होगा। मगर औरतों से मुखालफत। बुढापा खास कर उमदा होगा।	दोनों नं 1 दोनों नं 2 दोनों नं 3 दोनों नं 4 शनी नं 10 दोनों नं 5 दोनों नं 6	मिसल राजा होवे। हानि होवे। मतलब परस्त होगा। माँत दरिया नदी से दिन के वक्त होगी। जिदगी भर आराम रहे। माता पिता के कतल से खुद भी
दोनों बा - मुकाबिल	दिल की ताकत में सूरज का नेक और उतम असर होगा। ला.की. 192/1	मय राहु या केतू दोनों 11	माँत पावे। बशर्तेकि खाना नंबर 2 खाली हो। उम्र 9 साल होवे।
दोनों के बा - मुकाबिल	मंगल बद् और केतू:- निहायत बुरी जिदगी। ला.की. 194/5 लाखोपति होता हुआ भी न रात आराम न दिन चैन। हरदम दुखिया होवे। बुध:-कौत दिला।ला.की.195/11 मंगल बद् या एँजन पापी ग्रह या शुक्र लाल किताब सफ़ा 224/4	दोनों मुशतरका दोनों बा - मुकाबिल	हवाई बृहस्पत का फल होगा। वालदैन बचपन में गुजर जावें। जिस घर में शुक्र होवे उस

सूरज शूक्र

(लाल मञ्जर)

खाना नंबर	सूरज शुक्र	खाना नंबर	सूरज बुध
होगा।	घर का हाल खराब होगा। शुक्र की मुतलका चीजों का सूरज		असर देगा। औरत का रंग व स्वभाव (आत्मिक शक्ति)सफ़ा व नेक
दोनों नं 7	का खुद या सूरज के बैठे होने वाले घर पर शुक्र का बुरा असर न होगा। औरत से झगड़ा होवे।		दूसरो की बजाये खुद अपनी और अपने हाथों की पैदा करदा कमाई पर भरोसा और सबर करने वाला होगा। जिस का नतीजा नेक होगा। या वा खुद साख्ता (अपने आप
दोनों मुशतरका	सूरज मंगल (तलवार-लाल (हीरे मोती) - लाल (रंग) लाली का उत्तम फल। दोनों का साफ दिली में उत्तम फल होगा। उम्र 100 साल खासकर खाना नंबर 1 या 2 में।		अमीर बना हुआ) मर्द होगा। उमदा सेहत होगी। (ला.की.सफ़ा 196/14) सिर रेखा और सेहत रेखा के मिलने की जगह का जाविया। ला.की. 192/2, 194/4, 195/9
दोनों नं 9 नंबर 10 अपना	आहली मर्तबा होगा। अजीजों से जर व माल का झगड़ा होवे।	दोनों के बा - मुकाबिल	चंद्र या बृहस्पत:- मंदे नतीजे होंगे। शनीचर :-नेक फल दोनों दुश्मन (सूरज और शनीचर) अपना
दोनों न 10 में	शनीचर नंबर 11 भागवान और चंद्र नंबर 6:- होवे।		नेक काम करते जावें। सूरज कायम सूरज का पूरा और बुध उंच घर नेक असरा। खुद अपनी कलम के जरिये राजदरबार से बरकत पावे। नेक और ईमानदारी का धन साथ देवे। सूरज देखे बुध को 100 फीसदी पर :- बुध की ताकत जुदी जाहिर न होगी। सूरज को मदद ही होगी। स्त्री धर में (मर्द के
दोनों मुशतरका	सूरज बुध (पहाड़- शीशा) गो बुध चुप होगा। (सूरज के साथ में) मगर स्त्री की दिमागी ताकत निहायत उत्तम होगी। या उसकी जबान का लफज पत्थर पर लकीर का		

खाना नंबर	सूरज शुक्र	खाना नंबर	सूरज बुध
सूरज देखे बुध को जारी बुध देखें सूरज को	के ससुराल) सूरज की चमक होगी या वो अमीर होंगे। नेक फल सूरज के नेक असर से मिट्टी दूर और शीशे की तरह चमक और बढेगी। 50 फीसदी से:- दुन्यावी तुजरबा उमदा। 25 फीसदी से :- इल्म जाँतिष उमदा। चंद्रनष्ट:-दिमागी सदमात होंगे।		मर्द बेशक इतना नफा अपनी जान के लिये न पा सके। "आर दांगा पार दांगा बिच टल्लम टल्लीयां आवण कूवा देन बच्चे नदी नहावन चल्लीयां" चलते हुए रहट की तरह हरदम आमदन जारी फव्वारे का उठता हुआ और ताजा पानी की तरह की किसमत का मालिक हो। मगर राजदरबार से कोई ऐसा नफा न पावेगा।
दोनों नं 5 शनी नं 9 दोनों नं 7	उमदा सेहत होगी। औलाद पर बुरा असर न होगा। औरत अमीर खानदान से और सूरज की तरह उत्तम और मुकम्मल होगी। रंग और स्वभाव भी नेक और साफ होंगे। सूरज नंबर 7 में नीच फल कर देता है शुक्र का इसलिये खुद औरत का फल (केतु औलाद) बेशक मंदा होवे और औरत खुद इतना आराम न पावे। या औलाद कम.....या औलाद की उम्र के तकाजे हों। मर्द खुद की आमदन की नाली हजारों जंगल पहाड़ों के मैदानों को सैराब करेगी। खुद आप वो	दोनों मुशतरका	कीकर का दरख्त- वकत के मुताबिक लट्टू की सूई की तरह घूम जाने वाला। गैर तसल्ली बख्श दोस्त होगा।
		सूरज देखे शनीचर को शनीचर देखता हो सूरज को	मजबूत तबैं: उम्र रेखा और सेहत रेखा के मिलने का जाबिया। ला.की. सफ़ा 196/14 - जिसमानी ताकत उमदा। ला.की. सफ़ा198/18 जिसमानी कमजोरी। 25 फीसदी पर :-स्कूलों के इल्म के इलावा इल्म रियाजी (ला.की. 194/8)

खाना नंबर	सूरज सनीचर	खाना नंबर	शुक्र चंद्र
सनी देखता हो सूरज को जारी	भी होगा। 50 फीसदी पर- इल्म मकानात (शनीचर की मुतलका चीजों का काम) होगा।	ला.की. 214/15	का घर कुण्डली वाले की ससुराल और माता का घर मामु तरफ इस तरह दोनों ही घरों का मंदा हाल होगा।
दोनों नं 5	मजबूत तर्बे। ला.की. 168/18	दोनों	माता न होगी अगर होगी तो अंधी
दोनों नं 6	सोने की जगह मिट्टी के तवे	मुशतरका	होगी। (मुफसिल ला.की. सफा 18
बुध चंद्र	रोटी पकाने के होंगे। अगर कोई		फरमान नंबर 39) नौह सास का
दोनों	उसका लइका सेहत व आंखों		झगड़ा होगा। मंदा असर उपर की
कायम	से रद्दी मस्त मलंग सा होवे। वो		दोनों बातों का शादी के दिन से
	18 साल के बाद गया हुआ		गिनते हैं।
	सोना फिर वापिस दिला देगा।	दोनों को	
दोनों नं 9	दौलतमंद मगर मतलब परस्त	सूरज देखे	ला.की. 224/11
	होगा।	दोनों के	स्त्रीयां (औरत शुक्र माता चंद्र)
दोनों नं 9	खाना नंबर 3-9 दोनों ही का	बामु-	तबाह होंगी।
और मंगल	फल रद्दी होगा और दुश्मनाना	काबिल	
बद या बुध	होगा। सब ग्रहों का बुध ने	मंगल बद	
नंबर 3	खाना नंबर 3 से 9 पर असर	दोनों	औरत की सेहत रद्दी (दिमागी
	कर दिया।	नंबर 1	कमजोरी व दीवानगी वगैरह)
दोनों 11		दोनों	दवाइयों के काम से फायदा हो।
मंगलबद		नंबर 2	खुद हकीम होने की शर्त न होगी।
या बुध	एँजन		इश्क में दर्जा कमाल होगा। दुध
नंबर 3	शुक्र चंद्र (खुसरा-गाय)		में खांड की जगह मिट्टी मिली
दोनों	दोनों ग्रहों के अपने अपने घरों		वाली किसमत होगी। खास कर
मुशतरका	का हाल मंदा होगा। शुक्र औरत		बृहस्पत का असर किसी नेक
			फल का न होगा।

खाना नंबर	शुक्र चंद्र	खाना नंबर	बुध चंद्र
दोनों नंबर 4-7 शनीचर नं 10-11 दोनों नंबर 4-7सूरज नं 5 दोनों नं 7 दोनों नं 8	मा बाप दोनों की तरफ से खालिस और खुद भला लोग होगा। एँजन लड़कियों की तरह शरमीला होगा मगर बुध न होगा। माता की आंखों पर झगड़ा बल्कि नजर गुम होवे ला.की. 224/1, 301/5 काफ नामर्द वर्ना बुजदिला अपने ही कारनामो की वजह से चंद्र का धन और शुक्र से गृहस्ती सुख बरबाद पावे। बदचलनी की मर्ज बा - का तालूक भी हो सकता है या होगा। बुध चंद्र (दुनिया तोता)	दोनों को देखे-	से बाहर किसी और जगह और दृष्टि हर तरह से खाली। या मां बेटी ही अकेली ही तो इकबालमंद होंगे। ही अकेली ही तो इकबालमंद होंगे। धन दौलत उमदा होगा। दिल का डरपोक होगा। मंगल बद:- उम्र खुद तो अपनी उमदा (लंबी) मगर मामु तरफ खराबियां। बृहस्पत या सूरज या } नेक असर होगा। शनीचर
दोनों मुशतरका या बाहम दृष्टि में	दोनों मंदे शनीचर का फल देगे। चंद्र नष्ट लेंगे। चांदी की जगह कलई होगी। चंद्र का फल रद्दी होगा। गलबा इश्क बायस तबाही होगा। जब अपने अपने घरों में हों। लेकिन जब दोनों मुशतरका और अपने अपने घरों	दोनों नंबर 4	दृष्टि में एक तरफा तबीयत वाला। 100 फीसदी-निहायत खराब असरा। मुकाबिल 50 फीसदी-खराब असरा। 25 फीसदी --- मामूली खराब। हर हालत में धन की हार न होगी। दिल का तालूक खराब असर देगा। दिल बकरी का होगा। बुजदिल (बच बकरी बुध, दिल चंद्र) दोनों खुदकशी। वजह गरीबी न होगी। बल्कि दिल न होने का सबब होगा। या गलबा इश्क का सबब होगा। ला.की. 224/3

खाना नंबर	बुध चंद्र	खाना नंबर	मंगल शुक्र
दोनों नंबर 6	खूनी मगर मिसल राजा। अकल कायम मातृ रेखा का नेक असर मगर खुद अपनी नजर कम होवे। ला.की. 214/13, 215/18बी, 219/2,	दोनों नंबर 3	रहने वाला होवे। दोनों हालत में ससुराल अमीर होंगे। लावल्द न होंगे। जनाकार, ऐय्याश, इसका धन अपने ही भाई बंदो को तारने वाला होगा।
दोनों नंबर 7	लाखोपति फिर भी दुखिया। अकल मदद न देवे। बाकी 6 बचने वाले मकान सा हाल रहे। तकिया मुसाफिर होगा। माता न होगी या वो अंधी होगी। ला.की. 213/12, 215/18बी, 219/2, 221/1	दोनों नंबर 4	माता के भाई बंद (नर आदमी) खराबी का सबब होंगे। वो खुद भी तबाह होवें या दरअसल पानी में माँतें पावें या डूबते जावें।
दोनों मुश्तरका को देखे	मंगल शुक्र (गेरु) चंद्र बृहस्पत :- ऐंसा धन हर तरह से नेक फल देवे। माल दौलत भी हो और परिवार भी हो। (उमदा मायनों में) पापी ग्रह :-रात दिन मुसीबत पर मुसीबत होवे।	दोनों नंबर 7	आँलाद दर आँलाद साहिबे आँलादा पोते पड़ोते सब जिंदा। हरदम बटे परिवार। इसका धन अपने ही खून से पैदा शुदा (मारफत अपनी औरत भाई बंद के बाद बहिन भुया नहीं) को तारने वाला हो। दौलत का भण्डारा और दौलत का दीगर सुख होवे।
दोनों नंबर 2	औरत खानदान से दौलत आवे। ससुराल के घर ही	दोनों नंबर 8	आसूदा हाल मगर निंदक। हरइक की बदखोई करने वाला हो दिमागी खाना नंबर 8 हमला रोकने की हिम्मत का मालिक होवे।

खाना नंबर	मंगल शुक्र	खाना नंबर	मंगल बुध
दोनों नंबर 10	निर्धन और झगड़ालू मामूली सी मिट्टी की डली पर लंबा झगड़ा करने वाला होवे। ला. की. 285/9 मंगल बुध (राये तोता)	दोनों मुश्तरका जारी	स्त्री की दिमागी ताकत उतम होगी। पहाड़ की तरह सरसब्ज और उतम शनीचर का फल होगा। सिर्फ इस की जबान का लफज जो पत्थर पर लकीर होगा या बृहस्पत गुरू से सुन कर बोली हुई जबान होगी।
दोनों मुश्तरका	लाल कण्ठी वाला तोता होगा। राये तोता बोल कर नकल कर लेने वाला। खासकर बृहस्पत या गुरू की नकल कर लेने वाला तोता। चंद्र बुध बकरी के दिल वाला (बिल्ली देखी या आयी तोता मर गया। ख्वाह बिल्ली छूए भी न) टुनिया तोता जो सिर्फ टैं टैं ही करता है। रद्दी फल का होता है। मगर ये लाल रंग के साथ वाला पक्का बुध होगा। यानि चंद्र बुध 'दरिया का रेत' और मंगल बुध मीठे में रेत होगी। जिसके असर को हटाना मुशकिल होगा। मंगल को मंगल बढ़ तक कर सकता है। लाल रंग का फर्क खून गले पर लगाये खून कर दिया खून कर दिया का अर्लाम लगा कर बदनाम और दुखिया बना देगा। मंगल के साथ बुध चुप होगा।	दोनों नंबर 1 दोनों नंबर 2 दोनों नंबर 3 दोनों नंबर 4 दोनों नंबर 6 दोनों नंबर 7	मजबूत जिसमा औरत खानदान को तारे। ससुराल दौलत मंद और दौलत देवे। धन दौलत मुबारिक। धन दौलत के बहुत गम देखेगा। ला. की. 285/10 बेशक इस घर में बुध उंच है मगर खाना नंबर 3 चोरी का और धन चले जाने का दरवाजा गिना गया है। अपनी जात पर बुरा असर न होगा। वही असर जो उपर नंबर 3में लिखा है। ला.की. 256/4 मंगल का शेर बुध के दांत होने के सबब अपने घरमें शुक्र की गाय पर भी हमला कर देगा। हालांकि बुध शुक्र दोस्त हैं और मंगल शुक्र दोस्त। मगर फिर भी गृहस्त

खाना नंबर	मंगल बुध	खाना नंबर	शुक्र बुध
दोनों नंबर 7 जारी	बरबाद और जहर के वाक्यात। वजह ये कि बुध अपनी नाली लगा कर खाना नंबर 7 का फल बाहर जहां भी शुक्र हो ले जायेगा और गृहस्त का खाना खाली होगा। सिर्फ मंगल बंद बाकी रहेगा।		खाह किसी भी घर हों। (सिवाये खाना नंबर 4 के जहां कि दोनों का फल रद्दी होगा)। व्यापार से नफा और सूख ग्रहण के वकत भी उमदा नतीजा होगा। जबकि शुक्र बुध मुश्तरका मशनोई सूख का ही काम दे देंगे। रोटी पानी की कभी कमी न होगी।
दोनों नं 8 दोनों मुश्तरका नं 10/11	लाल किताब सफा 269/5 मालदार अयालदार। पोते पड़ते वाला। अगर कुण्डली में पापी ग्रह अच्छे घरों के हों और रद्दी न हो गये हों। लेकिन अगर रद्दी घरों में हों तो मंगल बुध का नेक असर राहु की तमाम उम्र (42 साला उम्र) के बाद पैदा होगा। खाना नंबर 11 दरअसल बृहस्पत का है। जिसमें शनीचर भी हिस्सेदार है। इसलिये बृहस्पत शनीचर का असर जस्स इस खाने के असर में दखल देगा।		2) ऐसे घरों में हों जहांकि शुक्र कायम और बुध उंच होवे। यानि खाना नंबर 3 में तो सिर की श्रेष्ठ रेखा (ला.की. सफा 283 जुज 4) का उतम फल होगा। जो चंद्र के बुरे असर से बचायेगी। जबकि चंद्र रद्दी हालत का हो। लेकिन अगर चांद ग्रहण ही हो तो भी सिर्फ माता की उम्र या साँतेली माता का सुख न होगा। मगर चंद्र की बाकी सब चीजों का मंदा फल न होगा। 3) लेकिन अगर ऐसे घर में हों जहांकि बुध उंच मगर
दोनों मुश्तरका	शुक्र बुध (तराजू - रेतली मिट्टी) धन दौलत कभी हार न देवे		

खाना नंबर	शुक्र बुध	खाना नंबर	शुक्र बुध
दोनों मुश्तरका जारी	शुक्र नीच फल का होवे। मसलन दोनों खाना नंबर 6 तो सिर की श्रेष्ठ रेखा चंद्र के बुरे फल से तो बचायेगी। मगर औलादके बिघ्न जारी देर बाद होना या उम्र कम का होना वगैरह शुक्र नीच का फल होगा। सिर की श्रेष्ठ रेखा बुध की उंच हालत का नाम है। शुक्र से मुतलका नहीं है।	लेकिन अगर दृष्टि में होते हुए बा - मुकाबिल	अपने से सातवें हों। तो दोनों का फल बाहम न मिलेगा। या बुध के बगैर शुक्र पागल और शुक्र के बगैर बुध सिर्फ फूल होगा। फल न बन सकेगा। दृष्टि के घरों में होते हुए अगर बुध खुद मंदा होवे तो बुध इसके मंदे फल को रोक नहीं सकता। और जब मंदा बुध होवे और शुक्र से पहले घरों का तो शुक्र में बुध का मंदा फल होगा। गृहस्त के मंदे नतीजे होंगे।
दोनों बा - मुकाबिल	जब दोनों ग्रह दृष्टि के खानों की शर्त से बाहर हों। तो जिस घर में शुक्र हो वहां बुध अपना असर अपनी नाली के जरिये लाकर मिला देगा। और शुक्र के फल को कई दफा बुरे से भला कर देगा। लेकिन अगर बुध के साथ शुक्र के दुश्मन ग्रह हों जब वो शुक्र से अलैहदा हो। तो शुक्र अब बुध को अपने घर में नाली लगाने की इजाजत न देगा। इस तरह बुध शुक्र को रद्दी नहीं कर सकता। अगर दृष्टि वाले घरों में हों तो मिले मिलाये असर में शुक्र का असर प्रबल होगा।	शुक्र बुध मुश्तरका को सूख देखे दोनों नंबर 1 दोनों नंबर 2 दोनों नंबर 3 दोनों नंबर 4	ला.की. सफ़ा 195/12 मशनोई सूख का असर उमदा मगर अल्प आयू। मवेशियों के सुख से महरूम होगा। जानी होगा। उमदा नतीजे। पहले उपर जिकर हुआ है। मामू खानदान व ससुराल का

खाना नंबर	शुक्र बुध	खाना नंबर	शुक्र बुध
दोनों नंबर 4 जारी	मंदा हाल होगा। खुद ऐसा शरूस बदफैल बदकिरदार गंदे चालचलन का मालिक होगा। ऐसी हालत में चंद्र अगर दुरस्त होवे तो शुक्र का बुरा असर न होगा।	दोनों नंबर 10 दोनों नंबर 11 दोनों नंबर 12	बुध के वक्त में बाप की सब उम्मीदों पर पानी फेर देगा। साहबे अकला। अजीजों से जुदाई। दोनों का फल रद्दी होगा।
दोनों नंबर 5	शुक्र के पतंग का हाल होगा। (लाल किताब सफा 232-233) मगर औलाद पर बुरा असर न होगा।	मंगल चंद्र (मधुपान- दुध में शहद) दोनों मुश्तरका दोनों मुश्तरका	मुतलका दुनिया से मदद। बृहस्पतः- सबसे उत्तम लक्ष्मी। -महावन उम्र । यार दोस्त की मदद। ला.की. 303/12
दोनों नंबर 6	शुक्र का हल्का बुध का उमदा। जो उपर जिकर हुआ। ला.की. 285/11	देखता हो	सूरजः-राजयोग ला.की. 303/13 शुक्रः-औलाद के बिघ्न। खुद भी अपना धन बरते बगैर मरे। या अपने धन का जाती कोई सुख न पाया हो कि चल बसा। ला.की. 304/18
दोनों नंबर 7	उत्तम फल होगा। सेहत रेखा बुध को से चलकर शुक्र के बुर्ज में। ला.की. सफा 197/14		बुधः- व्योपारी।अकल का धनी। मगर धन की शर्त नहीं। 304/14-20 शनीचरः-मंदा हाल जहर खा मरे। हथियार से मौता। जहरीले जानवर मार दें। 304/15
दोनों नंबर 7 मय राहु या केतू	मंदा फल होगा। औलाद के बिघ्न ला.की. 239/9		
दोनों नंबर 8	दोनों मार्गस्थान। शुक्र नंबर 8 से खुद वो अकल के खिलाफ काम करने वाला। बुध नंबर 8 से मामु खल्मा।		
दोनों नंबर 9	औलाद के बिघ्न। सब ग्रहों का मंदा फल। ला.की. 240/11-12 (बुध नंबर 9 में असर करेगा)		

खाना नंबर	मंगल चंद्र	खाना नंबर	मंगल चंद्र
दोनों नं 2	ला.की. 303 जुज 11	दोनों	होगी। मगर उम्र लंबी होगी।
दोनों नंबर 3	धन श्रेष्ठ रेखा (ला.की. सफा 306 जुज 11) के नेक धन का उतम असरा ला.की. 399/5बे	मुश्तरका जारी	मंगल अपना फल शनीचर को ग्रहों की बजाये एक ही ग्रह या शनीचर की दुगनी ताकत हो जायेगी। या दूसरे भाइयों की किसमत का हिस्सा भी इसी के पास आ जायेगा। और हो सकता है कि दूसरे भाई बहुत ही मामूली हैंसीयत के हों। और वो खुद ही बुलंद हो जावे। सांप और शेर की मुश्तरका तबीयत होगी। यानि आजक को माफ और जालिम को कतल ही कर के छोड़ेगा। इसका घर डाका के काबिल होगा। या धन की ज्यादाती देख कर हो सकता है। कि इसके हां डाके के वाकयात हों।
मंगलबद और चंद्र	नंबर 4 ला.की. 270/8		
दोनों नंबर 7	लालची पैसे का पुतर ला.की. 215/18		
दोनों नंबर 10	माँत हादसा से होवे। लालची		
नंबर 11	वहमी - लालची ला.की. 212/5, 216/18		
	मंगल शनीचर (नारयल- छुहारा)		
	दृष्टि में चूल्हा मुश्तरका कमान सेहत के मुतलका ला.की. सफा 198/18-19		
दोनों मुश्तरका	जिसमानी ताकत उमदा। इन दो डाक्यों का जिकर खासतौर पर मंगल के हाल अरमान नंबर 145 से 158 में दर्ज है। ऐसी कुंडली वाला दूसरे मर्दा पर हरदम माँत की तरह छाया रहने वाला होगा। छुपते सूरज की लाली की तरह बुढापे में किसमत का असल उमदा जोर होगा। बीमारी जब होगी सख्त होगी। और जान का धोका देती मालूम	दोनों मुश्तरका को देखे या साथ होवे	बृहस्पत-मगर बृहस्पत नंबर 2 का न हो। लोगों को सरा देने वाला बृहस्पत होगा। मगर खुद अपने लिये महावन उम्र गँबी मदद। मददे मर्दा और यार दोस्तों की पूरी मदद होगी। माकूल आमदन फिर भी कर्जाई होगा।

खाना नंबर	मंगल शनीचर	खाना नंबर	मंगल शनीचर
दोनों मुश्तरका को देखे या साथ होवे	सेहत के लिये ला.की. सफा 198/19 - बीमारियां खाशात बढ़। बृहस्पत नंबर 2 का साथ- अब ये गुरु भी चोरों में सरगना होगा। कुण्डली वाले के लिये धन दौलत का नतीजा उमदा होगा।	दोनों 10 चंद्र नं 4	पानी की बचाये दूध से पले दरख्त की तरह उतम किसमत का मालिक। बारौब या गुस्सा। अहले सरकार से खास नफा पावे। सरकारी मुलाजमत जरूर होवे। मंगल नेक का धन बढ़ता चले।
दोनों नंबर 1	अपने रिशतेदारों को उजाड़े। बीमारियां मुतलका खून होवें। ला.की. 259/15, 255/3-10	दोनों मुश्तरका	चंद्र शनीचर (विसर्ग) कछुआ फटा हुआ दूध मोटर लारी या लोहे की चीज वर्गैरह या दीगर हथियार होगा। जो शनीचर या चंद्र के अपने अपने उंच होने के घरों में (चंद्र नंबर 2 शनीचर नंबर 7) खुद कुण्डली वाले पर मौत का हमला कर देगा। हादसा होगा या आंखों की नजर उड़ा देगा। मुश्तरका हालत में दोनों ग्रहों में कौन प्रबल हैं का फंसली आंख की हालत (ला.की. फरमान नंबर 84 सफा 71) से होगा।
दोनों नं 2	ला.की. 258/13	दोनों मुश्तरका	बृहस्पत का साथ- (मंगल शनीचर के उल्ट का होगा) यानि उमदा नतीजा। इसकी दोस्ती से दूसरों का फायदा ही फायदा। लोहे को पारस का काम देवे। गँबी
दोनों नं 3	ला.की. 255/3 व 314/लाम	दोनों मुश्तरका	
दोनों नं 6	नेकी फरामोश होगा।	दोनों मुश्तरका	
दोनों नंबर 7	अपने रिशतेदारों को तारनेवाला धन होगा। (अपनी औरत की औलाद वर्गैरह को तारेगा) ला.की. 150/13, 255/3, 314/मीम	दोनों मुश्तरका	
नंबर 8	मोत मार्गअस्थान।	दोनों मुश्तरका	
नंबर 9	सबसे ज्यादा उतम फल के ग्रह होगे। जनमदिन से ही शाही जंगी धन और शाही परवरिश व हकूमत साथ होगी। जो 60 साल उम्र तक कभी हार न देगी। बल्कि बढ़ती जावे।	दोनों मुश्तरका	
नंबर 10	हुकमरान जायदाद वाला। दौलतमंद। ला.की. 258 जुजा2	दोनों मुश्तरका	

खाना नंबर	चंद्र शनीचर	खाना नंबर	चंद्र शनीचर
दोनों मुश्तरका से दृष्टि	मददा मददे मर्दा दौलत का फल उमदा। ऐंसा धन औलाद के हाथ लगे।	नंबर 4	मैं मगर मकान वगैरह जायदाद जरूर होगी। ये खुद चंद्र की राशि हैं। जो शनीचर
खाह साथ जारी	शुक्र :- मौत परदेस में। इसका धन मिट्टी का पहाड़। जाहिरदारी उमदा मगर अंदर खराब औरत (ससुराल खानदान औरत के वालदैन) के काम आवे। मंगल:-धन वैसा ही जाहिरदारी का मगर वो भाई बंदो, ताये चाचे के काम आवे।		के पहाड़के तले पानी बहा देगा। मौत दरिया नदी से होगी रात के वक्त अगर सूरज का साथ हो तो मौत दरिया नदी से दिन को होगी। दबाया हुआ धन होगा। जो चल पड़ता हैं। लावल्द होने पर या मौत के बाद दूसरों के काम आयेगा। चाल चलन भी गंदा होगा। औरतों
दोनों मुश्तरका	धन रेखा :- (चंद्र शनीचर की) चंद्र धन तो शनीचर खजानची होगा। विसर्ग का निशान होगा। आंख का काना पन होगा। या सीधी टेढी मुश्तरका-र्याह मुंह माया। ला.की. सफा 197/16 दुनयावी कच्छु (पानी का जानवर) होगा।	दोनों नंबर 4 सूरज 7 नंबर 5	की कबूतरबाजी (बेवाह फर्ज या माशुका) के फालतू और फजूल खर्चे बरबाद करें। सांप को दुध पिलाना मुबारिक ही होगा। ला.की. 425/4 बे,जीम (सूरज की राशि हैं) औलाद पर
दोनों 1 नंबर 2	ला.की. 299 जुज 5 उमदा असर होवे।		खराबी होगी। (बराये धन दौलत) मुसीबत में दुख का यम आतिश
दोनों नंबर 3	ये घर दौलत के लिये चोरी नुकसान का है। शनीचर इस जगह निर्धन कंगाल हो जायेगा। नकद नामा		खेज शनीचर के पहाड़का धुयाधार जमाना खड़ा कर देगा।

खाना नंबर	चंद्र सनीचर	खाना नंबर	सनीचर शुक्र
नंबर 5 जारी	जो चंद्र के समुंद्र के पानी में गर्क होकर गोता देने का बायस होगा।		(काला रंग-बिजली-लोहा) दोनों दोस्त हैं। या स्याह रंग (कपिला) गाय पर बिजली जादू
दोनों नंबर 6	(ये बुध व केतू की राशि हैं) दुनिया के कुत्ते 1. ससूराल के घर जवाई कुत्ता। 2. बहिन के घर भाई कुत्ता। 3. नानके घर दोहता कुत्ता। इसका धन बरबाद करेंगे। चंद्र शनीचर दोनों की मिट्टी खराब। नकद माल व मकान दोनों का फल रद्दी।		मंतर शनीचरका बुरा असर न होगा। शनीचर की बिजली को शुक्र मिट्टी में दबा देने (Earthing बिजली को जमीन में गाड़ दिया करते हैं) का काम देगी। मकान के उपर लोहे की सलाख से मकान बिजली या शनीचर के बुरे असर से तबाह न होगा। जहां स्याह गाय मौजूद हो या जिस मकान के उपर लोहे की सलाख होवे। वहां शनीचर की अपनी मर्जी और तरफ से तबाही न होगी। मिट्टी का खुश्क पहाड़ होगा।
नंबर 7	स्त्री झगड़ों से जिदगी तबाह। दिल और आंखों की बीमारियां अंधापन तक हो सकती हैं। स्याह मुंह माया बरबाद बदनाम करने वाली होगी। मौत गृहस्त में। ला.की. 315/5, 314/नून, 197/16, 282/130, 150/13		
नंबर 8	बुढापे में नजर की तकलीफ।	दोनों	बुध देखे :-जबान का चसका
नंबर 9	निहायत उतम असर धन दौलत का होगा।	नंबर 1	बरबाद करे। सूरज देखे :-शनीचर का बुरा असर निहायत जोर से होगा। मौत पुरदर्द होगी।
नं 10-11	असर दरभ्याना होगा।		
नंबर 12	माया पर पेशाब की धार मारने वाला होगा। औरत का सुख हल्का।	दोनों 1	दलिट्टी - आलसी - चंद्र 12 निर्धन होगा। सूरज 2 मंगल 4
दोनों मुश्तरका	शनीचर शुक्र (स्याह मञ्जर) शुक्र (गाय मिट्टी लक्ष्मी) शनीचर		

खाना नंबर	चंद्र सनीचर	खाना नंबर	सनीचर शुक्र
दोनों मुश्तरका खाना नं०	जानी ऐय्याश होगा।		हमदर्द। किसमत नेक और उमदा नतीजे हों। वालदैन का सुख सागर लंबा और नेक। सिर रेखा और उम्र रेखा के मिलने का जाविया कायम। ला.की. सफा 196/14
दोनों नंबर 3	ला.की. 313/1 दाल		
दोनों खाना नंबर 7	निहायत करीबी रिशतेदार इसका धन दौलत खुब खा पी जायेंगे। ला.की. 313/सीन	दोनों मुश्तरका मय सूरज या तीनों मुश्तरका	नेक फल हर दो (सूरज सनीचर) का- बुध का फल नदारद।
दोनों नंबर 9/12	जायदाद की जायदादों वाला। स्त्री सुख पूरा।		
बृहस्पत नंबर 5/6		दोनों के बा - मुकाबिल चंद्र	खुदकशी। जो बवजह गरीबी न होगी।
या मुश्तरका या बा - मुकाबिल		दोनों चंद्र के साथ दृष्टि या नंबर 4 में	हमदर्द। माता पिता की बाहमी नेक मुआफकत व उनका सुख सागर लंबा।
दोनों खाना नंबर 10	बेशुमार गृहस्थी साथी अपनी लड़की लड़कों के रिशतेदार उस की कमाई से परवरिश पायेंगे। ला.की. 313/1 रे	खाना नं० 2	खूनी होगा। ला.की. 280/3
दोनों खाना नंबर 10	सनीचर का बुरा असर न होगा। बल्कि जायदाद बनेगी। मौत भी सनीचर पुरदर्द न होगी। नकद रुपया	बुध नं० 2	
सूरज 4	बेशक कम होगा।	दोनों मुश्तरका नंबर 7	नेकी फरामोश होगा। ला.की. 164/22
दोनों नंबर 12		सनीचर बुध नं० 9	
बुध नं० 6	जानी ऐय्याश होगा।	दोनों मुश्तरका खाना नंबर 9	हमदर्द। माता पिता की बाहमी नेक मुआफकत व उनका सुख सागर लंबा।
दोनों नंबर 12	ला.की. 313/ सीन सनीचर बुध (गांव)		
दोनों मुश्तरका	एक सांप दूसरा उड़ने वाला।		

ग्रह मुश्तरका का	असर होगा
राहु बृहस्पत नंबर 2	ला.की. सफ़ा 148/9
राहु सूरज	जब ख़ाना नंबर 10 में उम्र सिर्फ़ 22 साल।
राहु चंद्र	फर्जी वहम व चिंता से दीवाना होवे।
राहु बुध	माँत की निशानी जब ख़ाना नंबर 1 में, औलाद के बिघ्न।
राहु सूरज बुध	शादियाँ एक से ज्यादा फिर भी गृहस्त का सुख नेक न होवे। बशर्तकि शुक्र किसी और ग्रह का साथ ग्रह न बन रहा हो।
राहु चंद्र सनीचर	औरत का सुख हल्का होगा। खासकर जब ख़ाना नंबर 12 में हों। ला.की. सफ़ा 225/4 जीम
राहु चंद्र बृहस्पत	चंद्र बृहस्पत के नेक फल पर कोई बुरा असर न होगा। औरत का सुख हल्का खासकर ख़ाना नंबर 12 में।
राहु शुक्र सूरज	औरत की सेहत रद्दी। (दिमागी कमजोरी दीवानगी) जब ख़ाना नंबर 1 में।
राहु बुध चंद्र सूरज	वालिद पानी में डूब मरे।
राहु सनीचर	जब दोनों मुश्तरका। राजदारी। इच्छाधारी सांप ला.की. 76/3 जब सनीचर देखता हो राहु को। हसद से तबाह होवे।
केतू सूरज	औलाद का मंदा हाल।
केतू बृहस्पत नं 2	ला.की. सफ़ा 148/9
केतू शुक्र	जब ख़ाना नंबर 1 में औलाद के बिघ्न।
केतू बुध	माँत की निशानी।
केतु सनीचर	ईसतकलाल। जब तक कोई और तीसरा ग्रह शामिल न हो
तीसरा ग्रह नदारद	नेक। जब तीसरा ग्रह साथ आ मिले नतीजा मंदा होगा।
केतू मंगल बृहस्पत	भाई लंगड़ा जो जो 45 साल उम्र तक मददगार फिर बेमायनी।
केतू सूरज बुध चंद्र	बालिद डूब मरे।
केतू सूरज शुक्र	जब ख़ाना नंबर 1 में औरत की दिमागी कमजोरी दीवानगी वगैरह।
केतू सनीचर नं 6	ला.की. सफ़ा 296 जुज 3 व 318(ख़ाना उम्र 70 साल)

तीन ग्रह मुश्तरका या बाहम दृष्टी में

ग्रह	असर
मंगल सूरज बुध नंबर 1 व चंद्र 7	ला.की. सफ़ा 211 जुज 2
मंगल सनीचर कोई और तीसरा	मंगल सनीचर का तीसरा साथ का ग्रह शराप देने वाला मंदे फल का होगा।
मंगल सनीचर मय पापी ग्रह	रात दिन मुसीबत पर मुसीबत होवे।
मंगल सनीचर मय बृहस्पत	शराप या बददुया देने में बृहस्पत की ताकत का आदमी कम कर्जाई होगा। जो उसके सामने रहेगा बरबाद होगा। चोरों का चोर साथु मरवाये। बीमारियां, ख्वाहिशात बदा। ला.की. 198/15
मंगल सनीचर मय बुध	खयालात पर बुरा असर होगा। मृगशाला गिनते हैं।
मंगल सनीचर मय बुध नंबर 8	ला.की. सफ़ा 270 जुज 6
मंगल सनीचर मय सूरज	जब ख़ाना नंबर 11 में हों खुद तो झूठा न बनेगा दुनिया को झूठा कहेगा। मगर धन उमदा।
मंगल सनीचर चंद्र	जब ख़ाना नंबर 11 में हों ला.की. 211 जुज 3 जब ख़ाना नंबर 1 में हों बीमारी का घर होगा। जब ख़ाना नंबर 2 में हों फुलबहरी होवे।
मंगल बृहस्पत चंद्र	बृहस्पत ख़ाना नंबर 2 का फल किसमत में मिलेगा। पीपल बड और नीम तीनों मुश्तरका और एक ही जड का दरखत होगा।
मंगल शुक्र बुध	जब ख़ाना नंबर 3-7 में हों शादी और औलाद में मंदे नतीजे।
मंगल शुक्र बुध नंबर 7 मय राहु/केतू	ला.की. सफ़ा 239 जुज 10
बृहस्पत बुध सनीचर नंबर 7	या तीनों किसी भी जगह मुश्तरका या बृहस्पत सनीचर से बुध का तालूक। ला.की. 165/28 व 166/30
बृहस्पत शुक्र बुध नं 7	गऊ ग्रास होगा।
सनीचर शुक्र बुध	ला.की. 240/11 व 12
बुध चंद्र शुक्र	दिमागी सदमात ला.की. सफ़ा 198 जुज 20
बुध नंबर 7 चंद्र शुक्र	ला.की. सफ़ा 239 जुज 8
चंद्र बृहस्पत नंबर 2	ला.की. सफ़ा 212/6 व सफर 152 जुज 2
चंद्र बृहस्पत शुक्र	कभी शाह कभी मंलग कभी खुशहाल कभी तंग होगा। ला.की. 151/1, 161/12 व 167/35

ग्रह	असर
चंद्र बृहस्पत शुक्र नंबर 2 मंगल नष्ट सूरज चंद्र शुक्र सूरज बृहस्पत शुक्र	लाल किताब सफ़ा 152 जुल । रात दिन मुसीबत पर मुसीबत होवे। शादी के दिन से किसमत जागेगी। औरत रंग स्वभाव व किसमत में नेक होगी।
सूरज बृहस्पत सनीचर	तीनों जब ख़ाना नंबर 6 में हों। हर जगह कदर व मंजलत होवे। इज्जत रेखा उतम।
सूरज बृहस्पत मुश्तरका	ला.की. सफ़ा 198 जुल 19
सूरज बृहस्पत बुध	सूरज और बृहस्पत के असर पर कोई बुरा असर न होगा। नेक फल होगा।

चार ग्रह	असर
बृहस्पत चंद्र सूरज मंगल	बृहस्पत ख़ाना नंबर 2 की किसमत रेखा का उतम फल होगा। उतम गुरू जिसे सब प्रणाम करेंगे। और उपदेश लेगे।
बुध सनीचर सूरज मंगल	चारों नष्ट हों तो एक ही आदमी लाखों की ताकत का होगा।
बुध चंद्र शुक्र मंगल	सब का बुरा असर होगा। लडकी की शादी के दिन से नेक असर होगा। ला.की. सफ़ा 221/2
बुध चंद्र शुक्र सनीचर	बदफ़ैल, बदकिरदार बदचलन होगा।
बुध सूरज शुक्र सनीचर	फटा पतंग। दहशत परेशानगी। उस घर ही की जिस घर में कि ये चारों ग्रह बैठें हों।
चंद्र मंगल शुक्र सनीचर 11	ला.की. सफ़ा 211 जुल 4
चंद्र बुध बृहस्पत शनी नंबर 2	ला.की. सफ़ा 242 जुल 12
बृहस्पत चंद्र शुक्र शनि राहु	"पंचायत" - धन्ने भगत की गऊयें राम चरावे। मिट्टी का माधो किसमत का धनी होगा। बृहस्पत की जबरदस्त किसमत रेखा सही और दुरसत। ला.की. 157 फरमान 122/2

आंख :- आंख का खोल या डेला या पुतला का वजूद सूरज चंद्र का होता है। दायीं आंख का डेला सूरज, बायीं आंख का डेला चंद्र नजर बीनाई का मालिक सनीचर और नजर के असर का मालिक मंगल होगा। आंख की गोलाई, लंबाई, गहराई वगैरह बुध व बृहस्पत यानि गहराई अंदर को धस जाना या घुस जाना बृहस्पत का तालूक सनीचर से और बाहर को निकले होना उभार बृहस्पत का तालूक सूरज चंद्र से, गोलाई या शकल वगैरह बुध से मुतलका होगी। आंख = (चंद्र का खाना नंबर 4)

कनपटी या पुडपुडी :- सनीचर का हैडकवाटर खाना नंबर 8 होगा।
हल्क का कौआ:- दायीं तरफ राहु बायीं तरफ केतू दरम्यान में सनीचर तालू :- खाना नंबर 8 बगैर ग्रहों के होगा।

तमाम ग्रह इकट्ठे हों खाना नंबर में	असर होगा
खाना नंबर 2 में	हुकमरान
खाना नंबर 3 में	मिसल राजा साहिबे इकबाल।
खाना नंबर 8 में	हुकमरान- आली मर्तबा- सिर्फ अपने आम को बढावे।
खाना नंबर 9 में	हुकमरान-साथियों को बढा कर खुद भी बढावे।

अरमान नंबर 181

इल्म जोतिष की बनाई हुई जनम कुण्डली

हस्त रेखा - इल्म जोतिष और सामुद्रिक में राशीयों के एक ही नंबर मुकरिर हैं। कुण्डली वाले की जो जनम राशी का नंबर होता है। इल्म जोतिष वाले वो हिंदसा सब से ऊपर की चौकोर जगह में लिखते हैं। इस नंबर को वो लोग जनम लगन गिनते हैं। इल्म सामुद्रिक में यही खाना नंबर एक दे दिया गया है। ताकि बार बार न गिनना पडे कि हर एक ग्रह जनम लगन से कौनसे नंबर के घर में हैं। या यूं कहो कि पंजाब में कुण्डली के बारह खानों की शकल पक्के तौर पर मुकरिर है। खवाह इल्म जोतिष वाले ऊपर के चौकार खाना में जनम राशी के नंबर

का हिंदसा लिख दें। खवाह सामुद्रिक वाले उस ऊपर के चौकोर को खाना नंबर 1 दे दें। बात एक ही है।

कुंडली की शकल

	बे	ले	
1 मेष	जीम	अलिफ	इ
2 बृख		जनम कुंडली	
3 मिथुन	चे	रे	
4 कर्क		दाल	जाल
5 सिंह	बड़ी हे		
6 कन्या	खे	डाल	
			7 तुला
			8 बृचक
			9 धन
			10 मकर
			11 कुंभ
			12 मीन

फरजन किसी की जनम राशी या जनम लगन की राशी है सिंह। जिसका नंबर है 5 वां। जोतिष वाले तो लिखेंगे खाना अलफ में हिंदसा नंबर 5 -बे में 6 और आखिर या बातरतीब जे में हिंदसा नंबर 4 लिखेंगे। सामुद्रिक वाले खाना अलफ में हिंदसा नंबर 1- बे में हिंदसा नंबर 2- और बातरतीब आखिर जे में हिंदसा नंबर 12 लिखेंगे। जोतिष वाले खाना नंबर बे को कहेंगे कि वो बे वाला खाना जनम लगन से दूसरे नंबर पर है। सामुद्रिक वालों के लिये बे होगा खाना नंबर 2-वगैरह। खाना अलफ से दोनों इल्म वालों ने शुरू करना है। जोतिष में वो लगन कहलाता है। सामुद्रिक में वो अलफ का मुकाम खाना नंबर 1 होता है। गोया खाना नंबर एक में हिंदसा नंबर एक लिखने से सामुद्रिक में राशी नंबर एक "मेष" मुराद नहीं हो जाती वो लगन है। सामुद्रिक वालों को धोका नहीं लगता। क्योंकि ला.की. के फरमान व अरमान यही बुनियाद मान कर लिखे गये हैं। अलफ को 1। बे को 2 जीम को 3 चे का 4 वगैरह बातरतीब हिंदसे देकर लिखी हुई कुण्डली मुंदरजा जैल होगी। खाना नंबर चे में 4 का हिंदसा देखकर जोतिष वाले कहेंगे कि वो चे का घर कर्क राशी नंबर 4 है। मगर नहीं दरअसल ये घर सामुद्रिक में खाना नंबर 4 और जोतिष में जनम लगन से चौथा घर है। सामुद्रिक में राशी और नछत्तर (पक्की ग्रह कुण्डली में ला.की. सफ़ा 97) बाद में उडा ही दिया गया है। नछत्तर पहले छोड दिये थे। कुण्डली के हिंदसे बदलने से

	2	12	
3	अलिफ	इ	11
	जनम कुंडली	1	
	4	10	
5		7	9
	6		8

सामुद्रिक वालों ने लगन से हरइक घर गिन लिया। अब ये राशी नंबर का हिंदसा नहीं लेंगे। या यूं कहो कि सामुद्रिक वाले एक पक्की कुण्डली बना कर इस में सबसे ऊपर के चौकोर में एक का हिंदसा लिख कर तमाम 12 खानों में हिंदसे लिख देंगे। और जहां सामुद्रिक वालों का हिंदसा नंबर एक है इस घर में जोतिष वालों की बनायी हुई कुण्डली के इस घर के हिंदसे वाले ग्रह को लिख देंगे जो हिंदसा कि इन्होंने जनम राशी का सबसे ऊपर के चौकोर खाने में लिखा है। अब सामुद्रिक वालों की कुण्डली के हिसाब से हर ग्रह का पता लग गया कि वो जनम लगन से कौन से घर में है। इस तरह जब पता लग गया कि हरएक खाने में कौन कौन सा ग्रह है तो ला.की. के मुताबिक जवाब देखना शुरू करें।

चंद्र कुण्डली जिस घर में जोतिष वालों ने लफज चंद्र का ग्रह लिखा हो उस घर को जनम राशी वाले घर का नंबर लगा कर तमाम खानों में 12 हिंदसे पूरे कर देंगे। इस तरह पर जहां भी एक का हिंदसा आवे वो घर सामुद्रिक में पहला खाना होगा। चंद्र कुण्डली के देखने के लिये। मसलन जनम राशी है सिंह या राशी नंबर 5 जोतिष की कुंडली को जनम

सामुद्रिक की पक्की कुंडली

राशि का नंबर दिया

जोतिष की चंद्र कुंडली

2	12	6	4	8	6
3	11	7	चंद्र 5	3	9
4	10	8	2	10	4
चंद्र 5	9	9	11	1	11
6	8	10	12	12	2

अब सामुद्रिक के हिसाब से एक कुण्डली तो जनम कुण्डली कहलायी। दूसरी चंद्र कुण्डली दोनों का फर्क ये होगा कि जनम लगन में चंद्र का ग्रह खाना नंबर 3 पर आ गया और चंद्र कुण्डली में वही चंद्र खाना नंबर 5 पर हो गया। क्योंकि जनम राशी दोनों हालतों में सिंह राशी नंबर 5 फर्क कर लिया था। अब दोनो कुण्डलियों का जुदा जुदा हाल ला.की. के फरमान व अरमान के हिसाब से जुदा जुदा देखा गया।

फर्क हालात में ये होगा कि चंद्र कुण्डली का असर अचानक और सहवन और भूले भुलाये कभी कभी जाहिर होगा और वो भी महादशा के खाली रखे

हुए सालों में और धोके के ग्रह के सालों में। ये होगा पक्का भेद जिसे राशी फल कहकर शक का फायदा उठायेंगे। राशीफल व ग्रहफल का फर्क वगैरह जुड़ी जगह लिखा गया है।

इल्म जोतिष में जनम कुण्डली बनाने का तरीका

बमूजब इल्म जोतिष:- सूरज गिना जायेगा जिस राशी नंबर में

नंबर राशी	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
नाम राशी का	मेख	बृख	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	बृच्छक	धन	मकर	कुंभ	मीन
म्याद सूरज फी	3	4	5	6	6	6	6	6	6	5	4	3
राशी फी दिन	घड़ी											
नाम महीना	बैसाख	जेठ	हाड	सावन	भादों	असौज	कार्तिक	मगधर	पोह	माघ	फागन	चेत

एक घड़ी होगी बराबर होती राशी नंबर 1--12=3 घड़ी राशी नंबर 4-9=6 घड़ी

हैं 24 मिनट के

राशी नंबर 2-11= 4 घड़ी राशी नंबर 5-8=6 घड़ी

राशी नंबर 3-10=5 घड़ी राशी नंबर 6-7=6 घड़ी

वक्त पैदाइश 5 बजे सुबह सनीचर वार 2 चेत सम्बत 1992 मुताबिक 14-3-1936 जंत्री मसनफा पंडित देवी दयाल 1936 का सफा नंबर 13 पर 14 से 17 मार्च वाली कुण्डली बनी बनाई मौजूद हैं। जिस में सिर्फ चंद्रमा का ग्रह नहीं लिखा हुआ। जंतरी के सफा 12 खाना नंबर दाखला आँकात राशी चंद्रमा के मुताबिक 13-3-1936 से शुरू करके चंद्र को खत्म किया है। इतवार 15-3-36 तक यानि 13-3-36 को चंद्रमा हुआ बृच्चक राशी में 30 घड़ी 45 पल (टाइम चलता है मशस का लाहौर व मशस का फर्क सफा 54 पर जो 32 मिंट लिखा है) तलूया आफताब के बाद और रहेगा बृच्चक में इतवार के दिन 15-3-36 वक्त 35 घड़ी 19 पल तक। गोया 14-3-36 का चंद्रमा बृच्चक राशी में ही था। जो खाना नंबर 8 में लिख देंगे।

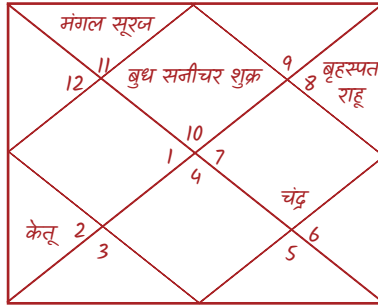
लगन की बुनियाद तलवा

आफताब से होती है। जिस के लिये सफा 49 मददगार होगा और जिसके मुताबक 6-06 बजे तक कुंभ लगन या राशी नंबर 11 होगा। 14-3-36 को सूरज

			बुध सनीचर शुक्र
2	मंगल सूरज	12	
3		11	
	केतू	10	बृहस्पत राहू
	4	7	
5		8	चंद्र
6			

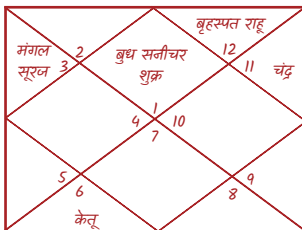
--निकलना लिखा है सफा 49 पर 7-38 बजे तक मीन राशी में और इसके बाद मेख बिरख वगैरह तरतीबवार दर्ज हैं। इस बच्चे का वक्त है 5 बजे सुबह। मगर जंतरी में 4-30 बजे सुबह से लेकर 6-06 बजे सुबह तक कुंभ लगन में सूख निकलना लिखा है। जो लाहौर और मशस के फर्क से 32 मिनट बाद तक यानि 6-06 जमा 32 मिनट या 6-38 तक रहेगा। इसलिये इस बच्चे का जनम लगन हुआ कुंभ या राशी नंबर 11 या सबसे ऊपर की चौकोर के खाने में जहां कि हिंदसा नंबर 12 लिखा है अब असल कुण्डली के लिये हिंदसा नंबर 11 मय खाना नंबर 11 वाले ग्रह उस चौकोर में कर देंगे।

जनम कुण्डली जोतिष की



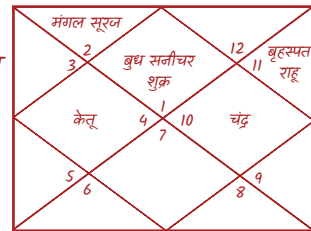
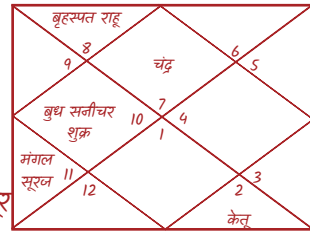
चंद्र कुण्डली में जिस खाने में चंद्रमां ऊपर के हिसाब से आवे वो खाना ऊपर के चौकोर में लिख कर वही ग्रह नकल कर देंगे। ऊपर की मिसाल से ला.की. के हिसाब से वही जोतिष वाली जनम कुण्डली सामने वाली होगी। सिर्फ हिंदसा नंबर बदला गया। बाकी वही ग्रह बदस्तूर जोतिष वाले जो जनम कुण्डली में थे लिखे गये हैं।

अब इल्म जोतिष वाली चंद्र कुण्डली भी लाल किताब के मुताबिक सामने वाली होगी।



तरीका:-
कुण्डली B में
जिस घर में

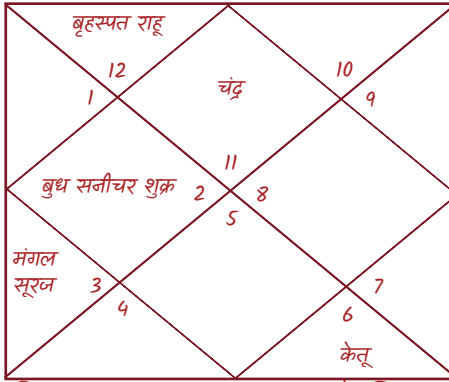
चंद्र लिखा है वहा हिंदसा नंबर 11 जो जनम लगन था लिखा तो सामने वाली कुण्डली हुई।



अब बमूजब ला.की. जिस घर में हिंदसा नंबर एक लिखा गया है वो घर सबसे ऊपर कर लेंगे। या आखरी चंद्र कुण्डली हसब जैल होगी।

खुलासतन लाल किताब के मुताबक जवाब देखने के लिये आखिर पर सिर्फ दो कुण्डलियां निशान नंबर सी जनम कुडली और निशान नंबर डी जनम कुण्डली होगी।

असर में फर्क क्या होगा :- जनम कुण्डली पक्का और लगातार फल-चंद्र कुण्डली अचानक और सहवन किसमत का नजारा होगा।



1) जौतष की बुनियाद जनम वकत का लगन है। जिस का वकत दो दो घंटे लगातार एक ही होता है। फरजन दो बजे से लेकर बजे तक पैदा शुदा बच्चों के लिये एक ही लगन होगा और एक ही लगन के सब ही की किसमत का जवाब तकरीबन एक ही होगा।

2) इल्म सामुद्रिक में 12 साला या नाबालिग बच्चे की रेखा का इतबार नहीं गिनते।

ऊपर के दोनों व्हमों का जवाब दोनों इल्मों की कुण्डलियों के मिल जाने पर दूर होगा। लेकिन हो सकता है कि आखिर पर वो कुण्डलियां किसी तरह भी न मिलें। ऐसी हालत में दोनों का गलत समझ लेना मुनासिब न होगा। फर्क ये होगा कि इल्म जोतिष वाली कुण्डली ने सिर्फ इस शख्स का जाती हाल बोला तो हस्त रेखा की कुण्डली इस बच्चे की गुजसता पुशतों का हाल बतायेगी। यानि अगर उस हस्त रेखा वाली कुण्डली के जवाब उस शख्स से न मिलें तो उसके बाप (1) बाबे (2) दादे (3) जरूर जा मिलेंगे। ऐसी हालत में पितृ या मातृ ऋणों की वजह फर्क का सबब होगा। मगर कुण्डली गलत न समझी जायेगी। इसलिये ऐसे इल्म जोतिष /हस्त रेखा वाले टेवे के लिये सबसे पहले ऋण का उपाय करें। इस फर्क का ये मतलब न लेवें कि दोनों इल्म की कुण्डलियों पर नजरसानी ही न की जावें कि फर्क क्या है। लेकिन मकसद ये है कि चंद्र देख भाल की और फिर भी फर्क ही रहा तो ऊपर का इलाज मददगार होगा। मगर जरूरी बात तो ये होगी कि फर्क निकाल ही लिया जावे।

किसमत का हाल बमूजब फरमान लाल किताब

आप का शुभ नाम व मुस्तकिल पता.....

पैदाइश (जनम वक्त).....जनम दिन.....तारीख.....

महीना.....साल संवत.....पक्षदिनमान.....

मुताबिक बहिसाब अंग्रजी जनम वक्त.....

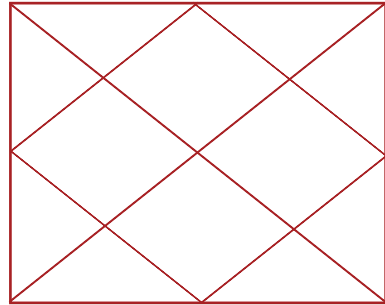
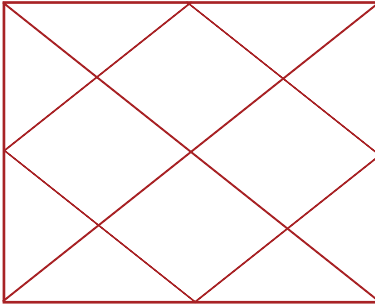
तारीख महीना सन ईसवी.....तलुवा आफताब.....

गस्ब आफताब.....मुकाम पैदाइश.....तारीख

तहरीर..... आज उम्र जारी है.....साल.....

इल्म जोतिष की जनम कुण्डली

चंद्र कुण्डली



दायां हाथ

बायां हाथ



12 खानों के मुताबिक मोटी

मोटी बातों के लिये अरमान

सफ़ा 103 से 108 माली

हालत अरमान नंबर 59 से

62 खुशी गमी अरमान

55/56

औलाद अरमान 115/119

शादी अरमाना 56 से 160

पेशा कारोबार अरमान 16-17

मकान अरमान 50 से 55

व 192

सेहत बीमारी अरमान

197/198, उम्र अरमान

195/197 व ला.की. सफ़ा



316 ता 321

ला.की. सफ़ा 124-127 हस्त रेखा से जनम कुण्डली की खानापूरी अरमान सफ़ा
107

व 133 ता 142

व 250

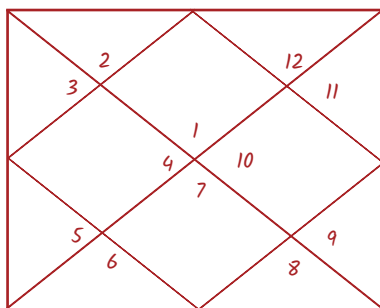
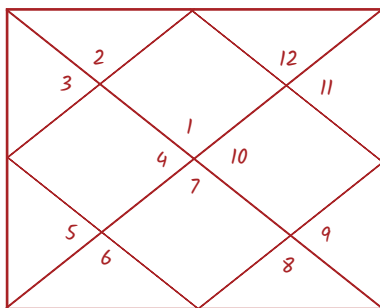
ता 254

ग्रह	हाथ पर निशानी	खाना नंबर होगा	ग्रह	हाथ पर निशानी	खाना नंबर होगा
बृहस्पत			बुध		
सूरज			सनीचर		
चंद्र			राहु		
शुक्र			केतू		
मंगल नेक			मंगल बद्		

"ला.की. में फरमान नंबर 181 के मुताबिक वही"

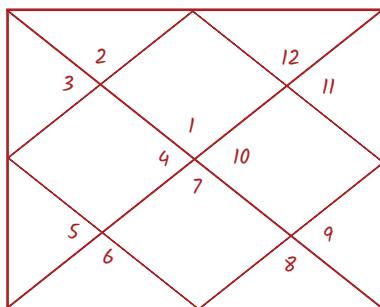
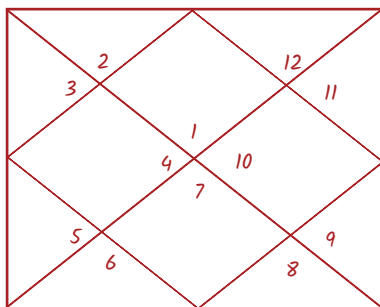
इल्म जोतिष की जनम कुण्डली

आखरी चंद्र कुण्डली



हस्तरेखा से कुण्डली

फालतू चंद्र कुण्डली



ग्रहों की जांच भाल

	बमूजब जन्म कुण्डली	बमूजब चन्द्र कुण्डली
अपने घर में महद्द या बंद पडा हुआ :- अरमान सफ़ा 10 ऊंच ग्रह ला.की. सफ़ा 114 घर के ग्रह ला.की. सफ़ा 114 पक्के घर के ग्रह ला.की. सफ़ा 97 नीच ग्रह ला.की. सफ़ा 114 मंदे ग्रह अरमान सफ़ा 21 निरपक्ष ग्रह अरमान सफ़ा 24 जागते ग्रह अरमान सफ़ा 17 सोये ग्रह अरमान सफ़ा 17 जागते ग्रह अरमान सफ़ा 17 सोये घर अरमान सफ़ा 17 पहले घरों के ग्रह अरमान सफ़ा 23 बाद के घरों के ग्रह 23 साथ लाये खजाने सफ़ा 2 हकीकियों से लेगा सफ़ा 2 गैरों से लेगा सफ़ा 2		

हर ग्रह का सुभाओ

ग्रह	बमूजब जन्म कुण्डली	बमूजब चंद्र कुण्डली	ग्रह	बमूजब जन्म कुण्डली	बमूजब चंद्र कुण्डली
बृहस्पत	112-121 ता 125 132-170 जुज 11		बुध	178 ता 185	
सूरज	133 ता 138, 179 (8-10)		सनीचर	191 ता 195, 179 (9)	
चंद्र	70-71-144 ता 148, 36, 179-7		राहु	202 ता 206, 179 (5)	
शुक्र	145-156, 179 (6)		केतू	209 ता 216, 179 (2 ता 4)	
मंगल नेक	166 ता 170		मंगल बद	173 ता 176	

वर्षफल का राजा हुकमरान अरमान सफ़ा 92 ता 94

6 साल	2	1	3	6	2	6	6	3
बृहस्पत	सूरज	चंद्र	शुक्र	मंगल	बुध	सनीचर	राहु	केतू

उम्र के कौन कौन से साल में किस किस खाना नंबर के ग्रह बोलेंगे (अरमान सफ़ा 94)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
1-3	4-6	7-9	19-21	22-24	25-27	28-30	31-33	34-36	10-12	13-15	16-18
37-39	40-42	43-45	55-57	58-60	61-63	64-66	67-69	70-72	46-48	49-51	52-54
73-75	76-78	79-81	91-93	94-96	97-99	100-102	103-105	106-108	82-84	85-87	88-90
109-111	112-114	115-117							118-120		

आम धोके के ग्रह उम्र में साल ब साल (अरमान नंबर 82 ता 86)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
109	110	111	112	113	114	115	116	117	118	119	120

नाबालिग टेवा अरमान सफ़ा 19

उम्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
खाना	7	4	9	10	11	3	2	5	6	12	1	8

दरम्यानी ग्रह (हर ग्रह - राजा हुकमरान) अरमान सफ़ा 79

दौरा होवे	बृहस्पत	सूरज	चंद्र	शुक्र	मंगल	बुध	सनीचर	राहु	केतू
शुरू	केतू	सूरज	बृहस्पत	मंगल	मंगल	चन्द्र	राहु	मंगल	सनीचर
दरम्यान	बृहस्पत	चंद्र	सूरज	शुक्र	सनीचर	मंगल	बुध	केतू	राहु
आखरी हिस्सा	सूरज	मंगल	चन्द्र	बुध	शुक्र	बृहस्पत	सनीचर	राहु	केतू

महादशा में धोके के ग्रह की तरतीब अरमान सफ़ा 79 से 92

सूरज	चंद्र	केतू	मंगल	बुध	शनि	राहु	खाना 8	खाना 9	बृहस्पत	शुक्र	खाना 12
------	-------	------	------	-----	-----	------	--------	--------	---------	-------	---------

और क्या है - सालवार हाल

(1) मुश्तरका खानदान का असर :-

। बाप बेटे व दीगर रिश्तेदारों हकीकी (अपना खून) के इस जगह नीचे ही दिये हुए सालाना नतीजों के मुश्तरका असर का फल खानदान मुश्तरका का ग्रहों व द्रुष्टी के खाना नंबरों के हिसाब से सालवार हाल होगा। यानि अगर (अगले सफ़ा पर)

मायने :- 1. जो रिश्तेदार जिंदा न हों उसकी बजाये कुण्डली वाले का खुद अपना ही ग्रह (रिश्तेदारों से मुतलका) होगा। रिश्ते में कई एक होने की हालत में बडा या उनमें पहला काबिले गिनती होगा।

उम्र का साल	वर्षफल का राजा	राशि नंबर वजीर	धोके का ग्रह	महादशा का ग्रह	दरम्यानी ग्रह	नतीजा
अज जन्म वक्त	ग्रह किस खाना नंबर का	ग्रह किस खाना नंबर का	आम उम्र	ग्रह देगा	चलते होंगे	मुश्तरका
1		1				
2		1				
3		1				
4		2				
5		2				
6		2				
7		3				
8		3				
9		3				
10		10				
11		10				
12		10				
13		11				
14		11				
15		11				
16		12				
17		12				
18		12				
19		4				
20		4				
21		4				
22		5				
23		5				
24		5				
25		6				
26		6				
27		6				
28		7				
29		7				
30		7				

और क्या है - सालवार हाल

बृहस्पत (बाबा) सूरज (खुद) चंद्र (माता) शुक्र (स्त्री) मंगल (भाई) बुध (बहिन)
सनीचर (हम उम्र रिशतेदार। उम्र में तो बराबर मगर रिशतेदारी में पुश्त या पुश्तों
का फर्क) राहु (ससुराल) केतू (लडका) गिने जावें तो बाबे का नतीजा

उम्र का साल	वर्षफल का राजा	राशि नंबर वजीर	धोके का ग्रह	महादशा का ग्रह	दरमानी ग्रह	नतीजा
आज जन्म वक्त	ग्रह किस ज्ञाना नंबर का	ग्रह किस ज्ञाना नंबर का	आम उम्र	ग्रह देगा	चलते होंगे	मुश्तरका
31		8				
32		8				
33		8				
34		9				
35		9				
36		9				
37		1				
38		1				
39		1				
40		2				
41		2				
42		2				
43		3				
44		3				
45		3				
46		10				
47		10				
48		10				
49		11				
50		11				
51		11				
52		12				
53		12				
54		12				
55		4				
56		4				
57		4				
58		5				
59		5				
60		5				

और क्या है - सालवार हाल

लिखेंगे जहां कि कुण्डली वाले का बृहस्पत है। माता का जहांकि चंद्रा वगैरह वगैरह। सूरज दोबारा न होगा। क्योंकि वो खुद अपना है।

(2) अपने से सातवें का हाल :- सूरज (खुद अपना आप) को दरम्यान

उम्र का साल	वर्षफल का राजा	राशि नंबर वजीर	धोके का ग्रह	महादश का ग्रह	दरम्यानी ग्रह	नतीजा
अज जन्म वक्त	ग्रह किस ज्ञाना नंबर का	ग्रह किस ज्ञाना नंबर का	आम उम्र	ग्रह देगा	चलते होंगे	मुश्तरका
61		6				
62		6				
63		6				
64		7				
65		7				
66		7				
67		8				
68		8				
69		8				
70		9				
71		9				
72		9				
73		1				
74		1				
75		1				
76		2				
77		2				
78		2				
79		3				
80		3				
81		3				
82		10				
83		10				
84		10				
85		11				
86		11				
87		11				
88		12				
89		12				
90		12				

और क्या है - सालवार हाल

लिखेंगे जहां कि कुण्डली वाले का बृहस्पत है। माता का जहांकि चंद्रा वगैरह वगैरह।
सूरज दोबारा न होगा। क्योंकि वो खुद अपना है।

(2) अपने से सातवें का हाल :- सूरज (खुद अपना आप) को दरम्यान

उम्र का साल	वर्षफल का राजा	राशि नंबर वजीर	धोके का ग्रह	महादशा का ग्रह	दरम्यानी ग्रह	नतीजा
अज जन्म वक्त	ग्रह किस खाना नंबर का	ग्रह किस खाना नंबर का	आम उम्र	ग्रह देगा	चलते होंगे	मुश्तरका
91		4				
92		4				
93		4				
94		5				
95		5				
96		5				
97		6				
98		6				
99		6				
100		7				
101		7				
102		7				
103		8				
104		8				
105		8				
106		9				
107		9				
108		9				
109		1				
110		1				
111		1				
112		2				
113		2				
114		2				
115		3				
116		3				
117		3				
118		4				
119		4				
120		4				

